

سُلَيْمَان

# کوڑاں کریم کے انٹیم تین پاروں کی تفسیر

مُسْلِمَانَ کے لِیے

مہات्वपूर्ण احکام و مسائیل

[www.tafseer.info](http://www.tafseer.info)

ISBN : 978-603-90056-2-9



<http://salfibooks.blogspot.com>

Scanned with CamScanner

# प्राक्थन

मेरे इस्लामी भाईयों और बहनो! -अल्लाह आप पर दया करे- ज्ञात होना चाहिए कि हमारे ऊपर चार भस्त्राईल का सीखना अनिवार्य है :

**१ पहला मस्तकः ज्ञान :** इस से मुराद अल्लाह तआला का ज्ञान, उसके पैग़म्बर ﷺ का ज्ञान और इस्लाम धर्म का ज्ञान है। क्योंकि बिना ज्ञान और जानकारी के अल्लाह की इबादत करना वैध नहीं, और जो आदमी ऐसा करता है उसका अन्जाम गुमराही और पथ भ्रष्टता है, और ऐसा करने में वह ईसाईयों की मुशाबहत (छवि) अपना रहा है।

**२ दूसरा : अमल :** अतः जिस आदमी ने ज्ञान प्राप्त किया और उसके अनुसार अमल नहीं किया, उस ने यहूदियों की मुशाबहत अपनाई, क्योंकि उन्होंने ने ज्ञान तो प्राप्त किया, किन्तु उसके अनुसार अमल नहीं किया। तथा शैतान के हीलों में से एक हीला यह भी है कि वह मनुष्य के दिमाग में यह वस्त्र डालते हुए उसे ज्ञान से घृणा दिलाता है कि वह ऐसी अवस्था में अपनी अज्ञानता के कारण अल्लाह के यहाँ माजूर (क्षम्य) समझा जाएगा। हालाँकि उसे नहीं मालूम कि जिस मनुष्य के लिए ज्ञान प्राप्त करना सम्भव है और उसने ज्ञान प्राप्त नहीं किया तो उस पर हुज्जत कायम हो गई। और यही हीला नूह अलैहिस्सलाम की कौम का भी था जिस समय : “उन्होंने अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ों को ओढ़ लिया।” ताकि उन पर हुज्जत कायम न हो।

**३ तीसरा: दावत :** (जो कुछ धर्म-ज्ञान आप ने सीखा है उसकी ओर दूसरों को दावत देना) क्योंकि उलमा (धर्मज्ञानी) और दावत का कार्य करने वाले ही पैग़म्बरों के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं, और अल्लाह तआला ने बनी इस्लाईल पर धिकार किया है; क्योंकि वे लोग “आपस में एक दूसरे को बुरे कामों से जो वे करते थे, रोकते न थे, जो कुछ भी यह करते थे यकीनन वह बहुत बुरा था।” दावत और शिक्षा फर्ज़े किफाया है, यदि यह कर्तव्य इतने लोग अन्जाम देते हैं जो पर्याप्त हैं तो कोई भी गुनहगार नहीं होगा, और अगर सभी लोग इसे छोड़ देते हैं, तो सब के सब गुनहगार होंगे।

**४ चौथा : कष्ट पर धैर्य करना :** अर्थात् ज्ञान प्राप्त करने, उस पर अमल करने और उसकी ओर दावत देने के मार्ग में आने वाली कठिनाईयों और कष्टों पर सब्र करना।

हम ने इस पुस्तक में संछेप को ध्यान में रखने के साथ-साथ नबी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम से शृङ्ख रूप से प्रमाणित बातों का उल्लेख किया है, हम सम्पूर्णता का दावा नहीं करते, क्योंकि सम्पूर्णता को अल्लाह ने अपने लिए विशिष्ट किया है, बल्कि यह एक निम्न योग्यता वाले व्यक्ति का प्रयास है, यदि यह उचित है तो अल्लाह की ओर से है, और यदि ग़लत है तो यह हमारे नफ़स और शैतान की ओर से है, और अल्लाह और उसके पैग़म्बर इस से वरीयू़ज़िम्मा हैं, और अल्लाह उस आदमी पर दया करे जो उद्देश पूर्ण रचनात्मक आलोचना के द्वारा हमें हमारी त्रुटियों और कमियों से अवगत करे।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि इस पुस्तक के संकलन, इसकी छपाई और वितरण, इसके पाठन और शिक्षा में भाग लेने वाले हर व्यक्ति को बेहतरीन प्रतिफल से सम्मानित करे, इसे उनकी ओर से स्वीकार करे और उनके अन्न व सवाब को दूना करे।

अल्लाह तआला ही सर्वाधिक ज्ञान रखने वाला है, तथा अल्लाह तआला की दया और शान्ति अवतरित हो हमारे पैग़म्बर व सरदार मुहम्मद ﷺ पर, और आप की सभी संतान और साथियों पर।

इस्लामी दुनिया के विद्वानों और छात्रों के एक समूह ने इस किताब को सराहा और सिफारिश की है।  
अधिक जानकारी, या इस किताब को मंगाने के लिए : साइट / [www.tafseer.info](http://www.tafseer.info) ईमेल / [hin@tafseer.info](mailto:hin@tafseer.info)  
प्रथम संस्करण : रबीउल अब्द, 1431 हि।

## विषय सूचि

विषय	पेज नं.
कुरआन मजीद तिलावत करने की फ़ज़ीलत, सूर्यतुल फ़ातिहा	2
कुरआन करीम के अन्तिम तीन पारे और उनकी संषिक्त तफ़सीर	4
मुसलमान के जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्न	71
दिलों के कर्म	88
एक गंभीर बात-चीत	99
ला-इलाहा इल्लल्लाह की गवाही	117
मुहम्मदुरसूलुल्लाह की गवाही	119
तहारत	121
हैज़ और इस्तिहाज़ा के मस्ताएँ	126
इस्लाम में औरतों का मुकाम	128
नमाज़	132
ज़कात	138
रोज़ा	142
हज्ज तथा उमा	145
विभिन्न लाभदायक बातें	150
शरई झाड़-फूँक	155
दुआ	162
कुछ अहम दुआएँ	164
लाभदायक व्यापार	169
सवेरे-सांझ की दुआएँ	171
महान सवाब वाले कथन और कर्म	174
ऐसे काम जिन्हें करना निषिद्ध है	181
सदा के लिए जन्मता या जहन्जम की ओर	185
वुजू का तरीका	
नमाज़ का तरीका	
ज्ञान अनुसार कर्म की अनिवार्यता	

कर आन मरीद तिलावत करने की फ़र्जीलत

कूआप अल्लाह का कलाम है, और सारे कलामों से अफ़ज़ल और बढ़कर है, इसकी बड़ाई सारी बातों पर उसी तरह है जिस तरह अल्लाह तआला की फ़जीलत उसकी सुष्टि पर है, मुंह से विकल्पी बाली तमाम बातों में सब से उत्तम बात इसकी तिलायत है।

④ कृत्यान् लीलाम् दित्यान् और पङ्क्ति वाली की फ़र्जीलत में बहुत दी हरीती आई है, जिस में से कुछ हरीती यह है :

१० नवाज़ लियार्स की फर्जीता (लाला) : नवी लोक का फर्मान है :

○ कुरआन इसका काफ़ा है : "كُمْ مَّا بِهَاتَرْ وَهُوَ جُوْ كُورआن سीखे और सिखाए।" (बुखारी) "لَخَرْ سُكُمْ مَّنْ تَعْلَمَ الْقُرْآنَ وَعَلِمَهُ" (भुखारी) यही का काफ़ा है :

○ कराता पहली की फजीलत : नवा लोक का कराता

(असार) यहाँ उस के लिए एक नेकी है, और एक नेकी इस गुना नैकियों के बराबर है। (तिर्मिरी)

○ **कृत्यान् शीखने**, उसी याद करने और सिलायत में महारत की **फ़ज़ीलत** : नवी **का** कर्मान है: (مَثُلُ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَهُوَ حَافِظٌ لَهُ مَعَ السَّفَرَةِ الْكَرِيمَةِ الْبَرِّةِ وَمَثُلُ الَّذِي يَقْرَأُ وَهُوَ يَعْاهِدُ وَهُوَ عَلَيْهِ شَدِيدٌ فِلَةُ أَخْرَانِ)

“उस आदमी की मिसाल जो कुरुआन पढ़ता है और वह उसका हाफिज़ भी है, मुकर्रम और नेक लिखने वाले (फरिश्ते) जैसी है, और जो आदमी कुरुआन बार-बार पढ़ता है और उसके पढ़ने में उसे कठिनाई होती है तो उसके लिए दो गुना सराब है” (बुखारी व मुस्लिम)

और नबी ﷺ ने यह भी फरमाया :

**يُقال لصاحب القرآن:** أَفْرَا وَارِيقٍ وَرَئِيلٍ كَمَا كُنْتُ تُرِئِيلٌ فِي الدُّنْيَا فَلَمَّا مُنْزَلْتُكَ عَنِّي أَهْمَرَ آنِي لِقَارِئِي  
“کوہ آن پڑنے والے سے کہا جائے گا : کوہ آن پڑتا جا اور چढ़تا جا، اور उसी ترह سے ٹھہر  
ٹھہر کر پہ جیسا کि سانسار میں پढ़ کرतا�ا، کیونکि تera مکام اننیم آیات کے پاس ہے  
جیسے ت پہنے گا । (لیلیتی)

खुलाबी कहते हैं कि असर में यह बात आई है कि : कुर्रान की आयतें जन्मत की सीढ़ियों के बराबर हैं, अतः कारी को कहा जाएगा : कुर्रान की जितनी आयतें तू पढ़ता है उसी के बराबर सीढ़ियों पर चढ़ता जा, तो जो पूरा कुर्रान पढ़ लेगा वह आखिरत में जन्मत की सब से ऊँची सीढ़ी पर पहुँच जाएगा, और जो कुछ हिस्सा पढ़ेगा वह उसी के बराबर सीढ़ियों पर चढ़ेगा, तो सवाब की सीधा वह होगी जहाँ उसकी किंगत का अन्त होगा।

○ **उस व्यक्ति का साधारण जिसके बादों ने कुरुआन की तालीम हासिल की:** नवी ﷺ का फर्मान है : (من قرأ القرآن وتعلمه وعمل به أليس يوم القيمة تاجاً من نور ضوء مثل ضوء الشمس، وبعكس والآباء حملتني لا يقوم بهما الدنيا فيقولان: بم كسبنا؟ فيقال: بأخذ ولدكما القرآن ) الحاكم

"जिसने कुरान पढ़ा, उसे सीखा और उसके अनुसार अमल किया तो उसके वालिदेन को कियापत के दिन नूर का ताज पहनाया जाएगा, जिसकी प्रकाश सूरज की किरण की जैसी होगी, और उन्हें दो ऐसे जोड़े पहनाए जाएंगे जिनकी बराबरी संसार नहीं कर सकती, तो वे पूछेंगे : यह हमें किस अमल के कारण पहनाया गया है? तो जवाब दिया जाएगा : तुम्हारी ओलाद के कुरान सीखने के कारण।" (हाकिम)

○ अस्थिरता में कार्रवाल प्रबली याली के लिए कार्रवाल की हिप्पोक्रेट : नवी का कर्मान है :

‘‘**كُوْرَآن** پढ़ने वालों के लिए **كُوْرَآن** का इकाया : नज़ारा

‘‘**أَفْرَءُوا الْقُرْآنَ فَلَهُ يَوْمُ الْقِيَامَةِ شَفِيعًا لِّأَصْحَابِهِ**’’ (كُوْرَآن पढ़ा करो, इसलिए कि वह कियागत वाले दिन अपने पढ़ने वाले के लिए सिफारिशी बन कर आएगा।’’ (मुस्लिम)

(الصيام والقرآن يُفعّان للعند تمام الصيام)، أعياد،

“پھر اُمّ کو آنے والے کے لیے تیار کیا رکھ دیں گے۔” (ابوالفضل میر لٹکی)

० यहाँ पर्याप्त ग्रीष्मीय सौनाएँ नहीं होते : नदी का कुमारन है :



(وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِّنْ بَيْتِ اللَّهِ يَتَلَوُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَيَقْتَدِرُونَ عَلَيْهِمْ الشَّكِيرُ  
وَغَشِّيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَذَكَرْهُمُ اللَّهُ فِيمَلَّ عَنْهُمْ) أوراد

"जो लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर में इकट्ठा होकर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं, और एक दूसरे को उसका दर्स देते हैं तो उन पर (अल्लाह की ओर) से शान्ति नाज़िल होती है, और रामत उन्हें दांप लेती है, और फरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और अल्लाह तआला अपने पास भीजूट फरिश्तों में उनका जिक्र फरमाता है।" (अबूदाऊद)

❖ कुरुआन की तिलावत के आदाब : इन्हे कसीर ﷺ ने कई एक आदाब बताए हैं जिन में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है : 1- कुरुआन पढ़ने वाला व्यक्ति पाकी के बिना न तो कुरुआन छुए और न पढ़े, 2- तिलावत करने से पहले मिस्वाक करे, 3- अच्छा कपड़ा पहने, 4- कांचा की ओर चेहरा करे, 5- जमाही आने लगे तो कुरुआन पढ़ने से रुक्न जाए, 6- तिलावत करते समय बिना ज़रूरत वात न करे, 7- ध्यान के साथ पढ़े, 8- वादे की आयतों पर ठहर कर अल्लाह से मांगे और सज़ा वाली आयतों के पास पनाह चाहे, 9- कुरुआन खुला हुवा न छोड़े और न ही उस पर कोई चीज़ रखे, 10- तिलावत करते समय क़ारी एक दूसरे पर अपनी आवाज़ ऊँची न करें, 11- और बाज़ार, शोर और हल्ला वाली जगह पर कुरुआन की तिलावत न करें।

❖ कुरुआन की तिलावत कैसे की जाए : अनस ﷺ से नबी ﷺ की किराअत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया : आप तिलावत करते समय अपनी आवाज़ को खींचा करते थे, जब आप बिस्ते पढ़ते तो بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ के साथ अपनी आवाज़ को खींचते, بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ के साथ अपनी आवाज़ को खींचते, और अर्जुमें के साथ अपनी आवाज़ को खींचते।

❖ तिलावत के सवाब का कई गुना बढ़ना : जो व्यक्ति इख्लास के साथ कुरुआन पढ़ेगा वह सवाब का हकदार है, लेकिन उसका यह सवाब उस समय कई गुना बढ़ जाता है जब वह दिल को हाजिर करके ध्यान देकर और समझ कर पढ़ता है, तो हर हफ्फ (अक्षर) के बदले एक से लेकर सात सौ गुना तक उसे नेकी मिलती है।

❖ दिन और रात में कुरुआन की तिलावत की मात्रा : सहाबए किराम ﷺ ने हर दिन के लिए एक हिस्सा मुकर्रर (नियुक्त) कर रखा था, और उनमें से किसी ने सात दिन से पहले कुरुआन ख़त्म करने की पाबन्दी नहीं की, बल्कि तीन दिन से कम में कुरुआन ख़त्म करने से रोका गया है।

इसलिए मेरे भाई कुरुआन की तिलावत के लिए आप अपना समय लगाइए और हर दिन के लिए एक हिस्सा नियुक्त कर लीजिए जिसकी हर हाल में पाबन्दी किजिए, क्योंकि थोड़ा सा काम जिसे बराबर किया जाए ज्यादा करने से बेहतर है जिसकी पाबन्दी न की जाए। यदि आप भूल गए या सो गए तो उसे दूसरे दिन पढ़ लीजिए, आप ﷺ का फ़र्मान है :

(مَنْ نَامَ عَنْ حِزْبِهِ أَوْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ فَقَرَأَهُ فِيمَا بَيْنَ صَلَةِ الْفَجْرِ وَصَلَةِ الظُّهُرِ كُتِبَ لَهُ كُلُّاً فَرَأَهُ مِنْ اللَّيلِ)  
"जो अपने मुकर्रर हिस्से या उसमें से कुछ को बिना पढ़े सो जाए फिर उसे अगले दिन फ़ज़्र और ज़ुह़ के बीच पढ़ ले तो वह उसके लिए उसी तरह लिखा जाता है गोया कि उसने उसे रात ही में पढ़ी हो" (मुस्लिम)

और आप उन में से न होजाएं जिन्होंने कुरुआन को छोड़ दिया या उसे भूला दिया, यह छोड़ना किसी भी प्रकार का क्यों न हो, जैसे तिलावत छोड़ देना, या तर्तील छोड़ देना, या ध्यान न देना, या उसके अनुसार काम न करना, या उस के माध्यम से शिफा न चाहना।



شُورَةُ الْجَنِّ الْأَلِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَهُ إِنَّمَا يُعِذِّلُكُ فِي رَفْقِهَا وَتَشْكِي إِلَى اللَّهِ  
وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَيِّعُ بَصِيرَةُ الَّذِينَ يُظْهِرُونَ  
مِنْكُمْ مَنْ نَسَأَ لَهُمْ مَا هُنَّ بِأَمْهَنَتْهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ  
وَلَذْنَهُمْ وَلَاهُمْ يَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا وَإِنَّ  
اللَّهَ لَعَفُوٌ عَفُورٌ وَالَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْ نَسَاءِهِمْ مُمْبَعُودُونَ  
لَمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقْبَةٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَأَذْلِكُ فَتَعْظِيْنَ  
يَهُ وَاللَّهُ يُعَلِّمُ عَمَلَوْنَ حَيْرًا فَمَنْ لَمْ يَحْدُثْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ  
مُتَسَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَأَ فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سَيِّنَ  
مُسْكِنَاتِ ذَلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَلْكَ حُدُودُ اللَّهِ  
وَلِلْكُفَّارِ عَذَابٌ أَلِيمٌ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُفُّوَا  
كَمَا كُفِّيَتِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا إِنَّهُ بِيَنْتَهِتْ وَلِلْكُفَّارِ  
عَذَابٌ مُهِمٌّ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَنْتَهُمْ بِمَا  
عَمِلُوا أَخْصَاصَهُ اللَّهُ وَسُوْهُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

**5** वेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफत करते हैं वह अपमानित किए जाएंगे, जैसे उन से पहले के लोग किए गए थे<sup>2</sup>, और वेशक हम खुली आयतें उतार रहे हैं, और काफिरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है।  
**6** जिस दिन अल्लाह उन सब को दोवारा उठाएगा,<sup>3</sup> फिर उन्हे उनके किए हुए अमल की जानकारी देगा<sup>4</sup>, जिसे अल्लाह ने गिन रखा है<sup>5</sup>, और जिसे यह भूल गए थे<sup>6</sup>, और अल्लाह तआला हर चीज से अवगत (बाख्वर) है<sup>7</sup>।  
**7** क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाशों और धरती की हर चीज़ को जानता है<sup>8</sup>, तीन व्यक्तियों की कानाफूसी नहीं होती मगर अल्लाह उनका चौथा होता है<sup>9</sup>, और न पाँच<sup>10</sup> की

मगर वह उनका छठा होता है, और न उस से <sup>11</sup> कम की और न उस से ज्यादा की मगर वह उनके साथ ही होता है<sup>12</sup>, जहां भी वह हो<sup>13</sup> फिर कियामत के दिन उहें उनके अमल की जानकारी देगा<sup>14</sup>, अवश्य अल्लाह हर चीज़ का जानकार है।

**8** क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोक दिया गया था<sup>15</sup>? वह फिर भी उस मना किए हुए काम को दोवारा करते हैं, और आपस में पाप की<sup>16</sup> और नाइंसाफी की और रसूलों की नाफरमानी की<sup>17</sup>, कानाफूसियां करते हैं। और जब तेरे पास आते हैं तो तुझे उन शब्दों में सलाम करते हैं, जिन शब्दों में अल्लाह ने नहीं कहा<sup>18</sup>, और अपने दिल में<sup>19</sup> कहते हैं कि अल्लाह (तआला) हमें हमारे इस कहने पर सजा क्यों नहीं देता<sup>20</sup>? उनके लिए नरक काफी है<sup>21</sup>, जिसमें ये जाएंगे<sup>22</sup>, तो वह कितना बुरा ठिकाना है<sup>23</sup>।  
**9** हे ईमानवालो! जब तुम कानाफूसी करो तो यह कानाफूसी पाप, उदण्डता और रसूल की नाफरमानी की न हो<sup>24</sup>, बल्कि नेकी और तक्दीर की बातों पर कानाफूसी करो<sup>25</sup>, और उस अल्लाह से डरने रहो जिसके पास तुम सब इकट्ठा किए जाओगे<sup>26</sup>।  
**10** कानाफूसी<sup>27</sup> ताँ शैतान का काम है<sup>28</sup>, जिस से ईमान वालों को दुःख हो<sup>29</sup>, परन्तु अल्लाह की मर्जी बिना वह<sup>30</sup>

जाहिर सभी को जानता है उस से कोई भी बात छिपी नहीं रहती।

**11** अर्थात् उल्लिखित संख्या से न कम, जैसे एक और दो, और न तीन से ज्यादा, जैसे छः और सात।

**12** अर्थात् वह जो कानाफूसी करते हैं उसे उसका ज्ञान होता है, उस में से कोई भी चीज़ उस से छुपी नहीं रहती।

**13** अर्थात् जिस जगह भी हो।

**14** जानकारी देगा ताकि वह जान ले कि उनकी कानाफूसियां उस से छुपी नहीं थीं, और ताकि उस का बताना उन लोगों के लिए फटकार हो जो छुपी और नाक कानाफूसी करते हैं। और उनके खिलाफ प्रमाण और दुन्हत हो।

**15** यहूद के पास से कोई मुसलमान गुजरता तो वह आपस में कानाफूसी करने लगते यहां तक कि मुसलमान वुगा गुमान करने लगता तो अल्लाह न भाला ने उन यहूदियों को ऐसा करने से रोक लेकिन वह नहीं करते तो यह आयत उत्तरी।

**16** अर्थात् ईमानवालों की पीढ़ पीछे बुराई करना उहें नकलीक देना और इसी तरह की चीजें जैसे: छूट और अन्याय वाली कानाफूसियां।

**17** अर्थात् अल्लाह के रसूल विरोधी कानाफूसियां।

**18** इस से मुराद यहूद हैं वे जब नवी<sup>28</sup> के पास आते तो अस्मान अलैकुम व रहमतुल्लाह<sup>29</sup> न कह कर अस्साउ अलैक (अर्थात्: तुम पर मैत आए) कहते, और जाहिर यह करते कि वह आप को सलाम कर रहे हैं, पर उनके हृदय में यह होता कि आप की मृत्यु हो, इसके जवाब में नवी<sup>28</sup> माय (व अलैकुम) कहते। (अर्थात् तुम ने जो कहा वह तुम्हें ही आए)।

**19** अर्थात् आपस में।

**20** अर्थात् यदि मुहम्मद अवश्य नवी होते, तो उनके बारे में हमारी अपमान जनक बात करने पर अल्लाह हमें ज़रूर अज़ाब देता। और एक राय अनुसार इसका अर्थ यह है कि यदि वह नवी होते तो हमारे बारे में जो वह (व अलैकुम) कहते हैं ज़रूर कबूल किया जाना और उसी समय हमें पौत आ जाती।

**21** अर्थात् उन्हें तुरन्त मारने और छानक करने के बजाए अज़ाब के लिए नरक ही कार्रा है।

**22** अर्थात् पुर्सी।

**23** भसीर का अर्थ ठिकाना है। और वह नरक है।

**24** जैसा कि बृद्ध और मुनाफिकों किया करने तैयार है।

**25** अर्थात् फरमावार्दी की और याए न लगाने की कानाफूसी किया करो।

**26** और वह तुम्हारे आमान का बड़ना देगा।

**27** अर्थात् पाप, अन्याय और रसूल की नाफरमानी की कानाफूसियां।

**28** शैतान की ओर से है कि भी और की ताज़िह में नवी बायी उस बायी को सुन्दर बनाकर लोगों पर बोल करता और उन्हें बुरा दरवाज़ा देता।

**29** ताकि वह ईमानदारों को इन में नहीं दिल दरवाज़े, वह वह तुरन्त क्षय के निशाने पर है और उनके चिन्हों पर हो।

**30** अर्थात् जैसान उन्हें कोई नुकसान नहीं रहता, लद्दा वह कानाफूसियां जो जिन्हें वह मुन्द्र बनाकर येते करता है ईमान वाले को कहा

1 मुहादूर का अर्थ दुश्मनी और मुखालफत के हैं।

2 यह उसी तरह अपमानित किए जाएंगे जैसे उन से पहले के लोग अपमानित किए गए थे।

3 एक साथ एक ही हालत में उठाएगा, कोई ऐसा नहीं बदेगा जो न उठाया जाए।

4 अर्थात् वह उन्हें उनके धिनाउने कर्तृत से जो उन्होंने दुनिया में किए उन्हें अवगत करे ताकि उन पर दलील पूरी होजाए।

5 अल्लाह ने उन सब को धिनी कर रख्की है ऐसा नहीं होगा कि कोई सूट जाए।

6 जिसे वह लोग भूल चुके हैं उसे भी वह लोग मीजूद और अपने नाम आपाल में लिखा हुआ पाएंगे।

7 अर्थात् हर चीज से बाख्वर है क्योंकि सभी चीजें उस की नजरों के सम्में हैं।

8 उस का ज्ञान आकाशों और धरती की सारी चीजों को देखे हैं, इस तरह से कि इन दोनों में जो चीजें भी हैं उन में से कोई भी उस से छुपी नहीं है।

9 जो इस कानाफूसी को जानने में उनका साझा होता है।

10 क्योंकि वह हर संख्या के साथ होता है कम हो या ज्यादा, छिपे और कानाफूसियां

प्रमाण पर है<sup>9</sup> यहाँ करो कि अवश्य वही छुटे हैं<sup>10</sup>  
**19** उन पर शैतान ने ग़ल्बा रासिल कर लिया है<sup>11</sup>, और  
उनसे अल्लाह का जिक्र मूला दिया है<sup>12</sup> यह शैतानी सेना है<sup>13</sup>  
कोई शक नहीं कि शैतानी सेना ही धाटा उठाने वाला है<sup>14</sup>।

**20** अवश्य अल्लाह तआला और उसके رसूل के जो विरोधी  
हैं वही लोग अधिक अपमानितों में हैं<sup>15</sup>।

**21** अल्लाह तआला लिख चुका है<sup>16</sup> कि अवश्य मैं और  
मेरे रसूल ही विजयी रहेंगे, यकीन अल्लाह तआला ताकतवर  
और ग़ालिब है<sup>17</sup>।

**22** अल्लाह तआला पर और कियामत के दिन पर ईमान  
रखने वालों को आप अल्लाह और उसके رसूل के विरोधियों के  
साथ महब्बत रखते हुए कभी भी नहीं पाएंगे<sup>18</sup> चाहे वे उनके  
पिता, या पुत्र, या भाई, या समुदाय के सम्बन्धी ही क्यों न हों  
यही लोग हैं<sup>19</sup> जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान को  
लिख दिया है<sup>20</sup>, और जिन की पुष्टि अपनी रुह से की है<sup>21</sup>,  
और जिन्हें उन जननतों में प्रवेश करेगा जिन के नीचे नहरे वह  
रही हैं, और जहां यह सदा रहेंगे, अल्लाह उन से खुश<sup>22</sup> है  
और यह अल्लाह से खुश हैं<sup>23</sup>, यही अल्लाह के सेना हैं<sup>24</sup>,  
और जान लो कि अवश्य अल्लाह के सेना ही सफल हैं<sup>25</sup>।

उनकी बहुत ही बड़ी बद बखूती होगी क्योंकि कियामत के दिन हकीकतें  
स्पष्ट होजाएंगी, और मसले देखकर जान लिए जाएंगे।

**8** अर्थात् वे यह समझेंगे कि कियामत के दिन भी इन झूठी कस्मों के  
द्वारा कुछ लाभ उठा लेंगे या किसी घाटे से बच जाएंगे जैसे वे संसार में  
झूठी कस्मों के द्वारा कुछ देर के लिए कुछ लाभ उठा लिया करते थे।

**9** अर्थात् उन पर शैतान ने ग़ल्बा पा लिया है और उहे थेरे में ले लिया है।

**10** तो उन्होंने अल्लाह के आदेशानुसार काम करना छोड़ दिया।

**11** अर्थात् यही उसके अनुकारी ही उस के ग्रुप के लोग हैं।

**12** क्योंकि उन्होंने जननत का जहन्नम से, हिदायत का गुमराही से सौदा कर  
लिया है, और अल्लाह और उस के नवी के बारे में झूठी बातें कही हैं, और  
झूठी कस्में खाई हैं, वह दुनिया और आखिरत दोनों में घाटे में रहेंगे।

**13** अल्लाह और उस के रसूल से विरोध करने का अर्थ इस सूरत के  
शूल में बीत चुका है।

**14** यह भी उन्हीं लोगों में से हैं जिन्हें अल्लाह दुनिया और आखिरत  
दोनों में अपमानित करेगा।

**15** अर्थात् अल्लाह अपने पिछले ज्ञान की रोशनी में यह निर्णय कर चुका  
है कि मैं और मेरे रसूल ही प्रमाण तथा ताकत में ग़ालिब रहेंगे।

**16** अर्थात् अपने औलिया की सहायता पर कादिर और शत्रुओं पर  
ग़ालिब है उसे कोई पछाड़ नहीं सकता।

**17** अर्थात् तुम मोमिनों को ऐसे लोगों से जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल  
से दुश्मनी और विरोध कर रखा हो, दोस्ती करने वाले नहीं पाओगे।

**18** गर्व अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी करने वाले, दोस्ती करने वालों के  
बाप ही हों; क्योंकि ईमान उहें इस से रोकता है, और ईमान का पास रखने से मजबूत है।

**19** अर्थात् जो लोग उन लोगों से दोस्ती नहीं करते जिन्होंने अल्लाह और  
उस के रसूल से विरोध किया है।

**20** **كَتَبَ** का अर्थ **الْأَبْيَهِ** है : (पुख्ता कर दिया) और एक विचार यह है  
कि इसका अर्थ है : (कर दिया), और एक विचार के अनुसार इसका अर्थ  
है (जमा कर दिया)।

**21** अर्थात् उन के दुश्मनों पर उनकी सहायता करके संसार में उहें  
ताकत बढ़ती है, और अपनी इस सहायता का नाम रुह रखा है; क्योंकि  
इसी सहायता द्वारा उनके मसले में जीवन आता है।

**22** अर्थात् उसने उनके कर्मों को स्वीकार कर लिए हैं और उन पर<sup>23</sup>  
अपनी दुनिया और आखिरत की रहमत की वर्षा बरसा दिया है।

**23** और वे उन दीजों से खुश हैं जो अल्लाह ने उन्हें दुनिया और  
आखिरत में दिए हैं।

**24** यही लोग अल्लाह के सेना हैं जो उसके आदेशों का पालन करते हैं,  
उसके दुश्मनों से लड़ते हैं और उसके दोस्तों की सहायता करते हैं।

**25** अर्थात् दुनिया और आखिरत में सफलता उहें मिलने वाली है, इन्हे अब  
हातिम, तबानी और हाकिम ने रिवायत की है कि अबू उबैदा बिन जर्ह

بَلَيْهَا الَّذِينَ مَاءَنُوا إِذَا نَجَّمَ الْرَّسُولُ فَقَدْ مُوَاتَجَّ بِهِنَّ مُؤْمِنُو  
صَدَقَةً ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمْ وَأَطْهَرٌ فَإِنْ لَمْ يَعْنِدُوكُمْ فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ عَنِ  
مَا شَفَقْتُمْ أَنْ تُقْدِمُوا بَعْنَ بَدْئِي نَعْوِكُمْ صَدَقَتْ هَذَا لَمْ تَعْلَمُوا  
وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَمَاءُوا الزَّكُورَةَ وَاطْبِعُوا اللَّهَ  
وَرَسُولَهُ وَاللَّهُ خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ **١٣** إِنَّمَا إِلَى اللَّهِ الْغُلَامُ فَوْزٌ فِيمَا  
غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمْ بِهِمْ وَمَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكُبُرِ  
وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ **١٤** أَعَدَ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا سَدِيدًا إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوْا  
يَعْمَلُوْنَ **١٥** أَخْذُوْنَا أَنْتُمْ بِهِمْ جَنَّةَ فَصَدَّوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَفْهُومَهُ  
عَذَابًا مُّهِينًا **١٦** لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَاهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنْ  
شَيْءًا أُولَئِكَ أَمْحَبُّ الْنَّارَ مِنْهُمْ فِيهَا حَلِيلُوْنَ **١٧** يَوْمَ يُبَعَّثُونَ

اللَّهُ جَيْعَانًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَمَحْسُبُوْنَ أَنْتُمْ عَلَى شَيْءٍ  
**١٨** إِنَّمَا هُمُ الْكَذِّابُوْنَ **١٩** أَسْتَعِذُ عَلَيْهِمُ الْشَّيْطَنُ فَأَنْتُمْ  
أَنَّمَّا هُمُ الْكَذِّابُوْنَ **٢٠** أَسْتَعِذُ عَلَيْهِمُ الْشَّيْطَنُ فَأَنْتُمْ  
أَنَّمَّا هُمُ الْكَذِّابُوْنَ **٢١** أَنَّمَّا هُمُ الْكَذِّابُوْنَ **٢٢** إِنَّمَا هُمُ الْكَذِّابُوْنَ **٢٣**  
كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَ إِنَّا وَرَسُلُّ إِنَّكَ اللَّهُ غَوْيٌ عَزِيزٌ

**15** अल्लाह ने उन के लिए कटोर अजाब, तैयार कर रखा है  
जो आप अवश्य ये लोग जो कुछ कर रहे हैं<sup>5</sup> बुरा कर रहे हैं।

**16** इन्होंने ने तो अपनी कर्मों को ढाल बना रखा है<sup>6</sup>, और  
लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं<sup>7</sup>, तो इनके लिए  
अप्रामानजनक अजाब है।

**17** उनके माल और उनकी ओलाद अल्लाह के यहाँ कुछ  
कर्म न आएंगे, यह तो जहन्नमी हैं, सदा ही उस में रहेंगे।

**18** जिस दिन अल्लाह तआला उन सब को उठा खड़ा करेगा  
तो यह जिस तरह तुम्हारे सामने करमें खाते हैं अल्लाह तआला  
के सामने भी कर्में खाने लगेंगे<sup>8</sup> और समझेंगे कि वे भी किसी

वह जानते हैं, और जानते हैं कि वह झूठ है उस की कोई वारतविका नहीं।

**1** अर्थात् कर्में खा खा कर कह रहे हैं कि वह मुसलमान हैं, अथवा वे कर्म  
खा खा कर कह रहे हैं कि उन्होंने यहाँदियों को खाकरे नहीं बताई हैं।

**2** इस दोस्ती और वासिल पर उन के कर्म खाने के कारण।

**3** बुरे कर्मों में से।

**4** यह वही झूठ है जिस पर कुफ के कारण कतुल कर दिए जाने से  
बचने के लिए वे कर्में खा खा कर कर कहते थे कि वे मुसलमानों में से हैं,  
अपने उन कर्मों को उन्होंने अपने लिए ढाल और बचाव का माध्यम बना  
लिया था, चुनावे कतुल किए जाने से बचने के लिए जुबान द्वारा ईमान  
जाहिर करते जबकि उन के दिल मोमिन नहीं होते थे।

**5** अर्थात् वे लोगों को अपनी इन करतूतों के कारण इस्लाम से रोकते हैं।

**6** जो उन्हें अपमानित कर देगा।

**7** अर्थात् वे झूठ पर कियामत के दिन अल्लाह के सामने अल्लाह की  
कर्में खाएंगे जैसे कि वे तुम लोगों से संसार में कर्में खाते हैं। और  
कहेंगे कर्म है अल्लाह की ऐ हमारे रब हमने यह नहीं किया, और यह

अल्लाह के नाम से जो बात मेहरबान शुभ रथ करे वाला है।  
आकाशी और परती की हर चीज अल्लाह की तस्वीह  
(प्रतीकात्मा) बद्धान करती है, और वह गालिब हिक्मत याला है।  
वही है जिसने अहले किताब में से काफिरों को उनके  
धरी से, पहले हच्छ के समय निकाला, तुम्हारा गुमान भी न  
था कि वे निकलेंगे<sup>१</sup> और वे स्वयं इस भ्रम में थे कि उनके  
मज़बूत किले उन्हें अल्लाह के अजाब से बचा लेंगे<sup>२</sup>, तो उन  
पर अल्लाह का अजाब ऐसी जगह से आ पड़ा कि उन्हें  
गुमान भी न था<sup>३</sup>. और उनके दिलों में अल्लाह ने यथ  
हाल दिया, वे अपने धरों को स्वयं अपने ही हाथों से उजाड़  
रहे थे, और मुसलमानों के हाथों बर्बाद करवा रहे थे<sup>४</sup>, तो  
ऐ आँखों वालों<sup>५</sup> नसीहत हासिल करो ।

१ और यदि अल्लाह तआता उन पर देश-निकाला न लिखा होता तो अवश्य उन्हें संसार ही में अजाव देता<sup>१</sup>, और

वह आप चाहता था कि वह उसकी तलवार तले आजाएं ताकि वह उन्हें कतुल करदे, और स्वयं अबू उम्रेदा के तलवार तले जब वह आता तो अबू उम्रेदा कतरा जा गये थे, मगर जब उस्सोंने देखा कि वह इनका खयाल नहीं कर रहा है और इन्होंने कतुल कर देना ही चाहता है तो इन्होंने भी उसका कोई खयाल नहीं किया और उसे कतुल कर दिया तो यह आयत उत्तरी।

१ इस से मुराद बनू नहीं है, वह यूर्दियों का एक समुदाय था, जो हालत  
के सतान में से थे, बनू इमाइल के कठोर दिनों में वह मरीना में आकर  
बस गए थे, नशा से उनका प्रिमिमेट था, परंतु आगे चलकर इन्होंने प्रिमिमेट  
तोड़ दिया और मजा के मुश्किलों के साथ हो गए, तो अल्लाह के रखूल ने  
उनका धेराव किया यहाँ तक कि वे मरीना छोड़ने पर तैयार होगा।

कलबी का कहना है कि अहंते किताब में से सबसे पहले यादी लोग अरब महाद्विष्ट से निकाले गए, फिर उनमें से जो लोग वब गए थे उन्हें उपर विन खताब  $\frac{1}{4}$  के समय निकाल दिया गया, इस तरह पहले हथ्र के समय उनकी जलावतनी मर्दीना से हुई, और उनकी अनिम जलावतनी अहंदे फास्की में हुई, और एक राय अनुसार आखिरी हथ्र से मुगाद हथ्र के पैदान में सभी लोगों का इकट्ठा किया जाना है।

<sup>2</sup> अर्थात् ऐ मुसलमानो! बनू नजीर के गलवा और उनकी आन-बान के कारण तुम्हें यह गुपान न था कि यह अपने प्यारों से निकाल दिए जाएंगे, क्योंकि यह मज़बूत किलो वाले और भूमिपति थे, और इनके पास वह बड़े खजूर के बागीचे थे, और संतान वाले भी थे और सभी तरह के हाईयार भी इनके पास थे।

<sup>3</sup> अर्थात् स्वयं बनू नज़ीर भी इसी घ्रम में थे कि उनके मज़बूत किले उन्हे अल्लाह के अनाव से बचा देंगे।

४ अर्थात् ऐसी तरफ से उन पर अल्लाह का अज़ाब आ पढ़ा कि उनके दिल में भी यह ख्याल नहीं आया था कि यहाँ से भी उन पर अल्लाह का अज़ाब आ सकता है, और वह यह था कि अल्लाह ने अपने नवी को उन से लड़ने और उन्हें देश-निकाला करने का आदेश दे दिया था, वे कभी भी यह नहीं समझ रहे थे कि हालत यहाँ तक पहुँच जाएगी, बल्कि वे अपने को लाकरवर और गुलिब समझ रहे थे।

**نصرت بالرُّغْبَه** : ۵۔ گورے سے پورا دل جاندا بھی ہے، نبی ﷺ کا فرمائی ہے: میرے شہر میں اپنی سکھوں کا پسے بھی سے کیا گئی ہے کہ میرا بھروسہ ایک مہینے کی بیویوں کی دُڑھ پر ہوتا ہے تبھی سے اس پر میرا ڈار بیٹ جاتا ہے।

६ ऐसा उम सभ्य हाय जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि अब उनका देश-निकला होगा, तो वे हाय हाय में कि मुमलमान उनके धरों में न रह गई और यह उनके रहने के काविल न रह गई, वे अनदर से अपने धरों को संवेद उत्ताहने लग गए, और मुमलमान खादर से उत्ताहने लगे। और जोड़ी और उर्ध्व चिन जुड़ेर का कहना यह है कि जब नवी झूल ने उनसे इस बात पर मुहूर्त कर ली हिं तिनमा सामान वे अपने ऊंटों पर लाद कर ले जा सकते हों ले जाएं, तो उन्हें जो लकड़ीयों और शालों अच्छे लगते उन्हें उत्ताहकर अपने ऊंटों पर लाद लेते और जो बचा रहता उन्हें मुमलमान नहूं कर देते।

<sup>7</sup> अर्थात् यह जान लो कि जो लोग अल्लाह का वादा लौटते हैं और उसे से दूरमनी करते हैं उनके साथ वह ऐसा ही करता है।

**४** योद्धा अस्त्राहन ताजला ने उनके लिए यह न लिख दिया होता और उनके बारे में यह विराम्य न कर दिया होता कि यह अपने पुरी से निकाल दिए

لَا يَنْهِدُ قَوْمًا يَوْمَ مُسْتُونٍ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادِدُونَ مَنْ  
حَادَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ، وَلَوْكَانُوا إِبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ  
أَوْ إِخْرَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أَوْ لِئِلَّكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمْ  
إِلَيْكَنَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحِ مِنْهُ وَيَدِ خَلْهُمْ جَنَّتْ بَغْرِي  
مِنْ تَحْنِنِهَا الْأَنْهَرُ خَلِيلِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا  
عَنْهُ أُولَئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

سورة الحجّة

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ أَعَزِيزُ الْحَكِيمُ  
١ هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِن دِينِهِمْ  
لَا وَلِلْحَسَنِ مَا طَنَنَتْ مَنْ يَغْرِبُوا وَظَلَّمُوا أَنَّهُمْ مَا يَنْعَمُونَ  
خُصُّوْنَهُمْ مِنْ أَنَّ اللَّهَ فَانْتَهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْسِبُوا وَقَدْ  
فِي قُلُوبِهِمُ الرُّغْبَةُ يُغْرِبُونَ بِمَوْتِهِمْ يَأْتِي دِرَهَمٌ وَيَأْتِي الْمُؤْمِنُونَ  
فَاعْتَرُوا يَأْتُونِي الْأَبْصَرُ ٢ وَلَوْلَا أَنْ كَنَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ  
الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ أَلِيمٌ

अखिरत में उनके लिए आग का अज्ञाव तो ही ही।  
 १० यह इसलिए हुआ कि उन्होंने अल्लाह तआला और उसके रप्तान का विरोध किया<sup>१०</sup> और जो भी अल्लाह का विरोध करेगा तो अल्लाह तआला भी कठोर अज्ञाव देने वाला है।  
 ११ तुम ने खगूरों के जो पेड़ काट डाले या जिन्हें तुमने उनकी जड़ों पर बांकी रहने दिया यह सब अल्लाह तआला के आदेश से थे<sup>११</sup>, और इसलिए भी कि कुर्कमियों को अल्लाह तआला अपमानित करे<sup>११</sup>।

जाएंगे तो उन्हें इस तरह अन्नाव देता कि या तो वे कठुल कर दिए जाने या बन्धी बना दिए जाते, जैसा कि बनू कृष्णा के साथ किया गया कि उनके जयानों को कठुल कर दिया गया और बाली को बन्धी बना लिया गया, और उनका माल मूरलमार्नों के लिए पुरीमत बन दिया गया।

<sup>9</sup> अर्थात् उनका देश-निकाला हर्सलिए, कुवा कि उन्होंने अल्लाह और उसके रम्यन का विरोध किया और नव्वीन के साथ बादा लोदा।

१० यह वृन्त का विवाह करना आप नवा के भाष्य द्वारा नाप्राप्त है।  
 १० वनू नर्सीर की लड़ाई में कुछ मुसलमानों ने उन्हें क्रौंचित करने के लिए उनके खूबीयों के पेटों को काटना शुभ किया तो वनू नर्सीर के नोएं जो अलग दिवाव में थे वे थे कहने लगे कि मुसलमद! क्या आप यह नहीं कहते थे कि : “आप अलगाव के नहीं हैं, और दांग के बजाए अम्ल व गर्जन और भलाई चाहते हैं, तो क्या खूबीयों के पेटों को काटना और उन्हें जलाना भलाई है? क्या आप यह जीते हुए उत्तरी गढ़ हैं उन से यह है कि जमीन में फ़सल फैलाना जायज़ है?”

११ और इसानी भी बता है कि अल्लाह उन लोगों को जो कुक्कारे हैं उन्हें अपमानित करे, और उनके कुछ देवी को काटकर और कुछ को थोड़कर क्रोधित करे, क्योंकि जब वह देखेंगे कि मसल्लमान उनके मालों में अपनी मरीं कर रहे हैं तो वह चांज उन्हें और क्रोधित करेंगे और उनकी अपमानित और देवदूती की और बदा देंगी।

ذَلِكَ يَا نَبِيُّهُمْ شَافِعُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ، وَمَن يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدٌ  
الْمِقَابِ ۝ مَاقْطَعْتُمْ مِنْ لِسَانَهُ أَوْ رَكَبَتُمُوهَا فَأَبْيَمْتُمْ  
عَلَىٰ أَصْوَلِهَا فِي أَذْنِ اللَّهِ وَلِئَزِيرِ الْفَسِيقَيْنِ ۝ وَمَا أَفَاهَ اللَّهُ  
عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَرْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَارِكَابٍ  
وَلِكُنَّ اللَّهُ يُسْلِطُ رَسُولَهُ، عَلَىٰ مَن يُشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ  
قَدِيرٌ ۝ مَا أَفَاهَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرْبَىٰ فِيلَهُ وَلِرَسُولِ  
وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَسْمَنِ وَالْمَسْكِينِ وَأَبْنِ السَّبِيلِ كَلَّا لَيَكُونَ  
دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِالرَّسُولِ فَحَذُورُهُ وَمَا  
نَهَكُمْ عَنْهُ فَانْهُوا وَأَنْقُوا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝  
لِلْفَقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أَخْرَجُوا مِنْ دِيْرِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ  
يَتَعْجَلُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرَضُوا نَا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ، فَأَوْلَئِكَ  
هُمُ الصَّدِيقُونَ ۝ وَالَّذِينَ بَيْوَهُو الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ  
يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَحِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً  
مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْتِرُونَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْكَانَ بِهِمْ خَاصَّةً  
وَمَن يُوقَ شَعَّ نَفْسِهِ، فَأَوْلَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

गरीबों का<sup>७</sup> और यात्रियों का है<sup>८</sup>, ताकि यह धन तुम्हारे धनवानों के हाथों में ही धूमता न रह जाए<sup>९</sup>, और तुम्हें जो कुछ रसूल दें उसे ले लो, और जिस से रोक दें उससे रुक जाओ<sup>१०</sup>। और अल्लाह तआला से डरते रहा करो, अवश्य अल्लाह कठोर यातना वाला है।

अल्लाह कठार यातना पाता है ।  
 (फै का धन) उन मुहाजिर गरीबों के लिए है जो अपने  
 परों और अपने धनों से निकाल दिए गए हैं, वे अल्लाह  
 के फ़ज्ल और सुशी के इच्छुक हैं । और अल्लाह और उस  
 के सभी सम्मो होगे ।

के रसूल की सहायता करते हैं<sup>13</sup>, यही सच्चे लाग है।  
१० और उन के लिए जिन्होंने इस घर में (मदीना में) और  
ईमान में इस से पहले जगह बना ली है<sup>15</sup>। और अपनी  
तरफ हिज्रत करके आने वालों से महब्बत करते हैं<sup>16</sup>, और  
मुहाजिर को जो कुछ दे दिया जाए उस से वह अपने दिलों में  
कोई तंगी नहीं रखते<sup>17</sup>, बल्कि स्वयं अपने ऊपर उनको  
प्राथमिकता (तर्जीह) देते हैं<sup>18</sup> चाहे उनको स्वयं उनको  
कितनी ही अधिक ज़रूरत हो<sup>19</sup>, बात यह है कि जो अपने  
नफ्स की कंजूसी से बचाया गया वही कामयाब है<sup>20</sup>।  
१० और (उनके लिए) जो उनके बाद आएं<sup>21</sup> जो कहेंगे कि

॥ जार (उनक लाइ) जा उनक बाद जार ॥ जा कहन ॥ १४॥

की खातिर उसे खर्च किया जाएगा।

5 अर्थात् इस से मुराद बनू हाशिम और बनू मुत्तिव हैं, अर्थात् उनके मुहताज लोगों के लिए हैं, क्योंकि वह सदृका नहीं खा सकते, तो उसके बदले फ्रू में उनके लिए हिस्सा रखा गया।

६ अर्थात् उने वालक-वालिकों का है जिन के पिन उनके बलिग होने से पहले मर गए।  
७ इस से भरपार गरीब और ज़ख्मितमंड लोग हैं।

८ इस से मुराद वह यात्री हैं जो यात्रा कर रहे हों और यात्रा के समय उनके पैसे खत्म हो गए हों।

9 कि धनी उस पर प्रभावशाली रहे और गरिबों और ज़स्तरतमदी के हाथ न आ सके।  
10 अर्थात् एक के धन से दोनों तरफ तो नहीं हो सके तो उन्हें दोनों तरफ देना

१० अर्थात कुप्रे के घन में से जो तुम्हें वह द उम लत ला आए तिम नन  
से वह तुम्हें रोक दें उस से रुक जाओ, उसे मत लो।

११ इससे प्राद मक्का है, अर्थात् मक्का बलों ने उन्हें मक्का से निकलने पर

मजबूर कर दिया जिस के कारण उन्हें मद्दा होड़ देना पड़ा, इसलिए इसके फैसे मैं उनका भी हिस्सा रखा गया, ताकि यह घन उनके काम आए, और उन्हें बेनियाज़ (निःस्पृह) कर दे।

12 अर्थात् वह दुनिया में रोज़ी और आखिरत में अस्ताह की सुगन्धों के इच्छुक है।  
13 काफिरों से जिमान करते हैं।

14 अर्थात् यही सच बोलने और सच्चाई में पथ देता और मज़दूर लोग है।  
 15 इस से मुराद मरीना के अन्तर्गत हैं जो महानिशेष के मर्मज्ञ अपने में गाले।

16 क्योंकि उन्होंने मुहाजिरीन से अच्छा बताव किया और उन्होंने उन्होंने और उन्हें उन्हें देखा था।

<sup>17</sup> अर्थात् सहजिरीन को है जो उसमें देखे जाने से वह बोलता

अपने दिलों में जलन, हसद, डाह, गुम्सा और इत्युक्ति करने, वैष्णव न्यौटे इस से खुशी होती है, शरू में महाराजिन, अन्मीठियों के दरों में ही रात रो वे किए ज

ਨੇ ਕਿਸੇ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕੀ।

माल-धन में ज्ञानित किया हो जा सकता है। इसके अलावा, उन्हें ज्ञानी होना चाहिए, जो इन मुद्रों की विभिन्नता के बारे में जानकारी दें।

मुन्हाजरण के हमसा दूसरे वर्ग में उम्र भी कम नहीं हो सकती है, तो यह चाहे ले में पहली उम्र उनीं को दे दूं और वह कुछ दो बारे छोड़ सके। ले वह मुख्यिम ही में छोड़ दें तो उसकी दो वर्ष दूर वह सब जान सके।

18 अद्यता दुनियावी हिस्से में वह उपर्युक्त आवार रख उन्हें प्राप्तिकरण होते हैं।  
 19 'खासासा' आ अर्थ अधिक हारत और जहाज के हैं।

मैं इसके साथ किसी भी व्यक्ति को देखने का अधिकार नहीं है।

११ इससे मुराद कियायल रक्त आने वाले वह सारा जान हो इच्छाम  
प्राप्त साथ उनकी पैरवी करने वाले हैं।

ऐ हमारे रव! हमें बरुशा दे और हमारे उन भाइयों को भी जो हमसे पहले ईमान ता चुके हैं<sup>1</sup>, और ईमानदारों के बारे में हमारे दिन में कपट है और दुश्मनी न डाल, हमारे रव!

अधिक्य तू प्रेम और मेहर्वानी करने वाला है।

<sup>11</sup> क्या उने मुनाफिकों को नहीं देखा<sup>2</sup> कि अपने अहले किताब काफिर भाइयों से कहते हैं यदि तुम देश से निकाल दिए गए तो हम भी तुम्हारे साथ ज़्यसर निकल जाएंगे, और तुम्हारे बारे में हम कभी भी किसी की बात स्वीकार नहीं करेंगे<sup>3</sup>, और यदि तुम से युद्ध कीबा जाए तो हम तुम्हारी ही सहायता करेंगे<sup>4</sup>, लेकिन अल्लाह न आला गवाही देता है कि यह विल्कुल झूठे हैं।

<sup>12</sup> यदि देश से निकाले गए तो उनके साथ कभी भी न जाएंगे और यदि उन से युद्ध किया जाए तो यह उनकी सहायता भी न करेंगे<sup>5</sup> और यदि सहायता के लिए आ भी गए तो पीछे फेर कर भाग खड़े होंगे, फिर मदद न किए जाएंगे<sup>6</sup>।

<sup>13</sup> (मुसलमानों विश्वास करो) कि तुम्हारा भय इनके दिलों अल्लाह के भय के मुकाबले बहुत अधिक है<sup>7</sup>, यह इसलिए कि यह नासमझ लोग है<sup>8</sup>।

<sup>14</sup> यह सब घिलकर भी तुम से लड़ नहीं सकते, हाँ यह और बात है कि खिलों के अन्दर हों या दीवारों की आड़ में हों<sup>9</sup>, उनकी लड़ाई तो आपस ही में बहुत कठोर है<sup>10</sup>, यद्यपि (अगरचि) आप इन्हे इकट्ठा समझ रहे हैं, लेकिन इनके दिल आपस में एक दूसरे से अलग हैं<sup>11</sup>, इसलिए कि यह नासमझ लोग है<sup>12</sup>।

<sup>1</sup> जो इस्लाम में पहल करने वाले मुहाजिरों और अन्सार से महब्बत करते और उनके लिए बधिष्ठाश की दुआ करते रहते हैं।

<sup>2</sup> खिल से मुराद खोट, हसद और जलन है, और (اللَّذِينَ امْنأَنَّا) में सब से पहले महाबा किराम शामिल हैं, क्योंकि ईमान वालों में सबसे अशरफ और अफजल यही लोग हैं, और आयत का सियाक भी इन्हीं के बारे में है, तो जो अन्य दिल में इनके बारे में कपट और डाढ़ रख जैसे याफिक रहते हैं तो उसका अधिक हिस्सा पहुंच चुका है, क्योंकि वह अल्लाह का नाकरमान है और उसके अंदरता और उसके बाहर की उम्मत के अच्छे और बेलतरीन व्यक्ति से दुर्मनी रखता है, ऐसे लोगों का के भाल में कोई हिस्सा नहीं और न ही ऐसे लोगों का है जो उन्हे गालियां दें और दुख पहुंचाएं और उन्हे चुप करें।

<sup>3</sup> इसमें मुराद अब्दुल्लाह बिन उबे और उसके साथी हैं जिन्होंने बनू नजीर को बन रखा था जो कि तुम लोग जमे रहो और बहादुरी से मुकाबला करो, हम तुम्हें असाधारण नहीं खोड़ेंगे, यदि तुम से युद्ध किया गया तो हम भी तुम्हारे साथ घिलकर लड़ाई करेंगे और यदि तुम्हे धरों से निकाल गया तो हम भी अपने पर बार छोड़ कर तुम्हारे साथ निकल जाएंगे।

<sup>4</sup> अर्थात् जो इसे तुम्हारा साथ निकलने से रोकना चाहते हैं हम उनकी बात कभी नहीं मानेंगे बात कि ताना ही लम्बा समय क्यों न बीत जाए।

<sup>5</sup> अर्थात् यदि तुम्हे अपने दुर्मनों से लड़ना पड़ा तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे, इसके बाद अल्लाह ने उनके दुष्टलापा और कामाया कि यह जो उनके साथ निकल जाने और सहायता करने का बाधा कर रहे हैं, उसमें वे झूठे हैं।

<sup>6</sup> और ऐसे ही हुवा बनू नजीर और उनके साथी यादियों को देश से निकाला गया तो मुनाफिकों उनके साथ नहीं गए और न उन्होंने बनू नजीर और खीबर के यादियों की मदद की जिन से युद्ध हुवा था।

<sup>7</sup> अर्थात् हार कर।

<sup>8</sup> अर्थात् उन मुनाफिकों की फिर कोई सहायता नहीं करेगा, बल्कि अल्लाह उन्हें अपमानित कर देगा, और उनका निकाल उन्हें कुछ भी काम न देगा।

<sup>9</sup> अर्थात् इन मुनाफिकों या यादियों के लिए में अल्लाह से अधिक तुम्हारा भय है।

<sup>10</sup> अर्थात् यदि उनमें समझ लोती तो यह अच्छी तरह जान लेते कि उन पर तुम्हें गुलियां करने वाला अल्लाह ही है, इसलिए वह ज्यादा हकदार है कि उससे उरा जाए।

<sup>11</sup> यह सब इकट्ठा खोकर भी तुम से नहीं लड़ सकते, मगर यह कि वह तड़पानों और धगों में छुपकर या दीवारों की आड़ से तुम पर डम्पले करे, क्योंकि यह अधिक ही डरघोक लोग है।

<sup>12</sup> अर्थात् वे स्वयं आपस में एक दूसरे के लिए बड़े कठोर और बेरहम हैं।

<sup>13</sup> अर्थात् उनकी यह एकता बाब दिखावे का है वास्तव में वह एक दूसरे गेंगे उनसे रुक कर उसकी सजा में डरते रहो।

رَأَيْتَ جَاءُوكَ مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَغْفِرْنَا

وَإِلَّا لِلَّذِينَ أَمْنَأْرَبَنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ١١

الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْرَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ

الْكِتَابِ لَيْسَ أُخْرِجُتُمْ لَتَخْرُجَ مَعَكُمْ وَلَا نُطْعِمُ فِيكُمْ

أَهْدًا أَبْدَأْوَانِ فَوْتِلَتُمْ لَتَصْرِنَكُمْ وَاللَّهُ يَشَهِدُ إِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ

لَيْسَ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَيْسَ قُوْتِلُوا لَا يَصْرُونَ ١٢

وَلَيْسَ تَصْرُوهُمْ يَأْتُونَ الْأَذْبَرَ ثُمَّ لَا يَصْرُونَ ١٣

لَا شَدَّرَهُمْ فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذِلِّكَ بِأَهْمَمِ قَومٍ

لَا يَنْفَهُونَ ١٤ لَا يُقْتَلُونَ كُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرْبَى

مَحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَأِ جُدُرِ بَاسْهُمْ بِنَهْمَ سَدِيدَهُمْ

جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَنَقَ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ١٥

كُمْلُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فِي مَا ذَاقُوا أَبْيَالَ أَمْرِهِمْ وَلَمْ عَذَابَ

الْأَلِيمِ ١٦ كُمْلُ الشَّيْطَانِ إِذْقَالَ لِلْأَنْسَنِ أَكْفَرَ فَلَمَّا كَفَرَ

قَالَ إِنَّفِ بَرِيَءٌ مَّا تَكَ إِنِّي أَخَافُ أَهْلَهُ الْعَنَوْيَنَ ١٧

<sup>15</sup> उन लोगों की जो उनसे कुछ ही पहले वीते हैं जिन्होंने अपने कर्तृत का मजा चख लिया<sup>16</sup>, और जिन के लिए दुखदायी अजाव तैयार है।

<sup>16</sup> शैतान की<sup>17</sup> तरह कि उसने इन्सान से कहा कुक कर और जब वह कुक कर चुका तो कहने लगा : मैं तुझ से अलग हूँ, मैं तो संसार के रव से डरता हूँ।

<sup>17</sup> तो (शैतान और इस इन्सान) दोनों का परिणाम यह हुवा कि (नरक की) आग में सदा के लिए गए, और जालिमों के लिए यही दण्ड है<sup>18</sup>।

<sup>18</sup> ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरते रहो<sup>19</sup>, और सभी

के कठोर शब्द हैं, सब के विचार अलग हैं।

<sup>14</sup> अर्थात् उनमें समझ लोती तो वह इन्होंने ज़्यसर जान लेते और सब इकट्ठा होकर उसकी पैरोंपरी करते और उनमें आपस में भिन्नता न होता।

<sup>15</sup> अर्थात् मज्जा के अधर्मियों की तरह।

<sup>16</sup> इस से मुराद उनके कुक का वह चुग परिणाम है जिसमें उन्हें बदर के युद्ध में दोचार होना पड़ा था, और बनू नजीर के पुढ़ में मात्र ६ मर्हिने पहले ही चुका था।

<sup>17</sup> अर्थात् उनका उदाहरण उन्हें अकेले छोड़ देने में ओर उनकी मालायता न करने में देखान की तगड़ है, कि वह इन्सान को कुक करने पर उक्कला है और उसे इस के लिए युवमूर्ग बनाकर पेंग करना है और उम पर उधमना है, जिस वह शैतान को मान कर और उसके काढ़वे में ज़ाकर उसे कर बेड़ा है तो वह कहता है कि अब मैं नुस्खे में अलग बना दूँ।

<sup>18</sup> यह शैतान की ज़त है जिसमें वह इन्सान से ज़रना नाला लोड़ते था। इसला है।

<sup>19</sup> अर्थात् जिन बातों का वह नुस्खे जादेब दे उन्हें करो, और जिन ने

فَكَانَ عِقْبَتُهُمَا أَنْهَمَا فِي النَّارِ خَلِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَرُوا  
الظَّالِمِينَ ١٧ يَكْتُبُهَا الَّذِينَ مَأْمُوا أَنْقُوا اللَّهَ وَلَنْ يُنْظَرُ  
نَفْسٌ مَا فَدَدَتْ لِغَدْرٍ وَأَنْقُوا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ حَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ  
وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَهُمْ أَنفُسُهُمْ أُولَئِكَ  
هُمُ الْفَسِيقُونَ ١٨ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَمْحَنُ  
الجَنَّةَ أَصْحَبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاسِدُونَ ١٩ لَوْا زَلَّا هَذَا  
الْقُرْءَانُ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَشِيعًا مُضَدًّا عَامِنْ خَشْيَةَ  
اللَّهِ وَتَلَكَ الْأَمْثَلُ نَصَرِّبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَنْفَكِرُونَ  
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّاهُو عَلِيهِ الْغَيْبُ وَالشَّهَدَةُ  
هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ٢٠ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّاهُو  
الْعَلِيُّ الْقَدُوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ  
الْجَبَارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشَرِّكُونَ  
هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصْرِرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى  
يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٢١

सुरजल मुस्तहिना । - 60

गुरु करता हूँ अन्काह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।  
 ११ ऐ वह लोगों जो ईमान लाए हो! मेरे और स्वयं अपने  
 दूरभानों को अपना दोस्त न बनाओ<sup>22</sup>, तुम तो दोस्ती से  
 उनका तरफ संदेश भेजते हो<sup>23</sup>, और वह इस हक्क का जो  
 तुम्हारे पास आ चुका है इन्कार करते हैं<sup>24</sup>, रम्यल को और  
 स्वयं तुम्हे भी<sup>25</sup> मात्र इस कारण निकालते हैं कि तुम अपने  
 रख पर ईमान रखते हो<sup>26</sup>, यदि तुम मेरे रास्ते में जिहाद के

से कि वह अल्लाह के कलाम की वह दड़ाई नहीं कर सकेगा जो उसके लिए जरूरी है, फट कर कठ-कठ हो जाता।

उन चांगों में जिन में योव-दीवार करना ज़रूरी है, ताकि वह उम्रके सदृश्यों से नर्माहत छासिल कर सके, और उम्रकी फटकारा से दब सके।

<sup>8</sup> अर्थात् जो धोज़ आंखों से देखी जाने के काविल नहीं

१० अर्थात् जो व्याज आंद्रा में देखा जाने के कावल है।

10 इसका चाचा दोबारा मज़बूता पंदा करने के लिए किया गया है।  
 11 कहुस का अंथ है जो हर बुगील में पाक, और हर कमी में परिव्रत हो, और  
 12 इसका अस्ताना उसी तरह है जिसके अस्ताना से संभव सर्वानुष्ठान हो।

एक विवाह अनुसार कृद्यम वह है जिस के अन्याय से मुक्ति नहीं दी जा सकती।  
 12 मर्मादित जो अपने मन्त्रों को अन्याय से मुक्ति देनेवाला हो, और  
 एक विवाह अनुसार समिक्षा वह है जो घटकार दिया करके अपने मन्त्रों

13 अर्थात् जो आपने भूमि के आमाल का गदाही देनेवाला और उनका खक थे।

14 ऐसा कहिए और विजेता जो कभी पराजित न हो।  
 15 अल्लाह को जबकून मेरुद उम्रकी बढ़ाई है। और एक विचार

**अनुसार :** जब्बार वह है जिस के कहार को मदा न जा सके।  
**16** अल्लाह के लिए प्रशंसित विशेषता है, जबकि सूर्य के लिए निरनीय

विशेषताओं में से है।  
17 जो हर कमी से उत्कृष्ट और उन सभी धीरों से पाक और वरनर हो जाएँ

उसकी शान के लायक नहीं।

18 अपनी मणीअन तथा इगदा के अनुमार चाजी को पढ़ा करने वाला और उन्हें बनाने वाला।

19 मृतों को बनाने वाला और उन्हें अनेक स्थल देनेवाला।  
 20 आम्मा! हमना आ विदर्ग भगवन्तु ज्ञानक आयत नं ३२० में दीन चुक्का है।

21 अथान अपनी मिथि या अपनी दुखने द्वागे भी।  
 22 यह आपने हानिव विन प्रदीव कृष्णजा के थारे में रुप समय उठी जब कह  
 — तिने — एवं देवताओं से लक्ष्मी के से ऐसे कि स्त्री के जल

एक विद्यु द्वाग मझ के पूर्णका का यह बुद्धि है कि वह कैसे अपने आक्रमण करने वाले हैं, यह कहने मझ की पूढ़ की बत है जो ८ हिन्दी में हुई।

**23.** असंघ रास देखी है करण हो सकता है उसे है तब्दी ही दो जाए

**23** अशांत हुए शमनों के कारण वह मृदुलग्न उन में है जब तक कि वह  
नुम उन्हें पर्याप्त नहीं हो।  
**24** और इस बात के लिए वे अव्याहार के समय के लिए इस कारणान् और

• और ताज़ा यह है कि वे अम्मान के समूह के लोग इन बुद्धिमत्ता वाले द्विवरीय मंटिशा (हलाही लिदायत) के इनकारों हैं जिसे समूल तुष्टी तथा सम्मेलन आता है।

25 रम्यन के तुमारे पास नाए हुए हक के अपने इसी दृष्टिकोण से उन लोगों ने उन्हें और उन्हें मध्या में निकाला कि वह तभ उन्हें क्षोभ

26 वह नहीं इस कारण निकाल रहे हैं कि दूसरे उत्तम पर इमान रखते हो

रिए और ये भी सुनी की खोज में निकलते हों (तो उन से दोनों न करो) । तुम उनके पास प्रेम-सदैश सुपा-सुपा कर खेजते हों । और ये अच्छी तरह जानता हैं जो तुमने सुपाया था वह भी जो तुमने जाहिर किया । तुम ऐसे जो भी इस घटना वे तुम पर कली काढ़ पाले तो वे तुम्हारे (खुले) दृष्टियाँ होंगी । और दुराई के साथ तुम पर हाथ उठाने के बारे और दुरे जब कहने लगे । और दिल से चाहने लगे कि तुम भी कुफ करने लग जाओ ।

**३** (मुसलमानों!) तुम्हारे लिए इब्राहीम (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) में और उनके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन सभों ने अपनी कौम में खुले शब्दों में कह दिया कि हम तुम से और<sup>१</sup>

जिन-जिन की तुम अल्लाह के सिद्धाय पूजा करते हो उन सभों से पूरी तरह मैं विमुख हूँ<sup>२</sup>, हम तुम्हारे अकीदे (आस्थाओं) का इन्कार करते हैं<sup>३</sup> । जब तक तुम अल्लाह के एक होने पर इमान न लाओ<sup>४</sup> । हम मैं तुम में हमेशा के लिए दुश्मनी और कपट पैदा होगई<sup>५</sup>, लेकिन इब्राहीम (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) की इतनी बात अपने पिता मैं हुई थी<sup>६</sup> कि मैं तुम्हारे लिए क्षमा याचना (इस्तिग्फार) जरूर करूंगा, और तुम्हारे लिए मुझे अल्लाह के

<sup>१</sup> अर्थात् यदि तुम ऐसे ही हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ।

<sup>२</sup> अर्थात् अपनी इनसे दोनों के कारण तुम चुपके चुपके इन्हें खबरे भेजते हो।

<sup>३</sup> अर्थात् मैं हर व्यक्ति के हर उस कर्म को जानता हूँ जिसे वह उन्हें खबरे भेजने के लिए करता है।

<sup>४</sup> अर्थात् यदि वे तुम पर काढ़ पा लें तो अपने दिलों में तुम्हारे विरुद्ध जो दुश्मनी सुपाए हुए हैं उसे जाहिर कर दें।

<sup>५</sup> अर्थात् वे तुम्हे मारने पाएंगे और दुग भला कहने जैसी बुरी बीजें करने लगें।

<sup>६</sup> अर्थात् तुम्हारे इस्लाम से फिर जाने और कुफ की तरफ पलट जाने के इच्छुक होंगे।

<sup>७</sup> अर्थात् तुम्हारी औलाद और तुम्हारी नातेदारियां जिन के लिए तुम काफिरों में दोनों का दम भरते हो कियामत के दिन तुम्हारे कुछ भी काम न आ सके गा, जैसे कि हातिब विन अबी बल्तआ के घटना में हुआ, वल्कि काफिरों से दुश्मनी रखना, उन से जिहाद करना और उनसे दोस्ती न करना जिमक अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है, यही तुम्हारे काम आएगा।

<sup>८</sup> अर्थात् तुम मैं जुराई करदेगा: आजाकारियों को जनत में और अदाकारियों को जहन्नम में दाखिल करेगा।

<sup>९</sup> अर्थात् प्रशंसा योग्य विशेषता है जिसकी तुम अनुकरण करो, इस आदेश में गोयाकि हातिब विन अबी बल्तआ से कहा जा रहा है कि तुम ने इब्राहीम और उनके साथियों का अनुकरण करो न किया, अतः तुम भी अपने दाल-बच्चों से उमी तरह विमुखता बरतते जैसे इब्राहीम ने अपने समुदाय के लोगों से की थी।

<sup>१०</sup> अर्थात् अल्लाह के साथ तुम्हारे कुफ करने के कारण हम, तुम से विमुख हैं, हमारे और तुम्हारे बीच कोई सम्बन्ध नहीं। **وَمَا تَبْدِلُونَ مِنْ دُونِنَا**

<sup>११</sup> से मुराद अस्माम (बुन) है।

<sup>१२</sup> अर्थात् हम तुम्हारे धर्म, या तुम्हारे कर्मों का इन्कार करते हैं।

<sup>१३</sup> अर्थात् जब तक तुम कुफ करना नहीं छोड़ोगे तुम्हारे साथ हमारा यही बर्ताव रहेगा।

<sup>१४</sup> और जब शिर्क करना छोड़ दोगे तो हमारी दुश्मनी दोस्ती में और कीना और कपट प्यार और महब्बत में बदल जाएगी।

<sup>१५</sup> अर्थात् इब्राहीम (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) की सभी बातें यही ऐसी हैं जिन में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है, सिवाएँ इस एक बात के जो उन्होंने अपने पिता से कही थी, तुम उसे अपने लिए नमूना न बनाना कि तुम भी मुशरिकों के लिए क्षमा-याचना करने लग जाओ, क्योंकि उन्होंने ऐसा उस बादे के कारण किया था जिसे जनोने

अपने पिता से किया था, तो जब यह बात खुलकर सामने आई कि उनका पिता अल्लाह का शत्रु है तो वह उससे विमुख होगए।

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَنْجِذُوا عَدُوَّكُمْ وَعَذُوكُمْ أَوْلَيَاءُ ثُلُقُورٍ  
إِنَّهُم بِالْمَوْدَةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِإِيمَانِكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ  
رَبِّكُمْ أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ حَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلٍ  
وَأَتَيْنَاهُ مَرْضَافٌ تُشْرُونَ إِلَيْهِم بِالْمَوْدَةِ وَأَنَا أَغْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ  
وَمَا أَغْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلُهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلُ  
إِنْ تَفْتَرُوكُمْ يَكُونُوا كُلُّكُمْ أَعْدَاءً وَبِيَسْطُولَمَا إِنْكُمْ أَيْدِيهِمْ وَأَلْسُنَتِهِمْ  
إِلَيْشُو وَوَدُوا لَوْتَكُفُورُونَ **۱** لَمْ تَفْعَلُوكُمْ أَرْحَامَكُو وَلَا أَزْلَدَكُمْ  
بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ **۲** قَدْ  
كَانَ لَكُمْ أَسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذَا قَاتَلُوكُمْ  
إِنَّا بِرُءُوكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبِدَا يَنْهَا  
وَبِيَنْكُمُ الْعَدُوُّ وَالْبَعْضَاءُ أَبْدَأَ حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ إِلَّا  
قَوْلُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَا سَتَغْفِرَنَ لَكَ وَمَا أَمْلَأْتَ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ  
رَبِّنَا عَلَيْكَ تَوْكِيدًا وَإِلَيْكَ أَبْنَانَا وَإِلَيْكَ أَنْبَانَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ **۳** رَبِّنَا لَا يَعْنَنَا  
**۴** فَتَنَّهَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَأَغْفَرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

सामने किसी चीज का कुछ भी इखिलयार नहीं<sup>१</sup>, ऐ हमार रव! तुम्ह पर हमने भरोसा किया है, और तेरी ही तरफ पलटते हैं, और तेरी ही तरफ लौटना है।

**۵** ऐ हमारे रव! तू हमें काफिरों के इम्तिहान में न डाल, हमारे पालने वाले! हमारी गलतियों को माफ करदे, अवश्य त ही ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

**۶** अवश्य तुम्हारे लिए उनमें<sup>२</sup> अच्छा नमूना है, (और अच्छी पैरवी है खास कर) हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह की और कियामत के दिन की मुलाकात की उम्मीद रखता हो<sup>३</sup>, और यदि कोई मूँह मोड़ले<sup>४</sup> तो अल्लाह तभ्याला पूरी तरह से बेनियाज है<sup>५</sup>, और बड़ाई और प्रशंसा के लायक है<sup>६</sup>।

**۷** क्या तज्जुब कि करीब ही अल्लाह तभ्याला तुम में आर तुम्हारे दुश्मनों में प्रेम डाल दे<sup>७</sup>, अल्लाह को सभी

<sup>15</sup> अर्थात् मैं तुम से अल्लाह का अजाब थोड़ा सा भी नहीं टाल सकता।

<sup>16</sup> इसकी तपसीर में मुजाहिद कहते हैं कि इसका अर्थ यह है कि हमे इनके हाथों से किसी यातना में न डाल, और न हमें अपनी तरफ से किसी अजाब में डाल कि उन्हें यह कहने का अवमर मिल जाए कि यदि यह हक पर होते तो इस अजाब से क्यों दोखाएँ होते।

<sup>17</sup> अर्थात् इब्राहीम (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) और उनके साथियों ने तुम्हारे लिए अच्छा नमूना है।

<sup>18</sup> अर्थात् यह यह नमूना बात उन लोगों के लिए है, जो तुम्हारा और आखिरत में अल्लाह से भलाई की उम्मीद रखते हैं।

<sup>19</sup> अर्थात् मुँह फेरकर।

<sup>20</sup> अपनी भयलुक से।

<sup>21</sup> अर्थात् प्रशंसा के योग्य है, और उसके औलिया भी तारीफ के कवित है।

<sup>22</sup> अर्थात् तुम्हारे और मज्जा के मुश्किलों के बीच, और वह इस तरह से कि वे

لَفَدَنَ لِكُفُّرِهِ أَسْوَأُ حَسَنَةٍ لِمَنْ كَانَ يَنْجُو أَهْلَهُ وَالْيَوْمُ الْآخِرُ  
وَمَنْ يَنْوِلْ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْمَلَ  
يَتَكَبُّرُونَ بَيْنَ الَّذِينَ عَادُوكُمْ مِنْهُمْ مَوْدَةٌ وَاللَّهُ قَدِيرٌ وَاللَّهُ عَفُورٌ رَحِيمٌ  
لَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقْنَطُوكُمْ فِي الَّذِينَ لَمْ يُغْرِبُوكُمْ  
مِنْ دِرْكِكُمْ أَنْ تَبْرُوْهُ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ  
إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَنَطُوكُمْ فِي الَّذِينَ وَأَخْرَجُوكُمْ  
مِنْ دِرْكِكُمْ وَظَاهِرُوْهُ أَعْلَى إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلُّهُمْ وَمَنْ يَتَوَلُهُمْ فَأُولَئِكُمْ  
هُمُ الظَّالِمُونَ ۖ يَأْتِيهَا الَّذِينَ أَمْنَوْا إِذَا جَاءَهُمْ كُمُ الْمُؤْمِنُونَ  
مُهَاجِرَاتٍ فَأَمْتَحِنُوهُنَّ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنُونَ  
فَلَا تُرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لَا هُنَّ جُلُّ لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحْلُّونَ لَهُنَّ وَمَا أُوتُهُمْ  
مَا آنَفُقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ  
وَلَا تُمْسِكُوْكُمْ بِعِصْمَ الْكَوَافِرِ وَسْتَأْوِمَا آنَفَقْتُمْ وَلَا سُلُّوا مَا آنَفَقْتُمْ  
ذَلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَعْلَمُكُمْ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۖ وَإِنْ فَانَّكُمْ  
سَيِّءُ مِنْ أَزْوَاجِكُمُ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقِبَتُمْ فَثَانُوا الَّذِينَ ذَهَبُتْ  
أَزْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا آنَفُقُوا وَأَنْقَوْا اللَّهُ أَلَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۖ

कुदरतें हैं, और अल्लाह बड़ा माफ करने वाला और रहम करने वाला (दयाल) है।

8 जिन लोगों ने तुम से धर्म के बारे में युद्ध नहीं किया और तुम्हें देश से नहीं निकाला, उनके साथ अच्छा बर्ताव<sup>2</sup> और न्याय करने से<sup>3</sup> अल्लाह तआला तुम्हें नहीं रोकता, बल्कि अल्लाह तआला तो न्याय करने वालों से<sup>4</sup> प्रेम करता है।

इस्लाम स्वीकार कर लें तो वे तुम्हारे ही धर्म के मानने वाले होजाएं, चुनाविं उनमें से कुछ लोग फले मक्का के बाद इस्लाम ले आए और अपने इस्लाम में मुश्लिस रहे, और उनसे और पहले इस्लाम लाने वालों से खूब दोस्ती भी हांगई, इन लोगों ने उनके साथ मिलकर जिहाद भी किया और नेकी और अल्लाह से कृत के बहुत से काम किए, यहाँ तक कि नवी<sup>5</sup> ने अबू सुफ्यान<sup>6</sup> की बेटी उम्मे हऱ्वाब<sup>7</sup> को अपने निकाह में आने का शफ बढ़ाया, लेकिन यह महब्बत उनसे उस समय हुई जब वह मक्का फतह होने या उसके बाद इस्लाम ले आए, और अबू सुफ्यान<sup>6</sup> ने अल्लाह के रसूल से दुश्मानी छोड़ दी, अबू हूरैरा<sup>8</sup> से रिवायत है कि उन्होंने कहा, अल्लाह के दोन को मज़बूत करने के लिए मुर्तद होने वालों से सब से पहले अबू सुफ्यान बिन हव्वاء<sup>9</sup> ने युद्ध किया, और उन्हीं के बारे में यह आयते करीमा उत्तरी:  
عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بِيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادُوكُمْ مِنْهُمْ مَوْدَةً

1 अर्थात् वह सारी चीज़ों पर अपार शक्तिशाली है, दुश्मनों के दिलों को फेर कर उन्हें अपनी माफी और दया के अन्दर ले आने की भी शक्ति रखता है।

2 अर्थात् तुम्हें उनके साथ नेकी वाले काम करने जैसे नातेदारी जोड़ने, पड़ोसियों को लाभ पहुँचाने और मेहमान नवाज़ी इत्यादि से नहीं रोकता।

3 अर्थात् उनके साथ न्याय करने से, जैसे उनके अधिकारों को अदा करना, उनसे किए गए वारों का लिहाज़ रखना, उनकी अमानतों को लौटाना, और उनसे खरीदे गए सामानों का उन्हें पूरा दाम देना इत्यादि।

4 अर्थात् न्याय पसंद करने वालों से, आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला क्योंकि अब वह भी तुम्हारे धर्म में आ गई है।

9 अल्लाह तआला तुम्हें मात्र उन लोगों की महब्बत से रोकता है जिन्होंने तुम से धर्म के बारे में युद्ध किए, और तुम्हें तुम्हारे देश से निकाले<sup>5</sup>, और देश से निकालने वालों का सहायता किया<sup>6</sup>, जो लोग ऐसे काफिरों से प्रेम करें वही (अवश्य) अल्याचारी हैं<sup>8</sup>।

10 ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मोमिना औरतें हिन्दूत करके आए<sup>9</sup> तो तुम उनका इन्तिहान लो<sup>10</sup>, वास्तव में उनके ईमान को अच्छी तरह जानने वाला तो अल्लाह ही है<sup>11</sup>, परन्तु यदि वह तुम्हें ईमानदार लगती हों<sup>12</sup> तो अब तुम उन्हें काफिरों की तरफ वापस न करो<sup>13</sup>, यह उनके लिए हलाल (वैध) नहीं और न ही वह उन्हें दे दो<sup>15</sup>, और जो खर्च उन काफिरों का हुवा हो वह उन्हें दे दो<sup>15</sup>, और उन औरतों को उनका महर देकर उनसे निकाह कर लेने में तुम पर कोई पाप नहीं<sup>16</sup>, और काफिर औरतों के

तुम्हें ऐसे काफिरों से जिन्होंने मुसलमानों से युद्ध न करने, उन के विस्तर काफिरों की सहायता न करने का वचन कर रखा है, उनके साथ नेकी करने से नहीं रोकता, और न उनके साथ कोई न्यायिक बर्ताव करने से रोकता है।

5 इससे मुराद काफिरों के सरदार और उन जैसे लोग हैं, जो काफिर थे और मुसलमानों से भिड़े रहते थे।

6 अर्थात् जिन लोगों ने तुम से युद्ध किया, और तुम्हें देश से निकालने वालों की मदद की, और इन से मुराद सारे मक्का वाले, और उनके साथी हैं जो उनके साथ मुआहदे (प्रतिज्ञा) में उनके साझी थे।

7 अर्थात् उन्हें अपना दोस्त बनाएं और उनकी सहायता और मदद का सिलसिला बाकी रखें।

8 क्योंकि उन्होंने ऐसे लोगों से दोस्ती की है, जो अल्लाह, उसके रसूल, और उसकी किताब से दुश्मनी के कारण, दुश्मनी के लायक हैं।

9 अर्थात् काफिरों के पास से, दरअसल वात यह है कि जब नवी<sup>5</sup> ने हुदैविया के दिन कुरैश के लोगों से इस वात पर समझौता किया कि काफिरों में से जो मुसलमान होकर उनके पास आएगा वह उसे काफिरों को लौटा देंगे, तो जब कुछ औरतें हिजरत करके आपके पास आई तो अल्लाह ने उन्हें मुशिरों को लौटाने से रोक दिया, और उनके आज़माने और परीक्षा लेने का हुक्म दिया।

10 अर्थात् उन्हें आज़माओ ताकि तुम जान लो कि उन्हें इस्लाम से कितना लगाव है, चुनांचि कहा गया है कि उनसे कसम लिया जाता था कि वे अपने पतियों से नाराज़ होकर तो नहीं आई हैं, और न ही उन्हें जायदाद (भूसंपत्ति) की तलब है, और न कोई और सामारिक इच्छा है, बल्कि अल्लाह और उसके रसूल की महब्बत और दीने इस्लाम की राग्वत है, तो जब उनसे यह कसम लै लिया जाता तो नवी उनके काफिर पतियों के उनके महर और खर्च दे देते थे, और उन्हें काफिरों को नहीं लौटाते थे।

11 क्योंकि वह स्पष्ट है कि उनकी वास्तविक हालत को अल्लाह ही बेहतर जानता है, उसने तुम्हें इसकी जिम्मादारी नहीं सौंपी है, बल्कि तुम्हारी जिम्मेदारी मात्र इतना है कि तुम उन्हें आज़मा लो ताकि तुम पर वह बातें स्पष्ट होजाएं जो उनके इस दावे की सत्यता की पुष्टि करती हों कि वह वास्तव में इस्लाम से चाहत रखती है, और मात्र इस्लाम की खातिर ही हिजरत करके आई हैं।

12 अर्थात् आज़माने के बाद जिसका तुम्हें हुक्म दिया गया था, वह ज़ाहिर में तुम्हें मोमिना लगती हों।

13 तो तुम उन्हें उनके काफिर शौहरों के पास मत लौटाओ।

14 कोई मोमिना औरत किसी काफिर मर्द के लिए हलाल (वैध) नहीं, औरत के इस्लाम लाने से उसके शौहर से उम्मी जुदाई वाजिब होती है, मात्र उसकी हिजरत से नहीं।

15 अर्थात् उन हिजरत करने और इस्लाम स्वीकार करके आने वाली औरतों के शौहरों ने उन्हें जो महर दिया है, तुम उन्हें वापस लौटा दो, इसमा शाफ़ी कहते हैं कि यदि शौहर के सिवा उसके नानेदारों में से कोई दूसरा बिना किसी बदले के यदि महर मांगे तो वह उसे रोक ले और न दे, क्योंकि महर मात्र शौहर का हङ्क है।

16 अर्थात् इद्दत के पश्चात उनसे निकाह कर लेने में कोई आवश्यन नहीं,

जिन्हां दस्तावेज़ को अपने कब्जे में न रखो<sup>1</sup>, और जो कुछ उन काफिरों ने उपर्युक्त किया हो मांग लो<sup>2</sup>, और जो कुछ उन काफिरों ने उपर्युक्त किया हो वह भी मांग ले<sup>3</sup>, यह अल्लाह का फैसला है<sup>4</sup> जो तुम्हारे बीच कर रहा है, अल्लाह तआता बहुत है<sup>5</sup> जानने वाला और जिस्मत दाता है।

और यदि तुम्हारी कोई पनी तुम्हारे हाथ से निकल जाए<sup>6</sup> और काफिरों के पास चली जाए फिर तभ्यं उसके बदले का समय यिस जाए, तो जिनकी पलियाँ चली गई हैं उन्हें उनके बारे के बाबत है दो, और उस अल्लाह तआता से डरते होंगे जिस पर तुम ईमान रखते हो<sup>7</sup>।

जब तुम्हारा आंगने आप से इन बातों पर हो नहीं। जब तुम्हारा आंगने आप से इन बातों पर उन करने आए कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं बनाएंगा, चोरी नहीं करेगा, जिनाकारी (व्यभिचार) नहीं करेगा, न ही अपनी औलाद को मार डालेंगा<sup>10</sup>, और न कोई ऐसा आदेष (बहतान) लगाएंगा जो स्वयं अपने हाथों और दैरों के सामने गढ़ ले<sup>11</sup>, और किसी पुण्य के काम में तेरी

بِئَلَهَا الَّتِي إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَارِعْنَكَ عَلَى أَن لَا يُشْرِكُنَّ  
بِاللهِ شَيْئاً وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَرْزِقْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِنَّ  
بِهِنْتَنَ يَفْرَرْنَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ  
فِي مَعْرُوفٍ فَبِإِعْهُنَّ وَأَسْتَغْفِرْلَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ  
بِئَلَهَا الَّذِينَ أَمْوَالَهُنَّ لَا تَوْلُوا قَوْمًا غَضِيبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ  
قَدْبِسُولُمَنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَبِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ  
١٢

## سُورَةُ الصَّافَّ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ اللَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ أَعْزَى الْحَكَمَ  
١ بِئَلَهَا الَّذِينَ أَمْوَالَمْ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ  
كَبُرُّ مُقْتَنِعًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ٢ إِنَّ  
الَّهُ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقْتَلُونَ فِي سَبِيلِهِ، صَفَّا كَلْهُمْ  
بَنِينَ مَرْصُوصَ ٣ وَإِذَا قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَنْقُوْرُمَ  
تَرْدُونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا  
زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهِدُ الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ٤

नाफरमानी नहीं करेंगी, तो आप उनसे बै'अत कर लिया कर, और उनके लिए अल्लाह से क्षमा-याचना करें<sup>14</sup>, अवश्य अल्लाह तआता माफ करने वाला रहम करने वाला (दयातु) है।  
१३ ऐ मोर्में! तुम उस कौम से दोस्ती न रखो जिन पर अल्लाह का अजाव आचुका है<sup>15</sup>, जो आखिरत से इस तरह निशाश हो चुके हैं<sup>16</sup>, जैसे कि मुर्दे कब्र वालों से काफिर निशाश हैं<sup>17</sup>।

## सूरतु स्सफ० । - 61

शूल करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बन बहुत रहम करने वाला है।  
१ आकाशों और धरती की अल्लाह की पवित्रता (पाकी) विनाकरणी है, और वही गालिब (प्रभावशाली) हिक्मत वाला है।  
२ ऐ इमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं<sup>18</sup>?

१ अर्थात् यह है कि जिस मुसलमान के पास कोई काफिर औरत हो तो वह उसकी पत्नी नहीं रहती, क्योंकि धर्म बदलने के कारण उसका निकाह खत्म हो जाया। पहले काफिरों और मुसलमानों के बीच शादी विवाह जायज़ था, काफिर मुसलमान औरतों में शादी करते थे और मुसलमान काफिर और मुश्यिक औरतों में, इस आयत के उत्तरने के बाद वह हुक्म उन काफिर औरतों के बारे में खत्म हो जाया जो मुशिक हैं, रहने काफिर किताविया औरते तो वह इन हुक्म में दाखिल नहीं, मुसलमान अब भी उन से निकाह कर सकते हैं।

२ अपनी पत्नीों के महर मांग लो जब वह इस्लाम से फिर कर उनके पास चली गई हो।

३ मुर्मास्तरीन कहते हैं कि कोई मुसलमान औरत इस्लाम से फिर कर उन काफिरों के पास चली जाती जिनका मुसलमानों से प्रतिज्ञा (संविधि) थी तो उन काफिरों में कहा जाता कि तुम इसकी महर वापस कर दो, और यदि कोई काफिर औरत इस्लाम कबूल करके मुसलमानों के पास आ जाती तो मुसलमान उसकी महर उसके काफिर शौहर को वापस लौटा देते।

४ अर्थात् दोनों और महरों की वापसी का यह हुक्म।

५ उन मुश्यिकों के साथ जिनमें हुक्मिया में ममझौता हुवा, परन्तु उन मुश्यिकों के अंतिमक जिन में कोई ममझौता नहीं, और एक क्रूल यह है कि वह हुक्म खत्म हो चुका है, क्रूलुदा कहते हैं कि महरों के लौटाने का यह हुक्म उसी जमाने के साथ खास था, परन्तु पर्ति पत्नी में से जब कोई इस्लाम स्वाक्षर कर ले तो उनके बीच तुर्दाई का हुक्म इमेशा के लिए बाकी है।

६ वह इस तरह से कि इस्लाम से मूल मोड़कर काफिरों के मुल्क में चली जाए, वह वे किनाब दाने ही रखी रख्यों न हों।

७ अर्थात् उन काफिरों में जिन्हाँ में जो गुरीमत के माल तुम्हें मिले हों उन्हें दौर्टने से पहले उन मुसलमानों को जिनकी पलियाँ काफिर मुल्कों में चली गई हैं और मुश्यिकों ने उनके महर उन्हें नहीं लौटाए हैं तो इस फैू और गुरीमत के माल में से उनके खर्च के बाबत दे दो ताकि उनके नुकसान की खण्डाई दोजाए।

८ अर्थात् कोई ऐसा काम न करो जिस से तुम अल्लाह की पकड़ में आजाओ।

९ अर्थात् इस्लाम पर आप से बै'अत करने के द्वारा से आए।

१० चाहे वह कोई भी हो। और यह फहमे मकान के दिन की बात है, क्योंकि मकान वालों की औरतें आ-आकर आप से बै'अत कर रही थीं, तो अल्लाह तआता ने आपको हुक्म दिया कि आप उनसे इस बात पर बै'अत करें कि अल्लाह के साथ किसी को माझी नहीं बनाएंगी।

११ जैसे वह जारीलियत में करती थी कि लड़ाकियों को जिन्हा गाड़ दिया करती थी।

१२ अर्थात् अपने शौहर की तरफ उन औलाद की निमित्त नहीं करेंगी जो उनसे नहीं हैं, फर्ज कहते हैं : औरत किसी पड़े हुए नौ-मीलून बच्चे को उठा लेनी और अपने शौहर से कहती के यह मेरा बच्चा है जो आपके बींध से है। इन्हे अचाव कहते हैं कि, औरत बच्ची जनती थी तो उसके बदले कोई बच्चा ने लेनी थी।

१३ अर्थात् किसी भी काम से जिस में अल्लाह का अनुकरण हो, जैसे मुल्क पर विलाप (नीति) करने, कपड़े फ़ाड़ने, सर के बाल नोचने, गला फ़ाड़ने, घंहरा और जिहाद का हुक्म उन्हें मुश्यिल लगता हो यह अल्लाह ज्ञानी।

पीटने, और तबाही और बर्बादी इत्यादि का विलाप करने से मुक्त जाने में।

१४ अर्थात् उनसे यह बै'अत लेने के बाद आप अल्लाह से उनकी मारी और बर्बादी की वाचना करें।

१५ इसमें काफिरों के सभी ग्रुप शामिल हैं, और एक राय यह है कि इससे मात्र यहीं मुराद है।

१६ अर्थात् उन्हें अपने कुक के कारण आविष्ट पर यकदम विश्वास नहीं।

१७ जैसे मूल्य पश्चात दोबारा न उठाए जाने पर आस्था रखने के कारण उन्हें अपने मृतकों के दोबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं।

१८ इन्हे अब्बास जैसे फ़रमाते हैं कि कुछ मुसलमान जिहाद कूर्ज लेने से वहाँ कहते वे कि हम चाहते हैं कि अगर अल्लाह हमें बता देता उसे मध्यसे अधिक प्रिय अमल कैसा है? तो हम उसे करते, तो जब अल्लाह ने उन्हें बता दिया

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَنْبَغِي إِنْرَهِ بَلْ إِنْ رَسُولُ أَنْهُ إِنْكُرُ مُصْنَعًا  
لِمَا بَيْنَ يَدَيِّ مِنَ الْتَّورَةِ وَبِمِثْلِ رَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي أَمْمَهُ لَخَدْهَا  
جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ<sup>٦</sup> وَمَنْ أَطْمَرَ مِنْ أَفْزَى  
عَلَى اللَّهِ الْكَذَبُ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّاهِرِينَ  
يُرِيدُونَ لِطَفْقَانُورَ اللَّهِيَّا فَوْرِهِمْ وَاللَّهُ مُتَمَّمُ تُورُهُ وَلَوْكَرَهُ<sup>٧</sup>  
الْكَفَرُونَ<sup>٨</sup> هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْمُدْعَى وَدِينَ الْحَقِّ لِيُظْهِرُهُ  
عَلَى الَّذِينَ كُلُّهُمْ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ<sup>٩</sup> يَأْتِيَهَا الَّذِينَ أَمْنَوْهُنَّ أَدْلُكُرَ  
عَلَى مَحْرَقْتُرِجِكُرْ مِنْ عَذَابِ الْأَلِيمِ<sup>١٠</sup> نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمُجْهِدُونَ  
فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَا تَوَلِّ كُرْ وَأَنْفِسُكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرُكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ<sup>١١</sup>  
يَغْرِي لَكُرْ دُنُوبُكُرْ وَلَدُخْلُكُرْ جَنَّتِ بَغْرِي مِنْ تَحْنَهَا الْأَنْهَرُ وَسِكَنَ  
طَبَيْهِ فِي جَنَّتِ عَدِنِ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمِ<sup>١٢</sup> وَلَخَرِي تَبْحُوتَهَا نَصْرٌ  
مِنَ اللَّهِ وَفَنْحُ قَرِيبٌ وَسِرِّ الْمُؤْمِنِينَ<sup>١٣</sup> يَأْتِيَهَا الَّذِينَ أَمْنَوْا كُوفَرَا  
أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْمَوْارِيْعَنَ مِنْ أَنْصَارِيْعَنَ إِلَى اللَّهِ  
قَالَ الْمَوْارِيْعَنَ تَخْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَأَمَّا مَنْ طَائِفَهُ مِنْ بَنَتِ إِنْرَهِ بَلْ  
وَكَفَرَ طَائِفَهُ فَأَيْدِنَا الَّذِينَ أَمْنَوْهُنَّ عَدُوْهُمْ فَأَنْصَبَهُوا لِظَّاهِرِينَ<sup>١٤</sup>

१ तुम जो करते नहीं उसका कहना अल्लाह को बहुत नाप्रसंद (अप्रिय) है ।

२ अवश्य अल्लाह तआला उन लोगों से प्रेम करता है जो उसके रास्ते में पंक्तिवद्ध (सफ वस्ता) होकर जिहाद करते हैं। जैसे कि वह सीसा पिलाई हुई इमारत है ।

३ और (याद करो) जबकि मूसा (अङ्गुष्ठा) ने अपनी कौम से कहा है मेरे समुदाय के लोगों! तुम मुझे क्यों सता रहे हो

<sup>1</sup> अर्थात् अल्लाह तआला ऐसी वातों से अधिक नाराज होता है, और एक कौल यह है कि यह ऐसे लोगों के बारे में है जो नवीं अङ्गुष्ठा के पास आते हो उनमें से एक कहता कि मैं अपनी तलवार लेकर लड़ा, और मैं ने इतने इतने लोगों को मार गिराया, परन्तु न तो वह लड़ा होता और न किसी को उसने मारा होता ।

<sup>2</sup> अल्लाह तआला यहाँ उनसे यह बयान कर रहा है कि अल्लाह को अपने बन्दों के आमाल में से सब से अधिक प्रिय अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना है, और हीसे शरीफ में है : "सारी चीजों का सार : इस्लाम है, और उसका खन्बा : नमाज है, और उसकी चौटी : अल्लाह के रास्ते में जिहाद है ।"

<sup>3</sup> अर्थात् वह आपस में एक दूसरे से मिल जाते हैं यहाँ तक कि वह एक चीज़ की तरह हो जाते हैं, और ऐसा अल्लाह के दीन पर उनकी मज़बूती के कारण होता है, इस सम्बन्ध में वह ज़रा भी लेट नहीं करते, तुरन्त एक जुट हो जाते हैं, दुश्मन उनमें घुस नहीं सकता ।

<sup>4</sup> जब अल्लाह तआला ने यह बताया कि वह अपने रास्ते में जिहाद करने वालों को प्रसंद करता है, और उनसे महब्बत करता है, तो उसने यह बात भी स्पष्ट कर्दी कि मूसा (अङ्गुष्ठा) और इसा (अङ्गुष्ठा) दोनों ने लोगों को तीहोंद का आदेश दिया और दोनों ने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया और जिन लोगों ने इनका विरोध किया वह अल्लाह की सज़ा के हकदार हुए, ताकि

जबकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ<sup>५</sup>, तो जब वे टेढ़े ही रहे तो अल्लाह ने उनके दिलों की (और अधिक) टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह तआला नाफूर्मान कीम को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं देता ।

<sup>6</sup> और जब मर्यम के पुत्र इसा ने कहा है (मेरे समुदाय) इमाङ्गल की ओलाद! मैं तुम सभों की ओर अल्लाह का रसूल हूँ, अपने से पहले की किताब तौरत की मैं पुष्टि करने वाला हूँ, और अपने बाद आने वाले एक रसूल को मैं तुम्हें खुशखबरी सुनाने वाला हूँ जिन का नाम अहमद है<sup>९</sup>, फिर जब वह उनके पास स्पष्ट प्रमाण लाए तो यह कहने लगे यह तो खुला जादू है<sup>१०</sup> ।

<sup>7</sup> और उस व्यक्ति से अधिक अन्यायी और कौन होगा जो अल्लाह पर झूट गढ़े? जबकि वह इस्लाम की ओर बुलाया जाता है<sup>११</sup> और अल्लाह ऐसे जालिमों को हिदायत नहीं देता<sup>१२</sup> ।

<sup>8</sup> वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपनी पूँक से बुझाद<sup>१३</sup>, और अल्लाह अपने नूर को परिपूर्ण करने वाला है काफिर दुरा ही क्यों न माने ।

<sup>9</sup> यह वहाँ अल्लाह है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन आर सत्य धर्म देकर भेजा, ताकि उसे दृश्य सारे धर्मों पर गालिव करदे<sup>१५</sup>, मुण्टपूजक नाखुश ही क्यों न हों<sup>१६</sup> ।

मुहम्मद (अङ्गुष्ठा) की उम्मत आप के साथ वह सब कुछ करने से डरे जो मूसा (अङ्गुष्ठा) और इसा (अङ्गुष्ठा) की कौम ने उनके साथ किया ।

<sup>५</sup> उन वातों का विरोध करके जिनका मैं तुम्हें आदेश दे रहा हूँ, उन शारी'अतों में जो अल्लाह ने तुम पर अनिवाय किया है, या गालिया देकर और बुराइयाँ बयान करके मुझे क्यों सता रहे हो? विस्तार से इसका चर्चा सुरुतुल अङ्गुष्ठा अयत न० ६६ में हो चुका है ।

<sup>६</sup> अर्थात् तुम मुझे क्योंकर सता रहे हो जबकि तुम्हें इसकी जानकारी है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ, और रसूल का आदर-भाव किया जाता है, और उसका मान-मर्यादा होता है, मेरे रसूल होने में तुम्हें कुछ भी शंका नहीं क्योंकि तुम उन मौज़ज़ों (चमत्कारों) को अपनी आँखों से देख रहे हो, जो मेरी रिसालत स्वीकार करने पर तुम्हें विवश कर रहे हैं, और जो तुम्हें दृढ़ विश्वास का लाभ दे रहे हैं ।

<sup>७</sup> अर्थात् जब उन लोगों ने सत्य को छोड़ दिया और अपने नवी को सत्याता तो अल्लाह ने उनके इस पाप के बदले उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया और वह सत्यता से विमुख होगा ।

<sup>८</sup> अर्थात् मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारे पास इन्जील लेकर आया हूँ कोई ऐसी चीज़ लेकर नहीं आया हूँ जो तौरत के प्रतिकूल हो, बल्कि इसमें ऐसी वातें हैं जिनकी मैं तुम्हें खुश-खबरी देने वाला हूँ, फिर क्योंकर तुम मुझ से नफरत और पृथग करते हों और मेरा विरोध कर रहे हों ।

<sup>९</sup> तो जब बात ऐसी है तो कोई कारण नहीं कि तुम मुझे झटलाओ ।

अहमद हमारे नवी की कौम है, इसके अर्ध वास्तव में ऐसी व्यक्तियों के हैं जिसकी गुणों के कारण उसकी इतनी प्रशंसा होती हो कि उतनी किसी और की नूँ की जाती हो ।

<sup>१०</sup> अर्थात् इसा (अङ्गुष्ठा) जब उनके पास मौज़ज़ों को लेकर आए तो उन्होंने उसे जादू ठाना और कहने लगे : यह जो हमारे पास लेकर आए हैं वह तो खुला जादू है, और एक कौल यह है कि इस से मुराद नवी की है, जब आप मौज़ज़ों (चमत्कारों) को लेकर आए तो मक्का के काफिर कहने लगे यह तो खुला जादू है ।

<sup>११</sup> जो सारे धर्मों में उत्तम और सर्व श्रेष्ठ है, तो जब इसका द्वाल यह है तो वह दसरों पर झूट बांध ही नहीं सकता तो अपने ग्रन्थ के विश्वद्व झूट क्यों गढ़ेगा ।

<sup>१२</sup> और जिनका ऊपर चर्चा हुवा वे भी उन्हीं अल्यावारियों में से हैं ।

<sup>१३</sup> अर्थात् उनका हाल इस्लाम का अपमान करने और अपनी झूटी वातों के द्वारा लोगों को उसकी हिदायत से रोकने के लिए प्रयास करने में उस व्यक्ति के हाल की तरह है जो महान नूर को अपने मुँह से पूँक कर बुझाना चाहता हो ।

<sup>१४</sup> इस्लाम धर्म को पूरे संसार में ग्रालिव करके और उसे दूसरे धर्मों पर बुलन्द करके ।

<sup>१५</sup> ताकि उसे सारे धर्मों पर ग्रालिव कर दे और उनपर उसे श्रेष्ठता और उत्तमता प्रदान करदे ।

<sup>१६</sup> अर्थात् हर अवस्था में ऐसा होकर रहेगा ।

१० ऐ ईमान शलो! क्या मैं तुम्हें वह व्यापार बतलाऊं जो अल्लाह के रास्ते में तन, मन और धन से जिहाद करो, और अल्लाह के रास्ते में तन, मन और धन से जिहाद करो, वह तुम्हारे लिए बेहतर यदि तुम में ज्ञान हो।  
 ११ अल्लाह तभीला पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और अल्लाह के रास्ते में तन, मन और धन से जिहाद करो, वह तुम्हारे लिए बेहतर यदि तुम में ज्ञान हो।  
 १२ अल्लाह तभीला तुम्हारे पाप माफ करदेगा<sup>2</sup>, और तुम्हें उन जन्मों में पहुँचाएगा, जिन के नीचे नहरे वह रही होगी, और साफ सुधरे धरों में जो अद्वन के जन्मत में होंगे<sup>3</sup>, वह बहुत बड़ी मंकृतता है।  
 १३ और तुम्हें एक दूसरा उपहार भी देगा जिसे तुम चाहते हो, वह अल्लाह की सहायता और तुरन्त फृतह है,<sup>4</sup> ईमानदारों को खुशखबरी देती।  
 १४ ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के मददगार बन जाओ<sup>5</sup>, जिस तरह मर्याद<sup>(۴۷)</sup> के बेटे इसा<sup>(۴۸)</sup> ने हवारियों (मित्रों) में कहा : कि कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने<sup>6</sup>? हवारियों ने कहा हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं<sup>7</sup>, तो इमाईं आईं को औलाद में से एक गुट तो ईमान लाया,<sup>8</sup> और एक गुट ने कुकुर किया<sup>9</sup>, तो हमने मोमिनों को उनके दुश्मनों के विरोध में सहायता की<sup>10</sup> तो वो विजयी होगए।

<sup>1</sup> अर्थात् अमल को तिजारत की जगह में रखा गया, इसलिए कि इसमें भी उनके व्यापार की तरह ही लाभ होगा, और वह लाभ जन्मत में जाना और नमक में बचना है, यही व्यापार है जिसकी व्याख्या अगली दोनों आयतों में आइ है, क्योंकि इन दोनों आयतों का अर्थ यह है कि ईमान और जिहाद का मूल्य अल्लाह के बहुत जन्मत है और वह बहुत लामदायक विक्री है।

<sup>2</sup> पहले उम मामान का चर्चा हुवा जिस से वह व्यापार कर रहे हैं, और यहाँ उस मूल्य का चर्चा हुवा है जिसका उसने उससे बाद किया है, अर्थात् यदि तुम ईमान लाओ तो तो वह तुम्हारे पाप माफ कर देगा।

<sup>3</sup> हमेशां वाले दोगों में होंगे, जहाँ न मौत आएगी कि वह उपहार खात्म होजाए और न वहाँ से निकलना ही होगा।

<sup>4</sup> अर्थात् यह माझी जिसका चर्चा हुवा और जन्मत में जाना इतनी बड़ी सफलता है कि उससे बढ़कर कोई सफलता नहीं, और ऐसी कामयादी है कि कोई भी कामयादी उसकी बाबती नहीं कर सकती।

<sup>5</sup> अर्थात् वह तुम्हें एक और उपहार भी देगा जो तुम्हें पसन्द है और जिसे तुम चाह रहे हो।

<sup>6</sup> और यह अल्लाह की ओर से तुम्हारी मदद और ऐसी जीत है जो वहुत जल्द होने वाली है, वह तुम्हें विजेता बनाएगा, अर्थात् कुरीश के खिलाफ तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम उन को जीत लोगे, अता कहते हैं इससे मुगाद फारस और स्लम की जीत है।

<sup>7</sup> आयत का अर्थ यह है कि ऐ मुहम्मद! आप ईमानवालों को संसार में मदद और जीत और परनोक में जन्मत की खुशखबरी दे दी जिए।

<sup>8</sup> अर्थात् धर्म की इस सहायता पर जमे रहो जिस पर तुम हो।

<sup>9</sup> अर्थात् अल्लाह के धर्म की इसी तरह सहायता करो, जिस तरह इसा<sup>(۴۸)</sup> के हवारियों ने की थी, जब इसा<sup>(۴۸)</sup> ने उन से कहा था : कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने? तो उन्होंने कहा : हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं।

<sup>10</sup> अर्थ यह है कि तुम में से कौन है जो उन दोनों में जो अल्लाह से करीब करने वाली हैं मेरी मदद करो? और यह हवारी इसा<sup>(۴۸)</sup> के मददगार और उनके मुखिलस साथी थे जो सब से पहले उन पर ईमान लाए, यह टोटल ۹۲ आदमी थे।

<sup>11</sup> पाक गुट ईसा<sup>(۴۸)</sup> पर ईमान लाया।

<sup>12</sup> और एक गुट ने उनके साथ कुकुर किया।

<sup>13</sup> अर्थात् हमने सत्यपरिथयों को असत्यपरिथयों पर शक्ति प्रदान की।

<sup>14</sup> तो उन्होंने उन पर विजय प्राप्त कर ली, कतादः ने अल्लाह तभीला के कौल :

<sup>15</sup> याहू़ اَنْتَ اَنْتَ اَنْتَ اَنْتَ اَنْتَ اَنْتَ اَنْتَ اَنْتَ اَنْتَ اَنْتَ

के बारे में उल्लेख किया है कि : अल्लाह की कृपा

से यही हुआ, आप के पास ۱۹۰ लोग आए और “अक्वा” में आप से वै'अत की अल्लाह तभीला ने

अपने धर्म के गोलिय कर दिया, अल्लाह के स्मूल<sup>(۴۹)</sup> ने उन लोगों से जो आप में

अक्वा में मिले थे कमांगा : तुम अपने में से ۹۲ लोगों को निकलो, जो अपनी छीम

में मेरे कर्फ़ाल होंगे जिस तरह छवरी ईसा विन मर्याद<sup>(۵۰)</sup> के कर्फ़ाल थे, किंतु

अपने धर्म की समझ है, जैसा कि मालिक विन अनस में कहत है।

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 لَيَسْتُ مِثْلُهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ بِالْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ  
 لَهُ الْكِبَرُ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأَمْمَاتِ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَسْلُو  
 عَنْهُمْ أَيْمَانَهُمْ وَرَبِّكِمْ وَرَعِيلَهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا  
 مِنْ قَبْلِ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ وَآخَرُونَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلِمُهُمْ  
 وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ  
 ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ مَثَلُ الَّذِينَ حُمِلُوا التَّزَرُّدَةَ لَمْ يَ  
 يَحْمُلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا يَنْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ  
 الَّذِينَ كَذَّبُوا بِعِلْمِهِ وَاللَّهُ لَا يَهِيءُ لِلنَّاسِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ  
 قُلْ رَبِّ الْأَنْبِيَاءِ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلَى مَاءَ اللَّهِ مِنْ  
 دُوَنَ النَّاسِ فَقَمْتُمُ الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَنِدِيقِنَ وَلَا يَنْمِنُونَ  
 أَكَدَّ إِيمَانَكُمْ أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ قُلْ إِنَّ  
 الْمَوْتَ الَّذِي تَفَرُّوْتُ مِنْهُ فَإِنَّمَا مُلْقِيَكُمْ تَعْرُّدُونَ  
 إِنَّ عَلَيْهِ الْعَيْبِ وَالشَّهَدَةِ فَيُنَتَّشِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

## سُورَةُ الْجُمُعَةِ - 62

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेड्वॉन बहुत रुक्न करने वाला है।  
 १ सारी दोनों जो आकाशों और धरती में हैं अल्लाह द्वारा पकड़ा करती हैं, जो बादशाह, बहुत पाक<sup>15</sup>, गान्धी और किम्जन जान है।  
 २ वही है जिसने अनपढ़<sup>16</sup> लोगों में उन्हीं में से एक रुक्न भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर मुनाता है<sup>17</sup>, और उनको पाक करता है<sup>18</sup>, और उन्हें किताब और किम्जन सिखाता है<sup>19</sup>, अवश्य यह इससे पहले स्पष्ट गुप्राही में थे।

अल्लाह के रुक्न<sup>15</sup> ने उन नुक्कासे कहा : तुम लोग अल्लाह की जैन पर<sup>(۵۰)</sup> कर्फ़ाल होगे, जैसे ईसा विन मर्याद<sup>(۵۰)</sup> के रुक्नों उनके हड्डी थे, और मैं उन्होंने कोप करने वाले हूँ। तो उन लोगों ने कहा : ठीक है।

१५ कुदूस वह इस्ती है जो हड्डी रेव में पांचत्र है।  
 १६ उम्मीदन से मुगाद अग्रव<sup>१६</sup> है, जिस में कुदूस तो क्रक्कर नग लिखना रुक्न जाने थे और कुदूस एसे थे जो अक्षय तग्ग एवं नदी सकाने थे, क्रक्कर वह अल्लाह नदी थे, उम्मी बालव में रोमा व्यक्ति है जो न लिखना रुक्न थे, और न लिखना हूँ कोई दोनों पढ़ सकता है, और अग्रव जैन अग्रव एवं मैं हूँ हूँ।

१७ अर्थात् कुरुआन पढ़ कर मुनाता है, काट्रूद इमादे रिंद वह अल्लाह है, लिख पढ़ नदी सकाना, और न दौर्दी उम्मीने लिखना रुक्न जाने में मौजूदा है।

१८ अर्थात् उन्हें कुकुर, गाय और दूरे प्रजालाक में पांचत्र जाना है, और एक कौल यह यह है कि ईमान द्वारा उनके दिनों को पांचत्र करना है, और उन्हें पाक-दिल बना देना है।

१९ किताब में मुगाद कुरुआन और किम्जन में मुगाद सुन्नत है, और सुन्नत में मुगाद धर्म की समझ है, जैसा कि मालिक विन अनस में कहत है।

يَأَيُّهَا الَّذِينَ مَا مَنَوا إِذَا نُودِيَ للصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ  
فَاسْعَوْا إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ  
تَعْلَمُونَ ۖ ۗ فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانشِرُوا فِي الْأَرْضِ  
وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَإِذْ كُرُوا اللَّهُ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ  
ۚ وَإِذَا رَأَوْا بَخْرَةً أَوْ لَهُوا أَنْفَضُوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ فَإِيمَانُكُلَّ  
مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِّنَ الْهُوَ وَمِنَ النِّجَرَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ  
ۖ ۗ

### شُورَةُ الْمُنَافِقُونَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَكُمُ الْمُنَفِّقُونَ قَاتُلُوْنَاهُمْ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ  
ۖ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَسْهُدُ إِنَّ الْمُنَفِّقِينَ لَكَذِبُونَ  
أَخْنَذُوْنَاهُمْ جَنَّةً فَصَدُّوْنَاهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ۖ ذَلِكَ بِآتِهِمْ مَا مَنَوا مِنْ كُفْرٍ وَّأَفْطَعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ  
فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۖ وَإِذَا رَأَيْتُمْهُمْ تَعْجِبُكُمْ أَجْسَامُهُمْ  
وَإِنْ يَقُولُوا أَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ كَانُوهُمْ حُشْبٌ مُّسَنَّدٌ يَحْسُبُونَ كُلَّ  
صَيْحَةً عَلَيْهِمْ هُوَ الْعَدُوُّ فَاحْذَرُهُمْ فَتَاهُمُ اللَّهُ أَنَّ يُوقَنُونَ  
ۖ ۗ

- ३ और दूसरों के लिए भी उन्हीं में से, जो अब तक उनसे नहीं मिले, २ और वही गालिब और हिक्मत वाला है ३ ।  
४ यह अल्लाह की कृपा (फ़ज्ज़) है, जिसे चाहे अपनी कृपा से नवाज़े, और अल्लाह तआला बड़े फ़ज्ज़ वाला है।  
५ जिन लोगों को तौरात के अनुसार कर्तव्य करने का आदेश दिया गया ४ फिर उन्होंने उसके अनुसार कर्तव्य नहीं किया ५, उनकी मिसाल उस गधे की तरह है जो बहुत सी ६ किताबें

१ अर्थात् शिक्ष कर रहे थे और हक से अनभिग थे।

२ अर्थात् जो उनसे अभी नहीं मिले हैं और तुरन्त उनसे इसके बाद मिलेंगे, अर्थात् वह उन अनादरों को पाक करता है, और फिर दूसरे लोगों को भी पाक करता है जो उन्हीं अदर में से है, और यह अदर के लोग हैं जो सहाया ५ के पश्चात प्रलय तक आने वाले हैं, इमाम बुखारी ने अबू हुरैरा से रिवायत की है कि जिस समय सूरतुल जुमुआ नामिल हुई हम लोग नवी ५ के पास बैठे हुए थे, आपने इसकी तिलावत की, जब आप यह देखने पर पहुंचे तो एक व्यक्ति ने आप से पूछा : अल्लाह के रसूल ! यह देखने लोग हैं जो अभी नहीं मिले हैं? तो आप ५ ने अपना हाथ सलामान फारसी पर रखा और फरमाया : कसम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरी जान है, यदि इसने सुरेया पर भी भी लोग तो उन में से कुछ लोग उसे पा लेंगे।

३ अर्जुन और हकीम दोनों मुवालिग के सेगे हैं, अर्थ यह है कि वह बहुत अधिक गालिब और हिक्मत वाला है।

४ अर्थात् उसके अनुसार अमल करने और जो कुछ भी उसमें है उसे बजा लाने का उन्हें आदेश दिया गया।

५ अर्थात् उसके अनुसार अमल करने और जो कुछ भी उसमें है उसे बजा किया जिनका उन्हें आदेश दिया गया था।

६ यह अल्लाह ने उन यहूदियों की मिसाल बताई है जिन्होंने ने तौरात के अनुसार अमल करना छोड़ दिया था।

लादे हो, अल्लाह की निशानियों को झटलाने वाले की बहुत बूरी मिसाल है ८, और अल्लाह ऐसे जालिमों को मार्गदर्शन नहीं देता।

९ कह दिजिए कि ऐ यहूदियों ! यदि तुम्हारा दावा है कि तुम अल्लाह के मित्र हो दूधे लोगों के सिवाय ९, तो यदि तुम सज्जे हो १० तो मौत की कामना (तमन्ना) करो ११ ।

१२ यह कभी मौत की तमन्ना नहीं करेंगे उन अमलों के कारण जो अपने आगे, अपने हाथों भेज रखे हैं १२, और अल्लाह जालिमों का अच्छी तरह जानता है।

१३ कहु दिजिए कि जिस मौत से तुम भागते हो, वह तो तुम्ह पहुँच कर रहेगी १३, फिर तुम सब, छिपे और खुले जानने वाले (अल्लाह) की तरफ लौटाए जाओगे १४, और वह तरह तुम्हारे किए हुए सारे काम बतला देगा १५ ।

१६ ए वह लोगों जो ईमान लाए हो! जुम'आ के दिन जब नमाज की अजान १६ दी जाए, तो तुम अल्लाह के जिक्र की तरफ दौड़ पड़ो १७, और किनना बेचना छोड़ दो १८ यह तुम्हारे हक में बहुत ही बेहतर है १९ यदि तुम जानते हो ।

२० फिर जब नमाज होचुके २१ तो घरती में फैल जाओ २२,

७ अस्कार सिक्र की जमूअ (वहवचन) है, जिसके अर्थ वड़ी किताब के हैं, गधा नहीं जानता कि उसकी पीठ पर किताब है या कूड़ा-कर्कट।

८ गधे से तुलना की गई है, और यहूद जो उससे वास्तव में एक-रूपता रखते हैं उनकी तुलना की गई है, यह सब से बूरी मिसाल है जो उन झटलाने वालों की दी गई है, अर्थ यह है कि मुसलमानों ! तुम उनके जैसे न हो जाओ, इस तरबीह का चर्चा पहले इस लिए किया गया है, ताकि उसके द्वारा उन लोगों को डराया जाए जो अल्लाह के रसूल ५ को मिस्वर पर खुत्ता देते हुए खड़ा छोड़कर अनाज खरीदने चले गए थे, और उसी जैसे हर वह व्यक्ति भी है जो खुत्ता सुन कर विमुख होजाए, जैसा कि हृदीस में आया है : जो जुमुआ के दिन इमाम के खुत्ता देने की अवस्था में बात करे उसकी मिसाल उस गधे की है, जो अपने ऊपर किताबों का बोझ लादे हो, और जो उससे चुप हो जाने के लिए कहे उसका भी जुमुआ नहीं।

९ से वह लोग मुराद हैं जो तकल्तुक के साथ यहूदी बने हुए थे, और यह इस कारण कि यहूदी लोगों पर अपनी श्रेष्ठता और वर्ती के दोषादार थे, और कहते थे कि वह अल्लाह के दोस्त, उसके बेटे और बहने हैं, तो अल्लाह तआला ने अपने रसूल को हुक्म दिया कि जब वह यह बाति दावे करें तो उन से कहें।

१० अपने इस गुमान में, क्योंकि जिसे इसकी जानकारी हो कि वह जन्मती है, तो वह जन्मत में जल्द पहुंचने की चाहत करता है।

११ तुम मौत की कामना करो ताकि तुम्हें वह श्रेष्ठता प्राप्त हो जाए।

१२ अर्थात् जिस कुफ और पाप के काम को वह करते आए हैं, और अल्लाह की किताब में इन्होंने जो परिवर्तन किए हैं, इनके कारण वह मौत की चाहत और आर्जु कभी नहीं कर सकते।

१३ अर्थात् वह तुम पर उसी तरफ से आकर रहेगी जिस तरफ से तुम भाग रहे हो, और जल्द ही वह तुम्हारा सामना करके रहेगी।

१४ और यही कियामत का दिन होगा।

१५ अर्थात् सारे बुरे कामों को बतला देगा, और तुम्हें उनकी सज़ा भी देगा।

१६ इससे मुराद अजान है, जो जुमुआ के दिन इमाम के मिस्वर पर बैठने के मम्य दी जाती है, इसलिए कि नववी दीर में उसके सिवाय कोई और अजान नहीं दी जाती थी, रही जुमुआ की पहली अजान तो उसमान ५ ने उसे मढ़ावा ५ की मौजूदगी में उस समय बड़ाया जब मरीना फैल गया और उसकी आवार्दी बढ़ गई।

१७ अर्थात् अल्लाह के जिक्र की ओर चल पड़ो, (टैड़ने से मुराद चलना है, क्योंकि नमाज के लिए टैड़ कर आने से रोका गया है, इत्मानान और संजीदगी के साथ आने पर जोर दिया गया है, और जिक्र से मुराद खुत्ता और जामै'अ मस्जिद में नमाज़ अदा करना है) और उसके अस्वाद अर्थात् नहाने बुजु करने और जुमुआ के प्रबन्ध में लग जाओ।

१८ अर्थात् काम-काज रोक दो, इसमें सारी सामाजिक दृष्टि शामिल है, इसी लिए जब जुमुआ के दिन मुअज्जिन अजान शुम करदे तो खर्गिदन बेचना जायज नहीं।

१९ अर्थात् अल्लाह के जिक्र की तरफ चल पड़ना और खर्गिदन बेचना जायज नहीं।

२० अर्थात् खर्गिदन बेचने में लगे रहने, और अल्लाह के जिक्र की तरफ न जाने से बेहतर है, उस सवाब और बदले के कारण जो उसकी इताउन में है।

२१ अर्थात् जब नमाज पढ़ चुकी और उसे अदा करके फारिग हो जाओ।

२२ व्यापार के लिए और उन कामों को निपटाने के लिए जिनकी तुम्हे जस्ता है।

और अल्लाह यह फ़स्त (कृपा) खोजो<sup>1</sup>, और अत्यधिक अल्लाह का जिक्र किया करो, ताकि तुम सफलता प्राप्त करलो<sup>2</sup>।  
 ① और जब कोई सौदा बिक्ता देखे या कोई खेल-तमाशा दिखाई दे, तो उसकी तरफ दौड़ जाते हैं<sup>3</sup>, और आप को खड़ा ही छोड़ देते हैं, आप कह दिजिए कि अल्लाह के पास जो है, वह खेल और व्यापार<sup>4</sup> से बेहतर है, और अल्लाह तभी सबसे अच्छा रोजी देने वाला है।

## सुरुत्तु मुनाफिकून - 63

इस काल<sup>5</sup> अल्लाह के नाम से जो बड़ा मैर्केट बहुत रहम करने वाला है।  
 ① तेरे पास जब मुनाफिक आते हैं<sup>6</sup> तो कहते हैं कि हम इस बात के गवाह हैं कि अवश्य आप अल्लाह के रसूल हैं<sup>7</sup>, और अल्लाह जानता है कि अवश्य आप उसके रसूल हैं<sup>8</sup>, और अल्लाह गवाही देता है कि यह मुनाफिक झूटे हैं<sup>9</sup>।  
 ② उन्होंने अपनी कस्मों को ढाल बना रखा है<sup>10</sup>, तो उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका<sup>11</sup>, बेशक बूरा है वह काम जिसे यह कर रहे हैं।  
 ③ यह इस कारण है कि यह (दिखाने को) ईमान लाए (दिल में) काफिर ही रहे<sup>12</sup>, तो इनके दिलों पर मोहर कर दी गई<sup>13</sup>

<sup>1</sup> फ़स्त से मुराद वह रोजी है, जिससे अल्लाह अपने बन्दों को नवाज़ता है, अर्थात् अपने व्यापार और काम-धर्ये का लाभ खोजो।

<sup>2</sup> अपने कारोबार और खरीदने वेचने के बीच भी अल्लाह के जिक्र को न भूलो, बल्कि अत्यधिक उसका जिक्र करते रहो, उस आखिरत और दुनिया की भलाई और अच्छाई पर जिसका उसने तुम्हें मार्गदर्शन किया है, उसका शुक्र करके, इसी तरह ऐसी विरद्धे और अज्ञान करके जिन से अल्लाह को कुर्बत हासिल होती है, जैसे तस्वीह, तक्बीर, हम्द करके और इन्नगुल्लर इत्तादि डारा उसे याद करते रहो।

<sup>3</sup> ताकि तुम दिनया और आखिरत की भलाई और सफलता पा सको।

<sup>4</sup> इस आयत का ज्ञान नुज़ुल यह है कि मदीना वाले फ़ाके काट रहे थे, और उन्हें अनाज की सज्जा ज़स्तर थी, और इसी बीच कि नवी<sup>14</sup> युम्मा का खुल्बा दे रहे थे कि मुक्के शाम से बापारियों का एक दल आ गया, तो आप को खुल्बा देने थे और उन्हें लाग अनाज लेने चले गए, और मस्तिज में मात्र १२ ब्यक्ति बाल्कि रह गए, और एक गिरावत में ७ औरतों का चर्चा है।

<sup>5</sup> **الْفَضْلُ عَلَيْهَا** का अर्थ उसकी तरफ बाहर जाकर फैल जाने का है।

<sup>6</sup> अर्थात् मिथ्वर पर।

<sup>7</sup> "अल्लाह के पास जो है" से मुराद बड़ा सवाब अर्थात् जन्मत है।

<sup>8</sup> इस तमाशा और व्यापार से जिन की तरफ तुम गए, और जिन के कारण तुम मस्तिज में नहीं रहे, और नवी<sup>15</sup> का खुल्बा नहीं सुना।

<sup>9</sup> अर्थात् जब तुम से मिलते और तुम्हारी समा में होते हैं।

<sup>10</sup> अर्थात् वह पूर्ण ज़ोर यह बात बताने पर देते हैं कि वह दिल की गहराई और खालिस अक्षरों के साथ यह गवाही दे रहे हैं।

<sup>11</sup> यह अल्लाह की तरफ से मुहम्मद<sup>16</sup> की रिसालत की तस्वीक है, जिसका चर्चा उनकी बातों में है, ताकि कोई यह न समझे कि आगे जो ग्रन्थाया गया है उसका सम्बन्ध रिसालत से है।

<sup>12</sup> अपने इस दावे में कि नवी<sup>17</sup> की रिसालत की जो गवाही दे रहे हैं वह दिल की गहराई और खालिस अक्षरों के साथ है छूटे हैं, पर उनकी बातें जिस में रिसालत की गवाही है, वह हक है।

<sup>13</sup> उन लोगों ने अपनी कस्मों को जो तुहारे पास आकर खाते हैं, ढाल बना रखा है, कि उसके द्वारा वह तुम में बचाव करते हैं, और उसे मारे जाने और कैदी बनाए जाने से अपनी सुरक्षा का माध्यम बनाते हैं।

<sup>14</sup> अर्थात् उन्होंने आप की नुक़वत में शब्द है पैदा करके लोगों को ईमान, निधान और नेकी और इताजत के कामों से रोका।

<sup>15</sup> अर्थात् यह इस कारण कि इनका ईमान बाहर ही तक रहा, अन्दर से यह काफिर ही थे, और एक कैरेल यह है कि यह आयत उन लोगों के बारे में नाशिल हूँ है जो ईमान लाकर मुर्तद हो गए थे, (इस सूरत में तर्जुमा यह होगा : इस सबव से कि यह ईमान लाकर किर काफिर होगए।)

<sup>16</sup> अर्थात् इनके कुक के कारण इनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, तो इसके बाद इनमें ईमान प्रवेश नहीं कर सकेगा।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوْلَا وَسْطَمْ  
 وَرَأَتُهُمْ يَصْدُونَ وَهُمْ مُسْتَكِبُونَ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ  
 لَسْتَغْفِرَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ إِنَّ  
 اللَّهَ لَا يَهِيءُ لِلنَّاسِ الْفَسِيقِينَ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ  
 لَا يُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّى يَنْقُضُوا وَلَهُ  
 خَرَائِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ  
 يَقُولُونَ لَيْسَ رَجُلًا إِلَّا مَدَنَةً لِيُخْرِجَ إِلَيْهِ  
 بَنَاهَا الْأَذْلُ وَلِلَّهِ الْعَزَّةُ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلَكِنَّ  
 الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ يَا بِهَا الَّذِينَ أَمْنَوْا لَنْ لَهُمْ  
 أَنْوَلُكُمْ وَلَا أَوْلَدُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ  
 ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَسِيرُونَ وَأَنْفَقُوا مِنْ مَآرِزَ قَنْتَكُمْ  
 مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولُ رَبِّ لَوْلَا لَخَرَتِي  
 إِلَى أَجْلِ قَرِيبٍ فَلَأَصْدَقَ وَأَكُنْ مِنَ الصَّالِحِينَ وَلَنْ  
 يُؤْخِرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَهُ أَجْلُهَا وَاللَّهُ خَيْرٌ لِمَا عَمِلُونَ

## شُورَكُ النَّعَابِنْ

अब यह नहीं समझते<sup>17</sup>।

<sup>1</sup> और जब आप उन्हें देख ले तो उनके जिस्म आपको खुशनुमा (लुभावना) मालूम हों<sup>18</sup>, यह जब बातें करने लगे तो आप इनका बातों पर कान लगाएं<sup>19</sup>, जैसाकि यह लकड़ियां हैं दीवार के सहारे लगाई हुई<sup>20</sup>, हर ऊँची आवाज़ को अपने खिलाफ समझते हैं<sup>21</sup>, यहीं वास्तविक (हकीकी) दुश्मन हैं, इन से बचो<sup>22</sup>, अल्लाह इन्हें नाश करे,<sup>23</sup> कहां किरे जाते हैं<sup>24</sup>।

<sup>2</sup> और जब इनसे कहा जाता है कि आओ तुम्हारे निए-

<sup>17</sup> उन चीजों को जिसमें इनकी भलाई है।

<sup>18</sup> अर्थात् इनके रूप अपनी रौनक और सुन्दरता के कारण उम्म व्यक्ति को अच्छे लगे जो इन्हे देखे।

<sup>19</sup> अर्थात् इनकी फ़साहत और चर्च-ज़बानी के कारण आप इनकी बातों को दुरुस्त और सत्य जाने, मुनाफ़िकों का सरदार अबुल्लाह जिन उपर बहुत फ़सीह, चर्च-ज़बान, तम्बा और सुन्दर था।

<sup>20</sup> अर्थात् अल्लाह के रसूल की समाज में उनके टेक लगाकर बैठें लो ऐसी लकड़ियों से तब्दील हो गई है जो ईदवाने में टेक लगाकर खड़ी थी गई है, जो लाभदायक समझ में खानी ढोने के कारण जिसी बात को समझती बृहती न हो।

<sup>21</sup> कहा जाता है कि मुनाफ़िकों को हमेशा डर लगा रहता था कि उनके बारे में कोई ऐसों चोंड़ नाजित न हो जाए जो उन्हे बे-निकाब छरे। और उनके खून और मात को सुधार कर दे।

<sup>22</sup> अपनी तरफ से उन्हें कोई अवसर देने से, या अपनी भेद ही हो उन्हें बताने से, क्योंकि यह तुहारे दुश्मनों के जासूस है।

<sup>23</sup> अल्लाह की इन पर लाज़त हो, यह शायद है, जो इसमें ईमान लाले के लिए तालीम है कि वह यह कहे।

<sup>24</sup> अर्थात् यह कैसे हक से किरे जा रहे हैं, और कुक की ओर लिखे जाते हैं।

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يُسْبِحُ اللَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَهُ الْعَلْوَىٰ وَلَهُ الْحَمْدُ  
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ هُوَ الَّذِي خَلَقَ كُلَّ كَاوِيرٍ  
وَمِنْكُمْ مُؤْمِنٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۖ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ  
وَالْأَرْضِ بِالْحِقِّ وَصَوْرَكُنْ فَأَخْسَنُ صُورَكُنْ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ  
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تَشْرُونَ وَمَا تَعْلَمُونَ وَاللَّهُ  
عَلِمُ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۖ أَلَرَأَتُكُنْ بِنُواَلَدِنَ كُفُرُواْ مِنْ قَبْلِ  
فَذَاقُواْ وَبَالْأَمْرِ هُمْ عَذَابُ الْيَمِّ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ نَافِيَّهُمْ  
رَسُلُهُمْ بِالْبَيْتِ فَقَالُواْ أَبْشِرْ تَهْدِنَا فَكَفُرُواْ وَتَوَلُواْ وَأَسْتَعْنُى  
اللَّهَ وَاللَّهُ أَعْنَىْ حَمِيدٌ ۖ زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُواْ أَنَّ لَنْ يُعْنَوْنَ أَبْلَى وَرِفْ  
لَتَعْنَىْ مِمَّ لِنَبْتُونَ يَعْمَلُمُ وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۖ فَقَاتِمُواْ اللَّهَ  
وَرَسُولَهُ وَالنُّورُ الَّذِي أَنْزَلَنَا وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ حَيْثُ ۖ يَوْمَ  
يَجْعَلُكُمْ لِيَوْمَ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ الْغَابِنِ وَمَنْ يُقْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ  
صَلِحَّا يُكَفِّرُ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلُهُ جَنَّتِ بَخْرِيِّ مِنْ تَحْنِهَا  
**الآنَهُرُ خَلِيلِنَ فِيهَا أَبْدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ**

अल्लाह के रसूल माफी की दुआ करें तो अपने सर मटकाते हैं  
, औ तुम देखोगे कि घमन्ड करते हुए <sup>2</sup> रुक जाते हैं <sup>3</sup>।  
⑥ उनके लिए तुम्हारा माफी की दुआ करना और न करना  
दोनों बराबर है<sup>4</sup>, अल्लाह तआला उहें कभी माफ न करेगा<sup>5</sup>,  
अवश्य अल्लाह तआला ऐसे फासिकों को <sup>6</sup> हिदायत नहीं देता।  
⑦ यही वह हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के  
पास हैं, उन पर खर्च मत करो, यहां तक कि वह इधर-उधर  
होजाएं, और आकाशों और धरती के सारे ख़ज़ाने अल्लाह  
तआला की मिलकियत हैं<sup>8</sup>, लेकिन यह मुनाफिक नासमझ है<sup>9</sup>।  
⑧ यह कहते हैं कि यदि हम अब लौट कर मरीना जाएं तो

1 अर्थात टट्टा करते हुए इस्तिफ़ार से मुंह मोड़ते हुए अपना सर मटकाते हैं।

2 अल्लाह के रसूल के पास आने और आप से इस्तिफ़ार की दरखास्त करने से अपने को वह समझते हुए, अर्थात वह अपने आप को इस से बड़ा समझ रहे थे, और ऐसा करने में अपने लिए अपना समझ रहे थे।

3 अर्थात अल्लाह के रसूल से मुंह केरते हैं।

4 अर्थात आपका इस्तिफ़ार इनके निपाक और कुक पर अड़े रहने के कारण इनके कुछ भी काम न आएगा।

5 जब तक वह निपाक पर अड़े रहें।

6 अर्थात इत्ता अत से पूरे तीर पर निकल जाने वालों और अल्लाह की मार्सीयत (पाप) में मसुफ़ रहने वालों को, और मुनाफिकों इन में सब से पहले आते हैं।

7 यहां तक कि बिखर जाएं, इससे वह मुहाजिरिन फ़र्कीरों को मुराद लेते थे।

8 इन मुहाजिरों को भी वही रोज़ी देने वाला है।

9 अर्थात उनकी समझ में यह बात नहीं आती कि रोज़ी के ख़ज़ाने अल्लाह के हाथ में हैं, इसी लिए उन्होंने यह गुमान कर लिया कि अल्लाह मोमिनों पर कुशादगी नहीं करेगा।

इन्हें वाला यां से ज़र्नील (अपमानिन) लोगों को निकाल देगा <sup>10</sup>  
सुनो! सम्पान तो मात्र अल्लाह ही के लिए है, और उसके गृहन के  
लिए और इमान वालों के लिए है, पर यह मुनाफिकों जानने नहीं।  
⑩ पे मुमिनों तुम्हारे थन और तुम्हारी ओलाह तुम्हें  
अल्लाह के जिक्र से गाँफ़ल न करद <sup>11</sup>, और जो एंगा  
करे <sup>12</sup> वह वहै ही धारा उठाने वाले लोग हैं <sup>13</sup>।  
⑩ और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा है उसमें से (हमारे गते में)  
इससे पहले खर्च करो <sup>14</sup> कि तुम में से किसी को मौत आजाए, तो  
कहने लगे कि : पे मेरे खर्च मुझे तू थोड़ा देर की शृंखल की नहीं  
देता <sup>15</sup> कि मैं दान करूँ <sup>16</sup> और नक लोगों में से होजाऊ।  
⑪ और जब किसी का निर्धारित समय आजाता है <sup>17</sup> तो  
फिर उसे अल्लाह तआला कभी मौका नहीं देता, और जो कुछ  
तुम करते हो उसे अल्लाह तआला अच्छा तरह जानता है <sup>18</sup>।

## سُرُّ تَجَادُّ - 64

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेल्डां बड़ा गृह्ण करने वाला है।  
① (सारी चीजें) जो आकाशों और धरती में हैं अल्लाह की  
पांकी व्याप करती हैं, उसी का गज है, और उसी के लिए  
प्रशंसा है, और वह हर चीज पर शक्तिमान है।

② उसी ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम में से कुछ तो काफ़िर हैं  
और कुछ मुमिन हैं <sup>20</sup>, और जो कुछ तुम कर रहे हो  
अल्लाह खुब देख रहा है।  
③ उसीने आकाशों और धरती को हक्क के साथ पैदा किया,  
उसने तुम्हारे खुब देख रहा है।

10 कहने वाला मुनाफिकों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उव्वे है, <sup>الأَعْزَمُ</sup> में मुगाद उसने खंय अपने को और अपने मार्थियों को निया है, और अपने मार्थियों को। और सौदने में उम्की मुगाद उस युद्ध से उम्की वापरी है।

जैद बिन अर्कम से रियायत है वह कहते हैं कि : मैं नहीं <sup>21</sup> के साथ एक गये में था, अब्दुल्लाह बिन उव्वे ने कहा कि यदि हम मर्दाना वाम्प लोटे तो उनमें से इज्यत वाला ज़ल्लातों को निकाल देगा, वह कहते हैं : मैं नहीं <sup>22</sup> के साथ आया, और उसकी यह बात बाई, वह कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उव्वे ने कम्पम खा ली कि उसने इस तरह की कोई बात नहीं की है, तूट कहते हैं : मेरी कोम के लोग मुझे कोसने लगे और पृष्ठने लगे इसमें नुम्हाग क्या मक्कद या? वह कहते हैं कि मैं उदास (दुखित) होकर मो गया, अल्लाह के नवां ने एक व्यक्ति भेज कर मुझे बुलवाया, और फरमाया : अल्लाह ने तुम्हारा उद्द नार्मिन किया है, और तुम्हारी तर्दाक की है, और वह आपन उनारी है।

11 अल्लाह मोमिनों की उन मुनाफिकों की नवां की खदार दे रहा है, जिन्हें उनके बन और ओलाह ने अल्लाह के जिक्र, अर्थात् इन्नामी फ़ुगहन में गाँफ़ल कर दिया है, और एक कोल यह है कि जिक्र में मुगाद निलावने कुरआन है।

12 अर्थात् द्रविन्या के लिए धर्म में गाँफ़ल होजाए।

13 अर्थात् पूरे तीर पर धारे में है।

14 अर्थात् हम ने तुम्हें जो दिया है उसमें से कुछ मनार्द के गम्ने में खर्च करो। एक और कथन यह है कि : खर्च करने में मुगाद कुर्ज़ ज़दान है।

15 अर्थात् उसके पास मौत के अग्रवाद आ जाए, या वह मौत की निर्णायिक देख न।

16 क्यों तु मुझे मौका नहीं देता, और मेरी मौत की कुछ समय के लिए उन नहीं देता।

17 कि मैं अपने माल में मटका कर नूँ।

18 अर्थात् जब उम्की मौत का समय आ पढ़ूँवना है, और उम्की ज़ीवन की अवधि पूरी हो जानी है।

19 अर्थात् उसने तुम्हारी कोई भी बाँत सुनी नहीं रखी, जो कुछ तुम

कर रहे हो उसके जान में है, उम्का बड़ा वह नुर्दे तुम्हर देगा।

20 अल्लाह न आला ने काफ़िर को देता किया और काफ़िर का कुक़ और

काफ़िर का काम उम्का कम्ब उपायन है, और मोमिन को देता किया,  
मोमिन का ईमान और उम्का काम उम्का कम्ब है, काफ़िर कुक़ करना है

और कुक़ को पमन्ड करना है, और मोमिन ईमान जाता और ईमान को पमन्ड करता है, और यह मव अल्लाह करता है, और मोमिन ईमान को कुक़ में कुछ नहीं, जब तक कि अल्लाह रक्कुत आलमान न देता।

21 अर्थात् अल्लाह न आला ने नुर्दे तुग और प्रचंड मव में देता किया, और तुम्हा

नाक-नक्शा अच्छा बनाया। अच्छे मूर्त और मुद्राल भीर में इन्हान भी मुर्ताल थे।





इनामों<sup>1</sup> और अल्लाह की गृही के लिए हीक ठीक गतावी हो<sup>2</sup>, पहली है वह जिसकी नवीनता उसे दें जाती है जो अल्लाह पर और अध्यात्म के दिव पर इमान रखता है<sup>3</sup>। और जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है<sup>4</sup>, अल्लाह उसके निकलने का रास्ता बना देता है<sup>5</sup>।

**①** और उसे ऐसी जगह से<sup>6</sup> रोज़ी देता है जिसका उसे गुणान भी न हो, और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा, अल्लाह उसे काफी होगा<sup>7</sup>। अल्लाह तआला अपना काम पूरा करके ही रहेगा<sup>8</sup>, अल्लाह तआला ने हर धीज़ का एक अहमाज़ा निर्धारित कर रखा है<sup>9</sup>।

**②** तुम्हारी औरतों में से जो महिनवारी से निराश होगई है<sup>10</sup>, योई तभे शक हो<sup>11</sup> तो उनकी इहत तीन महीने हैं, और उन की भी जिन्हें महिनवारी आना शुरू ही न हुवा हो<sup>12</sup>, और गर्भवती (हामिला) औरतों की इहत उनका बच्चे को जन्म देना है<sup>13</sup>, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके हर काम में आसानी कर देगा<sup>14</sup>।

**③** यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी तरफ उठाया है, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह मिटा देगा, और उसे बहुत भारी बदला देगा<sup>15</sup>।

**④** तुम अपनी शक्ति के अनुसार<sup>16</sup> जहां तुम रहते वहां उन (तलाक वाली) औरतों को रखो<sup>17</sup>, और उन्हें तंग करने के काम न दो<sup>18</sup>, और यदि वह गर्भवती हों तो जब तक बच्चा जन्म ले ले, उन्हें खर्च देते रहा करो<sup>19</sup>, फिर यदि बच्चा जन्म ले ले, उन्हें खर्च देते रहा करो<sup>20</sup>, फिर यदि

1 अर्थात् यदि तुम लौटा रहे हो तो लौटाने पर और यदि अलग कर रहे हो तो अलग करने पर, ताकि लड़ाई झगड़े का पूरे तीर से सफाया होजाए।

2 यह आदेश गवाहों को है कि वह अल्लाह से कृप्त और नज़रीकी चाहने के लिए ठीक ठीक गवाही है।

3 इमान वालों को यास इमानिए किया गया है कि वास्तव में यही लोग लाभ उठाने वाले हैं, दूसरा कोई नहीं।

4 अर्थात् जो सीमाएँ अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए नियुक्त कर दी हैं उनका उल्लंघन न करके अल्लाह से डरता है।

5 उन दोनों में जिसमें वह फ़सा है।

6 अर्थात् ऐसे नरों के से जो उसके गुमान में भी नहीं होते, तो जिसने तलाक दी फिर दूसरे खबर होने पर अलग होने पर, या लौटाने पर गवाह बना लिया, तो अल्लाह उसके निकलने और छुटकारा पाने का गता बना देगा, तीनी तो मात्र उसे होगी जो तलाक या लौटाने के बारे में अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन करे।

7 अर्थात् अपने आने वाले समस्याओं में जो अल्लाह पर भरोसा रखेगा, तो अल्लाह उसे काफी होगा।

8 अर्थात् उससे कोई धीरू पूर्ण नहीं सकती और न ही किसी धीज़ की तलब उसे बदल करती है।

9 अर्थात् नर्सी के लिए उसने एक समय निर्धारित कर दिया है, और आसानी के लिए भी, यह दोनों अपने अपने समय पर पाँचुंच कर खत्म हो जाते हैं, और सुन्दी करने हैं कि : इसमें मुगाद माहवारी और इहत की मुद्दत (अवधि) है।

10 इसमें मुगाद वृद्धी औरते हैं, जिन्हें माहवारी आना बन्द होगया हो, और वह इसमें नियग हो चुकी हो।

11 योई तुम्हे शक हो और इसकी जानकारी न हो कि उनकी इहत कितनी होगी।

12 उनकी कम उप्री और माहवारी की उप्र को न पाँचुंचने के कारण, अर्थात् नावादिलग लड़ाकर्यों की भी इहत तीन महीने हैं।

13 अर्थात् उनकी इहत उस समय पूरी होगी जब वह अपने गर्भ को जन्म दे देंगी।

14 ज़हारक कहते हैं : जो अल्लाह से डरेगा और सुन्त के अनुसार तलाक देगा, तो अल्लाह लौटाने के समर्था को आसान कर देगा।

15 अर्थात् उसे आश्विरत में बाल भारी बदला देगा, और वह जन्मत है।

16 इस आयत में रिहाइश का व्यापार है, जो मुत्तलका रज्ज्या (ऐसी औरतें जिन्हें मात्र १ या २ तलाक हृदृष्ट हो) के लिए वाजिब है।

17 अर्थात् अपनी आपानी के अनुसार तुम उन्हें उन्हीं जगहों में से किसी में रखो, जहां हमने तुम्हे रखा है, यह आदेश मुत्तलका रज्ज्या के बारे में है, यही वह औरतें जिन्हें तीन तलाके दी जा चुकी हों तो उनके लिए नपका

और सुन्ना (खर्च और रिहाइश) है ही नहीं।

18 रिहाइश और खर्च के बारे में।

19 मुत्तलका औरत यदि गर्भवती हो तो उसके खर्च और रिहाइश के

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
يَا أَيُّهُ الَّذِي إِذَا طَلَقَتِ النِّسَاءَ فَطَلَقُوهُنَّ لِعَدَتِهِنَّ وَأَخْصَوْهُنَّ  
الْمُؤْدَةَ وَأَنْقَوْهُنَّ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ  
وَلَا يَخْرُجُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَحْشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ وَتَلَقَّهُ حُدُودٌ  
الَّتِي مَنْ يَعْدَ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعْلَةً  
الَّتِي يُحِدُّثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجْلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ  
بِسْعَرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا دَوْنَي عَدْلٍ مُّنْكَرٍ  
رَأَيْمُوا الشَّهَدَةَ لِلَّهِ ذَلِكُمْ يُوَعظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ  
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَنْقِقَ اللَّهَ يَجْعَلُ لَهُ مَخْرَجاً ۖ وَرِزْقَهُ  
مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ  
يَكُلِّمُ أَمْرَهُ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ  
مِنَ الْعَجِيزِ مِنْ نَسَائِكُمْ إِنْ أَرْتَهُنَّ فَعَدَتِهِنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ  
وَاللَّهُ لَمْ يَحْضُنْ وَأَوْلَاتُ الْأَخْمَالِ أَجْلُهُنَّ أَنْ يَصْنَعُ حَمَلَهُنَّ  
وَمَنْ يَنْقِقَ اللَّهَ يَجْعَلُ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ دُسْرًا ۖ ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ  
إِنَّكُمْ وَمَنْ يَنْقِقَ اللَّهَ يَكْفِرُ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيَعْظِمُ لَهُ أَجْرًا ۖ

تुम्हारे कहने से वही दूध पिलाएं तो तुम उन्हें उप्रत दे दी<sup>20</sup> और आपस में अच्छी तरह राय-मश्वरा कर लिया करो<sup>21</sup>, और यदि तुम आपस में तनाव रखो तो उसके कहने से कोई और दूध पिलाएगी<sup>22</sup>।

**⑤** यही व्यक्ति को अपने धन अनुसार खर्च करना चाहिए<sup>23</sup>, और जिस पर उसकी रोज़ी तंग की गई हो उसे चाहिए कि 'जो कुछ अल्लाह तआला ने उसे दे रखा है उसी में से अपनी शक्ति अनुसार दे'<sup>24</sup>, किसी व्यक्ति पर अल्लाह बोझ नहीं डालता मार

याजिब होने के बारे में उलमा के बीच इतिहास कहा है।

20 अर्थात् बच्चा जनने के बाद यदि तुम्हारे कहने से तुम्हारे बच्चे को दूध पिलाएं, तो तुम उन्हें उनके उप्र पिलाने की उम्मत दो।

21 यह फरमान उन पतियों और पत्नीयों दोनों के लिए है, जो तलाक के कारण एक दूसरे से अलग हो चुके हैं, अर्थ यह है कि तुम दोनों अपने राय-मश्वरे से तय कर लो, और तुम में से हर एक वह धीज़ स्वीकार कर ले जो बेतर हो और जिसमें बच्चे के लिए मतलब हो, यह वही धारा है जिसका चार्चा अल्लाह तआला ने सरायुल बक़ा आयत न० २०३ में किया है : *إِنَّ أَوَّلَ حَصَالًا عَنْ تَوْاضِعِهِنَّ وَتَشَاؤِهِنَّ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ*

22 और यदि दूध पिलाने की उम्मत (पार्टीशन) में तुम आपस में विरोध कर देंगे, और शीहर बच्चे की माँ को वह उप्र न देना चाहें जो वह बाहरी हो, और माँ बिना उस उप्र के लिए वह चाहती हो दूध पिलाने पर याज़ी न हो, तो वह उप्र पर कोई और दाया रख ले जो उसके बच्चे को दूध पिलाए।

23 इसमें धनवानों को यह आदेश है कि उनकी पत्नीयों में से जो उनके बच्चों को दूध पिला रखी हो उनपर अपनी हैसियत अनुसार खार्च करें।

24 अर्थात् जिनकी धन-सम्पत्ति कम हो, और वह परेशानी और तांगी में हो, तो अल्लाह ने उन्हें जो जीविका दे रखी है उसी में से अपनी जीविका के अनुसार उन्हें दे, उन पर मात्र उतना ही है जिसकी वह जारी रखते हैं।

उत्तर दिया है।

11) और मूल जो तुम्हें अल्लाह के स्पष्ट आदेशों को पढ़कर सनाता है<sup>10</sup>, ताकि उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक कर्म किये अन्धेरों से रीझनी की ओर ले आए<sup>11</sup>, और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाए और नेक कर्म करे अल्लाह उसे ऐसी जनतों में प्रवेश देगा जिसके नीचे नहरे वह रहा है, जिनमें यह हमेशा-हमेशा रहे, अवश्य अल्लाह ने उसे बेहतरीन रोज़ी दे रखी है।

12) अल्लाह वह है जिसने सात आकाश बनाए, और उसी के बरोबर घरती<sup>12</sup> भी, उसका हुक्म उनके बीच उतरता है<sup>13</sup>, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है, और अल्लाह तज़्अला ने हर चीज़ को अपने इल्म के इहाते में धेर रखा है।

## सुरतु त्तह्रीम - 66

इन करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।

13) हे नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए हलाल कर दिया है उसे आप क्यों हराम करते हैं?<sup>14</sup> क्या आप अपनी पत्नियों की खुशी प्राप्त करना चाहते हैं<sup>15</sup>, और अल्लाह माफ करने वाला<sup>16</sup>, बड़ा दयालु है।

14) हे नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए हलाल कर दिया है उसे आप क्यों हराम करते हैं?<sup>17</sup> क्या आप

उनसे कठोर हिसाब लिया गया, और अज़ाब से दोचार हूए।

9) जिक्र से मुराद कुरुआने अंतीम है, और एक कौल यह है कि यहाँ जिक्र से मुराद स्वयं अल्लाह के रसूल<sup>18</sup> ही हैं, इसी कारण फ़रमाया : **رَسُوْلُ اللّٰهِ** अर्थात् तुम्हारी तरफ़ कुरुआन उतारा, और उस कुरुआन के साथ एक रसूल भेजा।

10) जो लोगों के लिए उन आदेशों को जिनकी उन्हें ज़खरत है, खोल-खोल कर बयान करता है।

11) ताकि अल्लाह उन आयतों के द्वारा उन लोगों को जो ईमान लाए हैं और नेक कर्म किया है, गुप्ताही के अन्धेरों से निकाल कर हिदायत की रौशनी की ओर और कुफ़ के अन्धेरों से नूर ईमान की ओर ले आए।

12) अर्थात् सात आकाशों की तरह उसने सात धरतियां भी पैदा की हैं, एक मर्फ़ूअ़ सही हवीस से इसकी ताईद भी होती है, (सही हुखरी और मस्तिम में) नबी<sup>19</sup> का फ़रमान है : **مِنْ ظُلْمٍ بِرَا مِنَ الْأَرْضِ طَوْقَةً مِنْ سَبْعَ أَرْضِينَ** : जिसने किसी का एक बीता जमीन भी हथयाया तो कियामत के दिन उस जमीन का उतना हिस्सा सातों जमीनों से तौक बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा।

13) अर्थात् सातों आकाशों से उसका हुक्म सातों धरतियों पर उतरता है तो पानी बरसाता है, और पेड़-पौधे निकलते हैं, और रात और दिन और गर्मी और जाड़ा आता है।

14) नबी<sup>19</sup> ने जिस चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लिया था, उसके बारे में कहा गया है कि : नबी<sup>19</sup> जैनब बिन्ते जहश<sup>20</sup> के पास शहद (मधु) पीते थे, तो आइशा और हम्सा<sup>21</sup> को जैनब के पास समय से अधिक ठहरना नहीं भाया, और उन दोनों ने आप को इससे रोकने के लिए एक स्कीम बनाई कि जब आप उनके पास आएं तो यह दोनों आप से यह कहें कि हमें आप के मुंह से (मणाफ़ीर जो कि एक फूल है जिससे बास आती है) की बास आ रही है, तो उन दोनों ने ऐसा ही किया, जिस पर आप ने फ़र्माया : मैं ने तो जैनब के घर में मात्र शहद पिया है, अब मैं क़सम खाता हूं कि यह नहीं पिंडांगा, और आप ने अपने ऊपर इसे हराम कर लिया।

15) इस तरह कि आप ने अपने ऊपर वह चीज़ हराम कर ली जिसे अल्लाह ने आप के लिए हलाल किया था।

16) इस कोताही को जो अल्लाह की हलाल की हूई चीज़ को अपने लिए हराम करके आप से हूई है, कहा गया है कि यह एक छोटा पाप था, इसी कारण अल्लाह ने इस पर आप को ख़बरदार किया।

17) नबी<sup>19</sup> ने जिस चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लिया था, उसके बारे में कहा गया है कि : नबी<sup>19</sup> जैनब बिन्ते जहश<sup>20</sup> के पास शहद (मधु) पीते थे, तो आइशा और हम्सा<sup>21</sup> को जैनब के पास समय से अधिक ठहरना नहीं भाया, और उन दोनों ने आप को इससे रोकने के लिए एक स्कीम बनाई कि जब आप उनके पास आएं तो यह दोनों आप से यह कहें कि हमें आप के मुंह से (मणाफ़ीर जो कि एक फूल है जिससे बास आती है) की बास आ रही है, तो उन दोनों ने ऐसा ही किया, जिस पर आप ने

1) अर्थात् जितनी जीविका उसे दे रखी है, तो वह फ़कीर व्यक्ति पर उतना खर्च करने का बोन्द्र नहीं डालता जिसकी उसे शक्ति न हो, जैसा कि धनवान खर्च करते हैं।  
 2) अर्थात् तंगी और सर्की के बाद मालदार बना देगा। अर्थात् वह तुम्हारी स्वरूप की नतीजतन उनका धाटा ही हूवा।  
 3) अर्थात् अल्लाह ने उन कामों का जो उन्होंने किए कठोर हिसाब लिया, और अधिकरत में उन्हें कठोर अज़ाब में डाला, और संसार में उन्हें भूक, अकाल, से दोधार किया, और उन्हें धनसाया और उनके चेहरों को बदल दिया।  
 4) अर्थात् उस मारी अज़ाब का मजा जो उनके कुफ़ के कारण है।  
 5) अर्थात् एरिणाम यह निकला कि वे संसार में हलाक और बर्बाद कर दिए गए, और आखिरत में कठोर अज़ाब से दोधार होंगे, तो वे अपने धन, अपनी सन्तान और अपनी जान के अन्दर धाटे में रहे।  
 6) अर्थात् नरक का अज़ाब।  
 7) हे ठीक-ठाक अकूल रखने वालो! इससे मुराद नबी<sup>19</sup> के उम्मती हैं।  
 8) अर्थात् जिन्होंने अल्लाह के सामने अपने सर झुका रखे हैं, और जो मुहम्मद<sup>22</sup> के कर्मवदीर हैं, तो तुम अपने ईमान में सच्चे बनो, और अपने से पहले की उम्मतों की तरह न हो जाओ, जो अवजाकरी (बागी) होगए, तो फ़र्माया : मैं ने तो जैनब के घर में मात्र शहद पिया है, अब मैं क़सम खाता

करने यालियों में से थी ।

## सूरतुल मुल्क - 67

- १ कहता है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 १ बहुत बर्फत-वाला है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में राज्य है और जो प्रत्येक वस्तु पर शक्ति रखने वाला है।  
 १ जिसने जिन्दगी और मौत को इसलिए पैदा किया है कि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें से अच्छे कर्म कौन करता है, और वह गालिब (प्रभावशाली) और बख्खाने वाला है।  
 १ जिसने सात आकाश ऊपर-नीचे पैदा किए (तो हे देखने वाले! अल्लाह) रहमान की पैदाइश में कोई वेजावतगी (असंगति) न देखेगा, दोबारा पलट कर देख ले कि क्या कोई चीर भी दिखाई दे रही है।  
 ४ फिर दोहरा कर दो-दो बार देख ले, तेरी निगाह तेरी और हीन (और विवश) हो कर थकी हुई लौट आएगी।  
 ५ और निःसंदेह हम ने संसारीय आकाश को दीपों (तारों) से संवारा और उन्हें शैतानों के मारने का साधन बना दिया और शैतानों के लिए हमने (नरक का जलाने वाला) अज़ाब तैयार कर दिया।  
 ६ और अपने और के साथ कुक्र करने वालों के लिए नरक का अज़ाब है, और वह क्या ही बुरा स्थान है।  
 ७ जब उसमें ए डाले जाएंगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वह उबाल खा रहा होगा।

और जिनके साथ परिशता उनसे बात किया, और यह जिन्दगी का उनसे कहना है कि मैं आप के रव का रसूल हूँ, और इसी तरह उहें ईसा के पैदा होने और उनके मुक़र्ब रसूल बनाए जाने की खुश-खबरी देना। (दिखाए मुतु अल्लाह इन ४२-४३)  
 १ अर्थात् वह अपने रव को कफ़ार्बारी और इवादत करने वाले लोगों में से थी, और उनका धराना नेकी और इताअत का धराना था।  
 २ तबारक का अर्थ है : बहुत अधिक ख़ैर और बर्कत वाला। और बादशाहत का अर्थ संसार और आखिरत में आकाश और धरती की बादशाहत है।

३ मौत : शरीर से रुक्क का सम्पर्क ख़त्म होजाने का नाम मौत है, और शरीर से रुक्क का सम्पर्क वाकी रहने का नाम : जीवन है। तो जीवन का अर्थ इन्सान को पैदा करना और उसमें रुक्क डालना है।

अर्थात् तुम पर अपनी शरीअत का बोझ डाल कर तुम्हें आज़माए, फिर तुम्हें उसका बदला दे, और आज़माइश का उद्देश्य नेक लोगों की नेकी और पैरवी करने वालों की पैरवी के कमाल का स्पष्ट होना है।

४ अर्थात् : एक के नीचे एक, कुछ को कुछ के ऊपर।  
 अर्थात् : उनमें कोई इखिलाफ़, जुदाई, टेढ़ापन, और मुख़लाफ़ नहीं पाओगे, बल्कि यह बराबर और सीधे हैं जो अपने पैदा करने वाले पर दत्तील (प्रमाण) हैं।

अर्थात् : तुम अपनी नजर दोबारा आकाश पर डालो, और फिर से ध्यान देकर देखो क्या तुम्हें उसकी बड़ाई और चौड़ाई के बावजूद तुम्हें उसमें कोई फटन और दराड़ दिखाई दे रहा है।

५ अर्थात् : बार-बार नजर डालो, जितना अधिक नजर डाल सको, यह बहुत ऊँची चीज़ है दलील कायम करने और बहाने को नष्ट करने के लिहाज़ से।

अर्थात् : आकाश की पैदाइश में कोई कमी देखने से अपमानित और नीची होकर लौट आएगी। अर्थात् : और वह थकी होगी।

६ अर्थात् : यह तारे आकाशों के लिए शोमा होने के साथ-साथ शैतानों को मारने का माध्यम भी है जो उन पर आग बन कर गिरते हैं। कतादा कहते हैं कि अल्लाह तज़ाला ने तीन मक्कद के लिए तारे पैदा किए : आसमानों की शोमा के लिए, शैतानों को मारने के लिए, और जल-थल में रास्ते के निशान बताने के लिए।

अर्थात् : संसार में उन्हें शिखावे साकिब से जलाने के बाद इसने

आखिरत में उन शैतानों के लिए नरक का अज़ाब तैयार कर रखा है।

७ अर्थात् : वे नरक में फेंके जाएंगे जिस तरह कि लकड़ी आग में फेंकी जाती है। तो वे जहन्म की ऐसी आवाज़ सुनेंगे जिस तरह कि गया पहली बार है। और यह जहन्म उनके साथ हांडों के अंतर्गत आवाज़ निकलता है। और यह जहन्म उनके साथ हांडों के अंतर्गत आवाज़ निकलता है।

شُرُودُكَ الْمَلَكِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 تَبَرَّكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ ۱ الَّذِي خَلَقَ  
 الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِبَلْوَكُمْ أَيْكُمْ أَحَسَنُ عَمَلاً وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ۖ ۲  
 الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ طَبَاقًا مَّا تَرَىٰ فِي حَلْقِ الرَّحْمَنِ مِنْ  
 نَّفُوتٍ فَأَرْجِعَ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِنْ فُطُورٍ ۖ ۳ ثُمَّ أَرْجِعَ الْبَصَرَ كَرَبَّنِ  
 تَنْفِيلِ إِنِّيَكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ۖ ۴ وَلَقَدْ زَيَّنَ السَّمَاءَ  
 الَّذِي يَأْمَدُ بِحَبْيَحَ وَجَعَلَنَاهَا جُوْمًا لِلشَّيْطَنِ وَأَعْنَدَنَا لَهُمْ عَذَابَ  
 الْعَسِيرِ ۖ ۵ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَيْنِ أَعْيُنِهِمْ عَذَابٌ جَهَنَّمُ وَيَقْسُ الْمَصِيرُ  
 إِنَّ الْقَوْافِيَ سَمِعُوا مَا شَيْقَاقَا وَهِيَ تَفُورُ ۖ ۶ تَكَادُ تَسِيرُ  
 مِنَ الْغَبِطِ كُلَّمَا أَلْقَى فِيهَا فَوْجٌ سَالْمُونْ خَرَّنَهَا الْغَيْرُ كَمْ كُنَّ يَنْبِرُ ۶  
 قَالَ الْأَيْلَنْ قَدْ جَاءَنَا نَانِيَرْ فَكَذَبَنَا وَقَنَّا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتَ  
 لِأَنْ فَنَلِلْ كَبِيرٌ ۶ وَقَالُوا لَوْكَدَانَسْمَعْ أَوْنَقُلْ مَاكَافِيْ أَمْخَبِ  
 الْعَسِيرِ ۶ فَأَعْرَقَوْلَبِدَنِيْمَ فَسَخَفَا لِأَصْحَبِ الْعَسِيرِ ۶  
 إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۶

८ करीब है कि (अभी) कोध के मारे फट पड़े, जब कभी उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा उससे नरक के दारोगा पूछें कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? ९ वे जवाब देंगे कि बे-शक आया तो था, परन्तु इस नहीं उतारा, तुम भयंकर गुप्राही में हो हो। १० और कहेंगे कि यदि हम सुनते होते या समझते होते तो जहन्मियों (नरकवासियों) में (सौम्यता) न होते।

खैलने की तरह खौल रही होगी।

८ अर्थात् : जहन्म काकिरो पर अपने कठोर गुम्फा के कामन कीरे कि वह फट कर एक दूसरे से अलग-अलग होजाए। लोगों का एक गिरोह।

यह दारोगे फ़रिश्ते में से होंगे, जो उसमें डाट के लैर पर रुक़े। संसार में। जो तुम्हें इस दिन से डराता।

९ अल्लाह के पास से जो हमरा रव है, डराने वाला रसूल अब वे जिसने हमे डराया, और इस दिन के बारे में जानकारी दी। तो हमने उस डराया को नकार दिया।

और हमने कहा अल्लाह ने तुम्हारे गुदानों पर लैर की बारे जानकारी दी। और शर्करे और शर्करान की बोंबे ऐसे चीज़ जीव उड़ाने हैं जो यह इन्हें लाता है। हम ने उन रसूलों को कहा कि तुम इन बारे की बातें दे दूँ। और सत्य से बहुत दूर हो।

१० अर्थात् यदि हम उस व्यक्ति की बारे लोहे जो सूर रख रखता है, और उस व्यक्ति की तरह स्लोवे लोहे जो सूर और लाला के फ़र्क करता है और उन्हें व्यक्त देता है, जो सूर स्लोवे लाला है। हम ने उन रसूलों को कहा कि तुम इन बारे की बातें दे दूँ।

وَأَسِرُّ وَأَقْوَلُكُمْ أَوْجَهُ رَأَيْدَهُ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الْأَصْدُورِ  
يَعْلَمُ مِنْ خَلْقٍ وَهُوَ الظِّيفُ الْحَنِيرُ<sup>١١</sup> هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ  
الْأَرْضَ ذُلُّا فَأَنْتُمْ فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُّهُ مِنْ رِزْقِهِ وَإِلَيْهِ الشُّورُ  
أَمْ أَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَغْسِفَ بِكُمْ الْأَرْضَ فَلَادَاهُ  
تَمُورُ<sup>١٢</sup> أَمْ أَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا  
فَسْتَعْلَمُونَ كَيْفَ تَذَرِّي<sup>١٣</sup> وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ  
كَانَ تَكْرِيرُ<sup>١٤</sup> أَوْ لَتَرِبُوا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُ صَنَفَتْ وَيَقِضِنَ مَا  
يُعْسِكُهُنَّ إِلَّا الْرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ<sup>١٥</sup> أَمْنَ هَذَا الَّذِي  
هُوَ جَنْدٌ لَكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِنْ دُونِ الْرَّحْمَنِ إِنَّ الْكُفَّارَ إِلَّا فِي عُرُورٍ  
أَمْنَ هَذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنَّ أَمْسَكَ رِزْقَهُ بَلْ لَجُوافِ غُثْرٍ  
وَنَفُورٍ<sup>١٦</sup> أَفَنْ يَمْشِي مُكَبَّاعَنِ وَجْهِهِ وَأَهْدَى أَمْنَ يَمْشِي سَوِيًّا  
عَلَى صَرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ<sup>١٧</sup> قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ الْسَّعَةَ  
وَالْأَبْصَرَ وَالْأَقْيَدَ قَلِيلًا مَا تَشَكُّرُونَ<sup>١٨</sup> قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَكُمْ  
فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُخْشَرُونَ<sup>١٩</sup> وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ  
صَادِقِينَ<sup>٢٠</sup> قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنْذِرْتُ مُرْسِيًّينَ<sup>٢١</sup>

<sup>١١</sup> तो उन्होंने अपने अपराध को स्वीकार लिया, अब ए नरक-वासी हट जाएं (दूर हो)।  
<sup>١٢</sup> वेशक जो लोग अपने रव से बिना देखे ही डरते रहते हैं, उनके लिए विद्युश है और बड़ा सवाब है?  
<sup>١٣</sup> और तुम अपनी बातों को चुपके से कहो या ऊँची आवाज में, वह तो सीनों में (छिपी हुई) बातों को भी अच्छ तरह जानता है।  
<sup>١٤</sup> क्या यही न जाने जिसने पैदा किया, फिर वह वारीक-धीन (सूक्ष्मदर्शी) और जानने वाला भी हो।<sup>٤</sup>

और हमने रसूल की पैरवी की होती।

<sup>١</sup> कृप करने और नवियों के शुभानाने के गुनाहों को स्वीकार कर लिया जिसके कारण ये जहननम के अज़ाब के हक्कदार हुए।  
तो उनके लिए अल्लाह और उसकी रहमत से दूरी हो, और जब उन्होंने अपने गुनाहों को स्वीकार लिया तो अल्लाह तज़्हाला ने उन पर अज़ाब लाजिम कर दिया; क्योंकि इस स्वीकृति के कारण उन पर दरील कायम हो गई, और उनके लिए अब कोई बड़ा बाधा न बचा।  
<sup>٢</sup> मारी बातों को अल्लाह तज़्हाला जानता है, उस से कोई चीज़ छुपी नहीं रहती, वह तो दिलों के भेद का जानने वाला है।  
<sup>٣</sup> क्या त्रिम हरसी ने उसे पैदा किया, और उसे बुजूद (अस्तित्व) में लाया वही उसके भेद और दिलों में कुपी हुई बात नहीं जानेगा? जबकि उसने उसे अपने हाथ से पैदा किया, और जो किसी चीज़ का बनाने वाला हो, वह उसके बारे में अधिक जानता है।  
<sup>٤</sup> अर्थात् उसका ज्ञान इसमा लटीक है कि वह दिलों में उठने वाली बातों को भी जानता है। और वह स्वरूप-दार है उन बातों से जो तुम सुपाते और दिल में रखते हो,

<sup>١٥</sup> वह वही हस्ती है जिसने तुम्हारे लिए धरती को अधीन (और पस्त) बनाया ताकि तुम उसके रास्तों पर चलते-फिरते हो और उसकी दी हुई रोज़ी को खाओ पिओ, उसी की रहो और उसकी दी हुई रोज़ी को खाओ पिओ, उसी की ओर (तुम्हें) जीकर उठ खड़ा होना है।  
<sup>١٦</sup> क्या तुम इस बात से बे-खौफ (निर्भय) हो गए हो कि आकाशों वाला तुम्हें धरती में धंसा दे और अचानक धरती कपकपा उठे।

<sup>١٧</sup> या क्या तुम इस बात से निडर हो गए हो कि आकाशों वाला तुम पर पत्थर बरसा दे? फिर तो तुम्हें जानकारी हो ही जाएगी कि मेरा डराना कैसा था।

<sup>١٨</sup> और उनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया था, (तो देखो) उन पर मेरा अज़ाब कैसा कुछ हुआ?  
<sup>١٩</sup> क्या यह अपने ऊपर कभी पंख खोले हए और (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पक्षियों को नहीं देखते, उन्हें (अल्लाह) रहमान ही (हवा और फिज़ा में) थामे हुए है।

निसदेह प्रत्येक वस्तु उसकी निगाह में है।  
<sup>٢٠</sup> अल्लाह के सिवाय तुम्हारी कौन सी सेना है जो तुम्हारी सहायता कर सके काफिर तो सरासर धोखे ही में हैं।  
<sup>٢١</sup> यदि अल्लाह (तज़्हाला) अपनी रोज़ी रोक ले, तो (बताओ) कौन है, जो फिर तुम्हारी जिविका चलाएगा? बल्कि (काफिर) तो उद्धंडता एवं विमुख होने पर अड़ गए हैं।

उससे कोई भेद में रहने वाली चीज़ भेद में नहीं रह सकती।

<sup>٥</sup> समतल और नर्म बनाया, ताकि तुम उस पर आबाद हो सको, और उस पर चल सको, इतना कठोर नहीं बनाया कि तुम्हारा उस पर रहना और चलना फिरना कठिन होजाए।

अर्थात् उसके रास्तों और किनारों में चलो फिरो।

जो उसने तुम्हें दी है, और तुम्हारे लिए धरती में पैदा की है।

अल्लाह तज़्हाला आदम की सन्तान पर अपने एहमानों को जला रहा है, कि उसने उहें इस धरती पर शक्ति दी, और उहें पेसी योग्यताएं दी जिन्हें कार्य में लाकर वे इसके पापदे को प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन उनके लिए यह भी जानना ज़रूरी है कि उहें उसकी तरफ लौट कर जाना है, इसी लिए फरमाया : आपनी कब्दों से उठ कर उहें उसी की ओर जाना है, किसी और नहीं।

<sup>٦</sup> अर्थात् : अल्लाह तज़्हाला।

अर्थात् तुम्हें इस में धंसादे, इसके बाद कि उसने तुम्हारे लिए इसे नर्म और समतल बनाया, कि तुम इसके रास्तों और किनारों में चल सको, जैसे कि कारून के साथ उसने किया। इस नरमी और ठहराव के प्रतिकूल जिस पर अभी यह है डिलने और लरजने लग जाए।

<sup>٧</sup> जैसे उसने लूत की कीम और अस्हावुत् पील (हाथियों वाले अब्राहा और उसकी फौज) पर बरसाए, और एक कौल यह है कि इसका अर्थ ऐसी हवा है जिसमें कंकरियां हों।

अर्थात् : जब तुम यह अज़ाब देख लोगे तो तुम जान लोगे कि मेरा डराना कैसा था, लेकिन इस जानने से तुम्हें कोई लाभ न होगा।

<sup>٨</sup> अर्थात् : मेरा इन्कार करना उन पर कैसा रहा उम अपमानित करने वाले अज़ाब के कारण जिसमें भैंने उन्हें डाला।

<sup>٩</sup> उड़ने के समय फूज़ा में अपने पंखों को खोले और सिमटाए हुए।

फूज़ा में उड़ने समेटने और फैलाने के समय।

जो हर चीज़ पर शक्ति ग़वता है।

अर्थात् : उससे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है।

<sup>١٠</sup> अर्थ यह है कि कोई फौज ऐसी नहीं जो तुम्हें अल्लाह के अज़ाब से रोक सके, और तुम्हारी सहायता पर शक्ति रख सके, यहि अल्लाह अपनी दया और सहायता द्वारा तुम्हारी मदद न करे। शैतान की ओर से बड़े बड़े में है, वह उसके द्वारा उहें खोके देता है।

<sup>١١</sup> अर्थात् कौन है जो तुम पर वर्षा द्वारा जैविक बरसाए वह, जो अल्लाह वर्षा को तुम से रोक ले।

तुम्हरी समुदायों और उम्हतों से उहें खोई नसीहत उक्ती और क्षमा से ज्ञान से काम लिया।

فَلَمَّا رَأَهُ زُلْفَةَ سِيَّفَتْ وُجُوهُ الظَّالِمِينَ كَفَرُوا وَقُلَّ هَذَا الَّذِي  
كُنْتُ بِهِ بَنِدَعُونَ ۝ فَلَمَّا رَأَهُ يَسْرَارُ إِنْ أَهْلَكَنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعَنِي  
أَزْجَنَافِنَ شَبَابُ الْكُفَّارِ مِنْ عَدَابِ أَلْيَمٍ ۝ فَلَمْ هُوَ  
الرَّجُلُنَّ مَامِنَاهُ، وَعَلَيْهِ تَوْكِنَا فَسْتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ  
فَلَمَّا رَأَمْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَا ذُكِرَ عَوْرَافِنَ يَأْتِيكُمْ بِمَا وَعَيْنَ ۝

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### سُورَةُ الْقَاتِلَةِ

अब यह बहुत अधिक हिंदूवान (भारीदार्शन) पर है जो अल्लाह के बाप औंडा होकर चाहे या वह जो सीधा (पैरों से बढ़ा) भी हो रखते हर चाहे रहते हैं।  
वह दीजिए कि यादी (अत्त्वाह) है जिसने तुम्हें पैदा किया और उसके बाप, अधिक और दिन चलाए। तुम बहुत ही कम बहुत-शाकाहारी (कृष्णाहार न्यून) करते हो।  
वह दीजिए कि यादी (अत्त्वाह) है जिसने तुम्हें धूरती पर दीजा और उसकी ओर तुम इकट्ठे किए जाओगे।  
और (काफिर) प्रस्तुत है कि वह वायदा कब प्रकट होगा यह तुम सबके लिए चाला आओ।  
(आप) वह दीजिए इसकी जानकारी तो अल्लाह ही को ही जो स्वयं स्वयं में आगाह (स्वावधान) कर देने वाला हूँ।  
जब ऐसे लोग उस (बायदे) को करीब-तर (निकटतम) पाते हैं, उस समय इन काफिरों के चेहरे बिंगड़ जाएंगे और कह दिया जाएगा कि यही है जिसे तुम माँगा करते थे।  
(आप) कह दीजिए कि ठीक है यदि मुझे और मेरे साथियों को अल्लाह (तआता) नष्ट कर दे या हम पर दया करे, (जो भी हो, यह तो बताओ) कि काफिरों को दर्द-नाक अंजाम (कर्टव्याधी यातना) से कौन बचाएगा?  
(आप) कह दीजिए कि वही रहमान है, हम तो उस पर इसाम ला चुके और उसी पर हमने भरोसा किया। तुम्हें जल्द ही जानकारी हो जाएगी कि स्पष्ट भटकावे में कौन है?  
(आप) कह दीजिए ठीक है, यह तो बताओ कि यदि तुम्हारा (पैरों का) पानी धरती चूस, जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए निधरा हुआ पानी लाए?

१. मुह के बल औंडा चलने वाले से मुराद काफिर है, जो दुनिया में औंडे मुह पाप में हूँदा रहता है, तो अल्लाह कियामत के दिन उसे उसके चेहरे के बल ही उठाएगा। सौंधा जो अपने आगे देख रहा हो।

२. बनावर और समतल गांठे पर जिसमें टेढ़ापन न हो, इससे मुराद मोमिन है, जो दुनिया में अल्लाह के बनाए हुए करनूँ पर हिंदायत और बसीरत के साथ छलता है, तो अल्लाह उसे अधिकरत में सिराते मुस्तकीम पर सीधा उठाएगा, जो उसे मांग जन्मत में पहुँचा देगा।

३. उन्हे बरनी में पैदा किया गया, और उसकी पीठ पर उन्हे फैला दिया।

४. अर्थात् कियामत कब वायम होगी इसकी जानकारी मात्र अल्लाह को है, इससे कोई भी इसके बारे में नहीं जानता।

५. तुम्हें इससे डरा रहा हूँ, और तुम्हे कुक के परिणाम से डरा रहा हूँ, और तुम्हे केवल वहाँ दीने वाला रहा हूँ जिन्हे अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है, उसने मुझ से यह नहीं कहा है कि मैं तुम्हें यह बताऊँ कि कियामत कब वायम होगी।

६. अर्थात् अजाद को करीब देख लेंगे। काले होजायेंगे, उन पर हवाइयाँ उड़ने लगेंगी, और जिल्लत छा जाएंगी।

अर्थात् समार में मज़ाक के लीर पर तलब कर रहे थे, और जिसकी ज़रूरी नहीं रहे थे।

७. मौत देख या बहुत करके, जैसाकि तुम मेरे लिए उसकी तमन्ना और चाहत करने हो, और मेरी मूर्मांडतों और हलाकत के इत्तिज़ार में रहते हो।

कुछ समय के लिए अजाद को गोक करके, तो यदि मान लिया जाए कि हमारे साथ रहेगा हो गया।

यह पूछना उन पर रह करने के लिए है, अर्थात् उन्हे उससे कोई नहीं बचा सकेगा, तो बात बनावर है यादों अल्लाह अपने रसूल और जो सहावा उनके साथ है बनाकर करदे, जैसा कि काफिर बालों हैं, या उन्हे मोहल्लत दे दे।

८. मुझे बताओ यदि यांत्रों, कुंडों, और नदियों-नहरों का तुम्हारा वह पानी तरह चला जाए, कि बिल्कुल उसका बुज्र ही न रहे, या धरती के इन्हाँ सको। तो कौन इन्हाँ अधिक बहता पानी लाएगा जो खत्म न हो, अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवाएँ कोई ऐसा नहीं जो उसे तुम्हारे पास वर्षा और नहर द्वारा ला सके, ताकि तुम उससे लाभ उठा सको।

८. अक्षरों में से एक अक्षर है, जिस तरह से कि सूरतों के आरम्भ दूसरे अक्षर आए हैं जिन से सूरतों का आरम्भ हुआ है। अल्लाह तआता ने कलम की कसम खाई है; क्योंकि सूरतों इसी के द्वारा होती है, और कलम आम है, हर उस कलम को शामिल है जिससे लिखा जाए।

९. अर्थात् उन ज्ञानों की जिन्हें लोग कलम द्वारा लिखते हैं।

१०. अर्थात् ऐ सुहम्मद! अल्लाह ने तुम्हें नुबुव्वत और आम सरावारी ही है जो नेमत दी उसके कारण तुम जुनून, पागलपन और दीवानगी से पीछे हो।

११. नुबुव्वत का बोझ उठाने में जो परेशानियाँ आप ने डेली हैं, और विभिन्न तरह की जो कठिनाइयाँ बरदाश्त की हैं, उस पर आप के लिए असंघ चरवाय हैं।

१२. अर्थात् अत्यधिक सवाब है जो कभी खत्म न होगा, या इस एहसान के बदला लोग बुका ही नहीं सकेंगे।

१३. अर्थात् आप उस अज़लाक पर हैं, जिसका तुम्ह अल्लाह ने आप के कुरआन में दिया है, सहीह (मूसिलिम) में उम्मुत मोमिनीन अद्दा दीने लिए रिवायत है कि उन से नवी के अज़लाक के बारे में पूछा गया है उन्होंने कहा : आप के अज़लाक सरापा कुरआन के नमूना है।

سَيِّدُهُ عَلَى الْخَطُومِ ۖ إِنَّا بِأَزْوَانِهِ كَمَا بَلَوْنَا أَنْصَبَ لِجَنَاحَهُ ذَلِفْنَا  
بِعَصْرِ مُهَاجِرِهِ مُصْبِحِينَ ۗ وَلَا يَسْتَوْدُ ۗ فَطَافَ عَلَيْهِ طَافَتِنَدِنَدَ  
وَهُنَّ نَاهُونَ ۗ فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرَمِ ۗ فَتَادَهُ مُصْبِحِينَ أَنَّ  
أَغْدُوا عَلَى حَرَثِكُمْ إِنْ كُنْتُ صَدِّمِينَ ۗ فَأَنْطَلَقُوا وَهُنَّ بَنْحَمْدُونَ  
أَنْ لَآيْدُخَلْنَهُ الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ كِسْكِينَ ۗ وَغَدْرُ عَلَى حَرَقْدِنِينَ هَذَا  
رَأْوَهَا قَالُوا إِنَّا الصَّالُونَ ۗ بَلْ خَنْ تَحْرُمُونَ ۗ قَالَ أَفْسَطْمُ الرَّاقِلَ  
لَكُلُّو لَاسْحِونَ ۗ قَالُوا سَبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّا كَاظِلِمِينَ ۗ فَأَقْبَلَ  
بِعَصْرِهِمْ عَلَى بَعْضِ يَتَلَمُونَ ۗ قَالُوا نُونَنَلَّ إِنَّا كَاطِعِينَ ۗ عَنِ  
رَبِّنَا أَنْ يُبَدِّلَنَا خِيرَهُمْ إِنَّا إِلَى رِئَازِغَبُونَ ۗ كَذَلِكَ الْعَذَابُ وَلَعْنَابُ  
الْآخِرَةِ أَكْبَرُلُوكُمْ فَوْأَيَعْلَمُونَ ۗ إِنَّ لِلْمُنْتَقِينَ عِنْ دِرَبِهِمْ حَتَّىٰ النَّعِيمِ  
أَفَنْجَعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْجُرَمِينَ ۗ مَا لَكُوكِنَفْتَخْكُمُونَ ۗ أَمْ  
لَكُوكِنْبِفِهِ تَدْرُسُونَ ۗ إِنَّ لَكُوكِفِهِ لَآخِرُونَ ۗ أَمْ لَكُوكِنْسُنَ  
عَلَيْنَا بَلْغَهُ إِلَى بَوْمَالْقِيمَهُ إِنَّ لَكُوكِنَأَخْكُمُونَ ۗ سَلَهَهُ أَبْهَمَ  
بِذَلِكَ زَعِيمُ ۗ أَمْ كُمْ شَرَكَاءِ فَلِيَأَوْشِرَكَاهِمْ إِنْ كَانُوا أَصَدِّقِينَ  
يَوْمَ يُكَسْفُ عَنْ سَاقِ وَيَدِعُونَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِعُونَ

कि तुम में प्राप्त कौन है।  
निःसदह तेरा रब अपने रास्ते से भटकने वालों को अच्छा तरह जानता है, और वह रास्ता पाए लोगों को भी भ्रमी-भाँति जानता है।  
तो आप झटलाने वालों की (बात) स्वीकार न करें।  
वे तो चाहते हैं कि आप तनिक ढीले हों तो यह भी ढीले पड़ जाएं।  
और आप किसी ऐसे व्यक्ति की भी कहना न मानें जो अधिक कस्मे खाने वाला हो।

- 11 वे-वकार, कमीना (दुष्ट, दुराचारी) और चुगली करने वाला हो।  
12 भलाई से रोकने वाला, सीमा उल्लंघन करने वाला पापी हो।  
13 घमंडी फिर साथ ही वे-नसब (कुवंश) हो।  
14 (उसकी उद्दण्डता) केवल इसलिए है कि वह धनवान और पुत्रों वाला है।  
जब उसके सामने हमारी आयते पढ़ी जाती हैं तो यह कहें देता है कि ए तो पूर्व के लोगों की कथाएं हैं।  
हम भी उसकी सूँड़ (नाक) पर दाग देंगे।  
वे-शक हमने उनकी उसी प्रकार परीक्षा ली, जिस प्रकार हमने बाग वालों की परीक्षा ली थी। जबकि उन्होंने कसमें खायी कि सवेरे होते ही उस (बाग) के फल तोड़ लेंगे।  
और इंशा-अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) न कहा।  
तो उस पर तेरे रब की ओर से एक बला चारों ओर से धम गयी और वे सो ही रहे थे।  
तो वह (बाग) ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती।  
अब सवेरे होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाजें दी।  
कि यदि तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर सवेरे हो चल पड़ो।  
फिर ये सब चुपके-चुपके बातें करते हुए चले।  
कि आज के दिन कोई निर्धन तुम्हारे पास न आपाए।

5 هَذَار : जो लोगों का चर्चा उनके सामने बुराई से करता हो।  
مَشَاءٌ بِعَيْمَ : जो लोगों की चुगुलखोरी (पिशुनता) करके, उहें लड़ाता और प्रश्नके बीच झगड़ा बढ़ाता है।  
عُتْلُ : उखड़, घमंडी, बुरे स्वभाव का। ज़ज्जाज कहते हैं कि का अर्थ : कठोर और बुरे स्वभाव के हैं।  
इन बुराईयों के साथ-साथ वह رَسْمٌ (कुवंश, जिसकी नसब में सन्देह हो, किसी वंश से मिला दिया गया है, हालांकि वह उसमें से न हो) भी है।  
7 तुम इसकी बात इस कारण से न मानो कि वह धनी और सन्तान वाला है, और एक कौल यह है कि इससे मुराद डांट फटकार है, इस तरह से कि अल्लाह ने धन और सतान के रूप में जो नेपते दी हैं, उसका बदला वह यह दे रहा है कि वह अल्लाह, उसके रसूल और उसकी निशानियों का इन्कार कर रहा है।  
8 अर्थात हम उसकी नाक पर कालक लगादेंगे, जिसके कारण उसका चेहरा जहन्म में डाले जाने से पहले काला होजाएगा, और उसकी यह नाक उसके जहन्मी होने की निशानी होगी, फिर हम उस पर बदनुमाई थोप देंगे जो उससे हटेगी नहीं, उसी से वह पहचान लिया जाएगा।  
9 अर्थात अल्लाह तथाला ने नवी के शराप के कारण मक्का के काफिरों को भूक और काल में ग्रस्त किया।  
जिनकी घटना कुरैश में प्रसिद्ध थी, कहा जाता है कि यमन में सन्मान शहर से 6 मील की दूरी पर एक व्यक्ति का बाचीवा था, वह उसमें से अल्लाह का हक अद्य करता था, जब वह मर गया और फुलवारी उसके सन्तान के क़ज़े में आगई तो उन लोगों ने उस फुलवारी के लाभ लोगों से रोक लिए, और उसमें जो अल्लाह का हक था उसके साथ कंजूसी की, और कहने लग कि : धन थोड़ा है, और सन्तान अधिक है, हमारे लिए इन चीजों के करने की गुनाहार नहीं जो हमारे पिता किया करते थे, उन लोगों ने गरीबों को उस फुलवारी के लाभ से महसूम कर देने का इच्छा कर लिया तो उनका परिणाम वही हुआ जिसका चर्चा अल्लाह ने अपनी किताब में किया।  
अर्थात जब उन लोगों ने कसम खाया कि वे उसके फल तड़के सवेरे ही तोड़ लेंगे।

- 10 अर्थात इन-शा-अल्लाह नहीं कह रहे थे, और एक कौल यह है कि उसमें से गरीबों के लिए उस मात्रा को अलग नहीं किया जिसे उनका बाप उहें देता था।  
11 अर्थात अल्लाह की ओर से एक आग उस पर धूम गई जिसने उसे जलाकर राख कर दिया।  
12 ऐसे बाग की तरह जिसके फल तोड़ लिए गए हों, और उसमें उसके फलों में से कुछ भी बाकी न रहा हो।  
13 अर्थात एक-दूसरे से कहने लगे कि तड़के सवेरे ही निकल पड़ो, और फकीरों के आने से पहले ही वहाँ पहुँच जाओ।

14 अर्थात यह बात एक-दूसरे से चुपके चुपके कह रहे थे, और उनसे यही कहना था कि इस बाग में आज कोई फक्कर आने न पाए ताकि वह तुम से मांग सके और कह सके कि : तुम लोग मीं जैसे वह थे जो तुम्हारे बाप भी थे।

१ और लपके हुए सुबह-सवेरे गए, (समझ रहे थे) कि हम काम पा गए।  
 २ किर जब उन्होंने बाग देखा तो कहने लगे कि वे-शक हम रास्ता भूल गए हैं।  
 ३ नहीं-नहीं, बल्कि हम महरूम (वंचित) कर दिए गए।  
 ४ उन सबमें जो उत्तम था उसने कहा कि: मैं तुम सबसे कहता ना कि तुम (अल्लाह की) पाकी क्यों नहीं बयान करते?  
 ५ (तो) सब कहने लगे कि हमारा रब पवित्र है, वे-शक हम ही अत्याचारी थे।  
 ६ किर वे एक-दूसरे की ओर मुख करके बुरा भला कहने लगे।  
 ७ कहने लगे हाय अफसोस! वे-शक हम उद्घण्ड थे।  
 ८ क्या अजब (विचित्र) है कि हमारा रब हमें इससे उत्तम बच्चा दे दे, हम तो अब अपने प्रभु से ही आशा रखते हैं।  
 ९ इसी प्रकार प्रकोप (अजाब) आता है, और आखिरत (परलोक) का अजाब बहुत बड़ा है। काश! उन्हें बुख्त होती है।  
 १० वे-शक परहेजगारों (सदाचारियों) के लिए उनके रब के पास उपहारों वाले स्वर्ग (जन्मत) हैं।  
 ११ क्या हम मुसलमानों को पापियों के बराबर कर देंगे?  
 १२ तुम्हें क्या हो गया है, कैसे निर्णय कर रहे हो?  
 १३ क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम पढ़ते हो?  
 १४ कि उसमें तुम्हारी मनमानी बातें हों।  
 १५ या हमसे तुमने कुछ ऐसी कस्में ली हैं जो कियामत (प्रलय के दिन) तक बाकी रहें कि तुम्हारे लिए वह सब है, जो तुम अपनी ओर से मुकर्रर (निर्धारित) कर लो?

१ अर्थात अपने वंश के लोगों से बिना मिले और बिना उन्हें साथ लिए अकेले चल पड़े, यह भ्रम करते हुए कि वे अपने बाग पर बिना किसी मदद के स्वयं शक्ति रखते हैं।  
 २ अर्थात वे आपस में एक-दूसरे से कहने लगे : कहीं हम अपने बाग का रास्ता तो नहीं भूल गए हैं, यह तो नहीं हो सकता, फिर जब उन लोगों ने ध्यान से देखा तो उन्हें विश्वास हो गया कि यही उनका बाग है, और अल्लाह तआला ने इस फूलवारी के फल को नष्ट करके उन्हें सजा दी है, तो कहने लगे : अल्लाह न हमे हमारे बाग के फल से महरूम कर दिया; क्योंकि हमने फकीरों से इसके लाभ को रोक लेने का इच्छा कर लिया था।  
 ३ जो उनमें बेहतर, बुद्धिमान और नेकी वाला था।  
 क्या मैंने तुम से कहा नहीं था कि गरीबों को उन के हड़ से महरूम कर देने की तुम्हारी यह कार्रवाई सरासर अत्याचार और अन्यथा का काम है, तुम क्यों नहीं उसकी पवित्रता करते जबकि तुम्हें यह विश्वास हो चुका है कि वह अत्याचारियों की ताक में रहता है।  
 ४ अर्थात हमारे बाग के साथ जो कुछ उसने किया उस में वह अत्याचारी नहीं; क्योंकि यह हमारे पाप के कारण हुवा, जो पाप हमने फकीरों के साथ उसके लाभ को रोक कर किया है।  
 ५ अर्थात माफी की आशा रखते हुए उससे भलाई चाहने वाले हैं।  
 ६ अर्थात इसी अजाब की तरह जिससे हमने इन्हें आजमाया हम काफिरों को भी संसार में आजमाएं। लेकिन उन्हें समझ-बूझ नहीं।

७ कृतैश वंश के काफिर सरदार कहा करते थे कि मुहम्मद (ﷺ)  
 जो गमान कर रहे हैं यदि सही हुवा तो हमारा और मुसलमानों का हाल वैसे ही होगा जैसे संसार में है, आखिरत में हमें भी वे सारी नेमतें प्राप्त होंगी जो उन्हें प्राप्त होंगी, तो अल्लाह तआला उन्हें खबर-दार कर रहा है कि यह न्याय नहीं है कि जो अल्लाह की पैरवी पाबन्दी के साथ करता हो, और जो पापी अत्याचारी हो अल्लाह के आदेशों की परवाह न करता हो, दोनों में फर्क न किया जाए और दोनों के साथ एक जैसा व्यवहार हो।  
 ८ इस तरह का टेढ़ा न्याय। योग्य कि बदला देने की बात तुम्हारे ही जिम्मे हो।  
 ९ जिसमें तुम पढ़ रहे हो कि आज्ञाकारी, अवज्ञाकारी (फर्मावर्दार नाफर्मान) की तरह है।  
 १० अर्थात क्या उस किताब में यह भी है कि आखिरत में तुम्हारे लिए यही सारी चीजें होंगी जो तुम चाहोगे।  
 ११ तुम्हारा अल्लाह से कोई बादा है जिसे तुमने उससे कस्में लेकर पुख्ता और मज़बूत कर लिया है कि वह तुम्हें जन्मत में लेजाएगा, और यह बाया कियामत तक के लिए निर्धारित हो जिस से वह उस समय तक न निकल

حَمِيمَةُ الْنَّصَرِ مِنْ رِزْقِهِمْ ذَلِكَ وَذَلِكَ مَا يُذْعَنُ إِلَى السُّجُودِ وَمُسْلِمُونَ  
 ١٢ مَذْرُوفٌ وَمَنْ يُكَوِّبُ بِهِذَا الْمَدِينَةِ سَنَسْتَدِرُ جُهُمَّ مِنْ حَيْثُ  
 لَا يَعْلَمُونَ ١٣ وَأَمْلَ هُمْ إِنْ كَيْدِي مَتِينٌ ١٤ أَمْ تَسْتَلِمُهُمْ أَجْرَافُهُمْ  
 مِنْ مَغْرِمٍ مُنْقَلَوْنَ ١٥ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْبُوْنَ ١٦ فَاصْبِرْ  
 لِمَكْرُرِكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحَوْنَ إِذَا نَادَى وَهُوَ مُكْظُومٌ ١٧ أَلَّا  
 إِنْ مَذْرُوكَهُ رُضْمَةٌ مِنْ رِزْقِهِ لَنِيْذَا بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ١٨ فَاجْبَنْهُ رُبْهُ  
 لِجَعْلَهُ مِنْ الْصَّالِحِينَ ١٩ وَإِنْ يَحْكَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيَرْلُوْنَكَ بِأَنْصَارِهِ  
 لَنَاسِمُوا الْأَكْرَبَ وَقَوْلُونَ إِنَّهُ الْمَجْنُونُ ٢٠ وَمَا هُوَ لِأَذْكُرِ الْعَالَمِينَ ٢١

سُورَةُ الْمُنْقَلَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْمَلَائِكَةُ ١ مَا الْحَافَةُ ٢ وَمَا أَذْرَكَ مَا الْحَافَةُ ٣ كَذَبَ شَمْوَدُ  
 وَعَادَ بِالْقَارِعَةِ ٤ فَأَمَانَمُودُ فَأَهْلَكَ شُوَّابًا طَاغِيَةً ٥ وَمَا  
 حَادَ فَأَهْلَكَ ٦ وَأَبْرِيجَ صَرَصَرَ عَائِيَةً ٧ سَخْرَهَا عَلَيْهِمْ  
 سَعَ لَبَالٍ وَثَمَنِيَةً أَيَامَ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرَعَنَ  
 كَاهِمٌ أَغْجَارٌ تَحْلِ خَاوِيَةً ٩ فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ

४० उनसे पूछो कि उनमें से कौन इस बात का जिम्मेदार (और दावेदार) है? १२  
 ४१ क्या उनके कुछ साझीदार हैं? तो चाहिए कि आपने-आपने साझीदारों को ले आएं यदि ए सच्चे हैं।  
 ४२ जिस दिन पिंडली खोल दी जाएंगी और सजदा करने के लिए बुलाए जाएंगे तो (सजदा) न कर सकेंगे। १४  
 ४३ उनकी आँखें नीचों होंगी और उन पर अपमान (और ज़िल्लत) छा रही होंगी, हालांकि ए सजदे के लिए, (उस समय

सकता हो जब तक कि वह उम दिन तुम्हारे लिए इसका निर्णय न करे।  
 १२ ऐ मुहम्मद! आप डांट और फटकार के तीर पर इन काँकीरों से पूछिए कि इनमें कौन इस बात का जिम्मेदार है?  
 १३ क्या उनके अनुसार अल्लाह के कुछ साझी हैं जो इस बात की तो रखते हों कि वे उन्हें आखिरत में मुसलमानों की तरह करें?  
 १४ जिस दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोल देगा जो घटना की कठोरता का प्रमाण होगा। इमाम बुखारी इत्यादि ने अबू मईद खूदी के में गिराया किया है उन्होंने कहा कि मैं ने अल्लाह के रम्जूल खूदी को कमी ही सुना कि: “हमारा रब पिंडली खोलेगा (जिस तरह कि उसकी गति के लायक है) तो हर मोमिन मई और और उमके सामने सजे वे जिम्में, परन्तु वे लोग बाकी रहेंगे जो दिखलाये के लिए सजे किया गये थे, वे सज्दा करना चाहेंगे लेकिन उनकी गीढ़ की हड्डी तकी जी तरह ए होजाएंगी, जिसके कारण उनके लिए द्रुकना सम्भव न हो सकेगा।  
 अर्थात् सारी सूचिये अल्लाह का सज्दा करेंगी, काफिर और मुकाबिले के सज्दा करना चाहेंगे लेकिन उनकी गीढ़ की हड्डी सज्दा होजाएंगी जो लोगों के लिए द्रुक न सकेंगी; क्योंकि वे संसार में ईमान नहीं लाय थे, और के अल्लाह का सज्दा किया था।

और करीब है कि (यह) काफिर अपनी तेज़ निगाहों (तीव्र दृष्टि) से आपको फिसला दें, जब कभी कुरआन सुनते हैं, और कह देते हैं कि यह तो निश्चित रूप से दीवाना है।

३२) और वास्तव में यह (कुरआन) तो पूरी जगत वालों के लिए सरासर शिक्षा ही है।

## सूरतुल हाकः - 69

शुरु करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।<sup>१०</sup>

साबित (सिद्ध) होने वाली।<sup>१०</sup>

क्या है साबित (सिद्ध) होने वाली?

और तुझे क्या पता है कि वह साबित होने वाली क्या है? उस खड़का देने वाली को समूदियों और आदियों ने झटलाया था।<sup>११</sup>

(जिसके परिणाम स्वरूप) समूद तो बहुत ही भयंकर (और ऊँची) आवाज़ से नष्ट कर दिए गए।<sup>१२</sup>

और आद अत्यन्त तीव्रगति की पाले वाली (तेज़ों तुन्द) ऊँधी से नष्ट कर दिए गए।<sup>१३</sup>

जिसे उन पर लगाता सात रात और आठ दिन तक (अल्लाह ने) लगाए रखा तो तुम देखते कि ए लोग धरती पर इस प्रकार पछाड़े गए हैं जैसे खजूर के खोखले तने हों।<sup>१४</sup>

तो क्या उनमें से कोई भी तुझे वाकी दिखाई दे रहा है?<sup>१५</sup>

फिरओन और उससे पूर्व के लोग और जिनकी बसितियाँ उल्टट दी गयीं, उन्होंने भी त्रुटियाँ (गलतियाँ) की।<sup>१६</sup>

और अपने रव के रसुल (संदेश्य) की नाफर्मानी की, (अन्ततः) अल्लाह ने उन्हें (भी) कठोर पकड़ में ले लिया।<sup>१७</sup>

जब पानी में बाढ़ आ गयी तो उस समय हमने तुम्हें नारं पर चढ़ा लिया।<sup>१८</sup>

ताकि उसे तुम्हारे लिए नसीहत (और यादगार) बना दें

१) उन पर बहुत अधिक जिल्लत, और रुसवाई छाई हुई होगी। अर्थात् संसार में। अर्थात् निरोग थे, और सन्दा करने की शक्ति थी, फिर भी यह नहीं करते थे। इब्राहीम तैमी कहते हैं कि : अज़ान और इकामत द्वारा बुलाये जाते थे तेकिन इन्कार कर देते थे।

२) अर्थात् उनका मज़ामत्ता आप मेरे जिसे कर दें, अपने को तबाही में न डालें, तो उन्हें ही उनके तिर कासी हुँ. और **الْمُرْسَلُونَ** से मुराद कुरआन मजीद है।

३) उन्हें धौर-धौर अज़ाब की ओर ले चल रहे हैं, यहाँ तक कि हम उसमें उन्हें इस तरह फँसा देने कि वे जान ही न सकेंगे कि यह ढील है; क्योंकि वे उन्हें यह समझ रहे थे और उसका परिणाम नहीं सोच पा रहे थे, और न वे उन्हें समझ पा रहे थे कि जल्द ही वे इसमें फँसने वाले हैं।

४) अर्थात् मैं उन्हे समय दूँगा कि वे पाप पर पाप करते चले जाएं। अर्थात् उन्हे इस अज़ाब की पकड़ में लेने की मेरी योजना बहुत मज़ूत है, वे इस तो बच कर निकल नहीं पाएंगे।

५) अब ज्यों जो आप इन लोगों को ईमान की दावत देते हैं उस पर इन से कहा जाए वह बदला मांगते हैं, जो उस बदले के तावान का बोझ उठाए हूए हो। अर्थात् कंजुमी के कारण उसका बोझ उठाना उन पर भारी पड़ रहा हो, तो ज्यों आपने उनसे कोई बदला मांगा है जिसके कारण वे इसे स्वीकार करने से मुहर नोड़ रहे हो।

६) यह उनके पास गैब का इल्म (परोक्ष का ज्ञान) है, जिससे जो दलीलें वे बाहर हों अपने इन अनुसार लिख लेते हों, और उनके द्वारा वे आप से लड़ाइ कर रहे हो।

७) मज़ानों वाले से मुराद यूनुस हैं, अर्थात् आप गुस्से और उक्ताहट में उनको नक्क न होजाएं।

अल्लाह अपने नबी को तसल्ली दे रहा है, और उन्हें सब से काम लेने का अदेन दे रहा है, और यह कि उतावलेपन से काम न लें, जैसे कि मछुनों वाले ने जट्टबाजी की, उनका किस्सा सूरतुल अविच्यों, यूनुस और मामलत मेरे बीत चुका है, और उनकी यह दुश्या इन् शब्दों द्वारा थी : **أَلْأَعْجَمِيُّ** कि कह दुख और तक्तीक से भरे हुए थे, और यह भी सम्भव है कि इस में युराद उनका मछुनों के पेट में बन्द होना हो।

८) इससे मुराद उन्हे तौबा की तौकीक मिलनी है कि उन्होंने अल्लाह से तौबा की, और अल्लाह ने उनकी तौबा स्वीकार कर ली।

९) यदि उन्हे तौबा की तौकीक न मिली होती तो वह मछुनों के पेट से एक बदल्यां और खाली मैदान में डाल दिए जाते।

१०) यह उन्होंने किया था उसके कारण वह बुराई और मलामत किए जाने के हक्कदार होते और अल्लाह के दया से धुक्कार दिए जाते।

११) अर्थात् उन्हे नुक़वत के कारण अपना मुखिलस, चुना हुया और प्रिय भक्त बना निया।

अर्थात् भैंडी और पुण्य में कामिल कर दिया। और एक कौल यह है कि उनकी ओर नुक़वत लौटा दी, और उनकी सिफारिश स्वयं उनके और उनके बीच वारे में स्वीकार की, और उन्हे रसूल बनाया और एक जन्म या इससे अधिक लोगों की ओर उन्हे भेजा, तो वे सब ईमान लाए।

और (ताकि) याद रखने वाले कान उसे याद रखें।  
 १३ तो जब सूर (नरसिंह) मे एक पूँक पूँकी जाएगी।  
 १४ और धरती और पर्वत उठा लिए जाएंगे, और एक ही चौट मे कण-कण कर दिए जाएंगे।  
 १५ उस दिन ही पहने वाली पट्टना (पलय) हो पड़ेगी।  
 १६ और आकाश फट जाएगा तो उस दिन अत्यन्त क्षीण (बोया) हो जाएगा।  
 १७ और उसके किनारों पर फरिश्ते होंगे और तेरे ख का अर्थ (आमन) उस दिन आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाए हुए होंगे।  
 १८ उस दिन तुम सब सामने प्रस्तुत (पेश) किए जाओगे, तुम्हारा कोई भेद छिपा न रहेगा।  
 १९ तो जिसका कर्मपत्र (नाम-आमाल) उसके दाहिने हाथ मे दिया जाएगा तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।  
 २० मुझे तो पूरा विश्वास था कि मैं अपना हिसाब पाने वाला हूँ।  
 २१ तो वह एक सुखद (दिल-पसन्द) जीवन मे होगा।  
 २२ उच्च (बुलन्द व बाला) जन्मत मे।  
 २३ जिसके फल जूके पढ़े होंगे।  
 २४ (उससे कहा जाएगा) कि आनन्द से खाओ, पिओ अपने उन कमों के बदले जो तुमने पहले किए।  
 २५ परन्तु जिसे उसका नाम-आमाल (कर्मपत्र) वाएं हाथ मे दिया जाएगा, वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा नाम-आमाल दिया ही न जाता।  
 २६ और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है।  
 २७ काश! मृत्यु (मेरा) काम ही समाप्त कर देती।

१ अथात नृह की कौम की बर्बादी के पट्टना को तुम्हारे लिए ऐ उम्मते मुहम्मद !  
 २ अथात इब्राहिम और नसीहत बनारे ताकि तुम उसके प्रारा अल्लाह के शक्तिमान और उसके बदले की कठोरता पर दलील पकड़ सको।  
 ३ याद रखने वाले लोग जो कुछ सुने उसे सुन कर याद रख सकें।  
 ४ अथात वे दोनों एक ही चौट मे कण-कण (जरो-जरो) कर दिए जाएंगे।  
 ५ अथात वे दोनों एक ही चौट मे कण-कण (जरो-जरो) कर दिए जाएंगे।  
 ६ अथात कियामत कायम हो जाएगी।  
 ७ अथात आठ निकटस्थ (पुकरेब) फरिश्ते हैं उनके उत्तरने के कारण आकाश फट जाएगा, और वह उस दिन कज्जोर और धीला-धाला हो जाएगा।  
 ८ अथात फरिश्ते आकाश के किनारों पर होंगे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला उन्हें धरती पर उत्तरने का अद्वित देगा तो वे धरती पर उत्तर तआला उन्हें धरती को और धरती की सारी धीजों को धेर लेंगे।  
 ९ अथात आठ निकटस्थ (पुकरेब) फरिश्ते हैं।  
 १० अथात अल्लाह के सामने हिसाब-किताब के लिए तुम्हारी पेशी होगी।  
 ११ अथात अल्लाह तआला से न तो खय तुम छुपे रहोगे, और न ही तुम्हारे कथन और कर्म सुने होंगे, कोई भी धीज उसारे छुपी नहीं रहेगी।

१२ कृष्ण का अर्थ है : लो।  
 १३ ऐसा वह प्रसन्न और खुश लेकर कहेगा, उन अकींवों और सुकामों के कारण जिन्हे वह अपने नाम-ए-आमाल (कमों के रजिस्टर) मे लिखा हुवा देखेगा।  
 १४ मुझे जानकारी न होती कि मेरा हिसाब क्या है, क्योंकि पूरा हिसाब उसके विपरीत होगा।  
 १५ काश मुझे जो मृत्यु आई थी वही मेरी अन्त होती, और मैं उसके बाद जीवित न किया जाता, सदा के लिए भीत और दोबारा न उठाए जाने की आर्जु वह अपने कर्कमों के कारण और उस अज्ञाब को देख कर करेगा जिसमे वह तुरंत ही जाने वाला होगा।  
 १६ अथात जो धन मैंने कमाया था वह मुझ से अल्लाह के अज्ञाब को कुछ भी न रोक सका।  
 १७ और मेरी कोई दलील मेरे काम न आसकी, सभी बर्बाद और ज़कारत गई, और एक कौल यह है कि मुल्लान से मुगाद मर्यादा और मत्ता, गासन और मियासन है, और उस समय अल्लाह तआला करमाणगा।  
 १८ फिर उसे नरक मे ले जाकर डाल दो ताकि वह उसकी आग मे जलता रहे।  
 १९ काश मुझे जो मृत्यु आई थी वही मेरी अन्त होती, और मैं उसके बाद जीवित न किया जाता, सदा के लिए भीत और दोबारा न उठाए जाने की आर्जु वह अपने कर्कमों के कारण और उस अज्ञाब को देख कर करेगा सम्बाद, सुप्रयान करते हैं : हमें यह बात पहुँची है कि वह ज़नीर उसके

وجاء فرعونُ وَمَنْ قَبْلَهُ، وَالْمُؤْتَنِكُتُ بِالْخَاطِئَةِ ١ فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَلَذْهُمْ أَنْدَهَ رَأْيَةً ٢ إِنَّا لَنَا مِنَ الْأَمَانَةِ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ٣ لِلْجَعْلِهَا لَكُمْ نَذْكُرَةٌ وَقَعِيهَا أَذْنُ وَعِيَةً ٤ فَلَذَا تُفْعَنُ فِي الصُّورِ نَقْحَةً وَجَدَهُ ٥ وَجَلَتِ الْأَرْضُ وَالْجَبَلُ فَدَكَادَهُ وَجَدَهُ ٦ فِي مَيْدَنِهِ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ٧ وَانْشَقَتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَيْدَ وَاهِيَةٌ ٨ وَالْمَلَكُ عَلَى أَزْجَابِهَا وَيَحْكُمُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَيْدَ غَنِيَّةٌ ٩ يَوْمَيْدَ تُعْرَضُونَ لَا تُخْفَنُ مِنْكُمْ حَافِيَةً ١٠ فَامَّا مَنْ أُوفَ كِتَبَهُ ١١ كِتَبَهُ يَسِيمِينِهِ، فَيَقُولُ هَافِمْ أَفْرَهُ وَأَكْتَبَهُ ١٢ إِنِّي طَلَبْتُ أَنِّي مُلْكٌ حَسَابَيَةً ١٣ فَهُوَ فِي عِيشَةِ رَاضِيَةٍ ١٤ فِي جَنَّةٍ عَالِيَّةٍ ١٥ قُطُوفُهَا دَائِيَةً ١٦ كُلُوا وَأَشْرُبُوا هَيْنَيْتَ اِسْلَامَيْتَ اِسْلَامَيْتَ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ١٧ وَأَمَّا مَنْ أُوفَ كِتَبَهُ بِشَمَالِهِ، فَيَقُولُ يَلِيلَنِي لَمْ أُوتَ كِتَبَهُ ١٨ وَلَزَدَرْ مَا حَسَابَيَةً ١٩ يَلِيلَهَا كَانَتِ الْفَاضِيَةُ مَا أَغْفَى عَنِي مَالِيَةً ٢٠ هَلَكَ عَنِ سُلْطَنِيَةً ٢١ خَذْوَهُ فَمُلْهُوَهُ ٢٢ لِيَهُ صَلَوةً ٢٣ شَرَفِ سِلْسِلَةِ ذَرْعَهَا سَبْعُونَ ذَرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ٢٤ إِنَّهُ كَانَ لَا يَرْوِمْ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ٢٥ وَلَا يَحْضُرُ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ ٢٦

२८ मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया।  
 २९ और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है।  
 ३० काश! मृत्यु (मेरा) काम ही समाप्त कर देती।  
 ३१ मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया।  
 ३२ मेरा गल्वा भी मझसे जाता रहा।  
 ३३ (हुम्म होगा) उसे पकड़ लो किर, उसे तीक पहना दो।  
 ३४ किर उसे जहन्म मे डाल दो।  
 ३५ किर उसे ऐसी ज़ंजीर मे जिसकी नाक सत्तर हाथ की है, ज़क़ड़ दो।

जिसमे वह तुरंत ही जाने वाला होगा।  
 ३६ अर्थात जो धन मैंने कमाया था वह मुझ से अल्लाह के अज्ञाब को कुछ भी न रोक सका।  
 ३७ और मेरी कोई दलील मेरे काम न आसकी, सभी बर्बाद और ज़कारत गई, और एक कौल यह है कि मुल्लान से मुगाद मर्यादा और मत्ता, गासन और मियासन है, और उस समय अल्लाह तआला करमाणगा।  
 ३८ फिर उसे नरक मे ले जाकर डाल दो ताकि वह उसकी आग मे जलता रहे।  
 ३९ काश मुझे जो मृत्यु आई थी वही मेरी अन्त होती, और मैं उसके बाद जीवित न किया जाता, सदा के लिए भीत और दोबारा न उठाए जाने की आर्जु वह अपने कर्कमों के कारण और उस अज्ञाब को देख कर करेगा सम्बाद, सुप्रयान करते हैं : हमें यह बात पहुँची है कि वह ज़नीर उसके

- 42 और न किसी ज्योतिषी का कथन है, (अफसोस) तुम बहुत कम नसीहत ले रहे हो।  
 43 (यह तो) सारे जहां के रव का उतारा हुवा है।  
 44 और यदि यह हम पर कोई भी बात गढ़ लेता।  
 45 तो अवश्य हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते।  
 46 फिर उसके दिल की नस काट देते।  
 47 फिर तुमसे से कोई भी (मुझे) उससे रोकने वाला न होता।  
 48 अवश्य यह (कुरआन) परहेजगारों के लिए नसीहत है।  
 49 और हमें पूरी जानकारी है कि तुम में से कुछ उसके झुटलाने वाले हैं।  
 50 निःसंदेह (यह झुटलाना) काफिरों के लिए पछतावा है।  
 51 और निःसंदेह यह यकीनी (विश्वसनीय) सत्य है।  
 52 तो तु अपने अजीम रव (महिमावान प्रभु) की पाकी बयान कर।

## سُورَةُ الْمَعْدَنِ - 70

- शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।  
 1 एक माँग करने वाले ने उस अज़ाब (प्रकोप) की माँग की, जो (स्पष्टतः) होने वाला है।  
 2 काफिरों पर जिसे कोई हटाने वाली नहीं।  
 3 उस अल्लाह की ओर से जो सीधियों वाला है।  
 4 जिसकी ओर फरिश्ते और ख़ह चढ़ते हैं एक दिन में जिसकी अवधि (मिक्दार) पचास हजार वर्ष की है।  
 5 तो तू अच्छी तरह से धैर्य रख (सब कर)।  
 6 वे-शक यह उस (अज़ाब) को दूर समझ रहे हैं।  
 7 और हम उसे करीब ही देखते हैं।  
 8 जिस दिन आकाश तेल की तलछट जैसे हो जाएगा।  
 9 और पर्वत रंगीन ऊन जैसे हो जाएंगे।  
 10 और कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा।  
 11 (हालांकि) एक-दूसरे को दिखा दिए जाएंगे, पापी उस दिन के अज़ाब के बदले प्रतिदान (फिद्दे) में अपने बेटों को देना चाहेगा।  
 12 अपनी पत्नी को और अपने भाई को।  
 13 और अपने परिवार को जो उसे शरण देता था।  
 14 और धरती के सभी लोगों को देना चाहेगा, ताकि यह उसे मुक्ति दिला दे।  
 15 (मगर) कभी भी यह न होगा। वे-शक वह शोले (ज्वाला) वालों (आग) है।  
 16 जो मुख और सिर की खाल खींच लेने वाली है।

- 7 जैसा कि तुम समझ रहे हो; क्योंकि कठानत (शहूनी-कर्म) दूसरी बीज है, इसमें और कठानत में कोई बीज मेल नहीं खाती है। أَرْبَعَةَ أَيْمَانٍ : شَهْوَانٌ - كَرْمٌ  
 8 अर्थात् : न तो तुम कुरुआन पर ईमान ही रखते हो, और न ही उससे कुछ नसीहत (युद्धेश) फ़लड़ते हो।  
 9 अर्थात् : प्रतिष्ठित रसूल की जुबान से निकलने वाला यह कलाम (कथन) रब्बुलआलमीन का उतारा हुवा कलाम है।  
 10 यदि यह रसूल मुहम्मद या जिब्रिल जैसा कि उपर चर्चा कुछ, स्वयं अपनी ओर से कुछ गढ़ने की प्रयास करते और उम्मती सबूत अल्लाह से करने।  
 11 गर्दन की वह नस जो दिल से मिलती है, और जिसके कटने से जादी तुरन्त मर जाता है, यह तसवीर है उसके बुरी तरह हलाक कर दिए जाने की, जैसे राजा लोग ऐसे व्यक्ति के साथ करते हैं जिन से वे क्रोधित हो।  
 12 तुम में से कोई ऐसा नहीं जो हमें उस में रोक सके, या उसको हम से बचा सके, तो भला फिर वह तुम्हारे कारण हम पर झुट कर्या बोलेगा।  
 13 क्योंकि इससे लाभ उठाने वाले वास्तविक ख़प से यही लोग हैं।  
 14 तुम में से कुछ लोग कुरुआन को झुटला रहे हैं, हम उन्हें उसकी दृढ़ देवत रहें।  
 15 यह कुरुआन का झुटलाना कियामत के दिन काफिरों के लिए अफसोस और पछतावा होगा।  
 16 क्योंकि यह अल्लाह की ओर से है, इसमें कण बराबर भी संख्या की गुन्जाइश नहीं।

فَلَئِسْ لَهُ الْيَوْمُ هُنَاهِيمٌ ۚ وَلَا طَعَامٌ لِأَمِينٍ خَلَقْنَاهُ ۖ لَا يَأْكُلُونَ ۚ  
 إِلَّا لَخْطِيْعُونَ ۚ فَلَا أَقْسِمُ بِمَا تَبْصِرُونَ ۚ وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۚ  
 إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۚ وَمَا هُوَ قَوْلٌ شَاعِرٌ قَلِيلًا مَا تَوْمَذُ ۚ  
 وَلَا يَقُولُ كَاهِنٌ قَلِيلًا مَا ذَكَرُونَ ۚ نَزَّلْنَا مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ وَلَوْ  
 نَقُولُ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقْوَابِ ۚ لَا يَحْذَنَاهُمْ بِالْيَمِينِ ۚ ثُمَّ لَقَطَنَا  
 مِنْهُ الْوَتَنِ ۚ فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزٌ ۚ وَإِنَّهُ لِذِكْرِهِ  
 لِلْمُتَقِيْنَ ۚ وَإِنَّا نَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ۚ وَإِنَّهُ لِحَسْرَةٍ عَلَى  
 الْكُفَّارِ ۚ وَإِنَّهُ لِحَقِّ الْيَقِيْنِ ۚ فَسَيَّجَ يَاسِمَ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۚ

سُورَةُ الْمَعْدَنِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۚ لِلْكُفَّارِ إِنَّهُ لَمْ يَدْافِعْ ۚ مِنْ  
 أَلَّا يُذْهِبَنَّ أَعْمَالَهُ ۚ تَرَجَّعُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فَ  
 يَوْمٌ كَانَ مَقْدَارُهُ ۚ حَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۚ فَاصْدِرْ صَبْرَاجَمِيلًا ۚ  
 إِنَّهُمْ بِرَوْنَهُ بَعِيدًا ۚ وَنَرَهُ فَرِيَادًا ۚ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَلْمَهُ  
 وَتَكُونُ الْجَبَلُ كَالْعَهْنِ ۚ لَا يَسْتَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ۚ

- 33 वे-शक यह अल्लाह महान पर इमान न रखता था।  
 34 और निर्धन को खिलाने पर नहीं उभरता था।  
 35 तो आज यहाँ उसका न कोई मित्र है,  
 36 और न पीप के सिवाय उसका कोई खाना है।<sup>2</sup>  
 37 जिसे पापियों के सिवाय कोई नहीं खाएगा।  
 38 तो मुझे क़सम है उन चीजों की जिन्हें तुम देखते हो।  
 39 और उन चीजों कि जिन्हें तुम नहीं देखते।<sup>4</sup>  
 40 कि वे-शक यह (कुरआन) मुअज्ज़ज़ रसूल (प्रतिष्ठित संदर्भ) का कौल (कथन) है।  
 41 यह किसी कवि (शाएर) का कथन नहीं, (अफसोस) तुम बहुत कम विश्वास रखते हो।

- घूतः में घुसा करके मुँह के रास्ते से निकाल ली जाएगी।  
 1 अर्थात् प्रलय के दिन आखिरत में उसका कोई करीबी नहीं होगा, जो उसके कुछ भी काम आसके, या उसकी सिफारिश कर सके, इसलिए कि यह ऐसा दिन होगा कि इसमें करीबी अपने करीबी से और मित्र अपने मित्र से भागेगा।  
 2 <sup>عَلَيْهِ</sup> उस बद्वूदार (दुर्घायुक्त) धोवन को कहते हैं जो शरीर से खून और पीप धोते समय गिरता है।  
 3 इससे मुराद ख़ताकार और पापी हैं जो संसार में कुक्फ़ और शिर्क किया करते थे।  
 4 अर्थात् मैं उन सारी चीजों की क़सम खा रहा हूँ चाहे वे दिखाई देती हों या न दिखाई देती हों।  
 5 <sup>عَلَيْهِ</sup> कौल से मुराद तिलावत है, अर्थात् यह कुरुआन प्रतिष्ठित रसूल की तिलावत है, और <sup>رَسُولُ كَرِيمٍ</sup> से मुराद : मुहम्मद <sup>صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ</sup> है। या अर्थ यह है कि यह एक ऐसा कौल है जिसे एक प्रतिष्ठित रसूल तुम्हें पहुँचा रहा है, इस स्थिति में <sup>رَسُولُ كَرِيمٍ</sup> से मुराद जिब्रिल <sup>عَلَيْهِ السَّلَامُ</sup> होगे।  
 6 जैसा कि तुम संमझते हो क्योंकि यह कविता नहीं है।

वह प्रत्येकउस व्यक्ति को पुकारेगी जो पीछे हटता और मृत्यु भोड़ता है।

और इकड़ा करके संभाल रखता है।

बे-शक इन्सान अत्यन्त कच्चे दिल वाला बनाया गया है।

जब उसे कष्ट पहुँचता है तो हड्डबड़ा जाता है।

और जब सुख मिलता है तो कंजूरी करने लगता है।

मगर वह नमाजी।

जो अपनी नमाज पर पाबंदी रखने वाले हैं।

और जिनके धन में निर्धारित (मुकर्ररः) भाग है।

माँगनेवालों का भी और प्रश्न करने से बचने वालों का भी।

और जो न्याय के दिन पर विश्वास रखते हैं।

और जो अपने रब के अजाब से डरते रहते हैं।

बे-शक उनके रब का अजाब निर्भय होने की चीज़ नहीं।

और जो लोग अपने गुप्ताँगों (शरमगाहों) की (हराम से)

रखते हैं।

उनकी पलियों और लौटियों के बारे में जिनके वे

मालिक हैं, वे निन्दित नहीं।

अब जो कोई इसके सिवाय (मार्ग) ढूँढेगा तो ऐसे लोग

सामा उल्लंघन करने वाले होंगे।

और जो अपनी अमानतों का और अपने वचन का

रखते हैं।

और जो अपनी गवाहियों पर सीधे (और डटे) रहते हैं।

और जो अपनी नमाजों की सुरक्षा करते हैं।

यही लोग जन्तों में आदर (और इज़्ज़त) वाले होंगे।

तो काफिरों को क्या हो गया है कि वह तेरी ओर दौड़ते आते हैं?

दारं और बाएं से गुट के गुट।

क्या उनमें से प्रत्येक की इच्छा यह है कि वे

सुख-सुविधा वाले जन्त में ले जाया जाएगा?

(ऐसा) कभी भी न होगा, हमने उन्हें उस (वस्तु) से पैदा

किया है जिसे वे जानते हैं।

तो मुझे कसम है पूर्वों और पश्चिमों के रब की, (कि)

हम यकीनन् कृद्रष्ट रखने वाले हैं।

इस पर कि उनके बदले में उनसे अच्छे लोग ले आएं,

और हम विवश नहीं हैं।

तो आप उन्हें झगड़ता खेलता छोड़ दें, यहाँ तक कि ए

अपने उस दिन से जा मिलें, जिसका उनसे वादा किया जाता है।

जिस दिन कब्रों से ए दौड़ते हुए निकलेंगे, जैसेकि वह

किसी स्थान की ओर तेज़ी से जा रहे हैं।

उनकी आँखें दूसी हुई होंगी, उन पर अपमान (ज़िल्लत) छा

रही होंगी, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा किया जाता था।

## सूरतु नूह - 71

जूह करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

वे-शक हम ने नूह (नुहः) को उनके समुदाय (कौम) की

आंरे भेजा कि अपनी कौम को डरा दो (और सचेत कर दो)

इससे पहले कि उनके पास कष्टदायी यातना (दर्द-नाक

अजाब) आजाए।<sup>1</sup>

(नूह नुहः ने) कहा कि हे मेरी कौम के लोगो! मैं तुम्हें

स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ।

कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उसी से डरो

<sup>1</sup> पहले इसका वर्ण देवृक्ष है कि नूह नुहः सब से पहले रसूल है, जिन्हें अल्लाह ने अपना रसूल बनाकर भेजा, और सुरतुल-अन्कबूत में इसका भी वर्ण हो दूसरा ने अपना रसूल बनाकर भेजा, और सुरतुल-अन्कबूत में इसका भी वर्ण हो दूसरा। अर्थात हमने उनसे कहा कि हे कि वह अपनी कौम में विज्ञानी अवधि तक रहे। अर्थात हमने उनसे कहा कि हे कि वह अपनी कौम में विज्ञानी अवधि तक रहे। अर्थात नरक का अजाब, या इससे तुम अपने समुदाय के व्यक्तियों को डराओ। अर्थात नरक का अजाब, या इससे मुराद वह था कि जो नूह नुहः के समुदाय पर आई थी।

يَصْرُونَهُ يُوْدُ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابٍ يَوْمَلِهِ بَيْنِهِ  
وَصَاحِبَهُ وَأَخِيهِ ۖ وَفَصِيلَةِ الَّتِي تُعَذَّبُ ۖ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ  
جِئَعَامَتْ يَنْجِيَهُ ۖ كَلَّا إِنَّهَا لَطَهَ ۖ تَرَاعَةً لِلشَّوَّى ۖ نَدْعُوا  
مِنْ أَذْبَرٍ وَقُولَّ ۖ وَجْعَ فَأَوْعَى ۖ إِنَّ الْإِنْسَنَ حَلْقَ هَلُوعًا  
إِذَا مَسَهُ السَّرْجُورُ ۖ وَإِذَا مَسَهُ الْغَرْمُ ۖ إِلَّا  
الْمُصْلَبُ ۖ الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۖ وَالَّذِينَ فِي  
أَنْوَافِهِمْ حَقُّ مَعْلُومٍ ۖ لِلْسَّائِلِ وَالْمُحْرُمُ ۖ وَالَّذِينَ يَصْنَعُونَ  
يَوْمَ الدِّينِ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابٍ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ۖ إِنَّ عَذَابَ  
رَبِّهِمْ غَيْرَ مَأْمُونٍ ۖ وَالَّذِينَ هُرْلَفُو جِهَمَ حَفَظُونَ ۖ إِلَّا أَعْلَاجَ  
أَزْوَجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكُتْ أَيْتَهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مُلْمُودِينَ ۖ فَنَّابَعَ وَرَأَ  
ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُرْ أَعْدَادُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ لَا يَمْتَهِنُونَ وَعَهْدُهُمْ رَعُونَ  
وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَالُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَفَظُونَ  
أُولَئِكَ فِي جَنَّتِ مُكْرَمُونَ ۖ فَإِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا قَبْلَكَ مُهْتَمِعُونَ  
عَنِ الْأَيْمَنِ وَعَنِ الْشَّمَاءِ عَرِينَ ۖ يَطْمَعُ كُلُّ أَنْرِي مِنْهُمْ  
أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ۖ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مَمَّا يَعْلَمُونَ<sup>2</sup>

और मेरा कहना मानो।

<sup>4</sup> तो वह तुम्हारे पाप माफ कर देगा और तुम्हें एक निर्धारित समय तक छोड़ देगा। बे-शक अल्लाह का वायदा जब आ जाता है तो रुक्ता नहीं। काश (यदि) तुम्हें जानकारी होती।<sup>2</sup>

<sup>5</sup> (नूह ने) कहा कि हे मेरे रब! मैंने अपनी कौम को रात-दिन तेरी ओर बुलाया।

<sup>6</sup> मगर मेरे बुलाने से ए लोग और अधिक भागने लगे।<sup>3</sup>

<sup>7</sup> और मैंने जब कभी उन्हें तेरी वाद्धिश (क्षमादान) के लिए बुलाया उन्होंने अपनी ऊंगलियाँ अपने-अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ों को ओढ़ लिया और अड़ गए और बड़ा घमंड किया।<sup>4</sup>

<sup>2</sup> अर्थात तुम्हारे पिछे पाप जो रसूल की अनुकरण और उनकी दावत स्वीकार करने से पहले तुम से हुए हैं। अर्थात तुम्हारी मूल्य को उम अन्तिम सीमा तक टाल देगा जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए निर्धारित की है, मुराद यह है कि तुम्हारी उम्मत (अनुयायी) की अवधि बढ़ादेगा और उम अधिक समय तक धरती पर बसाए रखेगा जब तक वह अनुकरण करेगी।

अर्थात अजाब जिसे उसने तुम्हारे लिए नियुक्त कर रखा है, जब वह वह हर हाल में आकर ही रहेगा, इसलिए तुम्हारी मलाई इसी में है कि तुम आगे बढ़कर ईमान और इताजत का रास्ता अपना लो।

अर्थात यदि तुम्हें समझ होती तो तुम यह जान लेते कि अल्लाह की ओर से निश्चित समय जब आ जाता है तो वह टाला नहीं जा सकता।

<sup>3</sup> अर्थात जिस बात की ओर मैं उन्हें बुलाता था वे उससे बराबर भागने और अधिक दूर होते लगे गए।

<sup>4</sup> अर्थात जब कभी मैंने उन्हें ईमान और अनुकरण के रास्ते की ओर

١٦) ألم يرئ بالشروع المقرب إلى الخير  
وألا يرى بالشروع إلى الشر؟  
١٧) ملهمة شفاعة لمن لا يجد لها مدخل  
١٨) يوجهون الناس إلى ما يحبونه  
١٩) حقيقة أصراف رزقهم في ذلك الجم الراكم والواسع

55 154

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
إِنَّا أَرْسَلْنَا لُورَحًا إِلَيْ فَرْمَهُهُ أَنَّ أَمْرَرْ قَوْمَكَ مِنْ قَتْلٍ أَنْ يَأْتِيهِمْ  
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالَ يَقُولُوا إِنِّي لَكُوْنَدِ بَرْثَبٍ ۝ أَنِّي أَعْصَمْتُ  
اللَّهَ وَأَنْتُهُ وَأَطْبَعُونَ ۝ يَغْفِرُ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَرَوْحَزْكُمْ  
إِنَّ أَجْلَ مُسَىٰ إِنَّ لَجْلَ اللَّهِ إِذَا جَاهَهُ لَا يُوْحَرُ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْتُ  
قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ فَرْمَيْ لِي لَا وَنَهَا ۝ فَلَمَّا يَرَدْ هُرْدَعَاهُ إِلَيْهِ  
فِرَارًا ۝ وَإِنِّي كُلَّمَادَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعْلُوا أَسْعَمْ  
فِيْهِمْ وَأَذَانِهِمْ وَأَسْتَفْشَنُوا شَابَهُمْ وَأَصْرَرُوا وَأَسْتَكْبَرُوا أَنْتَ كَارَا  
ثُرَّا إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّي أَعْلَمُ لَهُمْ وَأَسْرَرُ  
لَهُمْ إِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ أَسْتَغْفِرُ وَأَرْبَكُمْ إِنْمَكَاتْ عَفَارَا

13) फिर मैंने उन्हें उच्च आवाज़ से बुलाया।  
और वे-शक मैंने उनसे खुल कर भी कहा और  
उपरके छपके भी।

14) और मैंने कहा कि अपने रव से अपने पापों को माफ़ करवा  
ना। (और मार्गी माँगो) वे-शक वह बड़ा वखशनेवाला (क्षमाशील) है।  
वह तुम पर आकाश को खबर वर्पा करता हुआ छोड़ देगा।  
15) और तुम्हे खबर माल और मन्त्रान में बड़ा देगा और  
वाग टेगा और तुम्हारे लिए नहरे निकाल देगा।  
16) तुम्हे क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की बर्तरी  
(सदृच्छा) पर विश्वास नहीं करते? 4  
17) इतानिक उसने तुम्हे विभिन्न प्रकार से पैदा किया है।

बुलाया जिसके द्वारा नू खमा प्रदान करता है। ताकि वह मेरी आवाज़ न सुन सके। अर्थात् अरणे काढ़ों से उल्लेने अपने चेहरे ढाँक लिए, ताकि वे मृदु देख न सके, और मेरी बात सुन न सके। अर्थात् कुकु पर डटे रहे।

अब यह कुलम-कुलना और उद्धृत-स्वयं से सभा ओ और मान्यता में उहे दावत ही। अकेले-अकेले पी बुलाता रहा, अर्थ यह है कि विभिन्न तरीकों से मैंने उन्हे दावत ही, और एक कौल यह है कि **وَسْرُتْ لِمْ اسْرَارًا** का अर्थ है उनके धरों में जा-जाकर मैंने उन्हे दावत ही।

<sup>१</sup> अद्वितीय न माना जाकर भल उन्हें दावत दा।  
<sup>२</sup> बहु वर्षों होता हुवा, इसमे इस बात की दलील है कि अल्लाह से  
मार्फी मांगना वर्षा और जीविका की प्राप्ति का एक बहुत बड़ा माध्यम है।  
<sup>३</sup> अथवां उमस्की वरतरी और बडाई से नहीं डरते।

<sup>4</sup> बाये, फिर जमा हुआ थून, फिर गोगत के टकड़े से लेकर पूरी पैदाइश तक, जैसा कि उसका विवरण मुरतल-भोमिनून में बीत चुका है, फिर माँ के पेट से एक बालक के रूप में तुम निकलते हो, फिर जवान होते हो, फिर बूढ़े हो जाते हो, फिर क्योंकर उस हस्ती की बड़ाई और प्रतिष्ठा में तुम कोताही करते

१ क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तभाला) ने किस तरह  
उनके लिए मैत्री भवान भावान बैठा करा दिया है?

२ भी तुम्हें भी यो शुद्ध तुगमगला बनाया है और  
उनको रीछन चिराग बनाया है?

३ और तुम्हारे पारती में (एक विशेष विचि में) उगाया है (और  
किया है)

४ किस तुम्हें उमी में लीटा ले जाएगा और (एक विशेष  
विचि में) किस तुम्हें निकालेगा।

५ और तुम्हारे लिए धरती को अल्लाह (तभाला) कर्ता बनाया है।  
ताकि तुम उसके बौड़े रास्तों में चलो किरो।

६ नूह अल्लाहस्मलाम ने कहा कि हे मेरे रब! उन लोगों ने  
मेरी ना-फर्मानी की और ऐसों का फर्मावर्दारी की जिनके माल  
और सतान ने उनको (निःसदेह) हानि ही में बढ़ाया।

७ और उन लोगों ने बहुत बड़ा धोखा किया।

८ और उन्होंने कहा कि कभी भी अपने देवताओं को न छोड़ना।  
अोर न वद, सुवाम्, यगूस, यज्ञक और नम्स को (छोड़ना)।

९ और उन्होंने बहुत से लोगों को भटकाया (हे, रब) त  
उन अत्याचारियों के भटकावे को और बढ़ा दे।

१० ए लोग अपने पापों के कारण (पानी में) डुबो दिए गए  
और नरक में पहुँचा दिए गए और अल्लाह के सिवाय उन्होंने  
अपना कोई सहायता करने वाला न पाया।

हो जिसने तुम्हें पैदा किया और इन विभिन्न मरहलों से गुजारा

५ अर्थात् सारे आकाशों में जबकि वह उन सातों आकाशों में से संसार वाले आकाश में है। जिससे धरती जगमगाती रहती है, और उसमें कोई गर्मी नहीं होती है। (तो योगा वह आकाश के माथे का झामर है)

<sup>6</sup> अर्थात् तमारे पिता श्रीदाम<sup>५</sup> ने उन्हें विद्या का अध्ययन कराया।

जपाता तुहां पता आदम ~~जैसे~~ का जिन्हे अल्लाह ने मिट्ठी से बनाया फिर उन्हे संतान बनाए जो धरती के उन हिस्सों को जो फलों और अनाजों और जानवरों में परिवर्तित होगए हैं, खाकर बड़े होते हैं।  
**7** अर्थात् धरती ही में, इस तरह कि तम मरकर उसी में दफन होगे, फिर तुम्हारे अंग गल कर मिट्ठी होजाएंगे और धरती में मिल जाएंगे।

अर्थात कियामत के दिन उसी से निकाल कर तुम्हें यकायक खड़ा कर देगा, पहले की तरह धीरे-धीरे नहीं।

**४** *(फैजाबाद)* का बहुधन है) जिसका अर्थ है : दो पहाड़ों के बीच का रास्ता, अर्थात इस धरती पर अल्लाह तआला ने बड़े-बड़े ढोड़े रास्ते बना दिए हैं, )ताकि इन्सान आसानी से एक शहर से दूसरे शहर में यह एक मुल्क से दूसरे मुल्क में आ-जा सके।

**५** *(उद्दीपन)*

अर्थात् उनके छाटे व्यक्तियों ने अपने सरदारों और धनवानों का अनुकरण किया जिनके धन और संतान की बढ़ौतरी ने दुनिया और आखिरत के घाटे ही में उन्हें बढ़ाया है।

10 उनका अपने बैबूकों को नूह अलैहिस्सलाम की हत्या पर उभारना था।  
 11 अर्थात् उन सरदारों ने अपने अनुपालन करने वालों को नूह की अवज्ञाकरी पर उभारते हुए उनसे कहा : तुम अपने उपास्यों की पूजा को न छोड़ना। यह बुत उनकी कौम के बुज़गों की मूर्तियां थीं जो उन्होंने बना रखे थे जिन्हें बाद में अरब-वासी भी पूजने लगे थे।

अर्थात् इन मूर्तियों की पूजा न होड़ना, वद, स्वाँअ, यगूस, यजक और नम्भ इनकी कौप के नेक और बुझुग व्यक्तियों के नाम हैं, जो आदम और नृहृ के बीच गुजरे थे, उन लोगों ने उनके फोटो और उनकी मूर्तियां बनाकर अपनी इवादत की जाहां में रख ली थीं, फिर उनके बाद जिन लोगों का जनम हुवा उनसे इल्लीस ने आकर कहा कि : तुम से पहले जो लोग गुजर चुके हैं वे इनकी पूजा करते थे, इसलिए तुम भी इनकी पूजा किया करो, और इस तरह उन लोगों ने इनकी इवादत शुरू करदी, इस तरह मूर्ति-पूजा आरम्भ हुवा, फिर यह मूर्तियां अरब मद्द म्हीप में पहुंच गए और यहां भी कुछ वशों ने इनकी पूजा शुरू करदी।

<sup>12</sup> अर्थात् उनके बड़ों और सरदारों ने बहुत से लोगों को भटकाया, और एक कौल यह है कि उन मूर्तियों ने बहुत से लोगों को भटकाया, और उन्हे घाटे और नुकसान में अधिक बढ़ाया।

<sup>13</sup> (मेंमें में ज़ाइदा है) अर्थात् वह अपने कुकरों के कारण भीषण बाढ़ में डुबा

और मूँह (खुला) मे कहा कि हे मेरे रब! तू धरती पर  
किसी काफिर को रहने-सहने वाला न छोड़!  
यदि उन्हें छोड़ देगा तो निःसंदेह ए तेरे दूसे बन्दों को  
पी भटका देगे और ए कक्षम काफिरों ही को जन्म देगे।  
हे देरे रब! तू मुझे और मेरे माँ-बाप और जो ईमान  
लाकर मेरे घर मे आए और सारे ईमानवाले पूर्खों और सारी  
ईमानवाली महिलाओं को माफ कर दे और काफिरों को  
विनाश (बर्जादी) के सिवाय अन्य किसी बात मे न बढ़ा।

सुरक्षित जिन्हे - 72

अल्लाह के नाम से वे इस ऐरेन्सन यहु राम करने का ल है।  
मूझे वह्य (प्रकाशना) आप कह दें कि मूझे वह्य (प्रकाशना)  
किंविती के एक गिरोह ने (कुरआन) सुना तथा  
कहा कि हम ने अजीब कुरआन सुना है।  
जो सत्य रास्ते की ओर मार्गदर्शन देता है, हम तो उस  
पर ईमान ला चुके, (अब) हम कभी अपने रब का किसी  
दूसरे को साझेदार न बनाएंगे।  
तथा अवश्य हमारे रब की शान महान है, न उसने  
किसी को (अपनी) पत्ती बनाया है और न सन्तान।  
और अवश्य हम में का मूर्ख अल्लाह के बारे में सूठी  
बात कहा करता था।  
और हम तो यही समझते रहे कि असंभव है कि इन्सान  
और जिन्नात अल्लाह पर सूठी बातें लगाएं।  
वातविकता यह है कि कुछ इत्तान कुछ जिन्नों से पनाह (शरण)  
मानते हैं, जिससे जिन्नात अपनी उद्घटता में और बड़ गए।

जिसके बाद अग्र में उसके द्वारा सुराद आविरत में नरक का अंजाल दिया गया। इससे सुराद कब का अंजाल है।

1. जब तक उनके लिये तेजी से निराकार होता है वह अत्यधिक तकनीकी से भरे हुए और अत्यधिक अच्छी तरह बढ़ाव देता है। इसके अलावा उनके लिये शारीरिक विकास के लिए भी यह बहुत फायदा होता है। और उनके लिये शारीरिक विकास के लिए भी यह बहुत फायदा होता है।

**२ तीव्रे रस्ते से।** जो तेरी अनुकूलण करने वाले नहीं।  
— ने देखि देखते ही नाशकी (कृतधनता) में सीमा छलागे हुए कहा।

जा तर नेमत को दे  
विवाह और धाटे को

३ हतोकत जार पाये।  
नुस्खे की वह शराय कियामत तक आने वाले सारे अपराधियों के लिए है।  
४ ह मुम्बद की आप अपनी उम्मत को कह दीजिए कि अल्लाह ने जिब्रील  
द्वारा मुझ पर वस्त्र की कि जिन्नों में से कुछ ने मुझे कुरान पढ़ते  
मुना, और जो सूरत उस समय आप पढ़ रहे थे वह **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ** और  
ही, और अल्लाह ने जिन्नों में से कोई रसूल नहीं भेजा जिसकि सभी रसूल  
ही सबसे इन्सानों में से ही हैं।

आदम खूबी का मतलान इन्सानों ने तो ले डूँ।  
 ५ जब वे अपनी कौम में वापस लैटे तो उन्होंने उनसे कहा कि : हमने  
 एक पदा जाने वाला कलाम सुना है, जो अपनी फसाहत और बलाशात,  
 स्मृत्ता और साहित्य में बड़ा अनोखा और निराला है, और एक कथन  
 यह है कि अपनी नवीनता के लिहाज से अधिक अचूमे वाला है, और एक  
 कथन यह है कि बाहन के लिहाज से बहुत आश्चर्य-जनक है।  
 ६ अर्थात हमारे रब की बड़ाई और शान, और उसका जलाल इससे बहुत  
 अधिक ऊँचा और बुलन्द है कि उसकी पत्ती या सन्तान हो। और एक  
 कथन यह है कि <sup>१</sup> से मुराबा शक्ति है।

जिन्हांना अपने मुसिरिक और मूर्ख जिन्होंके इस सूट पापा का नाम उत्तरां  
की पाली और उसके संतान है खड़न कर रहे हैं। खड़न के माध्यमे है :  
इनमे वह इम कर रखा था कि इन्हाँन और जिन्हांना अस्ताह के बारे में  
एक चेतनी नहीं रखते, इसीलिए उन्होंने जब वह कह कि अस्ताह के साथी है  
उसे उन्होंने देखा तो उसे उन्होंने उत्तरी यह बात मान ली।

और यह प्रभी और संतान वाला है तो हम ने उनको कह करा भाग ले। अप्रैल  
आवासवाल (जाकिलियत) में अरबों में रियाज था कि जब कोई अधिक  
सिद्धी प्राप्ति में पहुँच आता तो यह जिन्होंने के सरदार से भरण मांगते हुए

بِرِسْلِ النَّاسَةِ هَلْكَدُ مَذْرَارًا ۝ وَيَمْدُدُكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَيْنِ وَجْهِكُمْ  
لَكُنْجَشْتَ وَيَجْعَلُ لَكُنْجَشْتَ ۝ مَا الْكُنْجَشْتُ لَازْجُونَ لِلَّهِ وَفَارًا ۝  
وَقَدْ خَلَقْتُكُمْ أَمْلَوَارًا ۝ الْمُرْتَرَوْا كَيْفَ حَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَوَاتٍ  
طَبَافَا ۝ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝  
وَاللَّهُ أَنْبَكَمُّ مِنَ الْأَرْضِ بَانَا ۝ ثُمَّ بَعَثَكُمْ فِيهَا وَغَرَّهُمْ  
إِخْرَاجًا ۝ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ يُسَاعِلَا ۝ لَتَسْلُكُوا مِنْهَا  
شَلَالًا فَنَجَاحَا ۝ قَالَ شُرُحَرِي إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَأَتَبْعَوْا مِنْ لَنْزِرِدَهُ  
مَالَهُ وَوَلَهُ الْأَخْسَارَا ۝ وَمَكْرُو وَمَكْرَا كَشْبَارَا ۝ وَقَالَوا  
لَانْدَرَنَّ، الْهَتَكَّ وَلَانْدَرَنَّ وَدَا وَلَا سُوَاعَا وَلَا يَغُوثَ وَيَعْوَقَ  
وَنَسْرَا ۝ وَقَدْ أَضْلَوْا كَثِيرًا وَلَانْزِرَدَ الْفَلَلِينَ إِلَاضْلَالَا ۝  
مَتَّا خَطِيلَتِهِمْ أَغْرِقُوا فَأَدْخَلُوا نَارًا فَلَنْزِرَ يَجْدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ  
اللَّهِ أَنْصَارًا ۝ وَقَالَ شُرُحَرِي لَانْدَرَ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَفَرِينَ  
دِيَارًا ۝ إِنَّكَ إِنْ تَذَرْهُمْ يُضْلُلُوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَآ فَاجْرَا  
كَفَارًا ۝ رَبِّي أَغْفِرْلِي وَلِوَلَدِي وَلَمَنْ دَخَلْ بَيْتَ  
مُؤْمِنًا وَلِمُؤْمِنَةِ وَالْمُؤْمِنَتِ وَلَانْزِرَدَ الْفَلَلِينَ إِلَانِيَارَا ۝

१५ और (इन्सानों) ने भी जिन्हों की तरह ए समझ लिया था कि अल्लाह कभी किसी को नहीं भेजेगा। (अथवा किसी को प्रश्न जीवित न करेगा)।

का पुनः जावत न करना)।  
१० और हमने आकाश को टोल कर देखा ११ तो उसके अत्यन्त चौरस सरकारीयों १२ और तीव्र झोलो (ज्यालाओ) १३ से पूर्ण पाया।  
१४ और इस से पहले हम बातें सुनने के लिए आकाश में जगह-जगह पर बैठ जाया करते थे १५। अब जो भी कान लगता है वह एक शोले को अपनी ताक (धात) में पाता है १६।  
१० और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ किसी

‘اموز سید هذا الوادي من شر سنهاء قومه’ : इस पाठी के सरदार की कहता है। उसके बाद के मूलों से इस तरह वह जिन्हों के सरदार की पनाह चाहता है। उसके बाद के मूलों तक कि सवेरा हो जाता।

पनाह में रात बिताता यहाँ तक के सभी हालात।  
 10 अध्यात्म जब जिन्होंने यह देखा कि इन्सान हमसे डरते हैं और हमारी पनाह चाहते हैं, तो उन्होंने उनकी उद्दिष्टा और मुख्यता को और बढ़ावा दिया, और उन्होंने इन्सानों पर अधिक अत्याकार किया। या इन्सानों के द्वारा अस्तोत्री और डुर-भय को अधिक यहाँ दिया।

१ अद्यत अपने स्वभाव अनुसार हमने खोज शुरू करी हि आवाग मा  
ल्ला प्रस्तु पटी है।

१२ यह सुरक्षाकर्मी परिवर्तनों में से थे, जो उसकी सुरक्षा कर रहे थे कि वे अकाश की जल खोरी-खोये न सुनते। जो कि (इन्हें) लापत्त है।

13. यह तरी के जाते हैं। वह सुखा नदी की सी देस्त के बाहर सुख ही है। अस्त्रांत उपराता ने इन आकाशों की सुखा जलादेने लाते रिया जाती मे किया।

14. ताकि यह आकाश वी खड़े परिश्रों से सून कर ज्योतिषियों को बहाए।

14 ताकि वह आवाज़ वाले वज्र परिवार से मुन् बदल जाएंगी जो अपना वाला है।  
 15 उस मुनने वाले विनाश की ताक में रहते हैं ताकि आवाज़ वाली वह  
 मुनने से रोकने के लिए उसे इसमें मारा जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

فَلْ أُوحِيَ إِنَّهُ أَتَسْتَعِنُ نَفْرِمِ الْجِنِ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا فَمَا أَنْجَبَ  
 بِهِدْيَ إِلَى الْأَرْضِ دُفَّافِنَاتِنَا بِهِ وَلَنْ تُشْرِكَ بِرَبِّنَا الْحَدَّادُ  
 وَأَنَّهُ قَعْلَنِ جَذْرِنَا مَا أَنْجَدَ صَنْجَةً وَلَا لَدَّا وَأَنْكَاتَ  
 يَقُولُ سَفِينَهَا عَلَى اللَّهِ شَطَطَا وَأَنَاظِنَنَا أَنْ لَنْ تَفْوِيَ الْأَنْسُ  
 وَلَلْجِنْ عَلَى اللَّهِ كَذَبَا وَأَنَّهُ كَانَ رَجَالٌ مِنَ الْإِنْسِ يَعْدُونَ بِرَبِّهِ  
 مِنَ الْجِنِ فَرَادُوهُمْ رَهْفَا وَأَنَّهُمْ طَنَّا كَأَطْلَنَنُمْ أَنْ لَنْ يَبْعَثَ  
 اللَّهُ أَحَدًا وَأَنَّا مَلَّسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلْبَثَتْ حَرَسًا  
 شَدِيدًا وَشَهِيًّا وَأَنَّا كَانَقْعَدْ مِنْهَا مَقْتَدِلَ السَّمْعَ فَمَنْ  
 يَسْتَعِنُ أَلَّا يَعْدِلَهُ شَهَابَارَصَدًا وَأَنَّا لَأَنْدَرِي أَشَرَّ أَرِيدَ  
 يَسْتَعِنُ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَهُمْ رَسْدًا وَأَنَّا مِنَ الْأَصْلَحُونَ  
 وَمَنَادُونَ ذَلِكَ كَأَطْرَابَقَ قَدَدًا وَأَنَاظِنَنَا أَنْ لَنْ تُعْجِزَ  
 اللَّهُ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ تُعْجِزَهُ هَرَبًا وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْمُهْدَى  
 أَمَانَابِهِ فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بِخَسَأَوْلَارَهْفَا

बुराई का विचार किया गया है । या उनके ख्याल का विचार उनके साथ भलाई का है ।

11 और यह कि (यकीनन) कठ तो हममें से सच्चे हैं तथा कष्ट विपरीत भी है । हम विभिन्न तरह से बढ़े हुए हैं ।

12 तथा हमें पूरा यकीन हो गया कि हम अल्लाह तभाला को धरता में कभी बेवस नहीं कर सकते । और न हम भागकर उसे हरा सकते हैं ।

13 और हम हिदायत की बात सुनते ही उस पर इमान ला चुके, और जो भी अपने प्रभु पर इमान लाएगा उसे न किसी हानि का डर है न अत्याचार (और दुःख) का ।

1 आकाश की इस चौकस सुरक्षा द्वारा बुराई का विचार है, या इन्हीं भलाई का विचार है। इने जैद का कथन है कि : इन्सान ने कहा : हमें इसकी जानकारी नहीं कि अल्लाह ने इस रकावट के द्वारा घरती बालों पर अज़ाब उतारने का विचार किया है, या यह कि उनकी ओर रसूल भेजेगा।

2 कुछ जिन्नों ने अपने साथी दूसरे जिन्नों से कहा जब उन्होंने अपने साथियों को मुहम्मद पर इमान लाने की दवाव दी : कुरान सुनने के बाद हम में से कुछ लोग उस पर इमान लाकर नेक बन गए, और कुछ इमान नहीं लाए, इस तरह हमारी विभिन्न दोलियाँ हो गईं, और हमारे इच्छाएँ विभिन्न हो गईं। सहद कहते हैं : वे जिन मुसलमान भी हैं, यहौं, नसानी और अग्नि के पूजारी भी ।

3 अवश्य हमने यह जान लिया कि यदि अल्लाह ने हमारे साथ किसी चीज़ की इच्छा की तो वह होकर रहे गी, हम उस से बच नहीं सकते ।

4 उसमें भागते हुए हम उसे बेवस नहीं कर सकते ।

5 ज़क्का के पायने हैं : नुकसान, कमी और घाटा, और ज़क्का के पायने हैं : अत्याचार, ज़्यादती और सरकशी ।

6 और, हम में से कुछ तो मुसलमान हैं जिन्हें बड़ा अज़ाब है कि वे मुसलमान हो गए की बोलते करते हैं ।  
 7 और जो अत्याचारी है वे नरक का दैयन बन गए ।  
 8 और हे नसीहों ! यह भी कहते हैं कि यह ए लोग किसी गम्भीर तरफ से रहते हैं जिन्हें हम उनकी परीक्षा नहीं लें और जो अल्लाह अपने ख्याल के जिक्र में मृण्यु पोढ़ देगा वो अल्लाह (तभाला) उसे कहोगे अज़ाब में दाल देगा ।  
 9 और यह कि मस्तिष्क मात्र अल्लाह ही के लिए (दिशेष) है, तो अल्लाह के माथ किसी अन्य को न पूछांगे ।  
 10 और जब अल्लाह का बंदा (मस्त) उसकी इदाहत के लिए यहाँ हुआ तो कर्मव था कि वे भी भीड़ की भीड़ बनकर उस पर गिर पड़े ।  
 11 आप कह दीजिए कि मैं तो मात्र अपने ख्याल को ही पूछता हूँ और उसके साथ किसी को साझादार-नहीं बनाता ।  
 12 कह दीजिए कि मुझे तुम्हारे लिए किसी लाभ-हानि का आधिकार नहीं ।  
 13 कह दीजिए कि मुझे हार्गिज़ कोई अल्लाह से नहीं बचा सकता तथा मैं कभी उसके सिवाय पनाह की जगह भी नहीं पा सकता ।  
 14 परन्तु (मग काम) तो मात्र अल्लाह की बाल और उसका संभग (लोगों को) पढ़वा देना है । (अब) जो भी अल्लाह और उसके गम्भीर को नाकर्मनी करेगा उसके लिए नरक की आग है जिसमें ऐसे लोग हमेशा रहेंगे ।  
 15 यहाँ तक कि जब उसे देख लेंगे जिसका उनको बदन दिया जाता है, तो जब भविष्य में जान लेंगे कि किस का मद्दगार (मदायक) करता है । और किसका गिरोह कम है ।  
 16 (आप) कह दीजिए कि मुझे ज्ञान नहीं कि जिसका बाद तुमसे किया जाता है वह निकट है अथवा मैंग प्रभु उसके

6 अत्याचारी हैं जो माथे गम्भीर से भटके हुए हैं ।

7 उन्होंने माथे गम्भीर का इच्छा किया, और उनकी बोलते के लिए प्रयास किया, तो उन्हें उनकी नीतीक मिल गई ।

8 नरक की आग का ईंधन देंगे, जिन से नरक की आग महकाई जाएगी, जिस तरह से कि वह काफिर इन्मानों से महकाई जाएगी ।

9 अर्थ यह है कि मुझे इस बाल की दवाय की गई है कि यदि इन्मान या इन्सान या दोनों माथे गम्भीर से रहते पर जब रहते हों तो **لَا يَنْهَا مَنْ يَرِيدُ** अर्थात् : अल्लाह न भाला उन्हें बहुत अधिक पानी भिजाता ।

10 ताकि हम उनकी परीक्षा के लिए और जान में कि वे नेपते ग्रान करके किस प्रकार गुरु करते हैं ।

11 और जो व्यक्ति कुरुआन में, या नमीहत में मृण्यु पोढ़ेगा वो उसे बहुत ही प्रशिक्षित और कठोर अज़ाब में दाल देगा ।

12 और मैंग आप उसने इस बाल की माथे की किसी मिलिंदे मात्र अल्लाह के लिए विशेष है, वे मूर्ति पूजा के लिए नहीं हैं, **لَا يَنْهَا مَنْ يَرِيدُ** जो जिन लोगों की भी भीड़ मात्र अल्लाह की है उस पर उसके सिवाय किसी मूर्ति में मध्यस्थित न मांगे यह वह जिनका अधिक मर्यादा वाला क्यों न हो, इसलिए कि दुश्मा इदाहत है ।

13 इस बदन से मूर्ति नहीं होती ।

14 अल्लाह को पुकार रहा था, और उनकी पूजा कर रहा था, और या घटना बले नज़ला का है, जैसा कि वर्षा होता ।

15 तो कर्मव था कि जिन्नान अल्लाह के गम्भीर से कुरुआन सुनने के लिए भीड़ के काम उन पर झटके द्युषिण के भिल यहाँ ।

16 मुझे इसकी शक्ति नहीं कि इन्मानों और आदिवासियों ने तुम से किसी वज़ाज और हानि को रोक मर्क, और न ये इमानी कि तुम्हें कोई लाप चूँका नहूँ ।

17 डिकाना, पनाह और बदन का व्यापार ।

18 मगर यह कि अल्लाह की ओर से पूर्वांश हूँ, और उसके सहित अल्लाह कर्तव्य कर्त्ता, दूसरों को जिन दोनों का अदेश देता है मैं वही वर्षा करूँ, यदि मैंने ऐसा किया तो मृटकारा पानूँग नहीं तो मैं वही वर्षा करूँ ।

19 मैंना जिसमें कि महायता लिया जाता है ।

20 क्या संख्या में वह कम है या मोमिन लोग ।

दूर की मुदत मुकर्र (निर्धारित) करेगा।  
वह ऐब (परोक्ष) का जानने वाला है तथा अपने ऐब पर  
किसी को अवगत (बाख़वर) नहीं करता।  
सिवाय उस रसूल के जिसे वह प्रिय बना ले, इसलिए  
कि उसके भी आगे-पौछे पहरे-दार लगा देता है।  
ताकि जानकारी हो जाए कि उन्होंने अपने रब के सदेश  
पहुँचा दिए, अल्लाह ने उनके आस-पास की चीजों को धेर  
रखा है और प्रत्येकस्तु की संख्या की गिनती कर रखी है।

## सूरतुल मुज्जमिल - 73

इस करता है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
हे चादर में लिपटने वाले।

रात (के समय तहज्जुद की नमाज) में उठ खड़े हो  
जाओ, परन्तु थोड़ी देर।

आधी रात या उससे भी कुछ कम।

या उस पर बड़ा दे और कुर्अन को ठहर-ठहर कर  
(स्पष्ट) पढ़ा कर।

अवश्य हम तुझ पर बहुत भारी बात जल्द ही उतारेंगे।

अवश्य रात का उठना दिल-जर्ह (मन की एकाग्रता) के  
लिए बहुत मुनासिब है और बात को बहुत उचित करने वाला है।

अवश्य तुझे दिन में बहुत से कार्य होते हैं।

और तू अपने प्रभु के नाम जप किया कर और समस्त  
साइर से अलग होकर उसकी ओर मुत्तवज्जह (ध्यानमन्त्र) हो जा।  
पूर्व और पश्चिम का रब जिसके सिवाय कोई सत्य पूर्ण  
नहीं, तू उसी को अपना कार-साज़ बना ले।

और जो कुछ वे कहते हैं तू सहन करता रह और उन्से  
अच्छी प्रकार से अलग-थलग रह।

और मुझे और उन झुठलाने वाले खुश-हाल लोगों को  
छोड़ दे और उन्हें थोड़ा अवसर दे।

अवश्य हमारे यहाँ कठोर बेड़ियाँ हैं और सुलगता हुआ  
नरक है।

और गले में अटकने वाला भोजन है और दृःख-दायक  
अन्दाज है।

जिस दिन धरती और पर्वत थरथरा जाएंगे और पर्वत  
भरभरी रेत के टीलों जैसे हो जाएंगे।

अवश्य हमने तुम्हारी ओर भी तुम पर गवाही देने वाला  
रसूल भेज दिया है, जैसा कि हमने फिर्ऊन की ओर रसूल  
भेजा था।

<sup>1</sup> सामा और मुदत, वस अल्लाह के सिवाय किसी को इसकी जानकारी  
नहीं कि कियामत कव होगी।

<sup>2</sup> पिछले हुक्म से उस रसूल को अलग कर लिया जिसे वह पसन्द करते, तो अपने  
गैरीबी ज्ञान में से जो चाहे उन्हें वस्त्र द्वारा बता देता है, और उसे उनके लिए  
मोज़ज़ा (वमकार) और उनकी नुबूवत पर सच्चा प्रमाण बनाया, और ज्योतिषी  
और उस जैसे अन्य लोग जो पत्तरों से मारते हैं, हाथों की लसीरे पढ़ते हैं, या  
पक्षी उड़ाते हैं, उन लोगों में से नहीं हैं जिन्हें अल्लाह ने पसंद किया है, बल्कि यह  
तो अल्लाह के साथ कुफ़ करने वाले, अपने अन्दाज़, झूठ और अटकल द्वारा  
अल्लाह पर आरोप लगाने वाले हैं।

<sup>3</sup> अर्थात अल्लाह तथाला रसूल के आगे पीछे फरिश्तों में से सुरक्षार्थी  
निर्धारित कर देता है, जो उस की सुरक्षा करते हैं ताकि जब वह उस पर  
वस्त्र को स्पष्ट करे तो शैतान आड़े न आसके, और इसी तरह उसे धेरे  
रहते हैं ताकि शैतान उसे सुन न सके और न ज्योतिषियों को बता सके।

<sup>4</sup> ताकि अल्लाह तथाला जिस तरह गैब द्वारा जानता है उसी तरह यह  
देख भी ले कि उसके रसूलों ने उसके सदेश ठीक-ठीक पहुँचा दिए हैं।

<sup>5</sup> अर्थात घात में रहने वाले फरिश्तों के पास की, या रसूलों के पास की  
जो अल्लाह का संदेश लोगों तक पहुँचाते हैं, या उन लोगों के पास की  
चीजों को धेर रखा है।

وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمُونَ وَمِنَ الْقَنْصِطُونَ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَئِكَ  
خَرَقَ أَرْشَدًا ١١ وَمَا الْقَنْصِطُونَ قَاتِلُوا إِجْهَمَ حَطَبًا  
وَأَلَوْ أَسْتَقْمُوا عَلَى الظَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْتُهُمْ مَاءً غَدَقًا ١٢ لَقَنْدِمَ  
فِيهِ وَمَنْ يَعْرِضُ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكُهُ عَذَابًا صَعِدَا ١٣ وَأَنَّ  
الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ١٤ وَأَنَّهُ لِمَا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ  
يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِيدًا ١٥ قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا عَوَارِيٍّ وَلَا أَشْرِكُ  
بِهِ أَحَدًا ١٦ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُنْ ضَرًا وَلَا رَسَدًا ١٧ قُلْ إِنِّي  
لَنْ يُحِبِّي مِنَ اللَّهِ أَحَدًا وَلَنْ أَجْدِمَنْ دُونِهِ مُلْحَدًا ١٨ إِلَّا لَبَنًا  
مِنَ اللَّهِ وَرَسْلَتِهِ وَمَنْ يَعْصِي اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّهُ لَنَارِ جَهَنَّمَ  
خَلِيلِينَ فِيهِ أَبْدًا ١٩ لَحَقَّ إِذَا رَأَوْ مَا يُوعِدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ  
مِنْ أَضَعَفُ نَاصِرًا وَأَقْلُ عَدَدًا ٢٠ قُلْ إِنَّ أَدْرِيَتْ أَقْرِبَ  
مَا تُوعَدُونَ أَمْ بَعْجَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ٢١ عَدِلُمُ الْغَيْبِ فَلَا  
يُظْهِرُ عَلَى عَيْنِهِ أَحَدًا ٢٢ إِلَّا مَنْ أَرْتَضَنِي مِنْ رَسُولِ فَإِنَّهُ  
يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ٢٣ لَعِلْمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا  
رِسَالَتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَهُمْ وَأَحْصَى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ٢٤

<sup>16</sup> तो फिर्ऊन ने उस रसूल की नाफ़मानी की तो हमने  
उसे धोर आपद में पकड़ लिया।

<sup>17</sup> तुम यदि काफिर रहे तो उस दिन कैसे बचोगे, जो दिन  
बद्धों को बढ़ा कर देगा?

<sup>18</sup> जिस दिन आकाश फट जाएगा, अल्लाह का यह वधन  
परा होकर ही रहनेवाला है।

<sup>19</sup> अवश्य यह शिक्षा है, तो जो चाहे अपने रब की ओर  
कर सत्ते को अपना ले।

<sup>20</sup> अवश्य तेरा रब भली-भाँति जानता है कि तू और तो  
साथ के लोगों का एक गुट लगभग दो तिहाई रात के और  
आधी रात के और एक तिहाई रात के (तहज्जुद की नमाज  
के लिए) खड़ा होता है, और रात-दिन का पुरा अनुमान  
अल्लाह को ही है, वह (भली-भाँति) जानता है कि तुम उसे  
कभी न निभा सकोगे तो उसने तुम पर कृपा की, इसलिए  
जितना कुर्अन पढ़ना तुम्हारे लिए सरल हो उतना ही पढ़ो।  
वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी भी होंगे, कुछ अन्य  
धरती पर सफर करके अल्लाह की कृपा (अर्थात् जीवाका भी  
खोजेंगे और कुछ अल्लाह के मार्ग में जिहाद भी करेंगे, तो  
तुम सरलता पूर्वक जितना (कुर्अन) पढ़ सकते हो पढ़ो। और  
नमाज पाबन्दी से पढ़ो और ज़कात (भी) देते रहा करो और  
अल्लाह को अच्छा कर्ज़ (ऋण) दो, और जो नेकी तुम अपने  
लिए आगे भेजोगे उस अल्लाह के यहाँ सर्वोत्तम स्वप्न से बढ़ो  
में अत्यधिक पाओगे। और अल्लाह से क्षमा माँगते रहो  
यकीनन् अल्लाह क्षमा करने वाला मेर्हबान (कृपातु) है।

شِورَةُ الْمُنْكَرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ١) فِي أَيْنَلَمْ لَا يَقْبِلُوْا نِصْفَهُ، أَوْ أَنْقُضُ مِنْهُ قِبْلَهُ  
أَوْ زَدَ عَلَيْهِ وَرَتَلَ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ٢) أَنَّاسَنْلَفَ عَلَيْكَ قَوْلًا  
ثَقِيلًا ٣) إِنَّ تَأْشِيَةَ أَيْنَلِهِ أَشْدُوْطًا وَأَقْوَمَ قِيلًا ٤) إِنَّ لَكَ فِي  
النَّهَارِ سَبَحَاطُوْلًا ٥) وَإِذْ كَرُّ أَسْمَرِيكَ وَبَتَلَ إِلَيْهِ بَتِيلًا ٦)  
رَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ٧) وَأَصِيرَ  
عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرَاجِيلًا ٨) وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ ٩)  
أُولَئِي النِّعَمَةِ وَمَهْلِهُمْ قِيلًا ١٠) إِنَّ لَدَنَا أَنْكَالًا وَجِيمًا ١١)  
وَطَعَامًا ذَاغْصَةً وَعَذَابًا أَلِيمًا ١٢) يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجَبَالُ  
وَكَانَتِ الْجَبَالُ كَبِيَّا مَهِيلًا ١٣) إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَهِيدًا  
عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَى فَرْعَوْنَ رَسُولًا ١٤) فَعَصَى فِرْعَوْنُهُ الرَّسُولُ  
فَأَخْذَتْهُ أَخْذًا وَوِيلًا ١٥) فَكَيْفَ تَنَقُّلُونَ إِنَّ كَفَرْتُمْ بِمَا يَحْمِلُ  
الْوَلَدَنَ سِيبِيَا ١٦) الْسَّمَاءُ مُنْفَطَرٌ بِهِ، كَانَ وَعْدُهُ مَقْعُولًا ١٧)  
أَنَّ هَذِهِ تَذَكِّرَةٌ فَمَنْ شَاءَ أَخْذَهُ إِلَى رَبِّهِ، سَيِّلًا ١٨)

सुरक्षा भूमिका १ - ७४

श्रूत करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।  
 है कपड़ा ओढ़ने वाले।<sup>2</sup>  
 खड़ा हौं जा और आगाह (सावधान) कर दे।<sup>3</sup>  
 और अपने रख ही की बड़ाईयां (महिमा) बयान कर।<sup>4</sup>  
 और अपने कपड़ों को पवित्र रखा कर।<sup>5</sup>  
 और नापाकी को छोड़ दे।<sup>6</sup>

१ और इहसान (उपकार) करके अधिक लेने की इच्छा<sup>8</sup> न कर।  
२ और अपने प्रभु के मार्ग में सब्र (धैर्य) रख।<sup>9</sup>  
३ तो जब सूर (नरसिंहा) में फूँका जाएगा।  
४ तो वह दिन बहुत कठोर दिन होगा।  
५ (जो) काफिरों पर सरल न होगा।  
६ मुझे और उसे छोड़ दे, जिसे मैंने अकेला पैदा किया है।<sup>10</sup>  
७ और उसे अत्यधिक धन दे रखा है।<sup>11</sup>  
८ और हाजिर रहने वाले पुत्र भी।<sup>12</sup>  
९ तथा मैंने उसे बहुत कुछ कृशादगी (समुद्धि) दे रख्यी है।<sup>13</sup>  
१० फिर भी उसकी चाहत है कि उसे और अधिक दूँ।  
११ नहीं-नहीं, वह हमारी आयतों का विरोधी है।<sup>14</sup>  
१२ जल्द ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई चढ़ाऊँगा।<sup>15</sup>  
१३ उसने विचार करके अनुमान किया।<sup>16</sup>  
१४ उसका नाश हो! उसने कैसा अनुमान किया?<sup>17</sup>  
१५ फिर उसका नाश हो! किस प्रकार उसने अनुमान किया।  
१६ उसने फिर देखा।<sup>18</sup>  
१७ फिर मुख सिकोड़ लिया और मुँह बना लिया।<sup>19</sup>  
१८ फिर पौछे हट गया, गर्व किया।  
१९ और कहने लगा कि यह तो मात्र जादू है जो नकल किया जाता है।<sup>20</sup>  
२० (यह) इन्सान की बात के सिवाय कुछ भी नहीं।<sup>21</sup>  
२१ मैं जल्द ही उसे नरक में डालूँगा।<sup>22</sup>  
२२ और तुझे क्या पता कि नरक क्या चीज़ है?  
२३ न वह बाकी रखती है और न छोड़ती है।<sup>23</sup>  
२४ खाल को झूलसा देती है।

७ और नुबुव्वत का जो बोझ आप उठा रहे हैं उसका एहसान आप अपने रव पर न जाताइए, उस व्यक्ति की तरह जो यदि किसी का बोझ उठाता है तो उससे अधिक मिलने की इच्छा रखता है। और एक कथन की ऐश्वर्णी में इसका अर्थ यह है कि जब आप किसी को कोई उपहार दें तो मात्र अल्लाह की खुशी के लिए दें और लोगों पर उसका एहसान न जाताएं।

८ अर्थात् : आप पर भारी ज़िम्मेदारी लादी गई है, जिसके कारण आप से अर्थी और अजमी युद्ध करेंगे, तो आप उस पर अल्लाह के लिए सब्र कीजिए।

९ इसका अर्थ सूर (नरसिंह) में फूँक मारना है, गोया कि कठा जा रहा है कि आप इनकी ओर से पहुँचने वाली कप्तों पर सब्र करें; क्योंकि इनके सामने एक भयंकर दिन है जिसमें वे अपने कर्तृों की सजा पाने वाले हैं।

१० मुझे और उस व्यक्ति को अकेला छोड़ दें जिसे मैंने पैदा किया है जबकि वह अपनी मां के पेट में अकेला था, न तो उसके पास थन था और न ही सन्तान, या इसका अर्थ यह है कि : मुझे अकेला उससे बदला लेने के लिए छोड़ दें, मैं आप की ओर से उससे निपटने के लिए काफी हूँ।

११ तो—तो—

12 और ऐसे वेटे जो हर समय उसके साथ मङ्का ही में रह रहे हैं, न वह यात्रा करते हैं और न ही अपने बाप के घन के कारण जीविका की खोज में बाहर जाने के महत्वात् हैं।

13 उसकी जीविका को बढ़ावा दिया है, लम्हे आय दी है, और कैप्रेश की सदाचारी थी।  
 14 इसके बाद वह ड्यूगर निशानियों का विशेषी है, और जो हमने अपने इसल पर उत्पन्न की थी।

15 जल्द ही हम उस पर कठिन अनाव का बोझ डालेंगे, इहाँक कहते हैं कि इन्हाँन ऐसी भारी धीज उडाए जिसकी बढ़ शर्ति न रखती है।

**16** उसने नवी के बारे में सोचा और जी में विचार कर लिया, और जवाब देने के लिए बातें तैयार कर लीं, तो अल्लाह ने उसे अम्मानित किया।  
**17** यह एक शास्त्र है जो हमें ——————

17 उस पर शराप हो आर उसका नाम हो उमने कैमी बात सोयी।  
 18 उसने सोचा कि किस तरह कुरआन को एक करे और उसमें कृष्ण निकाले।  
 19 “...” जब उसे कोई ऐसी चटि दर्दी मिली—

पर रद करे तो उसने अपना मुह बनाया। और ल्योरी बढ़ाई।  
 20 यह कुरआन जादू के सिवाय और कुछ नहीं है।

दूसरों से नकल करके बता रहे हैं।  
 ११ यह तो इन्हाँनों का कथन है, अल्लाह का कथन नहीं है।  
 २२ जल्द ही मैं उसे उड़ाना की जगह में —

22 जल हा म उस जहन्नम को आग म डालूँगा।  
23 जहन्नम लोगों को दिखाई देगी और वे अपनी आँखों से सफर भव देखेंगे, और कहा गया है कि वह लोगों के देहों पर रंग बदल देगी, जहाँ

१) और उस पर उन्नीस (फरिश्ते नियुक्त) मुकर्र हैं।  
 २) और हमने नरक के दारोगे मात्र फरिश्ते रखे हैं। और हमने उनकी संख्या मात्र काफिरों की परीक्षा के लिए मुकर्र (निर्धारित) कर रखी है, ताकि अहले किताब विश्वास कर लें और ईमान वाले ईमान में बढ़ जाएं और अहले किताब और मुसलमान शंका न करें, और जिनके दिल में रोग है वे और काफिर कहें कि इस उदाहरण से अल्लाह की क्या मुराद है? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और तेरे रब की सेनाओं को उसके सिवाय कोई नहीं जानता, यह सभी इन्सानों के लिए (साक्षत) शिक्षा (एवं उपदेश) है।  
 ३) कभी नहीं! चन्द्रमा की कृसम।

४) और रात की जब वह पीछे हटे।

५) और सवेरे की जब वह रौशन हो जाए।

६) कि (अवश्य वह नरक) बड़ी चीजों में से एक है।

७) तोगों को डराने वाला।

८) उस व्यक्ति को जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना चाहे।

९) प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के बदले गिरवी है।

१०) परन्तु दाएं हाथ वाले।

११) (कि) वे जन्नतों में (बैठे हुए) पूछते होंगे।

१२) पापियों से।

तक कि वह काले हो जाएँ।

१) जहन्म पर फरिश्तों में से १६ दारोगे निर्धारित हैं, और कहा गया है कि १६ प्रकार के फरिश्ते निर्धारित हैं।

२) जब यह आयत عَلَيْكُمْ تَسْعَةٌ عَسْرٌ उतरी तो अबू जहल ने कहा : क्या मुहम्मद की सहायता करने वाले मात्र १६ होंगे? तो क्या तुम में से सौ सौ व्यक्ति मिल कर भी एक को न पकड़ पायेंगे कि लोग जहन्म से निकल जाएँ? तो यह आयत وَمَا جَعَلْنَا أَحَدًا مُّكْفِرًا उतरी, तो फरिश्तों से जिज़ने की किस के पास शक्ति है? और कौन उन्हें हरा सकता है? वह तो अल्लाह के हड़के वाले उसकी मञ्जूलक (सुष्टि) में से सबसे अधिक कायम करने वाले हैं, और सबसे अधिक उसके लिए गुस्सा होने वाले हैं, उनका अज़ाब وَمَا جَعَلْنَا عَذَابَهُمْ أَلَّا कठिन है, और उनकी पकड़ सबसे मञ्जूल है। यह तो उनकी उल्लिखित संख्या को काफिरों की गुणही और परोक्षा का कारण बनाया, तो उन्होंने अपने दिल की बातें कह लीं, ताकि उन पर अज़ाब में बढ़ाती होजाएँ और उन पर अल्लाह का क्रोध अधिक होता चला जाए। ताकि यहूदी और ईसाई यकीन करते; क्योंकि क्रूरआन में जो संख्या बताया गया है वही संख्या उनकी किताबों में भी उल्लिखित है। وَرَبُّ الْأَنْبَابِ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِتُسْتَيْقِنَ الْأَيْمَانَ أَوْ لِتُكَبِّرَ यह देख कर उनका ईमान बढ़ जाए कि यहूदियों और ईसाईयों ने भी उनकी मुवाफकत की है। وَلِقُولِ الْأَنْبَابِ और ताकि मुनाफिक कहें। और वह जो कि काफिर हैं मक्का वासियों में से या अन्य स्थानों के : إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِتُكَبِّرَ कि इस अधिक में डाल देने वाली संख्या से अल्लाह की इच्छा क्या है? وَمَا يَأْتِي بِجُورَهُ إِلَّا رَبُّكَ यह जहन्म के दारोगे अगरचे १६ ही हैं तो किन फरिश्तों में से उनके मददगार और लाशकर हैं जिन्हें अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा नहीं जानता। وَمَا هُنَّ إِلَّا ذُكْرٌ لِلشَّرِّ

अर्थात् जहन्म और जहन्म के दारोगों की यह संख्या मात्र संसार वालों की नसीहत के लिए है, ताकि उन्हें अल्लाह की परिपूर्ण शक्ति की जानकारी होजाए, और इसकी भी कि उसे किसी मददगार की जरूरत नहीं है।

३) मैं इस पर चाँद की और इसके बाद आने वाली चीजों की कृसम खाता हूँ।

४) जब वह पीछे मुड़ कर जाने लगे।

५) जब वह रौशन और स्पष्ट हो जाए।

६) जहन्म बड़े कष्टों तथा मसीबों में से एक है। और कहा गया है मुहम्मद (ص) को झुटाना बड़ी मुसीबों में से एक है।

७) हर एक के लिए डराने वाला है चाहे ईमान के साथ आगे बढ़े या कुफ द्वारा पीछे रह जाए।

८) अपने कर्मों के कारण हर व्यक्ति की पकड़ होगी और वह उसके साथ गिरवी है, अब उसका वह कर्म या तो उसे अज़ाब से बचा लेगा, या उसे देख कर भाग रहे हों।

९) वर्वाद कर देगा।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَذْنَى مِنْ ثُلُثِ الْأَيْلَلِ وَنَصْفَهُ، وَثُلُثَهُ، وَطَلَافَةً مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ يُقْدِرُ الْأَيْلَلَ وَالنَّهَارَ عَلَمَ أَنَّ لَنْ تُخْصُصُهُ فَنَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرُءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ إِنَّ اللَّهَ أَعْلَمُ أَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ مَرْضٌ وَآخَرُونَ يُقْتَلُونَ فِي سَيْلِ اللَّهِ فَاقْرُءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ وَأَقْتِمُوا الصَّلَاةَ وَمَا تَوَلَّ أَزْكَةً وَأَفْرَضُوا اللَّهَ قَرْضاً حَسَنَاً مَا نَقْدِمُوا لَنْفِسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ بَعْدُ وَمَا تَنْهَى اللَّهُ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

شُوكُوكُ المُكَبِّرُ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الْمُدْرِرِ ۱) قُرْفَانِدِرُ ۲) وَرَبِّكَ فَكِيرُ ۳) وَرِبَّكَ فَطَهَرُ ۴) وَالْأَرْجَزَ فَاهْجَرُ ۵) وَلَا تَمْنَنْ تَسْكِنُ ۶) وَلَرِبِّكَ فَاصِرُ ۷) فَإِذَا نَقَرَ فِي التَّاقُورِ ۸) فَذَلِكَ يَوْمَ إِذْ يُبَيَّنُ ۹) عَلَى الْكُفَّارِينَ عَبَرِسِيرُ ۱۰) ذَرْفِ وَمَنْ خَلَقْتُ وَجِيدًا ۱۱) وَجَعَلْتُ لَهُ مَا لَمْ مَمْدُودًا ۱۲) وَبَنِ شَهُودًا ۱۳) وَمَهَدَتْ لَهُ تَهْمِيدًا ۱۴) شَمْ طَمَعُ ۱۵) أَنْ أَزِيدَ كَلَّا إِنَّمَا كَانَ لَإِبْرَيْنَاءِ عَيْنِدَا ۱۶) سَأْرَهْفَهُ صَعُودًا ۱۷)

१२) तुम्हें नरक में किस बात ने डाला?

१३) वे जवाब देंगे कि हम नमाजी न थे।

१४) न भूखों को खाना खिलाते थे।

१५) और हम बाद-विवाद (इंकार) करने वालों के साथ बाद-विवाद में मशगल (व्यस्त) रहा करते थे।

१६) और हम बदलते के दिन को झुठलाते थे।

१७) यहाँ तक कि हमारी मृत्यु आ गयी।

१८) तो उन्हें सिफारिश करने वालों की सिफारिश लाम न देगी।

१९) उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से मुख मोड़ रहे हैं?

२०) जैसे कि वे बिदके हुए गये हैं।

२१) जो तीर अंदाजो से भागे हों।

२२) बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे सरद किताबें दी जाएं।

९) उनसे पूछेंगे : तुम्हें किस दीज़ ने जहन्म में डाल दिया?

१०) कुकमियों के साथ उनके कुकम में व्यस्त रहते थे, जब भी कोई जाप करता हम उसके साथ रहते।

११) अर्थात् : मौत आगई।

१२) कौन सी दीज़ उन्हें मिल गई है जिसने उन्हें कुरुआन से दूर कर दिया है जबकि इसमें तो बहुत बड़ी नसीहत है।

१३) जैसे कि वे बदलते अधिक बिदके हुए गये हों।

१४) जो तीर अंदाजो से भागे हों जो उन्हें तीर से भार रहे हों, और जो गया है कि अरबी में فَسُورَةُ का अर्थ देर है। तो इसका अर्थ यह होता है कि यह जंगली गये हैं जो देर को अपनी ओर काढ़ आने के लिए जाए।

१५) मुक्कसिरीन कहते हैं कि काफिरों ने मुहम्मद से भाग किया कि

إِنَّهُ مُكَرَّرٌ وَقَدْرٌ ١٨ فَمَيْلٌ كَفَ قَدْرٌ ١٩ ثُمَّ قَلْلٌ كَفَ قَدْرٌ ٢٠ ثُمَّ نَظَرٌ  
ثُمَّ عَسْ وَسِرٌ ٢١ ثُمَّ أَذْبَرٌ وَأَنْشَكَمٌ ٢٢ فَقَالَ إِنَّهُمْ هُنَّ الْأَمْرَاءُ  
يُؤْتَرُ ٢٣ إِنَّهُمْ لَا يَقُولُ الْبَشَرُ ٢٤ مَأْسَلِيهِ سَقَرٌ ٢٥ وَمَا أَذْرَهُ  
مَاسَقَرٌ ٢٦ لَا تَبْقِي وَلَا تَذَرُ ٢٧ نَوَاحِهِ لِلْبَشَرِ ٢٨ عَلَيْهَا سَعْةُ هَشَرٍ  
وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ الْأَرَارِ إِلَّا مَلَكِهِ ٢٩ وَمَا جَعَلْنَا هَذِهِنَّ الْأَفْسَرَ  
لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيُسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أَنْوَأُوا إِلَيْهِمُ الْكِتَبَ وَبِزِدَادِ الْأَلْيَنِ ٣٠ مَأْسَلِيهِمْ  
وَلَا يَرْتَابُ الَّذِينَ أَنْوَأُوا إِلَيْهِمُ الْكِتَبَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلَيَقُولُ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرْهُشٌ  
وَالْكُفَّارُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهِنَّا مَلَأُوكَذَلِكَ يُضْلِلُ اللَّهُ مِنْ يَنْهَاهُ وَهَدِي  
مِنْ يَنْهَاهُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودُ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذُكْرٌ لِلْبَشَرِ ٣١ كُلَّا  
وَالْقَمَرِ ٣٢ وَأَلَيْلٍ إِذَا أَذْبَرَ ٣٣ وَالصُّبْحِ إِذَا أَشَغَرَ ٣٤ إِنَّهَا لِلْأَخْدَى  
الْكُبُرِ ٣٥ نَذِيرٌ لِلْبَشَرِ ٣٦ لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَنْقُدَمْ أَوْ سَاحِرٌ ٣٧ كُلُّ  
نَفِيسٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينَةً ٣٨ إِلَّا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ٣٩ فِي جَهَنَّمْ يَسْأَهُ لَوْنَ  
عَيْنَ الْمُجْرِمِينَ ٤٠ مَا سَلَكَ كُكْفَى سَقَرَ ٤١ قَالُوا لَوْنَلُعِينَ  
الْمُصَلَّيْنَ ٤٢ وَلَمْ يَلْكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ٤٣ وَكُلُّا نَخْوُضُ مَعَ  
الْحَاضِرِينَ ٤٤ وَكَانَ كَذِبٌ بِيَوْمِ الدِّينِ ٤٥ حَتَّى أَنْتَنَا الْأَلْقَيْنَ ٤٦

**३३** कभी ऐसा नहीं (हो सकता), बल्कि यह कियामत (प्रलय) से बेखोफ़ (निर्भय) है।

**३४** सत्य वात तो यह है कि यह (कुरआन) एक नसीहत है।

**३५** अब जो चाहे इससे नसीहत प्राप्त करे।

**३६** और वे उस समय नसीहत प्राप्त करेंगे जब अल्लाह चाहे, वह (अल्लाह) इसी लायक (योग्य) है कि उससे डरें, और इस लायक भी कि वह क्षमा करे।

सुरत्तुल कियाम - 75

प्राण करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 मैं कसम (सीगन्ध) खाता हूँ<sup>2</sup> कियामत (प्रलय) के दिन की।  
 और कसम खाता हूँ उस मन की जो निन्दा करने वाला हो<sup>3</sup>।

आप को रसूल उस समय मानेंगे जब हम में से हर व्यक्ति के पास जब हम सवेरे उठे तो अल्लाह की ओर से एक खुली हुई किताब हो जिसमें यह लिखा हो कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

**अर्थात् :** जब अल्लाह उन्हें हिदायत देना चाहे।

वास्तव में वही इस लायक है कि परहेज़गार उससे डौ, उसका अनुकरण करके और अवहेलना छोड़कर।

और वास्तव में वही इस लायक भी है कि मोमिनों के गनाहों को जो उन से हृष है माफ करे।

سے سُردادِ مُوبِین کا نپس है, جो کि उस کी कमी और

क्या इन्सान यह विचार करता है कि हम उसकी हड्डियाँ  
इसी करेंगे ही नहीं<sup>4</sup>।

हाँ, अवश्य करेंगे, हमें शक्ति है कि हम उसकी पोर-पोर  
को टीक कर दें<sup>5</sup>।

बल्कि इन्सान तो चाहता है कि आगे-आगे नाफर्मानियाँ  
करता जाए<sup>6</sup>।

पूछता है कि कियामत (प्रलय) का दिन कब आएगा<sup>7</sup>?  
तो जिस समय आँखें पथरा जाएंगी<sup>8</sup>।

और चाँद बेनूर (प्रकाशहीन) हो जाएगा।

और सूर्य एवं चाँद इकट्ठे कर दिए जाएंगे<sup>9</sup>।

उस दिन इन्सान कहेगा कि आज भागने का स्थान कहाँ है<sup>10</sup>?  
नहीं-नहीं, कोई पनाह-गाह नहीं<sup>11</sup>।

आज तो तेरे रब की ओर ही ठिकाना है<sup>12</sup>।

आज इन्सान को उसके आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े  
हुए से आगाह (अवगत) कराया जाएगा।

बल्कि इन्सान स्वयं अपने आप पर हृज्जत (प्रमाण) है<sup>13</sup>।

आगर्वि कितने ही बहाने पेश करे<sup>14</sup>।

(हे नवी) आप कुर्�आन को जल्दी (याद करने) के लिए<sup>15</sup>  
अपनी जीभ को न हिलाएं।

कोताही पर उसे मलामत करता है, यह बुराई करने पर मलामत करता है कि तूने ऐसा क्यों किया, और नेकी करने पर भी निंदा करता है कि और अधिक क्यों नहीं किया। मुकातिल कहते हैं कि इस से काफिर का नफस मुराद है जो आखिरत में अपने आप को मलामत करेगा, और अल्लाह के बारे में जो कमी कोताही की है उस पर अफ्सोस करेगा, या दोनों की एक साथ अल्लाह कसम खारहा है कि वह शीघ्र ही हँडियों को इकट्ठा करेगा फिर प्रत्येक व्यक्ति को दोबारा जीवित करेगा ताकि वह उस से हिसाब ले और उसे उस का बदला दे, (हँडियों का चर्चा खास कर इसलिए किया गया है कि यही गैटिंग का असल दांदा है।)

**४** उसके बिखर जाने के बाद दोबारा नए सिरे से उसे पैदा करेंगे ही नहीं, तो उसका भ्रष्ट गमन है।

त उसका भ्रष्ट तुमन ह।  
 ५ जल्द हम उन्हें ज़रूर इकट्ठा करेंगे, और हमें इस की भी शक्ति है कि उस की उंगलियों को एक दूसरे से जोड़ कर ऊँट के खुर की तरह करदें लेकिन हम ने उन पर करम किया है और उन्हें उंगलिया दी जिनमें जोड़, नाखून, पतली रेंग, और बारीक हड्डियाँ हैं। और इस बारे में एक विचार यह है कि यह अल्लाह तज़्अला की ओर से सावधानी है कि उसने प्रत्येक व्यक्ति के पार पोर तक अलग बनाए हैं, जो उसकी महान शक्ति की दलील है, यदि वह चाहता तो सब की उंगलियों के पेरों को एक जैसा कर देता।

6 अर्थात् वह चाहता है कि आने वाले समय से पहले पहले बूराइयाँ कर गजरे, तो वह गुनाहों को करते जाता और तौबा को टालते जाता, वह

जिन्दगी भर गुनाह करते जाता और मौत को याद नहीं करता।  
 7 अर्थात कियामत को दूर समझकर उसका मज़ाक उड़ाते हुए प्रश्न करता है।

8 अर्थात् मौत अथवा दोबारा उठाए जाने की घटाहट, दहशत और डर से आँखें पथरा जाएंगी।  
 9 अर्थात् सूर्य भी चाँद की तरह प्रकाशहीन होजाएगा, दोनों की गैशनी एक साथ खत्म हो जाएगी, इस तरह रात और दिन के आने जाने का व्याप्ति समय हो जाएगा।

— चक्र खत्म हा जाएगा। 10 अर्थात् अल्लाह से और उसके हिसाब और अज़ाब से मागने के लिए कोई स्थान न होगा।

में काइ स्थान न होगा।  
 11 अर्थात् कोई पहाड़, या किला या शरण-स्थल ऐसी न होगी जो तुम्हे अल्लाह से बचा सके।  
 12 <sup>الشَّرْقُ</sup> के अर्थ शरण-स्थल और पनाह-गाह के हैं, मुगद मैदाने महशर

इस कोई उस की अदातल से बच कर निकल जाए।

13 अर्थात् उसे वास्तविक्ता का पता चल जाएगा कि वह इनमें से कौन पर, कमावदीर्घी पर या नाकर्मनी पर, सिवाई पर या टेह्राई पर। और कहा गया है कि यह दोनों ऐसे और अंग स्वयं उसी के विरोध में गवाही देंगे।

इन है कि उस के हाथ पर आर अंग स्वयं उस के विरोध में लड़ाक द्वारा  
से 14 अर्थात् चाहे वह जितने ही बहाने बनाए और अपना दिक्षात् करे,  
याप लेकिन यह सारी चीजें उस के कुछ काम न आएंगी, और स्वयं उसके  
अंग उस के बहानों को छुटला देंगे।

अग उस क बहाना का था १५  
पीर अल्लाह के रसूल पर जब कुरआन नाजिल होता था तो आप

उसको जमा करना १ और (आप के मुख से) पढ़ाना  
लभित्र जिम्मे हैं । २ लम जब उसे पढ़ ले, तो आप उसके पढ़ने की पैरवी करें ३ ।  
फिर उसे बयान (स्पष्ट) कर देना हमारे जिम्मे हैं । ४  
नहीं-नहीं, तुम तो जल्दी मिलने वाले (संसार) से प्रेम रखते हों ।  
और आखिरत (प्रलोक) को छोड़ बैठे हों । ५  
उस दिन बहुत से चेहरे हरे-भरे और प्रकाशित होंगे ।  
अपने रब की ओर देखते होंगे ६ ।  
और किसने देहरे उस दिन (बद्रौनक और) उदास होंगे ७ ।  
समझते होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला  
व्यवहार किया जाएगा ८ ।  
नहीं-नहीं ९, जब (रुह अर्थात् प्राण) हंसुली तक पहुँचेगी १० ।  
और कहा जाएगा कि कोई झाड़-फूँक करने वाला है ११ ?  
और उसने विश्वास कर लिया कि यह जुदाई का समय है १२ ।  
और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी १३ ।  
आज तेरे रब की ओर चलना है १४ ।  
तो उस ने न तो पुष्टि की न नमाज पढ़ी १५ ।  
बल्कि द्युठलाया और पलट गया १६ ।

के पढ़कर फारिंग होने से पहले उसे याद करने के लिए अपने दोनों होट  
और अपनी जीभ को हिलाते थे, तो यह आयत उत्तरी, कि जब वह्य आप  
पर उत्तर रही हो तो इस डर से कि कहीं आप उसे भूल न जाएं उसे  
जल्दी याद करने के लिए अपनी जीभ को न हिलाएं।

1 आप के सीने में कि उस में से कुछ भी आप से छूटने न पाए।  
2 अर्थात् सही हूँ रूप में आप की जीभ पर उस की किराअत को साबित करना।  
3 अर्थात् जिब्रिल द्वारा जब हम उसे पढ़कर फारिंग हो जाएं तो उसके  
पश्चात् आप उसे पढ़ें, और जब तक हम उसे पढ़ें आप चुप होकर ध्यान  
देकर सुनते रहें।

4 रसूल द्वारा इसमें जो हलाल और हराम है उसे बयान कराना हमारा  
काम है, इस के बाद जिब्रिल जब भी आप के पास वह्य लेकर आते ते  
अल्लाह तआला की हिदायत अनुसार आप चुप होकर उसे सुनते, फि  
जब चले जाते तो उसे पढ़ते।

5 यह ईमान वालों के चेहरे होंगे, जो अपने अच्छे अन्जाम के कारण खुद  
और प्रकाशित होंगे।

6 अपने रब को देख रहे होंगे और उसकी दीदार से तुर्क उठा रहे होंगे  
सही हृदीसों द्वारा तवातुर के साथ यह प्रमाणित है कि नेक लो  
कियामत के दिन अपने रब को ऐसे देखेंगे जैसे बिना परेशानी के चौदह  
का चाँद देखते हैं।

7 यह कफिरों के चेहरे होंगे जो पीले पड़े होंगे और ग़म से काले होंगे।

8 <sup>عَلَيْكُمْ</sup> का अर्थ भयंकर आफत है, गोया कि उस ने उन की रीढ़ की हाल  
तोड़ दी।

9 अर्थात् उनका कियामत पर ईमान लाना संभव ही नहीं है।

10 <sup>أَتَرَأَيْتَ</sup> ترقية की जमा है, गर्दन के करीब सीने और कंधे  
बीच एक हड्डी है, और रुह की हसली तक पहुँचने से किनाया भौति

करीब होना है।  
**11** अर्थात् उस के घर वालों में से जो उस के पास होंगे, कहेंगे : कोई है ज़ाड़ फूँक करने वाला जो उसे स्वस्थ कर सके? जाओ दृढ़ीमों और डाक्टरों को ले आओ, लेकिन अल्लाह की आज्ञा के सामने कोई भी चीज़ नहीं हो सकती।

उस के काम न आएगा।  
**12** और जिस की रुह हँसली तक पहुँच गई है उसे विश्वास हो जाएगा कि अब बीती बच्चे और धन दौलत से जुदाई का समय आया है।

**13** अर्थात् मौत के समय उस की एक पिंडली दूसरी पिंडली से मिल जाएगी, और उस के दोनों पैरों में भी जान वाकी नहीं रहेगी, उस के दोनों पिंडलियां भी सूख जाएंगी और उसे उठ नहीं पाएंगी, जबकि पहले वह इन्हीं दोनों पर खड़े होकर खूब ठहलता रुकता था, और लोग उसके लिए भी और फरिश्ते उस की रुह लेजाने की तैयारी में लग जाएंगे।

जिसकी ओर फ़ारश्त उत्त पाया गया।  
14 रुहों को शरीरों से निकलने के बाद उन्हें उनके रब की ओर ले जाया जाएगा।  
15 अर्थात् इस ने न तो रिसालत की तस्वीक की और न ही कुरआन को दिया तमाज़ पढ़ी, तो न वह दिया गया।

से ईमान लाया और वह उन्हें शरीअत का ज़कुराता है।  
16 अर्थात् रसूलों और उन की लाई हुई शरीअत का ज़कुराता है।

१० अप्रूपा वृक्ष

<img alt="A page from a traditional Arabic manuscript of the Quran. The page features decorative floral borders at the top and bottom. In the center, there is a large, ornate title 'سُورَةُ الْقِيَامَةِ' (Surat Al-Qiyamah) with 'أبا إِبْرَاهِيمَ' written above it. Below the title, the text of the Surah is written in a large, clear script, with various ayah numbers (1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 598, 599, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 698, 699, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 798, 799, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 817, 818, 819, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 878, 879, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 898, 899, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 917, 918, 919, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 978, 979, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 988, 989, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 997, 998, 998, 999, 999, 1000, 1001, 1002, 1003, 1004, 1005, 1006, 1007, 1008, 1009, 1009, 1010, 1011, 1012, 1013, 1014, 1015, 1016, 1017, 1017, 1018, 1019, 1019, 1020, 1021, 1022, 1023, 1024, 1025, 1026, 1027, 1028, 1029, 1029, 1030, 1031, 1032, 1033, 1034, 1035, 1036, 1037, 1038, 1039, 1039, 1040, 1041, 1042, 1043, 1044, 1045, 1046, 1047, 1048, 1049, 1049, 1050, 1051, 1052, 1053, 1054, 1055, 1056, 1057, 1058, 1059, 1059, 1060, 1061, 1062, 1063, 1064, 1065, 1066, 1067, 1068, 1069, 1069, 1070, 1071, 1072, 1073, 1074, 1075, 1076, 1077, 1078, 1078, 1079, 1079, 1080, 1081, 1082, 1083, 1084, 1085, 1086, 1087, 1088, 1088, 1089, 1089, 1090, 1091, 1092, 1093, 1094, 1095, 1096, 1097, 1097, 1098, 1098, 1099, 1099, 1100, 1101, 1102, 1103, 1104, 1105, 1106, 1107, 1108, 1109, 1109, 1110, 1111, 1112, 1113, 1114, 1115, 1116, 1117, 1117, 1118, 1119, 1119, 1120, 1121, 1122, 1123, 1124, 1125, 1126, 1127, 1128, 1129, 1129, 1130, 1131, 1132, 1133, 1134, 1135, 1136, 1137, 1138, 1139, 1139, 1140, 1141, 1142, 1143, 1144, 1145, 1146, 1147, 1148, 1149, 1149, 1150, 1151, 1152, 1153, 1154, 1155, 1156, 1157, 1158, 1159, 1159, 1160, 1161, 1162, 1163, 1164, 1165, 1166, 1167, 1168, 1169, 1169, 1170, 1171, 1172, 1173, 1174, 1175, 1176, 1177, 1178, 1178, 1179, 1179, 1180, 1181, 1182, 1183, 1184, 1185, 1186, 1187, 1188, 1188, 1189, 1189, 1190, 1191, 1192, 1193, 1194, 1195, 1196, 1197, 1197, 1198, 1198, 1199, 1199, 1200, 1201, 1202, 1203, 1204, 1205, 1206, 1207, 1208, 1209, 1209, 1210, 1211, 1212, 1213, 1214, 1215, 1216, 1217, 1217, 1218, 1219, 1219, 1220, 1221, 1222, 1223, 1224, 1225, 1226, 1227, 1228, 1229, 1229, 1230, 1231, 1232, 1233, 1234, 1235, 1236, 1237, 1238, 1239, 1239, 1240, 1241, 1242, 1243, 1244, 1245, 1246, 1247, 1248, 1249, 1249, 1250, 1251, 1252, 1253, 1254, 1255, 1256, 1257, 1258, 1259, 1259, 1260, 1261, 1262, 1263, 1264, 1265, 1266, 1267, 1268, 1269, 1269, 1270, 1271, 1272, 1273, 1274, 1275, 1276, 1277, 1278, 1278, 1279, 1279, 1280, 1281, 1282, 1283, 1284, 1285, 1286, 1287, 1288, 1288, 1289, 1289, 1290, 1291, 1292, 1293, 1294, 1295, 1296, 1297, 1297, 1298, 1298, 1299, 1299, 1300, 1301, 1302, 1303, 1304, 1305, 1306, 1307, 1308, 1309, 1309, 1310, 1311, 1312, 1313, 1314, 1315, 1316, 1317, 1317, 1318, 1319, 1319, 1320, 1321, 1322, 1323, 1324, 1325, 1326, 1327, 1328, 1329, 1329, 1330, 1331, 1332, 1333, 1334, 1335, 1336, 1337, 1338, 1339, 1339, 1340, 1341, 1342, 1343, 1344, 1345, 1346, 1347, 1348, 1349, 1349, 1350, 1351, 1352, 1353, 1354, 1355, 1356, 1357, 1358, 1359, 1359, 1360, 1361, 1362, 1363, 1364, 1365, 1366, 1367, 1368, 1369, 1369, 1370, 1371, 1372, 1373, 1374, 1375, 1376, 1377, 1378, 1378, 1379, 1379, 1380, 1381, 1382, 1383, 1384, 1385, 1386, 1387, 1388, 1388, 1389, 1389, 1390, 1391, 1392, 1393, 1394, 1395, 1396, 1397, 1397, 1398, 1398, 1399, 1399, 1400, 1401, 1402, 1403, 1404, 1405, 1406, 1407, 1408, 1409, 1409, 1410, 1411, 1412, 1413, 1414, 1415, 1416, 1417, 1417, 1418, 1419, 1419, 1420, 1421, 1422, 1423, 1424, 1425, 1426, 1427, 1428, 1429, 1429, 1430, 1431, 1432, 1433, 1434, 1435, 1436, 1437, 1438, 1439, 1439, 1440, 1441, 1442, 1443, 1444, 1445, 1446, 1447, 1448, 1449, 1449, 1450, 1451, 1452, 1453, 1454, 1455, 1456, 1457, 1458, 1459, 1459, 1460, 1461, 1462, 1463, 1464, 1465, 1466, 1467, 1468, 1469, 1469, 1470, 1471, 1472, 1473, 1474, 1475, 1476, 1477, 1478, 1478, 1479, 1479, 1480, 1481, 1482, 1483, 1484, 1485, 1486, 1487, 1488, 1488, 1489, 1489, 1490, 1491, 1492, 1493, 1494, 1495, 1496, 1497, 1497, 1498, 1498, 1499, 1499, 1500, 1501, 1502, 1503, 1504, 1505, 1506, 1507, 1508, 1509, 1509, 1510, 1511, 1512, 1513, 1514, 1515, 1516, 1517, 1517, 1518, 1519, 1519, 1520, 1521, 1522, 1523, 1524, 1525, 1526, 1527, 1528, 1529, 1529, 1530, 1531, 1532, 1533, 1534, 1535, 1536, 1537, 1538, 1539, 1539, 1540, 1541, 1542, 1543, 1544, 1545, 1546, 1547, 1548, 1549, 1549, 1550, 1551, 1552, 1553, 1554, 1555, 1556, 1557, 1558, 1559, 1559, 1560, 1561, 1562, 1563, 1564, 1565, 1566, 1567, 1568, 1569, 1569, 1570, 1571, 1572, 1573, 1574, 1575, 1576, 1577, 1578, 1578, 1579, 1579, 1580, 1581, 1582, 1583, 1584, 1585, 1586, 1587, 1588, 1588, 1589, 1589, 1590, 1591, 1592, 1593, 1594, 1595, 1596, 1597, 1597, 1598, 1598, 1599, 1599, 1600, 1601, 1602, 1603, 1604, 1605, 1606, 1607, 1608, 1609, 1609, 1610, 1611, 1612, 1613, 1614, 1615, 1616, 1617, 1617, 1618, 1619, 1619, 1620, 1621, 1622, 1623, 1624, 1625, 1626, 1627, 1628, 1629, 1629, 1630, 1631, 1632, 1633, 1634, 1635, 1636, 1637, 1638, 1639, 1639, 1640, 1641, 1642, 1643, 1644, 1645, 1646, 1647, 1648, 1649, 1649, 1650, 1651, 1652, 1653, 1654, 1655, 1656, 1657, 1658, 1659, 1659, 1660, 1661, 1662, 1663, 1664, 1665, 1666, 1667, 1668, 1669, 1669, 1670, 1671, 1672, 1673, 1674, 1675, 1676, 1677, 1678, 1678, 1679, 1679, 1680, 1681, 1682, 1683, 1684, 1685, 1686, 1687, 1688, 1688, 1689, 1689, 1690, 1691, 1692, 1693, 1694, 1695, 1696, 1697, 1697, 1698, 1698, 1699, 1699, 1700, 1701, 1702, 1703, 1704, 1705, 1706, 1707, 1708, 1709, 1709, 1710, 1711, 1712, 1713, 1714, 1715, 1716, 1717, 1717, 1718, 1719, 1719, 1720, 1721, 1722, 1723, 1724, 1725, 1726, 1727, 1728, 1729, 1729, 1730, 1731, 1732, 1733, 1734, 1735, 1736, 1737, 1738, 1739, 1739, 1740, 1741, 1742, 1743, 1744, 1745, 1746, 1747, 1748, 1749, 1749, 1750, 1751, 1752, 1753, 1754, 1755, 1756, 1757, 1758, 1759, 1759, 1760, 1761, 1762, 1763, 1764, 1765, 1766, 1767, 1768, 1769, 1769, 1770, 1771, 1772, 1773, 1774, 1775, 1776, 1777, 1778, 1778, 1779, 1779, 1780, 1781, 1782, 1783, 1784, 1785, 1786, 1787, 1788, 1788, 1789, 1789, 1790, 1791, 1792, 1793, 1794, 1795, 1796, 1797, 1797, 1798, 1798, 1799, 1799, 1800, 1801, 1802, 1803, 1804, 1805, 1806, 1807, 1808, 1809, 1809, 1810, 1811, 1812, 1813, 1814, 1815, 1816, 1817, 1817, 1818, 1819, 1819, 1820, 1821, 1822, 1823, 1824, 1825, 1826, 1827, 1828, 1829, 1829, 1830, 1831, 1832, 1833, 1834, 1835, 1836, 1837, 1838, 1839, 1839, 1840, 1841, 1842, 1843, 1844, 1845, 1846, 1847, 1848, 1849, 1849, 1850, 1851, 1852, 1853, 1854, 1855, 1856, 1857, 1858, 1859, 1859, 1860, 1861, 1862, 1863, 1864, 1865, 1866, 1867, 1868, 1869, 1869, 1870, 1871, 1872, 1873, 1874, 1875, 1876, 1877, 1878, 1878, 1879, 1879, 1880, 1881, 1882, 1883, 1884, 1885, 1886, 1887, 1888, 1888, 1889, 1889, 1890, 1891, 1892, 1893, 1894, 1895, 1896, 1897, 1897, 1898, 1898, 1899, 1899, 1900, 1901, 1902, 1903, 1904, 1905, 1906, 1907, 1908, 1909, 1909, 1910, 1911, 1912, 1913, 1914, 1915, 1916, 1917, 1917, 1918, 1919, 1919, 1920, 1921, 1922, 1923, 1924, 1925, 1926, 1927, 1928, 1929, 1929, 1930, 1931, 1932, 1933, 1934, 1935, 1936, 1937, 1938, 1939, 1939, 1940, 1941, 1942, 1943, 1944, 1945, 1946, 1947, 1948, 1949, 1949, 1950, 1951, 1952, 1953, 1954, 1955, 1956, 1957, 1958, 1959, 1959, 1960, 1961, 1962, 1963, 1964, 1965, 1966, 1967, 1968, 1969, 1969, 1970, 1971, 1972, 1973, 1974, 1975, 1976, 1977, 1978, 1978, 1979, 1979, 1980, 1981, 1982, 1983, 1984, 1985, 1986, 1987, 1988, 1988, 1989, 1989, 1990, 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1997, 1998, 1998, 1999, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007,

**33** फिर अपने घर वालों की ओर इतराता हुआ गया <sup>17</sup>।

**34** अफसोस है तुझ पर, पछतावा है तुझ पर।

**35** फिर दुख है औ ख़राबी है तेरे लिए <sup>18</sup>।

**36** क्या इन्सान यह समझता है कि उसे बेकार छोड़ दिया जाएगा <sup>19</sup>।

**37** क्या वह एक गाढ़े पानी (मनी) की बूँद न था, जो टपकाया गया था <sup>20</sup>?

**38** फिर वह खुन का लोथड़ा हो गया, फिर (अल्लाह ने) उसे पैदा किया और ठीक रूप से बना दिया।

**39** फिर उससे जोड़े अर्थात् नर-मादा बनाए।

**40** क्या अल्लाह तभीता इस बात की शक्ति नहीं रखता कि मुँह को ज़िन्दा कर दे <sup>21</sup>?

लाने से मुंह मोड़ा

**17** इतराता और अकड़ता हवा

**19** अर्थात् उसे यूंही छोड़ दिया जाएगा जो मन में आए करे, न उसे किसी बीज का आदेश दिया जाए और न किसी बीज से रोका जाए, न ही उसे हिसाब देना पड़े और न ही उसे अच्छा या बुरा कोई बदला मिले।

20 अर्थात् वह मनों को बूढ़ा न था जो रहम में टपकाया गया था? ।  
 21 अर्थात् जिस अल्लाह ने उसे अनेक महलों से गुजार कर ऐसी ऐसी

निराली और अछोती पैदाइश की ओर उस पर उस की शक्ति रही, जो ने एवं अपने देवता भैरवे —

उस में इस की शरीर को दोबारा लौटाने पर शक्ति न होगी? जबकि दोबारा लौटाना पहले की निस्वत्त में आसान है।



شُورَةُ الْإِنْسَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

كَلَّا إِلَيْنَا يُعْجِلُونَ الْعَاجِلَةَ ۖ وَلَذِرْوَنَا الْآخِرَةَ ۖ وَشُورَةُ مَهْدَىٰ نَاصِرَةَ  
إِلَى رَهْبَانِ الْأَطْرَافِ ۖ وَجُوْهِرَةُ مَهْدَىٰ نَاصِرَةَ ۖ تَقْبِلُنَا بِعَمَلِهَا فَاقِرَةَ  
كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ النَّرَافِ ۖ وَقَبْلِنَا رَافِيَ ۖ وَطَلَّنَا لَهُ الْأَعْرَافِ ۖ وَالْأَنْفَتِ  
الْأَسَافِيَّ الْأَسَافِيَّ ۖ إِلَى رَبِّكَ بَوْمِيدَ الْأَسَافِيَّ ۖ مَلَاصِلَدَ الْأَسَافِيَّ  
وَلَكِنَّ كَذَبَ وَقَوْلَىٰ ۖ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَى أَهْلِهِ بِشَطْلَىٰ ۖ أَنْدَلَكَ  
فَأَوْلَىٰ ۖ ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۖ أَيْسَبُ الْأَسَافِيَّ أَنْ يَكُوْسَنَ  
أَنْزِيكَ بَطْفَةَ مِنْ مَنِ يَعْنِي ۖ ثُمَّ كَانَ عَلَفَةَ فَخَلَقَ فَسَوَىٰ ۖ حَمَلَ مَهْمَةَ  
الْأَرْبَكِينَ الْأَذْكَرِ وَالْأَنْثَىٰ ۖ أَلَيْسَ ذَلِكَ يَقْدِرُ عَلَىٰ أَنْ يُخْبِي الْمُؤْنَىٰ

## سُورَةُ الْإِنْسَانِ - 76

अब कला है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबन बहुत रहम करने वाला है।  
अवश्य ही इन्सान पर युग का एक वह समय भी गुज़र चुका है। जबकि यह कोई कौविले जिक्र वस्तु न था।  
वेशक हमने इन्सान को मिले जुले तुके (वीर्य) से पराक्षा के लिए पैदा किया। और उसको सुनने वाला देखने वाला बनाया।  
हमने उसे मार्ग दिखाया, अब चाहे वह शुक्र-गुज़ार

बने या ना-शुक्रा।

१ वेशक हमने काफिरों के लिए जंजीरे, और तौक और गर्कने वाली आग तैयार कर रख्यी है।

२ वेशक नेक लोग उसे प्याले से पिएंगे जिसमें काफूर की मिलावट है।

३ जो एक स्रोत है ४। जिससे अल्लाह के बंदे पिएंगे, उसकी नहरें निकाल ले जाएंगे ५ (जिथर चाहें)।

६ जो मन्त्र पूरी करते हैं ७ और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारी ओर फैल जाने वाली है ८।

९ और ज़खरत के बावजूद खाना खिलाते हैं, गरीब, अनाथ और कैदियों १० को।

११ हम तो तुम्हें मात्र अल्लाह की खुशी के लिए खिलाते हैं १२, न तुमसे बदला चाहते हैं न शुक्र-गुज़ारी।

१३ जिसदेह हम अपने रब से उस दिन का डर रखते हैं जो उदासी १४ और कठोरता १५ वाला होगा।

१६ तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन की बुराई से बचा लिया १७ और उन्हें ताजगी और खुशी पहुँचायी १८।

१९ और उन्हें उनके सब्र (धैर्य) के बदले जन्त और रेशमी कपड़ अता किए।

२० यह वहाँ आसनों पर तकिए लगाए हुए बैठेंगे २१, न वहाँ सूरज की गर्मी देखेंगे न जाड़े की कठोरता २२।

तथा बुद्धिमानी द्वारा मार्ग पा सकता है, अब वह चाहे शुक्र गुज़ार बने या नाशुक्रा।

७ अर्थात् हम ने इन चीजों को इन्हीं के लिए तैयार किया ताकि इनके द्वारा हम इन्हें यातना में रखें, गुलाब की जमझ है, इसका अर्थ है बेड़ी जिस से शय को गर्दन से बांधा जाता है, और खुशी पहुँचायी हूँ भड़कती हूँ आग।

८ इस शराब में काफूर मिली होगी, ताकि उस की खुशबू और मज़ा दोनों अच्छे और खुशगवार होजाएं।

९ जिस से वै शराब पिएंगे, इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उस शराब में उस स्रोत के पानी की मिलावट होगी।

१० अर्थात् उसे जिस ओर चाहेंगे वहाँ ले जाएंगे।

११ अर्थात् हम बदला उन्हें इस कारण मिलेगा क्योंकि वह मात्र अल्लाह के लिए मन्त्र मानते थे, फिर उसे पूरा करते थे, मन्त्र : नमाज, रोज़ा तथा कुर्बानी इत्यादि में से उस अमल को कहते हैं जिसे बन्दा ने स्वयं अपने ऊपर बजिब कर लिया हो, अल्लाह ने बजिब न किया हो।

१२ अर्थात् कियापत के दिन से । जिस की बुराई इस तरह चारों ओर फैल जाने वाली होगी। आकाश और धरती भी उस की चपेट में आ जाएंगे, आकाश फट जाएंगा, तारे टूट कर गिरने लगेंगे, और धरती कूट कर बराबर कर दी जाएंगी, और पहाड़ कण कण होकर बिखर जाएंगे।

१३ अर्थात् इन तीनों तरह के लोगों को खाना खिलाते थे, बावजूद इस के कि उनके पास खाना कम मात्रा में होता, और स्वयं उन्हें उसकी चाहत होती थी, और एक कौल के अनुसार १४ की ज़मीर अल्लाह की ओर लौटती है, अर्थात् वह अल्लाह तभाला की महब्बत में खाना खिलाते थे।

१४ अर्थात् वह बदले की भावना नहीं रखते, और न वह उस पर लोगों से अपनी प्रशंसा चाहते हैं, चूँकि अल्लाह उन के दिलों का भेद जानता है इसी लिए उसने इस पर उनकी प्रशंसा की है।

१५ अर्थात् जिसकी हैलनाकी और सख्ती से लोगों के चेहरे बिगड़ जाएंगे।

१६ जिस में आंखें सिकुड़ जाएंगी, और पलकों पर बल पड़ जाएंगे, और एक कौल के अनुसार कठोरता और सख्ती के कारण यह सब से कठोर और लम्बा दिन होगा।

१७ क्योंकि वह इस दिन की बुराई से डर कर नेकी और फर्मावर्दी के काम करते थे।

१८ अर्थात् काफिरों के चेहरे पर उस दिन उदासी छाई होगी, उस के विपरीत ईमान वालों के चेहरों पर ताजगी होगी, और दिल खुशी से भरा होगा, चेहरों की यह खुशी नेमतों के प्रभाव के कारण होगी।

१९ और उन्हें उनके नेक कर्मों के बदले ऐसी जन्त मिलेगी जिन में वह ताज वाले आसनों पर टेक लगाए बैठे होंगे।

२० अर्थात् जन्त में न तेज़ गर्मी होगी न कड़के की सरदी, (वहाँ सदा बहार का ही भौमसम रहेगा)।

14 और उन पेड़ों के साए उन पर झुके होंगे और उनके (भूमि) और गुच्छे नीचे लटकाए हुए होंगे ।  
 15 और उन पर चाँदी के बत्तों और उन गिलासों का दौर चलाया जाएगा, जो शीशे के होंगे ।  
 16 शीशे भी चाँदी के जिनको (पिलाने वालों ने) अनुमान से नाप रखा होगा ।  
 17 और उन्हें वहाँ वे जाम पिलाए जाएंगे जिनमें सोंठ की मिलावट होगी ।  
 18 जन्नत की एक नहर से, जिसका नाम सलसबील है ।  
 19 और उनके चारों ओर वे कम उम्र बच्चे धूमते-फिरते होंगे जो हमेशा रहने वाले हैं, जब तू उन्हें देखे तो समझे कि वह बिखरे हुए (सच्चे) मोती हैं ।  
 20 और तू वहाँ जिस ओर भी निगाह डालेगा पूर्ण उपहार उपहार (नेमते) और महान राज्य ही देखेगा ।  
 21 उन के (शरीर) पर हरे महीन और मोटे रेशमी कपड़े होंगे और उन्हें चाँदी के कंगन का जेवर पहनाया जाएगा और उन्हें उनका रब पवित्र शराब पिलाएगा ।  
 22 (कहा जाएगा) कि यह है तुम्हारे कर्मों का बदला और तुम्हारी कोशिश की कदर की गई ।  
 23 वेशक हमने तुझ पर (ब-तद्रीज) क्रमशः कुरआन अद्वितीय किया है ।  
 24 तो तू अपने प्रभु के आदेश पर अटल रह और उनमें

عَنِّيَا يَشْرِبُ هَمَا عَبَادَ اللَّهُ يُفْجِرُونَهَا تَفْجِيرًا ٦ يُوْقُونُ بِالنَّذِرِ وَخَافُونَ  
 يَنْتَكِنُ شَرْدَه مُسْتَطِيرًا ٧ وَيُطْعِمُونَ الْطَّعَامَ عَلَى حُمَّهِ مُسْكِنًا  
 رَبِّيْمَا وَأَسِيرًا ٨ إِمَانْطَعِمُكُ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا تُرِيدُ مِنْكُ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا  
 إِنَّا لَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَاطِنِرًا ٩ فَوْقَهُمُ اللَّهُ شَرِّدَكَ  
 الْيَوْمِ وَلَقَنْهُمْ نَصْرَةً وَسُرُورًا ١٠ وَجَرَنْهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّهُ وَحَرِيرًا  
 مُتَكِّنِينَ فِيهَا عَالِيَ الْأَرَابِكَ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ١١  
 وَدَائِيَةً عَلَيْهِمْ ظَلَّلَهَا وَذَلِكَ قُطْوَفُهَا لَذِلِّلَا ١٢ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ كَانِيَةً  
 مِنْ فَضْيَةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ١٣ قَوَارِيرًا مِنْ فَضْيَةٍ قَدْرُهَا نَقْدِيرًا ١٤  
 رَتْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِنْ أَجْمَهَا زَمْجِيلًا ١٥ عَسِنَافِهَا شَمَّيْنَ سَلَسِيلًا  
 وَرَطْلُوفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَنْ مَحْلَدُونَ إِذَا أَرَيْهُمْ حَسِبَنْهُمْ لَنُوَامَشُورًا ١٦  
 وَإِذَا رَأَيْتَ ثُمَّ رَأَيْتَ نَعِيَّا وَمُلْكَاكِيرًا ١٧ عَلَيْهِمْ شَابُ سُدُسٍ  
 خَضْرُوا لَسْتَرَقُ وَلَحْلَوْ أَسَاوَرَ مِنْ فَضْيَةَ وَسَقَنْهُمْ رَبُّهُمْ سَرَابًا ١٨  
 طَهُورًا ١٩ إِنَّهُمْ هَذَا كَانَ لَكُنْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُ مَشْكُورًا ٢٠ إِنَّا  
 نَعْنَزْلَنَا عَلَيْكَ الْفَزْمَانَ تَزْبِيلًا ٢١ فَأَصْبِرْ لِحَمْرَكَ رَبِّكَ وَلَا تَنْطِعْ  
 بِنِمْ مَائِنَا أَوْ كَفُورًا ٢٢ وَأَذْكُرْ أَسْمَ رَبِّكَ بُكْرَهُ وَأَصِيلًا ٢٣

1 उनके मेवों पर उन्हें पूरी शक्ति प्राप्त होगी, वह खड़े बैठे, लेटे जिस तरह चाहेंगे उसे तोड़ सकेंगे, ऐसा न होगा कि दूरी या काटे के कारण उनके हाथ न पहुँच सकें और वापस फिर आएं ।  
 2 चाँदी के बत्तों और गिलासों को लिए नौकर फिरेंगे, जब वे पीना चाहेंगे तो उन से लेकर पी लेंगे ।  
 3 फ़ूर्झा का अर्थ शीशे के हैं, शीशे दुनिया में रेत के होते हैं, अल्लाह तभ्बाता ने उन शीशों की यह ख़बूदी बताई कि वे चाँदी के होंगे जिन में अन्दर की चीज़ बाहर से दिखेगी ।  
 4 अर्थात् उन बर्तनों में उनकी चाहत और इच्छा का खास ख़्याल होगा, वह उतने अच्छे रूप के होंगे जितना वे चाहेंगे, न थोड़ा न अधिक, और एक कोल के अनुसार उन में शराब ऐसे अनुमान से भरी गई होगी कि जिस से वे सैराब होंगे, अधिक की चाहत बाकी न रह जाए, और बर्तनों में भी बाकी न वचे ।  
 5 ऐसे बर्तन जिस में शराब होगी। **نَصْبِيلًا** सोंठ, अर्थात् उस शराब में मिलावट सोंठ की होगी ।  
 6 का अर्थ तेज़ी से बहात हुवा साफ पानी है, जो कि गले के लिए बहुत ही अच्छा हो ।  
 7 अर्थात् उनका बचपन और उनकी रीनक हमेशा बर्करार रहेगी, वह न बृड़े होंगे न उनकी सुन्दरता बदलेगी और न उन्हें मौत आएगी ।  
 8 अपनी सुन्दरता, रंगों में निखार और चेहरे की रीनक के कारण वह बिखरे हुए मौतियों के समान लगेंगे । बिखरे हुए मौतियों से उनकी तश्वीह इसलिए दी है कि वह तेज़ी से सेवा में लगे रहेंगे ।  
 9 अर्थात् जहाँ भी तुम जन्नत में नजर उठाकर देखोगे ।  
 10 जिन की खूबियाँ बयान नहीं की जा सकती ।  
 11 जिन की महानता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता ।  
 12 **نَصْبِيلُ** पतला रेशम । **خَضْرُ** मोटा रेशम ।  
 13 और सूरतुल फातिर में है : “**مُحْلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوَرَ مِنْ ذَهَبٍ**” उस में उन्हें सोने का कंगन पहनाया जाएगा । अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा अनुसार जो चाहेगा पहनेगा ।  
 14 अबू किलावा और इत्राइम नखई कहते हैं कि उन्हे खाना दिया जाएगा, और जब वह उसे खा चुके तो पाकीज़ा शराब दी जाएगी, जिसे वे ऐसे जो उन के पेट की सारी गंदियों को निकाल कर उन्हें पचका देंगी, और उनकी शरीर से ऐसा परीना बहाएगा जिस से कस्तूरी की खुशबू कूटेगी ।  
 15 अर्थात् अल्लाह अपने सेवक के कर्म की कदर करेगा, उसकी इत्ताअत को स्वीकार करेगा, और उस पर उसकी प्रशंसा करेगा ।  
 16 अर्थात् उसे एक ही बार उतारने के बजाए ज़रूरत के अनुसार थोड़ा नहीं है जैसा कि मुश्किल समय में उतारा है, और यह तेरा अपना घड़ा हुवा नहीं है जैसा कि मुश्किल दावा करते हैं ।

17 उनमें से किसी पापी या कुफ़ में सीमा पार कर जाने वाले वही बात न हो ।  
 18 और अपने रब के लिए सवेरे-साङ्ग नमाज़ पढ़ा कर, सवेरे से दुन्दु फ़ज़ा की नमाज़ और साङ्ग से अद्य की नमाज़ है । (और एक वैसी अनुसार सवेरे-साङ्ग से मुराद सारे समय में अल्लाह का शिक्षक है ।)  
 19 **جَلَدِيَّ** मिलने वाली अर्थात् दुनिया ।  
 20 भारी दिन अर्थात् कियामत का दिन, इसे भारी दिन इसी की माना जाता है । और भयानकाम के कारण कहा गया है, और इसे योग्य लोहड़ने वाला भी ! कि उस के लिए तैयारी नहीं करने, और उस वीं परवाह नहीं करने ।  
 21 अर्थात् हम ने उनकी जोड़ों को गोये और पट्टे लगा गेह कर मज़ाक किया ।  
 22 अर्थात् यदि हम वाहे तो उन्हें नष्ट करके उन्हें बदले देते हीं । आएं जो उन से अधिक मेरी फ़र्मावार हो ।  
 23 अर्थात् तुम अपने रब का रास्ता अपनाने की चाहत वही कर सकोगे

وَمِنْ أَنْلَبْ فَأَسْجُدْ لَهُ، وَسَيْخُهُ لِلَّا طَوِيلًا ۖ إِنَّ  
هُنَّ لَا يُحِبُّونَ الْعَالِمَةَ وَيَذْرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۖ نَعْنَ  
خَلْقَتْهُمْ وَشَدَّدَنَا أَشْرَهُمْ وَإِذَا شِنَّا بَدَنَا أَمْتَلَهُمْ بَدِيلًا  
إِنَّ هَذِهِ تَذَكِّرَةٌ فَمَنْ شَاءَ أَخْذَ إِلَى رَبِّهِ سَبِيلًا ۖ  
وَمَا شَاءَ مُوْنَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۖ  
يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ، وَالظَّالِمِينَ أَعْدَلُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ

### بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْمَرْسَلَتِ عَرْفًا ۖ فَالْعَصِيفَتْ عَصِيفًا ۖ وَالنَّشَرَتْ نَشَرًا ۖ  
فَالنَّفَرِقَتْ فَرْقًا ۖ فَالْمُلْقَيَتْ ذَكْرًا ۖ عَذْرًا أَوْنَذْرًا ۖ إِنَّمَا  
تُوعَدُونَ لَوْقَعًا ۖ فَإِذَا النُّجُومُ طَمَسَتْ ۖ وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ  
وَإِذَا الْجَبَلُ شَفَتْ ۖ وَإِذَا الرَّسُولُ أَقْتَتْ ۖ إِلَيْيَ يَوْمِ أُبْلَتْ  
لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۖ وَمَا أَذْرَكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ وَلِيَوْمِ ذِي  
الْمُكَدَّرِينَ ۖ أَلْمَنْهُمْ أَلَوَّلَنَ ۖ شَمْ نُتَعَاهُمْ أَلَخَرِينَ ۖ  
كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۖ وَلِيَوْمِ ذِي الْمُكَدَّرِينَ ۖ

अवश्य अल्लाह तज़ाला जानने वाला और हिक्मत वाला है।  
31) जिसे चाहे अपनी रह्मत (कृपा) में सम्मिलित कर ले, और ज़ालिमों के लिए उसने दर्द-नाक अज़ाब (कष्टदारी यातना) तैयार कर रखा है।

### بُوْرुल्लू मुसलात - 77

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
1) कसम है उन फरिश्तों की जो वह्य लेकर भेजे जाते हैं।  
2) फिर उन फरिश्तों की कसम जो हवाओं को जोर से हांकते हैं।  
3) और उन फरिश्तों की कसम जो फिज़ा में अपने परों को फैलाते हैं।  
4) फिर उन फरिश्तों की जो सत्य-असत्य को अलग-अलग करदिने वाले हैं।  
5) और उन फरिश्तों की जो वह्य (प्रकाशना) लाने वाले हैं 1।  
6) जो (वह्य) इल्ज़ाम उतारने या आगाह कर देने के लिए होती है 2।

जब तक कि अल्लाह की चाहत न हो, तो इस पर अल्लाह का अधिकार है तुम्हारा नहीं, भलाई और बुराई सब उसी के हाथ में है, तो जब तक अल्लाह न चाहे बन्दे की चाहत से न तो कोई भलाई प्राप्त हो सकती है, और न ही किसी बुराई को टाला जा सकता है।

1) न से लेकर तक, इन आयातों में अल्लाह न तज़ाला ने उन फरिश्तों की कसम खाई है जिन्हें वह वह्य लेकर अपने नवियों के पास भेजता है, और वह बड़ी तेज़ी से अपने पर फैलाए उन चीजों को लेकर आते हैं, जो सत्य तथा असत्य, और हलाल तथा हaram के बीच फर्क करती है, यहाँ तक कि वह वह्य नवियों तक पहुंचा दी जाती है।  
2) अर्थात् फरिश्ते वह्य लेकर आते हैं ताकि अल्लाह की ओर से हुम्जत कायम

जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है वह निश्चित रूप से होने वाली है।

3) तो जब तारे वे-नूर (प्रकाशहीन) कर दिए जाएंगे 3।

4) और जब आकाश तोड़-फोड़ दिया जाएगा 4।

5) और जब रसुलों को मुकर्रर (निर्धारित) समय पर लाया जाएगा 6।

6) किस दिन के लिए (उन्हें) टाला गया है 7?

7) निर्णय के दिन के लिए 8?

8) और तुझे क्या पता कि निर्णय का दिन क्या है 9?

9) उस दिन झुटलाने वालों के लिए ख़राबी है।

10) क्या हमने पहले के लोगों को नष्ट नहीं किया 10?

11) फिर हम उनके पश्चात पिछलों को लाए 11।

12) हम पापियों के साथ इसी प्रकार करते हैं।

13) उस दिन झुटलाने वालों के लिए वर्वादी है।

14) क्या हमने तुम्हें तुच्छ पानी 12 से पैदा नहीं किया।

15) फिर हमने उसे मज्जूत स्थान 13 में रखा।

16) एक मुकर्रर (निर्धारित) समय तक 14।

17) फिर हमने अनुमान लगाया तो हम क्या अच्छा अनुमान लगाने वाले हैं 15।

18) उस दिन झुटलाने वालों के लिए वर्वादी (विनाश) है।

19) जिन्हों को भी और मुर्दों को भी 16।

20) और हमने उसमें उच्च (और भरी) पर्वत बना दिए और तुम्हें सीधने वाला मीठा पानी पिलाया 17।

21) उस दिन झुटलाने वालों के लिए विनाश है।

22) उस नरक की ओर जाओ जिसे तुम झुटला रहे थे 18।

हो जाए, और यह बढ़ाना वाकी न रह जाए कि हमारे पास तो कोई अल्लाह का संदेश लेकर आया ही नहीं, उद्देश्य अल्लाह के अनाव से उन लोगों को डराना है जो कुक करने वाले होंगे, और एक कौतूहल यह है कि इन-परस्ती के लिए शुभ संवाद है और बातिन-परस्तों के लिए डगव।

3) अर्थात् उस की रौशनी ख़तम कर दी जाएगी।

4) अर्थात् खोल और फाइ दिए जाएंगे।

5) अर्थात् अपनी जगह से उड़े दिए जाएंगे, और दुकड़े-टुकड़े करके फूला में बिंदुर दिए जाएंगे और वर्ती पर उन की जगह बराबर कर दी जाएगी।

6) अर्थात् उनके और उनकी उम्मतों के बीच निर्णय के लिए एक समय निर्धारित होगा।

7) अर्थात् ऐसे मंकर दिन के लिए जिस भी दैनन्दिनी के कागज सेह जब्दमें में होंगे, इस समय रसुल इकड़े द्वेषी अपनी उम्मत के विस्तृत गवाही देने के लिए।

8) जिस दिन लोगों के बीच निर्णय किया जाएगा, और उनके कर्म के आधार पर अलग-अलग जन्नत तथा जहन्नम मिलेगा।

9) और तुम्हें किसने बताया के निर्णय का दिन क्या है? अर्थात् वह बहुत ही भयंकर है जिस का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

10) अर्थात् उन काफिर उम्मतों को जो आदम अलैकिम्मलाम में लेकर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व मूल्लिम नक मूर्ती है, हमने उन्हें संसार में अज़ाब द्वारा नष्ट कर दिया जब उन्होंने अपने रसूलों को झुटलाया।

11) अर्थात् मक्का के काफिर और उनकी मुदाहकत करने वालों को, जिन्होंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व मूल्लिम को झुटलाया।

12) अर्थात् कमज़ोर और हकीकर मर्दी से।

13) मज़बूत और मुशकिल स्थान अर्थात् बच्चावानी में।

14) अर्थात् गर्भ में समय तक जो कि 6 महीना है।

15) अर्थात् हमने उस के अंतों तथा दूर्जियों का टीक टीक अनुमान लगाया, और उस की सारी बीजों को उसी तरह बनाया जैसा हमने लगाया, जो अल्लाह किनाना अच्छा अनुमान लगाने वाला है।

16) अर्थात् तुम सभों को समेट कर मुशकिल रखने वाली है, जैसी जो अपनी पीट पर और मूतकों को जपने अद्दर।

17) दुर्फ़ : मीठा, यह सारी बीजें दोकान जीवित किए जाने से भी अधिक अद्यम में डालने वाली हैं।

18) उन से क्या जागा कि जिस अद्यम से पुष्प झुटलाते हैं जौ खाने वाले हैं।

धारी तीन शाखाओं वाले साए की ओर ।  
जो वास्तव में न आया देने वाला है और न ज्ञाले से चली सुनना है ।  
अबश्य (नरक) विणारियौ पेक्षा है जो महल की तरह है ।  
जिसे कि वे बीले ऊँट है ।  
उस दिन झूठलाने वालों की दुर्गति है ।  
आज (का दिन) वह दिन है कि यह बोल भी न सकेंगे ।  
वे उन्हें बाताना करने की अनुमति दी जाएगी ।  
उस दिन झूठलाने वालों के लिए खाराबी है ।  
यह है विषय का दिन, हमने तुम्हें और पहले के लोगों के (सब को) इच्छा कर लिया है ।  
तो यह तुम मझसे बोई चाल चल सकते हो तो चल लो ।  
इच्छा है उस दिन झूठलाने वालों के लिए ।  
अबश्य परहेजगार (सदाचारी) लोग साए में हैं और बहते चलते (स्त्री) हैं ।  
और उन फलों में जिनकी वे इच्छा करें ।  
(हे जन्मालो!) खाओ-पिओ आनन्द से अपने किए हुए कपों के बदले ।  
अबश्य हम नेहीं करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं ।  
उस दिन झूठलाने वालों के लिए दुख (खेद) है ।  
(हे झूठलाने वालो!) तुम (संसार में) थूड़ा सा खा-पी लो और लाख उठा लो, निरादेह तुम पापी हो ।  
उस दिन झूठलाने वालों के लिए विनाश है ।  
उससे जब कहा जाता है कि रुकूज कर लो तो रुकूज नहीं करते ।  
उस दिन झूठलाने वालों का विनाश है ।  
अब इस (कुरुआन) के बाद किस बात पर ईमान लाएंगे ?

## सूरुज-नबा - 78

इस करता है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है ।  
यह लोग किस चीज की पूछताछ कर रहे हैं ।  
उस बड़ी सुनना की?

<sup>1</sup> नरक के पूर्ण की आया की ओर चलो, जो ऊँचा होकर तीन शाखाओं में फैला होगा ।  
<sup>2</sup> अर्थात् यह आया तुनिया के आया जैसा ठंडी नहीं होगी, और न ही यह आया नरक की पारी से बचा सकेगी । हिसाब व वित्ताब से फारिग होन तक तुम्हें इसी आया में रहना होगा ।  
<sup>3</sup> अर्थात् नरक से इन वाली विणारियौ इनी बड़ी बड़ी होगी जैसे माल होते हैं ।  
<sup>4</sup> दीन दीन में इतने बड़े लोग जैसे पीले ऊँट, पीला का अर्थ यहाँ पर चला है, अरबवारी काली ऊँट जो पीला कहते हैं, और एक कील के अनुसार विणारी जब उड़ती और गिरती हो तो उस नरक के रंग का जो प्रभाव होगा वह वाले ऊँट जैसा होगा ।  
<sup>5</sup> अर्थात् उन से कहा जाएगा कि विषय का दिन है, जिसमें लोगों के बीच विषेष ही जाएंगे, और यत्व तथा अराव के बीच अन्तर स्पष्ट किया जाएगा, हमने तुम्हें तृतीय के काफिरों, धिक्ली उमलों के काफिरों के साथ इच्छा कर लिया है ।  
<sup>6</sup> अल्लाह तस्वील करेंगे - यह तुम्हारे पास कोई चाल है जिसे तुम मेरे विषेष में चल गये हो तो तो चल कर देख लो ।  
<sup>7</sup> अर्थात् उन से कह संमार में कहा जाएगा, और पापी से मुराद मुशिरक और नामामन है ।  
<sup>8</sup> अर्थात् जब उन नामों का आवेदन दिया जाता था तो नमाज नहीं पढ़ते थे ।  
<sup>9</sup> यह कुरुआन पर ईमान नहीं लाए तो भला इसके रिया किस चीज पर ईमान लाएंगे ?  
<sup>10</sup> जब नवी लोगी की बेसत होई, और आप ने उन्हें गौहीद और दोबारा जीवित किया जाने के बारे में बताया, कुरुआन की विलावत की तो तो आपस में एक पूर्से में पूछते लगे । कहने लगे कि पूर्णाद को क्या हो गया, यह क्या लेकर आए है? तो अल्लाह तस्वील ने यह आपत उतारी ।  
<sup>11</sup> बड़ी सुनना में पुरान बुरुआन है, क्योंकि यह वित्ताब अल्लाह की

الْخَلْقُ مِنْ مَوْهِبَتِهِ فَجَعَلَنَّهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ۚ ۲۰ إِلَىٰ قَدْرِ  
مَنْلُوِّمٍ فَقَدَرَ زَانَ فَعَمَّ الْقَدِيرُونَ ۚ ۲۱ وَتَلَّ يَوْمَدِ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ ۲۲  
أَزْجَعَ الْأَرْضَ كَفَاناً ۚ ۲۳ أَحْيَاهُ وَأَمْوَاتًا ۚ ۲۴ وَجَعَلَنَا فِيهَا رَوْسَىٰ  
شَيْخَتِ وَأَسْقَيْتُمُّكُمْ مَاءً فَرَأَيْتُمْ ۚ ۲۵ وَبِلَّ يَوْمَدِ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ ۲۶  
أَنْطَلَقُوا إِلَىٰ مَا كَسْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۚ ۲۷ أَنْطَلَقُو إِلَىٰ ظَلِيلٍ ذِي ثَلَاثَ  
شَبِّ ۚ ۲۸ لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغَنِّي مِنَ اللَّهِ بِإِنْهَا تَرْمِي بِشَكَرَ  
كَالْقَصْرِ ۚ ۲۹ كَانَهُ بِمَنْلَاتِ صَفَرٍ ۚ ۳۰ وَبِلَّ يَوْمَدِ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ ۳۱  
هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطَقُونَ ۚ ۳۲ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْنَذُرُونَ ۚ ۳۳ وَتَلَّ يَوْمَدِ  
لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ ۳۴ هَذَا يَوْمٌ الْفَصْلُ جَمِيعَكُمْ وَالْأُولَئِنَ ۚ ۳۵ فَإِنْ كَانَ  
لِكَذِيدٍ فِي كِيدُونَ ۚ ۳۶ وَبِلَّ يَوْمَدِ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ ۳۷ إِنَّ الْمُنَقِّنَ فِي  
ظَلَلٍ وَعَيْنٍ ۚ ۳۸ وَفَوْكَهَ مَمَا يَشَهُونَ ۚ ۳۹ كُلُوا وَأَشْرُبُوا هَيْثَمَا  
يُمَاكِشُ تَعْمَلُونَ ۚ ۴۰ إِنَّا كَذَلِكَ بَخْرِيَ الْمُحْسِنِينَ ۚ ۴۱ وَبِلَّ يَوْمَدِ  
لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ ۴۲ كُلُوا وَتَمْنَعُوا قِيلَالاً إِنَّكُمْ بَعْرِمُونَ ۚ ۴۳ وَبِلَّ يَوْمَدِ  
لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ ۴۴ وَإِذَا قَلَ لَهُمْ أَرْكَعُوا لَا يَرْكُوبُ ۚ ۴۵ وَبِلَّ  
يَوْمَدِ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ ۴۶ فِي أَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُقْرَنُونَ

जिसके बारे में वे विरोध कर रहे हैं ।<sup>12</sup>  
यकीनन यह अभी जान लेंगे ।<sup>13</sup>  
फिर निश्चित रूप से उन्हें बहुत जल्द जानकारी हो जाएगी ।<sup>14</sup>  
क्या हमने धरती को फर्श नहीं बनाया? <sup>15</sup>  
और पर्वतों को खँूंटा नहीं बनाया? <sup>16</sup>  
और हमने तुम्हें जोड़-जोड़े पैदा किए ।  
तथा हमने तुम्हारी निद्रा को तुहारे आराम का कारण बनाया ।<sup>17</sup>  
और रात को हमने पर्दा बनाया ।<sup>18</sup>  
और दिन को हमने रोज़-गार (जीविका कमाने) का समय बनाया ।<sup>19</sup>

वादानियत, रसूल की सच्चाई और दोबारा उठाए जाने की खबर देती है ।  
<sup>12</sup> कुरुआन के बारे में उन्होंने इक्खिलाफ़ विद्या किसी ने उसे जादू कहा, किसी ने शाइरी, किसी ने कहना तो किसी ने उसे फहने लोगों के अक्सराने का नाम दिया ।  
<sup>13</sup> इस में उन के लिए डॉट और फटकार है, कि जल्द ही उन्हें जानकारी हो जाएगी कि झुटनाने का अन्जाम क्या होने वाला है ।  
<sup>14</sup> यह दोबारा उन्हें डॉट पिलाने के लिए ।  
<sup>15</sup> बिद्दीना और फर्श बनाया, जैसे बच्चों के लिए बिद्दीना तैयार किया जाता है ताकि उसे उस पर मुलाया जाए ।  
<sup>16</sup> अर्थात् हम ने पाढ़ों को पर्ती के लिए खँूंटा की तरह बनाया है ।  
यह ठहरी रहे और उसमें हिल-डोल न हो ।  
<sup>17</sup> हिलना बदल हो जाता है ताकि शरीर के आराम मिले ।  
<sup>18</sup> अर्थात् हम तुम्हें रात का अंदरा पहना देते हैं अर्थात् उस से छाल हो जाए तो कपड़े से शरीर ढक दिया जाता है ।  
<sup>19</sup> अर्थात् हम दिन को रीशन कर देते हैं, ताकि लोग अपनी लोगी की खोज में दौड़ भाग करें ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَمَّ يَتَسَاءُلُونَ ۖ عَنِ النَّبِيِّ الْعَظِيمِ ۖ الَّذِي هُرَفِيْهِ مُخْلِقُوْنَ  
 كَلَّا سَيْعَمُونَ ۖ فُرُّ كَلَّا سَيْعَمُونَ ۖ الَّذِي جَعَلَ الْأَرْضَ مَهْدًا  
 وَالْجَنَّالُ أَنْتَادًا ۖ وَخَلَقْتُكُمْ أَزْوَاجًا ۖ وَجَعَلْنَا تَوْمَكُ شَبَابًا  
 وَجَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَاسًا ۖ وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۖ وَبَيْنَنَا  
 قَوْمٌ سَبْعًا شَدَادًا ۖ وَجَعَلْنَا سَرَابًا وَهَاجَابًا ۖ وَأَنْزَلْنَا  
 مِنَ الْمُعْصَرَاتِ مَاءً مُجَاجًا ۖ لِتُخْرَجَ بِهِ حَبَّاً وَبَنَانًا ۖ وَجَتَتِ  
 الْفَافًا ۖ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۖ يَوْمٌ يُنْعَنُ فِي الصُّورِ  
 فَأَتُؤْنُ أَفْوَاجًا ۖ وَفُنْحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبُوبَكَارًا ۖ وَسُرِّيَتِ  
 الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۖ إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۖ لِلْطَّغَيْنِ  
 مَكَابِي ۖ لَيْثَيْنَ فِيهَا أَحْقَابًا ۖ لَا يَدْعُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا  
 إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَافًا ۖ جَزَاءً وَفَاقًا ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا  
 لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۖ وَكَذَبُوا بِعِيَاضَنَا كَذَابًا ۖ وَكُلُّ شَئٍ  
 أَخْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۖ فَذَوْفُوا فَلَنْ تَرِيدُكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۖ

- 12 और तुम्हारे ऊपर हमने सात मञ्चूत आकाश बनाए।  
 13 और एक चमकता हुआ ज्योति दीप (सूरज) पैदा किया।  
 14 और मेंढ़ों से हमने अत्यधिक बहता हुवा पानी वरसाया।  
 15 ताकि उससे अनाज और बनस्पति उगाएं।  
 16 और धने वाग भी (उगाएं)।  
 17 वेशक निर्णय के दिन का समय मुकर्रर (निर्धारित) है।  
 18 जिस दिन कि सूर (नरसिंघ) में फूका जाएगा फिर तुम सब दल के दल बन कर जाओगे।  
 19 और आकाश खोल दिया जाएगा<sup>10</sup>, तो उसमें द्वार-द्वार हो जाएं।  
 20

- 12 और पर्वत चलाए जाएंगे तो वे सफेद बालू हो जाएंगे।  
 13 निःसंदेह नरक घात में है।  
 14 उद्धण्डियों का स्थान वही है।  
 15 उसमें वे युगों-युग पड़े रहेंगे।  
 16 न कभी उसमें ठंस का स्वाद चखेंगे न पानी का।  
 17 सिवाय गर्म पानी और बहती हुई पीप के।  
 18 (उनको) पूरा-पूरा बदला मिलेगा।  
 19 उन्हें तो हिसाब की उम्मीद (संभावना) ही न थी।  
 20 और दिलेरी से हमारी आयतों को झूठलाते थे।  
 21 हमने हर-एक बात को लिखकर सुरोक्षेत रखा है।  
 22 अब तुम (अपने किए का) स्वाद चखो, हम तुम्हारा अंजाब ही बढ़ाते जाएंगे।  
 23 यकीनन् परहेज़गारों (सदाचारियों) के लिए सफलता है।  
 24 बागात हैं और अंगूर हैं।  
 25 और नवयुवती कुँवारी हम-उम्र <sup>22</sup> औरतें हैं।  
 26 और छलकते हुए शराब के प्याते हैं।  
 27 वहाँ न तो वे बूरी बातें सुनेंगे और न दूटी बातें सुनेंगे।  
 28 (उनको) तेरे रब की ओर से (उनके नेक-कर्मों का) यह बदला मिलेगा। जो काफी इन्नाम होगा।  
 29 (उस) रब की ओर से मिलेगा जो कि आकाशों का धरता का और जो कुछ उनके बीच है, उनका रब है, और बड़ी बखिश करने वाला है। किसी को उससे बातचीत करने का अधिकार नहीं होगा।  
 30 जिस दिन रुह और फरिश्ते सफे बाँध कर खड़े होंगे<sup>27</sup> तो कोई बात न कर सकेगा मगर जिसे रहमान अनुमति देवे<sup>28</sup>, और वह ठीक बात मुंह से निकालेगा।

12 अर्थात पहाड़ों को उन की जगहों से जहाँ वे गड़े हुए हैं उद्धेष्ट कर हवा में चला दिया जाएगा, और वे कण-कण होकर बिखर जाएंगे, देखने वाला उन्हें "सराब" समझेगा, अर्थात रेत जो दूर से पानी लगता है।  
 13 नरक में उसके दारोंगे काफिरों के घात में होंगे, कि वे उसमें उहे अंजाब दे।

14 <sup>بِعِ</sup> टिकाना जिसकी ओर वे लौटेंगे।  
 15 अर्थात वे हमेशा नरक में ही रहेंगे, (احتاب, حقب) का वह बचन है। मुराद लम्बा जमाना है, एक हक्क जब खत्म होगा दूसरा शुरू हो जाएगा, इस प्रकार इस सिलसिला का कभी अन्त न होगा, मतलब यह है कि वह सदा उसमें रहेंगे।  
 16 <sup>جَمِيعًا</sup> गर्म पानी।

17 अर्थात सजा पाप अनुसार होंगी, तो शिर्क से बढ़कर कोई नुर्म नहीं और जहन्नम से बढ़कर कोई अंजाब नहीं, और उनके कर्तृत धूक बुरे ये इसलिए अल्लाह उन्हें वही देगा जो उन्हें गम्भीर करदे।

18 न उन्हें सबाब की लालच थी और न हिसाब का डर, क्योंकि दोबारा जीवित किए जाने पर उनका ईमान ही नहीं था।

19 अर्थात हम ने उसे "लौहे महफूत" में लिख रखा है, और एक कौल यह है कि इस से मुराद उनके कर्तृत का वह रिकाढ है जिसे निगरा फरिश्तों ने तैयार कर रखा है।

20 <sup>مَفَارِزًا</sup> सफलता और जहन्नम से छुटकारा।

21 अर्थात उनके लिए ऐसी कुवारी और नवयुवती औरतें होंगी जिनकी छातियां सीनों पर उठी होंगी, दूटी या ढीली न होंगी।

22 <sup>أَنْتَابِنَا</sup> हम-उम्र।

23 <sup>كَاسَادِهَافَ</sup> शराब से भरे हुए प्याते।

24 जनत में कोई ख़राब और बेहूदा बात नहीं मुनेंगे, और कोई किसी से झूठ नहीं कहेगा।

25 अर्थात जो अल्लाह के बादे में उनके लिए दाजिब हुआ होगा उसके अनुसार होगा, उसने एक नेकी पर दस नेकी के सबाब का बादा किया है, और किसी के लिए ऐसे बदले का बादा है जिस कोई सौमा न होंगी।

26 अर्थात वह इस से बात न कर सकेंगे, जब तक कि वह उन्हे उम्मी अनुमति न दे दे, और न ही बिना उसकी अनुमति के सिफारिश कर सकेंगे।

27 से मुराद फरिश्ता है, और एक कौल के अनुसार जिल्हाल मुराद है, और एक कौल के अनुसार फरिश्तों के इलाजा अल्लाह वह कोई नहीं कर सकते।

28 सिफारिश की, या वह मात्र उसी व्यक्ति के हाक में बात कर सकते।

- 1 अर्थात सात मञ्चूत से मुराद सात आकाश हैं, जो कि बहुत दीप हैं।  
 2 इस से मुगाद सुरज है, उसे कहते हैं जिसमें रोशनी और गर्मी दीप हो।  
 3 <sup>وَعَد</sup> वह दर्वाजियाँ हैं जो पानी से भरी हुई हों लेकिन अभी बरसी न हो।  
 4 अधिक मात्रा में बहने वाला पानी।  
 5 जैसे गेहूँ ही जौ और इस तरह के दूसरे अनाज और गुल्मे और धान और धारे जिन्हें पशु खाते हैं।  
 6 धने वागीचे जिनके पेड़ों की डालियाँ एक दूसरे से मिली हों।  
 7 अर्थात पहले और पिछले के इकट्ठा होने और बादे का समय जिस में वह उस परिणाम को पाएंगे जिसका उनसे बादा किया गया है, और इसे निर्णय का दिन इसलिए कहा गया है कि उस दिन अल्लाह अपनी मञ्चूत के बांध निर्णय करेगा।  
 8 <sup>وَعَد</sup> नरसिंघा जिस में इसराफील फूक मारेंगे।  
 9 पूर्णी की जगह, (अर्थात मैदाने मध्यस्थर की ओर।)  
 10 फरिश्तों के उत्तरने के लिए।  
 11 अर्थात उसमें देर सारे दर्वाजे हो जाएंगे।

१० यह दिन सत्य है, अब जो चाहे अपने रब के पास (सत्यकर्म करके) स्थान बना ले।  
११ हमने तुम्हे कीद में अने बाले अजाव से डरा दिया (और साधान कर दिया)। जिस दिन इन्सान अपने हाथों की कमाई को देख लेगा। और काफिर कहेगा कि काश मैं भिट्ठी बन जाता।

## सुरुज् नाज़िआत - 79

इन काल हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा भेदभान बहुत रहम करने पाता है। दृढ़कर कठोरता से खीचने वालों की कसम। बधन खोलकर छुड़ादेने वालों की कसम। और तैरने फिरने वालों की कसम। किर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की कसम।<sup>10</sup> किर कामों के उपाय करने वालों की कसम।<sup>11</sup> जिस दिन काँपने वाली काँपेंगी।<sup>12</sup> उसके बाद एक पीछे आने वाली (पीछे-पीछे) आएगी।<sup>13</sup> (बहुत से) दिल उस दिन घड़कते होंगे।<sup>14</sup> जिनकी निगाहें नीची होंगी।<sup>15</sup> कहते हैं कि क्या हम पहले जैसी स्थिति में फिर लौटाए जाएंगे? क्या उस समय जब हम गली हुई हहियाँ हो जाएंगे।<sup>16</sup> कहते हैं कि यह लौटना फिर तो हानिकारक है। (जानकारी होनी चाहिए)

जिसके लिए रहमान अनुमति दे दे।

- १ और यह व्यक्ति उन लोगों में से हो जिसने संसार में दुरुस्त बात कही हो, अर्थात तीहीद की गवाही दी हो, और तीहीद का स्वीकारी रहा हो।
- २ अर्थात रुह और फरिश्तों के इस तरह से खड़े होने का दिन।
- ३ अर्थात हर हाल में आने वाला है।
- ४ **بَلْ** डिकाना, अर्थात सुरक्ष करके अपने रब के पास डिकाना बना ले।
- ५ जिस दिन आदमी उस नेकी या बुराई को देख लेगा जिसे आगे भेजा था।
- ६ अर्थात जो अजाव अल्लाह ने उसके लिए तैयार कर रखा है उसे देख कर वह यह आरजू करेगा कि काश वह भिट्ठी होता।
- ७ अल्लाह ने फ़रिश्तों की कसम खाई जो बन्दी की रुहों को उन की शरीरों से पूरी शक्ति से खीचते हैं, जैसे कमान खीचने वाला जहाँ तक बढ़ सकता है पूरी शक्ति से खीच कर बढ़ाता है, ग्रा इब कर, अर्थात इस तरह सख्ती से कि शर्गर के अन्तिम सिरे से उसे खीच लेते हैं।
- ८ **كُلُّ** का माना रस्सी से डाल खीचने के हैं, अर्थात जानों को शरीरों से पूरी शक्ति से खीच कर बाहर निकालते हैं, (और एक कौल यह है कि **نُشْط** का माना बंधन खोलने के हैं, अर्थात भोगिन की जान फ़रिश्ते आसानी से निकाल लेते हैं, जैसे आसानी से किसी चीज़ का बंधन खोल दिया जाए।)
- ९ फ़रिश्ते तेज़ी से आकाश से उतरते हैं, वह हवा में तैरते हैं जैसे गोता-खोर पानी में तैरता है।
- १० यह फ़रिश्ते अल्लाह के आदेश कायम करने के लिए दौड़ते हैं, और उन में से कुछ मोमिनों की रुहें लेकर जन्मत की ओर दौड़ते हैं।
- ११ फ़रिश्तों का मामले का उपाय करने का अर्थ : उनका हुलाल, हराम और उनकी तफसील को लेकर उतरना, और धरती वालों के लिए पानी और हवा बगैर का उपाय करना।
- १२ यह पहली फूँक है जिस से सारी मञ्जूक फना हो जाएगी।
- १३ **وَادِفَةٌ** से मुराद दूसरी फूँक है जिस से सब लोग जीवित होकर कब्रों से निकल आएंगे।
- १४ कियामत की हीलनाकी को देख कर वह डरे होंगे और घड़कते होंगे।
- १५ अर्थात उनकी निगाहों में जिल्लत और बेचारगी स्पष्ट होगी, और कियामत की हीलनाकी को देख कर उनकी नज़रें मारे डर के छुकी हुई होंगी, मुराद उन लोगों की नज़रें हैं जो बिना इस्लाम लिए मरे होंगे।
- १६ ऐसा वे कहते हैं जो दोबारा जीवित किए जाने के इनकारी हैं, जब उन से कहा जाता है कि मरने के पश्चात तुम दोबारा जीवित किए जाओगे तो आश्वर्य से कहते हैं कि क्या हम अपनी पहली हालत की ओर लौट दिए जाएंगे, और मर जाने और कब्र के गढ़े में जाने के बाद फिर जीवित किए जाएंगे?
- १७ अर्थात मरने बाद के लौटाए जाने और मुहम्मद **صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** जो कह रहे हैं उस से दोबार होने पर तो हम बड़े धाटे में होंगे। (यह बात वह मज़ाक उड़ाने के लिए कहते हैं।)

أَنَّ الْمُتَّقِينَ مَفَارِزًا ۚ ۲۱ حَدَابِقَ وَأَغْبَانَا ۚ ۲۲ وَكَاعِبَ أَزْرَابَا ۚ ۲۳ وَكَاسَا  
بِهَا فَا ۚ ۲۴ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا الْغَوَا وَلَا كَذَابَا ۚ ۲۵ جَرَاءَ مِنْ رَبِّكَ عَطَاءَهُ  
جَسَابَا ۚ ۲۶ رَبَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ لَا يَقْلُكُونَ  
يَنْهَى خَطَابَا ۚ ۲۷ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفَا لَا يَتَكَلَّمُونَ  
إِلَامَنْ أَذْنَنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَابَا ۚ ۲۸ ذَلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ  
شَاءَ آتَخْدَى إِلَى رَبِّيهِ مَعَابَا ۚ ۲۹ إِنَّا أَنذَرْنَكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ  
بَطْرُ الْعَزَمَ مَا قَدَّمْتُ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافُرُ يَنْتَقِي كُثُرًا تُرَبَا ۚ ۳۰

سُوكُوكُ النَّارِ عَانِتْ

دِسْنٌ

وَالشَّرِعَتِ غَرْقاً ۚ ۱ وَالشَّيْطَانُ نَشْطَا ۚ ۲ وَالسَّيْحَنُ سَبَحَا ۚ ۳  
فَالْتَّيْقِنُ سَبَقاً ۚ ۴ فَالْمُدَبِّرُاتِ أَمْرَا ۚ ۵ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْجَفَةُ  
تَنْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۚ ۶ طُوبٌ يَوْمَ زِدٍ وَاحِدَةٌ ۚ ۷ أَبْصَرُهَا  
خَيْشَمَةٌ ۸ يَقُولُونَ أَءَنَا التَّرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ۹ أَءَذَا كُنَّا  
عَظِيمًا مَخْرَهَ ۱۰ قَالُوا إِنَّكَ إِذَا كَرَّهَ خَاسِرَةٌ ۱۱ فَلَمَّا هِيَ زَجَرَةٌ  
وَرِجْدَةٌ ۱۲ فَإِنَّا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۱۳ هَلْ أَنْكَ حَدِيثُ مُوسَى ۱۴

१३ वह तो केवल एक (भयानक) फटकार है<sup>15</sup> कि (जिसका जाहार होते ही)।

१४ वह एक-दम मैदान में इकट्ठे हो जाएंगे।<sup>16</sup>

१५ क्या मूसा **صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की कथा भी तुम्हें पहूँची है?<sup>17</sup>

१६ जबकि उनके रब ने उन्हें पवित्र मैदान तुवा<sup>18</sup> में पुकारा।

१७ कि तुम फिर्झैन के पास जाओ उसने उद्दण्डता अपना ली है।

१८ उससे कहा<sup>19</sup> कि क्या तू अपना सुधार और इस्लाम चाहता है।<sup>20</sup>

१९ और यह कि मैं तुझे तेरे रब का रास्ता दिखाऊं ताकि तू (उससे) डरने लगे।

२० **كَلِيلٌ** के माने में है, अर्थात फिर्झैन और मूसा **صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की कथा तुम्हें पहुँच चुकी है जिस से उनकी कहानी जानी जा सकती है।

२१ पाक और बा-बर्कत तुवा, तुरे सीना में एक बादी है, जिसमें अल्लाह तआला ने मूसा **صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को पुकारा था (और उन्हे अल्लाह से बात करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ था)।

२२ उसके पास पहुँचने के बाद तुम उससे पूछो कि क्या तू **شِرْك** <sup>كَلِيلٌ</sup> गन्दगी से पवित्र होना चाहता है? मूसा **صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की आदेश दिया गया था जाकर उसे नरमी से समझाएँ।

२३ और क्या तू वाहता है कि मैं तुम को उस की इचावत और उस की बोलती रोकने की रास्ता दिखाऊं ताकि तू अपने पराणाम से हरे, और अल्लाह का हर उसी स्वर्ण को सकता है जब वह स्वयं अच्छा और नेक होना चाहता है।

२४ और क्या तू वाहता है कि मैं तुम को उस की इचावत और उस की बोलती रोकने की रास्ता दिखाऊं ताकि तू अपने पराणाम से हरे, और अल्लाह का हर उसी स्वर्ण को सकता है जब वह स्वयं अच्छा और नेक होना चाहता है।

तो उसे बड़ी निशानी<sup>१</sup> दिखायी।  
तो उसने मुठलाया और नाफर्मानी की  
किर पलटा दौड़-धूप करते हुए<sup>२</sup>  
किर सबको इकट्ठा करके पुकारा।  
कह कि तुम सबका बड़ा रव मैं ही हूँ<sup>३</sup>  
तो (सबसे बुलंद और महान) अल्लाह ने भी उसे  
लोक तथा इस लोक के अज़बों में धेर लिया<sup>४</sup>  
बे-शक इसमें उस व्यक्ति के लिए शिक्षा है, जो डरे<sup>५</sup>  
क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है<sup>६</sup> या आकाश का?  
उल्लाह तज़ाला ने उसे बनाया।  
उसकी ऊँचाई चढ़ायी<sup>७</sup> फिर उसे ठीक ठाक कर दिया<sup>८</sup>  
और उसकी रात को अंधेरा किया<sup>९</sup> और उसके दिन को  
जला।  
और उसके बाद धरती को (समतल) बिछा दिया।<sup>१०</sup>  
उसमें से पानी और चारा निकाला।<sup>११</sup>  
और पर्वतों को (मन्जूल) रूप से गाड़ दिया।<sup>१२</sup>  
यह सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के लाभ के लिए है।<sup>१३</sup>  
तो जब वह बड़ी विप्रति (कियामत) आ जाएगी।<sup>१४</sup>  
जिस दिन कि इन्सान अपने किए हुए कर्मों को याद करेगा।<sup>१५</sup>  
और (प्रत्येक) देखने वाले के सामने जहन्नम ज़ाहिर कर  
जाएगी।<sup>१६</sup>  
तो जिस (व्यक्ति) ने उद्दण्डता अपनायी (होगी)<sup>१७</sup>  
और साँसारिक जीवन को तर्ज़ह दी (होगी)<sup>१८</sup>

إِذْ نَادَنَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمَقَدِّسِ طَوَىٰ ۝ أَذْهَبَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝  
فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَيَّ أَنْ تَرْكَ ۝ وَأَهْدِيْكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَنَخْشِي ۝ فَأَرْأَيْهُ  
الْأَيْةَ الْكَبْرَىٰ ۝ فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝ ثُمَّ أَدْبَرَ سَعْيَ ۝ فَحَسْرَ  
فَنَادَىٰ ۝ قَالَ أَنَا رِبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ۝ فَأَخْذَهُ اللَّهُ نَكَالًا لِآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ  
إِنَّ فِي ذَلِكَ لِعْبَرَةً لِمَنْ يَتَعَشَّىٰ ۝ إِنَّمَا أَشَدُ حَلْقَأَمِ الْسَّمَاءِ بَنْهَا ۝  
رَفَعَ سَمَكَهَا فَسَوَّبَهَا ۝ وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ صُحْنَهَا ۝  
وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَنَهَا ۝ أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرَّ عَنْهَا ۝  
وَالْجَبَالَ أَرْسَنَهَا ۝ مَنْعَالًا لَكُوْلَانِعِمَكُ ۝ فَإِذَا جَاءَهُ الطَّائِمَهُ  
الْكَبْرَىٰ ۝ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَنُ مَا سَعَىٰ ۝ وَبُرْزَتِ الْجَحِيمُ  
لِمَنْ يَرَىٰ ۝ فَمَامَنْ طَغَىٰ ۝ وَأَوْأَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ فَإِنَّ الْجَحِيمَ  
هِيَ الْمَأْوَىٰ ۝ وَأَمَامَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَفَهَ النَّفَسَ عَنْ الْمَوْىٰ  
فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۝ يَسْتَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مَرْسِنَهَا  
فِيمَ آتَتْ مِنْ ذِكْرِهَا ۝ إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهِهَا ۝ إِنَّمَا أَتَتْ مُنْذِرُ  
مَنْ يَخْشَنَهَا ۝ كَاتِبُهُمْ يَوْمَ يَرُونَهَا مُبْشِّرًا لِأَعْشَيهَا أَوْ صَحْنَهَا ۝

### سُورَةُ عَبْسٍ

- ٣٩ (उसका) स्थान जहन्नम ही है<sup>१</sup>  
 ٤٠ मगर जो व्यक्ति अपने रव के सामने खड़े<sup>२</sup> होने से डरता  
 होगा और अपने मन<sup>३</sup> को इच्छाओं से रोका होगा।  
 ٤١ तो उसका स्थान जन्नत ही है।  
 ٤٢ लोग आपसे कियामत (प्रलय) के आने का समय पूछते हैं<sup>४</sup>  
 ٤٣ आपको उसके बयान करने से क्या सम्बन्ध? <sup>५</sup>  
 ٤٤ उसके (ज्ञान का) अंत तो आपके रव की ओर है<sup>६</sup>  
 ٤٥ आप तो केवल उससे डरते रहने वालों को सावधान  
 करने वाले हैं<sup>७</sup>  
 ٤٦ जिस दिन यह उसे देख लेंगे, तो ऐसा लगेगा कि केवल  
 दिन का अन्तिम हिस्सा या पहला हिस्सा ही (संसार में) रहे हैं।

- ٢٠ अर्थात् वही उस की जगह होगी जिस की ओर वह पनाह पकड़ेगा,  
 उस के सिवाय कोई और शरण-स्थल न होगी जहाँ वह शरण ले सके।  
 ٢١ अर्थात् कियामत के दिन अपने रव के सामने खड़े होने से डरता रहा।  
 ٢٢ और मन को उन पापों और गुप्तों से रोकता रहा जिसका इच्छा मन में जाता है।  
 ٢٣ अर्थात् वह कब आएगी और कब करती की तरह लंगर अदाव़ होगी?  
 ٢٤ उसके ज्ञान और वर्णन से आप क्या क्या सम्बन्ध है, उसका वास्तविक  
 ज्ञान तो अल्लाह के पास है।  
 ٢٥ अर्थात् उस के ज्ञान की सीमा तेरे रव की ओर है, मात्र वही जानता  
 है दूसरा कोई नहीं जानता।  
 ٢٦ अर्थात् आप मात्र उस व्यक्ति को डराने वाले हैं जो कियामत आने से डर रहा है।  
 ٢٧ अर्थात् जिस दिन वे उसे देख लेंगे दुनिया की मौज भवती सब कुछ  
 जाएंगे, और उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में पूरे एक दिन जी रही  
 रहे, मात्र दिन के पहले या अन्तिम हिस्सा में दुनिया रहे हैं।

इस काला हूँ अल्लाह के नाम से वे बड़ा मेहरान बहुत रुग्न करने वाला है।  
वह चिड़चिड़ा हुवा और मुंह मोड़ लिया।  
(केवल इसलिए) कि उसके पास एक अंधा आया।  
तुम्हे क्या पता शायद वह सुधर जाता।  
या नसीहत सुनता और उसे नसीहतें लाभ पहुँचाती।  
(परन्तु) जो लापरवाही करता है।  
उसका ओर तो तू पूरा ध्यान दे रहा है।  
लालांकि उसके न सुधरने से तेरी कोई हानि नहीं।  
और जो व्यक्ति तेरों ओर दौड़ता हुआ आता है।  
और वह डर (भी) रहा है।  
तो तू उससे बे-रुखी (विमुखता) बरतता है।  
यह उचित नहीं (कुरआन तो) नसीहत की (चीज़) है।  
जो चाहे उससे नसीहत ले।  
यह तो सम्मानित किताबों में है।  
जो उच्च, महान और पवित्र और शुद्ध है।  
ऐसे लिखने वालों के हाथों में है।  
जो बुज्जग और पवित्र है।  
(७) अल्लाह की मार इंसान पर, कितना ना-शुक्रा (कृतघ्न) है।

- <sup>1</sup> नवी ﷺ ने तेवर चढ़ाई और अपना मुंह फेर लिया।  
<sup>2</sup> अपने पास अंधा के आने की बजह से, इस सूरत के नाज़िल होने का कारण यह है कि नवी ﷺ के पास कुछ कुश के शरीफ लोग बैठे हुए थे, जिन से आप बातें कर रहे थे, आप की चाहत थी कि यह इस्लाम स्वीकार कर ले, इन्हें मैं अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तुम जो कि अंधे थे और नेक सङ्गादा में से ये आ पहुँचे, और आप से धर्म सन्वन्धी बातें पूछने लगे, अल्लाह के रसूल को उनकी इस कत्तम कलामी पर नागवारी हूँ और उन की ओर ध्यान नहीं दिया तो यह आयतें नाज़िल हूँ।  
<sup>3</sup> ऐ मुहम्मद ﷺ।  
<sup>4</sup> अथात वह अंधा व्यक्ति तुझ से धर्म की बातें सीख कर नेक कर्म करता जिस से वह गुनाहों से पवित्र हो जाता।  
<sup>5</sup> या नसीहत प्राप्त करता और जो नसीहत की बात उसे बातें उस से उसे लाभ पहुँचता।  
<sup>6</sup> और जो तुझ से बेपरवाही बरतता है, और उन चीजों से मुंह मोड़ता है जिन्हे लेकर तुम आए हो तो उसकी ओर तो तुम पूरा ध्यान लगाते हो।  
<sup>7</sup> यदि वह इस्लाम न लाता तो उस से तुम्हें क्या हानि पहुँचता, तुम्हारी जिम्मादारी तो मात्र पहुँचने की है, इसलिए ऐसे काफिरों के मामले को इतना महल न दो।  
<sup>8</sup> अथात वह (अब्दुल्लाह पुत्र उम्मे मक्तुम) तेरे पास दौड़ते हुए आए हैं ताकि तू उनको लाभ का मार्ग दिखाए और अल्लाह की बातों की नसीहत करे।  
<sup>9</sup> तो तू उससे विमुखता बरतता है और अपना मुंह फेर लेता है।  
<sup>10</sup> तेरा यह बताव ठीक नहीं, ऐसे लोगों का तो सम्मान करना चाहिए, न कि उन से मुंह फेरना चाहिए।  
<sup>11</sup> अर्थात यह आयतें या यह सूरत नसीहत है, और इस लायक है कि तू इससे नसीहत प्राप्त करे, और ऐसे स्वीकारे और इस के तकाजों के अनुसार कर्म करे।  
<sup>12</sup> अर्थात यह ऐसी किताबों में है जो ज्ञान और हिक्मत से पुर होने और लौह महफूज से नाज़िल होने के कारण अल्लाह के पास बड़े सम्मानित हैं।  
<sup>13</sup> और अल्लाह के पास बड़ी कद्र व मन्जिलत वाले हैं।  
<sup>14</sup> पवित्र है क्योंकि उन्हें पाक लोगों के अलावा कोई छूता ही नहीं, और शैतानों और काफिरों की पहुँच से सुरक्षित हैं, (इसलिए उन में कोई हेरा फेरी नहीं हो सकती।)  
<sup>15</sup> سافर, سफ़ेर की जमअ है, यह सिफरत से है, इस से मुराद वह फरिश्ते हैं जो अल्लाह और रसूलों के बीच दूत के काम करते हैं, और अल्लाह की वह्य को रसूलों तक पहुँचाते हैं।  
<sup>16</sup> अपने रव के पास शरीफ और सम्मानित हैं।  
<sup>17</sup> परहेज़गर और अपने रव के आज्ञा का पालन करने वाले हैं, और अपने ईमान में सच्चे हैं।  
<sup>18</sup> यहां इन्सान से काफिर इन्सान मुराद है, अर्थात उसकी ना-शुक्रा बे-हद बड़ी हुई है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
بَسْ وَتَوَلَّ ۝ أَنْجَاءَهُ الْأَغْمَىٰ ۝ وَمَالِدِرِبَكَ لَعَلَهُ بِرَبِّكَ ۝ أَوْ  
يَذْكُرْ فَنْفُعَهُ الدِّكْرَىٰ ۝ أَمَامَنِ أَسْتَغْفِرُ ۝ فَانَّ لَهُ تَصْدِيَ ۝  
وَمَا عَلَيْكَ أَلَيْرَىٰ ۝ وَأَمَامَنِ جَاءَكَ يَسْعَىٰ ۝ وَهُوَ يَخْشَىٰ ۝ فَانَّ  
عَنْهُ نَلَهَىٰ ۝ كَلَّا إِنَّهَا نَذْكَرَهُ ۝ مَنْ شَاءَ ذَكَرَهُ ۝ فِي صُحْفِ مُكْرَمَةٍ  
مَرْقُوفَةٍ مُطْهَرَةٍ ۝ بِأَيْدِي سَفَرَ ۝ كَرَامَرَوَ ۝ قُتْلَ إِلَيْهِنَّ  
مَا الْكُفَّرُهُ ۝ مِنْ أَيِّ شَيْءٍ بِخَلْقَهُ ۝ فَقَدْ رَدَهُ ۝ كَلَّا لَعَنَّا  
السَّبِيلَ يَسْرَمُ ۝ شَمَّ أَمَانَهُ فَاقْبَرَهُ ۝ شَمَّ أَذْلَاءَهُ أَذْشَرَهُ ۝ كَلَّا لَعَنَّا  
يَقْضَنَ مَا أَمْرَهُ ۝ فَلَيَنْظُرِ إِلَيْنَسْنَ إِلَى طَعَامِهِ ۝ أَنَاصِبَنَا الْمَاءَ صَبَّاً  
مُشَقَّنَا الْأَرْضَ شَقَّاً ۝ فَأَبْشَنَافِهِ حَاجَنَا ۝ وَعَنَبَا وَقَضَبَا  
وَزَيْنَنَا وَخَلَلَا ۝ وَحَدَّابِنَا غُلَبَا ۝ وَفَنَكَهَهُ وَبَانَا ۝ مَنْتَعَنَا كُرْ  
وَلَا فَنِيمَكُرْ ۝ فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاحَةُ ۝ يَوْمَ يَفْرَأُ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ  
وَأَمْهُ، وَأَبِيهِ ۝ وَصَاحِبِيهِ، وَبَنِيهِ ۝ لِكُلِّ أَمْرٍ مِنْهُمْ يَوْمَيْرَشَانْ  
يَقْبِلُهُ وَجُوْهُ يَوْمَيْرَسْفَرَةٍ ۝ ضَاجِكَهُ مُسْتَبَشِرَةٍ ۝ وَجُوْهُ  
يَوْمَيْدَ عَلَيْهِ اغْبَرَةٍ ۝ تَرْهَقَهَا فَتَرَةٍ ۝ أُولَئِكَ هُمُ الْكُفَّارُ الْفَجَرَةُ

- उसे अल्लाह ने किस चीज़ से पैदा किया? <sup>19</sup>  
एक मनी (वीर्य) से पैदा किया <sup>20</sup>। फिर उसको अंदाज पर रखा। <sup>21</sup>  
फिर उसके लिए रास्ता आसान किया। <sup>22</sup>  
फिर उसे मौत दी फिर कब्र में गाड़ दिया। <sup>23</sup>  
फिर जब चाहेगा उसे जिन्दा करदेगा। <sup>24</sup>  
कभी भी नहीं उसने अब तक अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया। <sup>25</sup>  
इन्सान को चाहिए कि अपने खाने की ओर देखे। <sup>26</sup>  
कि हमने खूब पानी बरसाया।

- अर्थात अल्लाह ने उस काफिर को किस चीज़ से पैदा किया। <sup>19</sup>  
अर्थात उसकी पैदाइश एक घटिया वीर्य से हूँ है जो पेशाब के निकलने के स्थान से निकलता है, फिर ऐसे व्यक्ति को वमड़ क्योंकि याना है जो पेशाब निकलने के स्थान से दो बार निकलता हो। <sup>20</sup>  
अर्थात उसे ठीक ठाक बनाया, उसे दो हाथ, दो पैर, दो आँख और दूसरी भाँपने वाली चीज़ दी। <sup>21</sup>  
भलाई और बुराई प्राप्त करने के मार्ग उस के लिए आसान किए। <sup>22</sup>  
अर्थात मरने के पश्चात उसे कब्र में दफनने का आदेश दिया, तभी उसका सम्मान बरकरार रहे, उसे धरती पर पड़ा नहीं रहने दिया कि भी पश्चि उसे नोच नोच कर खाएं जिस से उस का अपमान हो। <sup>23</sup>  
अर्थात जिस समय वह चाहेगा उसे दोबारा जीवित करेगा। <sup>24</sup>  
अर्थात उसे पालन करने में कमी की, कुछ ने कुछ करके और कुछ ने ना-फरमानी करके, और जिन चीजों का अल्लाह ने आदेश दिया वह उन वहुत कम लोगों ने पूरा किया। <sup>25</sup>  
अर्थात उसे विचार करना चाहिए कि अल्लाह ने उस की गोली जो जीवन का कारण है कैसे पैदा की। <sup>26</sup>

شُورَةُ الْبَلْكُونِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا الشَّمْسُ كُوَرَتْ ۖ وَإِذَا النُّجُومُ أَنْكَدَتْ ۖ وَإِذَا الْجَبَارُ  
سِرِّتْ ۖ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِلَتْ ۖ وَإِذَا الْوُحُوشُ خَسِرَتْ  
وَإِذَا الْبَحَارُ سُجَرَتْ ۖ وَإِذَا النَّفُوسُ رُوَجَتْ ۖ وَإِذَا  
الْمَوْءُودَةُ سُيَلَتْ ۖ يَا إِيْ ذَنْبِ قُلَّتْ ۖ وَإِذَا الصُّحْفُ نُسِرَتْ  
وَإِذَا السَّمَاءُ كُنْسِتْ ۖ وَإِذَا الْجَحِيمُ شُعِرَتْ ۖ وَإِذَا الْجَنَّةُ  
أُزْلَفَتْ ۖ عِلِّمَتْ نَفْسٌ مَا أَحْضَرَتْ ۖ فَلَا أَقِيمُ بِالْخَيْرِ  
الْجَعَوْرُ الْكَنْسِ ۖ وَأَتَيْلِ إِذَا عَسَعَ ۖ وَالصُّبْحُ إِذَا نَفَسَ  
إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيرٍ ۖ ذِي قُوَّةٍ عِنْدِ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۖ مُطَاعَعٍ  
ثُمَّ أَمِينٍ ۖ وَمَا صَاحِبُكُمْ يَمْجُونِ ۖ وَلَقَدْ رَاهَ إِلَّا فِي الْمُثْبِتِينَ  
وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَيْنِينِ ۖ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَنٍ تَّجِيَرِ ۖ  
فَإِنْ تَذَهَّبُونَ ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذَكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۖ لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ  
يَسْتَقِيمَ ۖ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۖ

شُورَةُ الْأَنْفَطَلِ

۲۶) फिर धरती को अच्छी तरह फाड़ा।<sup>۱</sup>  
۲۷) फिर उसमें अन्न उपजाए।<sup>۲</sup>  
۲۸) और अंगूर और तरकारी।<sup>۳</sup>  
۲۹) और जैतून और खजूर।  
۳۰) और धने वाग।  
۳۱) और मेवा और (घास) चारा<sup>۴</sup> (भी उगाया)।  
۳۲) तुम्हारे प्रयोग और लाभ के लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए।  
۳۳) फिर जब कान बहरे करने वाली<sup>۵</sup> (कियामत) आ जाएगी।  
۳۴) तो आदमी उस दिन अपने भाई से।  
۳۵) अपनी माँ और बाप से।  
۳۶) अपनी पत्नी और संतान से भागे गा।<sup>۶</sup>  
۳۷) उनमें से प्रत्येक को उस दिन एक ऐसी फिक्र होगी जो

۱) अर्थात् कि वह बीज जैसे कम्ज़ोर वस्तू से जब वह पहली बार उगता है तो धरती में फट जाता है, अर्थात् उस में यह शक्ति नहीं थी कि वह धरती को फाड़ कर बाहर निकले यह शक्ति हम ने उसे दी है।

۲) जो इन्सान की रोज़ी है, अर्थात् पौदा बराबर बढ़ता रहता है यहाँ तक कि अनाज और दाने में बदल जाता है।

۳) **فَنِبْأُ** एक हरा पौदा मुराद साग और तरकारी जो लटकती है।

۴) **بَنِي** वह घास और चारा जो स्वयं उपजे जिसे बोया न जाता हो, जिसे पशु खाते हैं।

۵) **صَاخِهُ** कियामत के दिन की चीख जो इतनी भयंकर होगी कि कानों को बहरा कर देगी।

۶) यह सब से खास करीबी लोग हैं और इस लायक हैं कि उनके साथ नरमी की जाए, तो ऐसे लोगों से उस का भागना बे-हृद भयानकपन के कारण ही हो सकता है।

उसके लिए काफी होगी।<sup>۷</sup>

۱۸) बहुत से चेहरे उस दिन रौशन<sup>۸</sup> होंगे।

۱۹) (जो) हँसते हए प्रसन्न होंगे।

۲۰) और बहुत से चेहरे उस दिन धूल में अटे<sup>۹</sup> होंगे।

۲۱) जिन पर कालिक चढ़ी होगी।<sup>۱۰</sup>

۲۲) वे यही काफिर बदू-किर्दार (दुराचारी) लोग होंगे।<sup>۱۱</sup>

## सूरुत्र तक्फीर - 81

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।<sup>12</sup>

जब सूरज लपेट लिया जाएगा।<sup>13</sup>  
और जब सितारे झड़ कर गिरने लगेंगे।<sup>14</sup>

और जब हामिला (गर्भवती) ऊँटनियाँ छोड़ दी जाएंगी।<sup>15</sup>

और जब वहशी जानवर (वन प्राणी) इकट्ठे किए जाएंगे।<sup>16</sup>

और जब सागर भड़काए जाएंगे।<sup>17</sup>

और जब जानें (जिसमें से) मिला दी जाएंगी।<sup>18</sup>

और जब जिन्दा गाड़ी गयी लड़कियों से प्रश्न किया जाएगा।<sup>19</sup>

कि किस पाप के कारण उनकी हत्या की गयी?<sup>20</sup>

और जब नाम-ए-आमाल (कर्मपत्र) खोल दिए जाएंगे।<sup>21</sup>

और जब आकाश की खाल खींच ली जाएगी।<sup>22</sup>

और जब जहन्नम भड़कायी जाएगी।<sup>23</sup>

और जब जन्नत करीब कर दी जाएगी।<sup>24</sup>

۷) जो उन्हें उन के अपनों से बे-परवाह कर देगी, और उन्हें देख कर वह इस डर से भागेंगे कि कहीं वह उन से नेकी न मांग वैठें, या इस कारण भागेंगे कि उन का दुःख न देख सकें।

۸) سفرة रौशन।

۹) धूल।

۱۰) अर्थात् उस पर कालिक उदासी छाई होगी।

۱۱) अर्थात् धूल अटे चेहरे वाले।

۱۲) अर्थात् जब सूरज गेंद के रूप का कर दिया जाएगा, और लपेट कर केंद्र दिया जाएगा।

۱۳) अर्थात् टूट टूट कर गिरने और बिखरने लगेंगे, और एक कौल यह है कि वे बे-नूर कर दिए जाएंगे।

۱۴) अर्थात् उसे धरती से उखेड़ कर हवा में चला दिया जाएगा, (और पुनः हूँई रुई की तरह उड़ने लगेंगे)।

۱۵) गमिन ऊँटनियाँ जिन के पेट में दस महीने के बच्चे हों, इस महीने की गमिन ऊँटनी का चर्चा इसलिए है कि उन की गिनती अरबों के यहाँ सब से अच्छे धन में होती है, और उखेड़ कर हवा में चला दिया जाएगा, कि यूँ ही छोड़ दी जाएंगी, अर्थात् कियामत की हैलानकी को देख कर लोगों को अपनी इस प्रकार की कीमती ऊँटनियों की भी परवाह न होगी।

۱۶) अर्थात् उन्हें भी जीवित किया जाएगा ताकि एक-दूसरे से अपना बदला ले सकें, और एक कौल यह है कि उन का हथ उन की मौत है।

۱۷) अर्थात् वह जला दिए जाएंगे और उनमें आग भड़क उठेंगी।

۱۸) अर्थात् मोमिनों की जाने वाली बड़ी बड़ी अंख वाली हूँरों से और काँकियों की जाने ब्रैतेनों से मिला दी जाएंगी, हमन बसरी कहते हैं कि हर ब्रैकिंग को उस यीं पार्टी और उसके हृम खुलात लोगों से मिला दिया जाएगा, यहूदी को यहूदियों के साथ, मज़बूती को मज़बूतियों के साथ, मुनाफ़िकों के साथ, और मोमिनों को मोमिनों के साथ मिला दिया जाएगा।

۱۹) अर्थात् अरबों के यहाँ जब कोई लड़के पैदा होती ही तो उसे आर या मुकमरी के डर से जिन्दा दफन कर देते थे, इस प्रकार हस्ताग से प्रश्न करके उस की सरजनश की जाएंगी, क्योंकि वास्तविक मुद्रिम तो वही है, न कि दफन की जाने वाली लड़की; क्योंकि बिना किसी पाप के उस की हत्या की जाती है।

۲۰) अर्थात् मौत के समय यह कर्म-पत्र लपेट दिए जाते हैं, किर कियामत के दिन हिसाब के लिए खोल दिए जाएंगे।

۲۱) अर्थात् जब उधेड़ दिया जाएगा जैसे छत उथेड़ी जाती है।

۲۲) अर्थात् अल्लाह का गुप्त और बनु आदम के पाप उसे बदला देते।

۲۳) अर्थात् परहेजारों के करीब कर दी जाएंगी, यह पूरे ۱۰۰ हैं जिनमें से 6 का सम्बन्ध संसार से है, और जनिम 6 का सम्बन्ध जनिम से।

तो उस दिन प्रत्येक व्यक्ति जान लेगा, जो कुछ लेकर औया होगा।  
 मैं कसम खाता हूँ पीछे हटने वाले।  
 चलने-फिरने वाले छिपने वाले सितारों की।  
 और रात की जब जाने लगे।  
 और सबेरे की जब चमकने लगे।  
 वे-शक यह एक महान रसूल का कहा हुवा है।  
 जो शक्तिशाली है अशं वाले (अल्लाह) के पास सम्मानित है।  
 जिसका वहाँ (आकाशों पर आदेश का) पालन किया जाता है। (वह) अमीन है।  
 और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है।  
 उसने उस (फरिश्ते) को आकाश के खुले किनारे पर देखा भी है।  
 और यह गैब (परोक्ष) की बातें बताने में कंजूस भी नहीं है।  
 और यह (कुरआन) मर्दूद शैतान का कहा हुवा नहीं।  
 फिर तुम कहाँ जा रहे हो।  
 यह तो सारे संसार वालों के लिए नसीहत नामा (शिक्षापत्र) है। (विशेषरूप से उसके लिए,) जो तुममें से सीधे रस्ते पर चलना चाहे। और तुम बिना सारे जहा के रव के चाहे, कुछ नहीं चाह सकते।

## सूरतुल इंफितार - 82

रसूल करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।  
 जब आकाश फट जाएगा।

- 1 अर्थात् जब कर्म-पत्र खोल दिए जाएंगे तो प्रत्येक व्यक्ति को यह पता चल जाएगा कि वह कैसा कर्म कर के संसार से आया है वुराई या भलाई।
- 2 अल्लाह तज़ाला सितारों की कसम खा रहा है जो दिन को अपने मन्त्र में पीछे हट जाते हैं, और सूर्य के प्रकाश के कारण दिखाई नहीं देते।
- 3 जो अपने स्थान पर चलते रहते हैं।
- 4 और जो ऊँचाने के समय छुप जाते हैं, और उसका अंधेरापन खत्म होने लगा हो, और उजाला होने लगा हो।
- 5 अर्थात् सबेरे की जब वह भीनी भीनी और सुहानी हवा लेकर आ गई हो।
- 6 अर्थात् जिन्द्रील का; क्योंकि वही कुरआन अल्लाह की ओर सम्मुल्लाह के पास लेकर उतरते थे।
- 7 अर्थात् बड़ुत शक्तिशाली है, जो भी काम उस के हवाले किया जाए उसे पूरी शक्ति के साथ करता है।
- 8 अर्थात् अल्लाह के पास वड़े मर्तवा वाला है।
- 9 अर्थात् फ़रिश्तों में उसके आदेश का पालन होता है, वे उसकी ओर आते हैं और उस की बात मानते हैं।
- 10 अर्थात् वर्ष्य के वारे में अमीन और भरोसा के काबिल है।
- 11 साथी में मुराद मुहम्मद का है, उन्हे साथी यह कहने के लिए बताया गया है कि वह तुम्हारे बंधु और नगर के हैं जिन्हें तुम खुब जानते हो, वह लोगों में सब से वड़े बुद्धिमान और पुर्ण हैं, (फिर तुम उन्हें दीवाना क्यों कह रहे हो?) क्या यह स्वयं तुम्हारे पागलापन का सबूत नहीं है?
- 12 अर्थात् मुहम्मद का ने जिन्द्रील को असली रूप में देखा है, उन के ६०० वाजू थे, मुजाहिद कहते हैं कि अल्लाह के रसूल का ने उन्हे अन्याद की ओर जो मक्का के पूरब में है, देखा।
- 13 अर्थात् मुहम्मद का ने जिन्द्रील को असली रूप में देखा है, उन वातों चोरी छूपे सुन लेते हैं, और जिन्हें शिहावे-साकिब से मार मार कर भगाया जाता है।
- 14 अर्थात् मुहम्मद का ने जिन्हें शिहावे-साकिब से मार मार कर वर्ष्य को लोगों को अच्छी तरह बता और सिखा देते हैं।
- 15 अर्थात् यह कुरआन किसी शैतान की बात नहीं, जो आसमान की कुछ बातें चोरी छूपे सुन लेते हैं, और जिन्हें शिहावे-साकिब से मार मार कर भगाया जाता है।
- 16 अर्थात् किस रास्ते पर जा रहे हो, क्या यह उस रास्ते से जिसे हमने तुम से बयान किया अधिक स्पष्ट है?
- 17 अर्थात् फ़रिश्तों के उत्तरने के कारण फट जाएगा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 إِذَا السَّمَاءُ انفَطَرَتْ ١ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ أَنْتَرَتْ ٢ وَإِذَا الْحَارِثُ  
 نَعْرَتْ ٣ وَإِذَا الْقَبُورُ بَعْرَتْ ٤ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ  
 رَأَرَتْ ٥ يَا إِيَّاهَا إِلَانِسْنُ مَا غَرَكَ بِرِبِّكَ الْكَرِيمِ ٦ الَّذِي  
 حَفَّكَ فَسُونَكَ فَعَدَلَكَ ٧ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَبِّكَ  
 كَرِيمًا ٨ لَبَلْ تُكَذِّبُونَ بِاللَّيْلِينَ ٩ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لِحَفْظِينَ ١٠ كَرِيمًا  
 كَيْنَ ١١ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ١٢ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ١٣ وَإِنَّ  
 الْفَجَارَ لَفِي جَحِيرٍ ١٤ يَصْلُوْهَا يَوْمَ الَّذِينَ ١٥ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَافِينَ  
 وَمَا أَذْرَنِكَ مَا يَوْمَ الَّذِينَ ١٦ شَمَّ مَا أَذْرَنِكَ مَا يَوْمَ الَّذِينَ ١٧  
 يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ١٨

سُورَةُ الْمُطَفَّقِينَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 وَإِنَّ لِلْمُطَفَّقِينَ ١ الَّذِينَ إِذَا أَكَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفِونَ  
 وَإِذَا كَأْلُوهُمْ أَوْ زَوْهُمْ يُخْسِرُونَ ٢ أَلَا يَعْلَمُنَ اُولَئِكَ أَنَّهُمْ  
 بَعْشُونَ ٣ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ٤ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ٥

- 6 और जब सितारे झङ्ग जाएंगे।  
 7 और जब सागर वह चलेंगे।  
 8 और जब कब्रें (फाड़कर) उखाड़ दी जाएंगी।  
 9 उस समय प्रत्येक व्यक्ति अपने आगे भेजे हए और पांछे हुए (अर्थात् अगले पिछले कर्मों को) जान लेगा।  
 10 हैं इन्सान! तुझे अपने करीम रव से किसने बहकाया?  
 11 जिस (रव ने) तुझे पैदा किया, फिर ठीक-ठाक किया पिछे (उचित रूप से) बराबर बनाया।  
 12 जिस रूप में तुझे चाहा ढाला।

- 19 अर्थात् विखर-विखर कर गिरने लगेंगे।
- 20 एक कौल यह है कि आपस में मिल कर सब एक हो जाएंगे, या कूट पड़ेंगे जैसे ज्वालामुखी पूटता है, और यह कियामत आने से लगातार होगा, (जैसा कि इस से पहली बाली सुरत में गृज़ा है।)
- 21 अर्थात् उस की मिट्टी पलट दी जाएगी और उम के मुर्दे बाहर आ जाएंगे।
- 22 अर्थात् जो अच्छे और बुरे कर्म उसने आगे भेजा होगा, और जो उन पीछे छोड़े होंगे उनका ज्ञान कर्म-पत्र के विखेरे जाने के समय हो जाएगा।
- 23 अर्थात् फिर किस बीज ने तुझे थोके में डाल दिया कि तूने अपने रखे कर्म इन्कार किया, और एक कौल यह है कि उस के थोके में रखने से मुराद अनुभव उसको माफ किए रहना और उसे अपनी पकड़ में लेने में जल्दी न करना है।
- 24 जिस रव ने तुझे मनी से पैदा किया जब कि तू कुछ नहीं था।
- 25 अर्थात् ऐसा इन्सान बना दिया जो देखता सुनता हो, और अच्छा रखता हो।
- 26 अर्थात् तुझे सीधी कामत और अच्छे रूप का बनाया, और ऐसे को फिट-फाट बनाया।
- 27 अर्थात् अपनी चाहत के अनुसार उसने तेरी जैसी ग़ज़ल थाई।

किसी चीज का अधिकारी न होगा, और सारे आदेश उस दिन अल्लाह के ही होंगे।

## सूरतुल मुताफिकफीन - 83

श्रृं करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

बड़ी बुराई है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए।<sup>1</sup>

कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं, तो पूरा पूरा<sup>9</sup> लेते हैं।

और जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं<sup>10</sup>, तो कम देते हैं।

क्या उन्हें अपने मरने के बाद जीवित हो उठने का विश्वास नहीं है<sup>11</sup>।

उस बड़े भारी दिन के लिए।

जिस दिन सभी लोग सारे जगत के रब के सामने खड़े होंगे।<sup>12</sup>

बे-शक कुकर्मियों का नाम-ए-आ'माल (कर्म पत्र) सिज्जीन में है।<sup>13</sup>

तुझे क्या पता कि सिज्जीन क्या है?<sup>14</sup>

यह तो लिखी हुई किताब है।

उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी दुर्गत है।

जो बदले और दण्ड के दिन को झुठलाते रहे।

उसे केवल वही झुठलाता है, जो सीमा उल्लंघन कर जाने वाला और पापी होता है।<sup>15</sup>

जब उसके सामने हमारी आयते पढ़ी जाती हैं<sup>16</sup>, तो कह देता है कि यह अगले लोगों की कथाएं हैं।<sup>17</sup>

यूँ नहीं!<sup>18</sup> बल्कि उनके दिलों पर उनके कर्म के कारण मारचा चढ़ गया है।<sup>19</sup>

7 अर्थात उस दिन न कोई फैसला कर सकेगा, और न कोई किसी के लिए कुछ कर सकेगा, किसी को कोई अधिकार प्राप्त न होगा सिवाए रख्युल आलमीन के, उस दिन अल्लाह किसी को किसी चीज का मालिक नहीं बनाए गा जैसा कि उस ने दुनिया में बनाया था, सारे अधिकार उसी के हाथ में होंगे।

8 इन्हे अब्बास<sup>14</sup> से रिवायत है कि नवी<sup>15</sup> जब मदीना आए तो मदीना वाले नाप-तौल में बहुत बुरे लोग थे, तो अल्लाह तआला ने यह सूरत उतारी, इस के उत्तरने के बाद उन्होंने अपना नाप-तौल ठीक कर लिया, और इस दस्तेवार से भी वे अच्छे हो गए।

फैसले का अर्थ है नाप-तौल में थोड़ी बहुत कमी करना, कमी-कमी लोगों के पास दो बटखरे होते थे, एक से नाप कर लोगों को देते थे, और दूसरे से लिया करते थे।

9 जब कोई चीज अपने लिए खीरीदते हैं तो पूरा पूरा नाप-तौल कर लेते हैं।

10 और जब कोई चीज दूसरों को नाप या तौल कर देते हैं तो उस नाप या तौल में कमी करते हैं।

11 अर्थात उन डंडी मारने वालों को इसका व्याप नहीं होता कि वे अपनी कब्रों से उठाए जाएं, और जो कुछ कर रहे हैं उन से उस की पृष्ठ-ताछ होगी, क्या उन्हें इस का विश्वास नहीं कि वे इस बारे में सोचें और इस के बुरे परिणाम से डर कर इसे छोड़ दें।

12 अर्थात जिस दिन लोग अपने रब के सामने खड़े होंगे, और उनके आदेश तथा न्याय की प्रतीक्षा करेंगे और अपने बदले या हिसाब का इन्तज़ार कर रहे होंगे, इसमें इस बात का प्रमाण है कि कम नापना बहुत ही भयंकर जुर्म है, क्योंकि इसके द्वारा दूसरों का धन ना-हक खाया जाता है।

13 अर्थात कुकर्मियों के नाम जिन में कम तैनने वाले भी शामिल हैं जहनमियों के रजिस्टर में लिखे होंगे, या वे कैद और तंगी में होंगे।

14 अर्थात यह ऐसी किताब है जिसमें उन के नाम होंगे, एक कौल यह है कि सिज्जीन असल में सिज्जील है जो सिजिल से है, जिसके माध्यमे रजिस्टर और किताब के हैं।

15 अर्थात बदकार और पापी जो सीमा पार किया हुवा हो, ।

16 जो मुहम्मद<sup>15</sup> पर उतारी गई हैं।

17 अर्थात यह पहले लोगों की कथाएं और उनकी अविश्वासनीय बातें हैं जिन्हें उन लोगों ने अपनी किताबों में लिख रखा है।

18 यह सीमा पार करने वाले कुकर्मियों के लिए डंट फटकार है, कि वे ऐसी बुरी बात न कहें और इसे झुठलाने से बचें।

19 अर्थात उनके पाप इतने अधिक होगए हैं कि उसने उनके दिलों को ऐसा

क्लाइन कृत्त अल्फ़ज़ार लिखी थीं वा मान्यता दी गई।  
तरफ़ 11 वैल योमिद लम्कदीन 12 लिन यूक्दुन यूम दिन  
वा मायक्दीब बैह इलाक्ल मूत्ती अशी 13 इल अल्लाल उल्लाल अस्ते  
लाओलीन 14 क्लाइन रान उल क्लुह माक्लुवाय क्लिबुन  
उन रेहम योमिद लम्कदीन 15 क्लाइन लसाल अल्लाल  
हेदा अल्लाल क्लुह यूक्दुन 16 क्लाइन कृत्त अल्फ़ज़ार लिखी थीं  
वा मायक्दीब माउलीन 17 कृत्त तरफ़ 18 यैस्तेद्दे अल्फ़ज़ार  
इल अल्फ़ज़ार लिखी थीं 19 उल अल्फ़ज़ार यैन्त्रून  
वैल अल्फ़ज़ार लिखी थीं 20 उल अल्फ़ज़ार लिखी थीं  
वैल अल्फ़ज़ार लिखी थीं 21 उल अल्फ़ज़ार लिखी थीं  
वैल अल्फ़ज़ार लिखी थीं 22 उल अल्फ़ज़ार लिखी थीं  
वैल अल्फ़ज़ार लिखी थीं 23 उल अल्फ़ज़ार लिखी थीं

9 कमी भी नहीं, बल्कि तुम तो दण्ड और बदले के दिन को झुठलाते हो।<sup>1</sup>

10 बे-शक तूम पर इज्जत वाले रक्षक।

11 लिखने वाले नियुक्त हैं।

12 जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं? <sup>2</sup>

13 बे-शक नेक लोग (जन्मत के ऐशो-आराम और) नेमतों में होंगे।

14 और यकीनन कुकर्मी लोग जहन्नम में होंगे।

15 बदले वाले दिन उसमें जाएंगे।

16 वे उसमें से कभी गायब न हो पाएंगे।<sup>3</sup>

17 तुझे कुछ पता भी है कि बदले का दिन क्या है?

18 मैं फिर (कहता हूँ कि) तुझे क्या पता कि बदले (और दण्ड) का दिन क्या है?

19 (वह है) जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के लिए

उस में तेरा कोई अधिकार नहीं रहा।

1 यह डॉट फटकार है अल्लाह की उस नवाज़िश से धोका खाने पर और उसे उसके कुक्र का माध्यम बनाने पर।

2 अर्थात बदले के दिन का।

3 अल्लाह फरमा रहा है कि तुम बदले के दिन को झुठला रहे हो जब कि अल्लाह के फरिश्ते तुम्हारी निगरानी पर नियुक्त हैं और तुम्हारे सारे कर्म लिख रहे हैं, ताकि कियामत के दिन तुम से उस का हिसाब लिया जा सके।

4 अर्थात बदले का दिन जिसे वे झुठलाया करते थे, उसी दिन उसकी लपट और शोलों में उन्हें जलना पड़ेगा।

5 अर्थात कभी उससे अलग नहीं होंगे, बल्कि सदा उसी में रहेंगे।

6 अर्थात सवाब और बदले का दिन।

१ कभी नहीं, ये लोग उस दिन अपने रब के दर्शन से भी आए मेरे रखे जाएंगे।  
 २ फिर ये लोग निश्चित रूप से जहनम में झोक दिए जाएंगे।  
 ३ किर कह दिया जाएगा यही है वह जिसे तुम झूठलाते रहे।  
 ४ अवश्य अदश्य नेक लागों का नाम-ए-आमाल इल्लीइन में है।  
 ५ तुझे क्या पता कि इल्लीइन क्या है?  
 ६ (वह तो) लिखी हुई किताब है।  
 ७ मुकर्रब फरिश्ते उसके पास उपस्थित होते हैं।  
 ८ यकीनन् नेक लोग बहुत सुख में होंगे।  
 ९ मसहरीयों पर (बैठे) देख रहे होंगे।  
 १० तू उनके चेहरों से ही सुखों की सुखदा को पहचान लेगा।  
 ११ यह लोग अत्यन्त शुद्ध महर लगी शराब पिलाए जाएंगे।  
 १२ जिस पर कस्तूरी की मुहर लगी होगी, आगे बढ़ने वालों को उसी में आगे बढ़ना चाहिए।  
 १३ और उसमें तस्नीम की मिलावट होगी।  
 १४ अर्थात वह जल श्रोत जिसका पानी मुकर्रब लोग पिएंगे।

लिया है। तिमिज़ी ने अबू हुरैरः ﷺ से रिचायत की है वह नवी सल्लल्लाहू अतौहि व सल्लम से रिचायत करते हैं कि आप ने फरमाया कि बन्दा जब पाप करता है तो उसके दिल पर एक काला नक्ता पड़ जाता है, यदि तौबा कर लेता है तो वह कालक मिटा दी जाती है, और यदि तौबा के बजाए पाप पर पाप किए जाता है तो वह कालक बढ़ती रहती है यहाँ तक कि उसके पूरे दिल पर छा जाती है, यही वह ज़ंग है जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में किया है।

१ अर्थात कियामत के दिन उन्हें उनके रब के दीदार से रोक दिया जाएगा, वे उसे नहीं देख सकेंगे जबकि मोमिन उसे देखेंगे। काफिर जिस प्रकार संसार में उसकी तौहीद स्वीकार करने से महरूम थे उसी प्रकार वे कियामत के दिन उस के दीदार से भी महरूम होंगे।

२ अर्थात नरक में डाल दिए जाएंगे जहाँ वे उस की गर्मी चुकेंगे।

३ अर्थात उन के नाम इल्लीइन वालों में लिखे होंगे, और इल्लीइन से मुराद जन्त है या जन्त का ऊपरी भाग है, और अबरार से मुराद नेक लोग हैं।

४ अर्थात ऐ मुहम्मद! आप को क्या पता कि इल्लीइन क्या है? यह तरीका इल्लीइन की शान बढ़ाने के लिए अपनाया गया है।

५ अर्थात जिस किताब में उनके नाम दर्ज हैं वह एक लिखी हुई किताब है।

६ अर्थात उस किताब के पास फरिश्ते उपस्थित रहते हैं, और उसे देखते रहते हैं, और एक कौल यह है कि उसमें जो कुछ दर्ज है कियामत के दिन उस की गवाही देंगे।

७ एक की जमअू है, जिसके अर्थ छप्परखाट और ऐसे सिंहासन के हैं जिसे दुल्हन के लिए तैयार किया जाता है।

८ अर्थात उन उपहारों को देख रहे होंगे जो अल्लाह ने उनके लिए तैयार किए हैं, या अल्लाह की दीदार से अपनी आँखों को खुश कर रहे होंगे।

९ तस्म उन्हें देखते ही यह जान लोगे कि यह लोग वड़ ही आराम में हैं; क्योंकि उनके चेहरे पुर-नूर, खूबसूरत और सुन्दर होंगे।

१० **حَقِيقٌ** साफ सुधरा शराब है, जिसमें किसी खोट की मिलावट न हो, और न कोई ऐसी चीज़ मिली हुई हो जो उसे ख़राब कर दे।

११ अर्थात उसे किसी ने छुवा नहीं होगा, यहाँ तक कि जन्मतियों के लिए ही उस की मुहर तोड़ी जाएगी। और उसकी अन्तिम धूंट कस्तूरी होगी, जब पीने वाला पी कर अपना मुह बर्तन से हटाएगा तो अपनी अन्तिम धूंट से कस्तूरी की खूब्श पाएगा, और एक कौल यह है कि उस शराब के बर्तन पर जो मुहर होगी वह कस्तूरी की होगी।

१२ अर्थात उसकी चाहत रखने वालों को उसकी ओर बढ़ना चाहिए, तनापूस का मायना किसी चीज़ में झगड़ने और उसे अपने लिए चाहने के हैं ताकि दूसरा उसे न पा सके।

१३ अर्थात उस में तस्नीम मिली होगी, और तस्नीम ऐसी शराब है जो जन्मत के ऊपरी भाग से एक चश्मे से बहती हुई आकर उन पर गिरेगी, और जन्मत की सब से अच्छी शराब होगी।

१४ अर्थात तस्नीम ऐसा जल-स्रोत है जिस से मुकर्रब लोग पिएंगे। अबरार नेकोकारों के जाम में उस की मिलानी होगी, जैसे शराब में केवड़ा या

عَلَى الْأَرْضِ إِنْ يُنْظَرُونَ ٢٥ هَلْ تُبَوَّبُ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ

سُورَةُ الْإِنْسَقَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّ اللَّهَ أَنْشَأَتْ ١ وَآذَنَتْ لِرَبَّهَا وَحْمَقَتْ ٢ وَإِذَا الْأَرْضُ مَدَتْ  
 وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَخَلَقَتْ ٣ وَآذَنَتْ لِرَبَّهَا وَحْمَقَتْ ٤ يَتَأْيَهَا  
 إِنَّ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَى رَبِّكَ كَدَحًا فَمُلْقِيَهٗ ٥ فَإِمَامًا مِنْ أُوفَ  
 كِبَّهٗ بِسَعْيِهٗ ٦ فَسَوْفَ يُحَاسِبُ حِسَابًا يَسِيرًا ٧ وَيَنْقَلِبُ  
 إِلَى أَهْلِهِ مَسْرُورًا ٨ وَأَمَامًا أُوفِيَ كِبَّهٗ وَرَاءَ ظَهَرَهُ ٩ فَسَوْفَ  
 يَدْعَوْنَ ١٠ وَبَصَلَ سَعِيرًا ١١ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ١٢  
 بَعْدَ أَشْوَرًا ١٣ وَبَصَلَ سَعِيرًا ١٤ بَلَّ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ١٥ فَلَا أُقْسِمُ  
 إِلَى الشَّفَقِ ١٦ وَأَلَيْلٍ وَمَا وَسَقَ ١٧ وَالْقَمَرِ إِذَا أَسْقَ  
 لَزْكَنَ طَبَقًا عَنْ طَبَقِ ١٨ فَعَمَّ لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ١٩ وَإِذَا فَرَقَ  
 عَلَيْهِمُ الْقُرْمَانُ لَا يَسْجُدُونَ ٢٠ بَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ  
 وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَعْوَنُ ٢١ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابِ الْأَلِيمِ ٢٢  
 إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ٢٣

٢٩ بَلْ-شَكْ بापी लोग ईमान वालों की हँसी उड़ाया करते थे। ١٥

٣٠ और उनके पास से गुज़रते हुए कनखियों से उनका अप्रेमान करते थे। ١٦

٣١ और जब अपनों की ओर लौटते तो दिल लगी करते थे। ١٧

٣٢ और जब उन्हें देखते तो कहते कि यकीनन यह लोग गुमराह हैं। ١٨

٣٣ यह उनपर निगराँ बनाकर तो नहीं भेजे गए। ١٩

٣٤ तो आज ईमान वाले उन काफिरों पर हँसेंगे। ٢٠

٣٥ सिंहासन पर बैठे देख रहे होंगे। ٢١

٣٦ कि अब इंकार करने वालों ने जैसा वे किया करते हैं पूरा पूरा उसका बदला पा लिया।

गुलाब का अर्क (रस) मिलाकर दिया जाता है।

١٥ अर्थात काफिर मोमिनों की हँसी उड़ाया करते थे, और उनकी भिन्नियां कसा करते थे।

١٦ مُتَقَاعِذُونَ غَمْزٌ سे है, जिसका अर्थ है मब्दू और कन्दियों द्वारा इनकरना, अर्थात उन्हें इस्लाम लाने पर शरम दिलाते थे।

١٧ अर्थात जब यह काफिर इन सभाओं से अपने बगे को लौटने तो अपनी छुंटा इतराते और खुश होते हुए और इसान वालों से दिल लगा करते हुए लौटते थे।

١٨ अर्थात यह काफिर मुसलमानों पर अल्लाह की ओर में निगराँ और बल्लावर बनाकर तो नहीं भेजे गए हैं कि उस ने उन्हें इस बात की जिम्मेदारी दी है कि उनकी हालतों और कमी को देखते रहे, और उन पर बोलियां कसते हैं।

١٩ अर्थात उस दिन ईमान वाले उन काफिरों पर जब उन्हें अप्रेमान करते हैं तो हमें देखेंगे जैसे काफिर उन पर समार में लड़ाकते होते हैं।

٢٠ अर्थात ईमान वाले ऐश-व-आराम में सिंहासन पर देखते होते हैं कि इन दुश्मनों को देख रहे होंगे जो अजावे-इलाही में विशेषज्ञ होते हैं।

## सुरतुल इंशेकाक - 84

वरता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 जब आकाश फट जाएगा।  
 और अपने रब के आदेश को सतर्क होकर सुनेगा।  
 और उसी के लायक वह है।  
 और घरती (खींच कर) फैला दी जाएगी।  
 और उसमें जो है उगल देगी और खाली हो जाएगी।  
 और अपने रब के आदेश पर कान लगाएगी। और उसी के लायक वह है।  
 ऐ इन्सान! तू अपने रब से मिलने तक यह कोशिश। और सार काम और मेहनतें करके उससे मुलाकात करने वाला है।  
 तो उस समय जिस व्यक्ति के दाहिने हाथ में नाम-ए-आ'माल (कर्मपत्र) दिया जाएगा।  
 उसका हिसाब तो बड़ी आसानी से लिया जाएगा।  
 और वह अपने परिवार वालों की ओर हँसी खुशी लाएगा।  
 मगर जिस व्यक्ति का नाम-ए-आ'माल उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा।  
 तो वह मृत्यु को बुलाने लगेगा।  
 और भड़कती हुई जहन्नम में<sup>14</sup> प्रवेश करेगा।  
 यह व्यक्ति अपने परिवार वालों (संसार) में प्रसन्न था।  
 उसका विचार था कि अल्लाह की ओर लौटकर ही न जाएगा।  
 यह कैसे हो सकता है।<sup>17</sup> हालांकि उसका रब उसे अच्छी

तरह देख रहा था।<sup>18</sup>

- 16 मुझे सांझ की लालिमा की कसम।<sup>19</sup>
- 17 और रात की, एवं उसकी इकट्ठी की हूँड़ चीज़ों की कसम।<sup>20</sup>
- 18 और पूर्ण चन्द्रमा की कसम।<sup>21</sup>
- 19 अवश्य तुम एक स्थिति से दूसरी स्थिति में पहुँचोगे।<sup>22</sup>
- 20 उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते?<sup>23</sup>
- 21 और जब उनके पास कुरआन पढ़ा जाता है तो सजदा नहीं करते?<sup>24</sup>
- 22 बल्कि जिन्होंने कुफ किया वह झुटला रहे हैं।<sup>25</sup>
- 23 और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है, जो कुछ यह दिलों में रखते हैं।<sup>26</sup>
- 24 उन्हें दर्दनाक अज़ाबों (कष्टदायी यातनाओं) की सूचना सज्जा दो।<sup>27</sup>
- 25 मगर ईमान वालों और नेक लोगों को अनिन्त और खत्म न होने वाला बदला दिया जाएगा।<sup>28</sup>

## सुरतुल बुरुज - 85

शूल करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 बुर्जों वाले<sup>29</sup> आकाश की कसम।  
 वायदा किए हुए दिन की कसम।<sup>30</sup>  
 गवाही देने वाले की<sup>31</sup> और जिसकी गवाही दी गई है<sup>32</sup>  
 उसकी कसम।  
 (कि) खाई वाले मारे गए।<sup>33</sup>

- 1 अर्थात आकाश का फटना कियामत की निशानियों में से है।
- 2 अर्थात उस की बात मानेगा और जो आदेश देगा उसे ध्यान से सुनेगा, और उसके अनुसार कर्म करेगा।
- 3 वह उसी के लायक भी है कि सुने और इत्ताअत करे।
- 4 अर्थात उस पर जो पर्वत वगैरा हैं उन्हें कूट कर बराबर कर दिया जाएगा, और वह एक चट्यल मैदान की तरह हो जाएगी।
- 5 अर्थात उसमें जो मुर्दे दफन थे उन्हें निकाल कर बाहर कर देगी, और उन्हें अल्लाह के हवाले कर देगी, और स्वयं खाली हो जाएगी ताकि उनके बारे में अल्लाह तआला अपना फैसला जारी करे।
- 6 <sup>بِاِيمَانٍ</sup> से इन्सान की जिस्स मुराद है, जिन में काफिर और मोमिन सभी शामिल हैं, अर्थात तेरा सम्पूर्ण प्रयास तुझे तेरे रब की ओर ले जारहा है, और तू खींचा उसी की ओर बढ़ता चला जा रहा है।
- 7 अर्थात् तू अपने अच्छे बुरे कर्मों के साथ अपने रब से जा मिलेगा।
- 8 यह ईमान वाले होंगे जिन्हें उनका कर्म-पत्र उनके दाहिने हाथ में दिया जाएगा।
- 9 उनके पाप उन पर पेश किए जाएंगे और अल्लाह तआला बिना किसी प्रश्न के उन्हें माफ कर देगा, बुखारी तथा मुस्लिम में आइशा<sup>34</sup> से रिखायत है कि नवी<sup>35</sup> ने फरमाया : जिस से हिसाब में कुरेद किया गया तो उसे अज़ाब में धर लिया जाएगा, वह कहती है कि मैं ने कहा क्या अल्लाह यह नहीं फरमा रहा है कि उन से आसान हिसाब लिया जाएगा? तो आप ने फरमाया : यह हिसाब नहीं बल्कि पेशी होगी, और जिस से कियामत के दिन हिसाब में खोद कुरेद किया गया वह अवश्य अज़ाब में धर लिया जाएगा।
- 10 इस से मुराद उसकी जनन्ती विवियां और बड़ी आँखों वाली हूँहें हैं।
- 11 अर्थात् वह अपने सम्मान से खुश होगा।
- 12 क्योंकि उसका दाहिना हाथ उसकी गर्दन से बंधा हुवा होगा और उसका बायां हाथ उसके पीछे होगा, और यह काफिर तथा ना-फर्मान लोग होंगे।
- 13 अर्थात् जब वह अपना कर्म-पत्र पढ़ेगा तो चीखे चिल्लाएगा, शेर मचाएगा कि मैं तो मारा गया, मैं तो हल्लक हो गया।
- 14 अर्थात् जहन्नम की भड़कती हुई आग में जाएगा, और उसकी जलन और गर्मी उसे सहनी पड़ेगी।
- 15 अर्थात् वह चाहत के साथ अपनी इच्छाओं पर डटा रहता था, और परलोक के भयानकपन की उसे कोई परवाह नहीं थी।
- 16 अर्थात् वह यह समझ रहा था कि उसे बदले के लिए अल्लाह की ओर पलटना नहीं है।
- 17 अर्थात् उसे ज़रूर लौटना होगा।

- 18 अर्थात अल्लाह उसे और उसके कर्मों को खूब जानता है, उससे उसकी कोई चीज़ भी छुपी नहीं है, अवश्य वह उसे उसके कुकर्मों की सज्जा देकर रहेगा।
- 19 अल्लाह तआला उस लालिमा की कसम खा रहा है जो आकाश के किनारे सुरज झूलने के बाद इशा के समय तक रहती है।
- 20 अर्थात रात का अंधेरापन जिन चीज़ों को इकट्ठा कर लेती और समेट लेती है, क्योंकि दिन में चीज़ें फैली और बिखरी रहती हैं, रात आते वे सब अपने ठिकाने की ओर सिमट आती हैं।
- 21 जब वह कमरी (चाँद के) मर्हीने के आधे में पूर्ण होजाता है।
- 22 अर्थात एक हालत से दूसरी हालत की ओर जैसे मालदारी और गरीबी, पीत और जीवन, और जन्त या जहन्नम में जाने वगैरा विभिन्न हालतों की ओर।
- 23 अर्थात कुरआन पर ईमान नहीं लाते जबकि ऐसे प्रमाण मौजूद हैं जो उस पर ईमान लाने को वाजिब और लाजिम करार दे रहे हैं।
- 24 कुरआन की तिलावत के समय सजदा करने और आजिज़ी अपनाने से उन्हें कौन सी चीज़ रोक रही है, और एक कौल वह है कि इससे मुराद सज्द-ए-तिलावत है, अर्थात जब उनके सामने सजदे वाली आयत पढ़ी जाती है तो सजदा करने से उन्हें कौन सी चीज़ रोकती है।
- 25 अर्थात कुरआन को झुटलाते हैं जिसमें तौहीद, दोबारा जिन्दा किए जाने, सजा और बदला का चर्चा है।
- 26 अर्थात अल्लाह उनके झुटलाने को जो वे अपने दिल में छुपाए हुए हैं खूब जानता है।
- 27 इसे डांट के रूप में खुश-खबरी कहा गया है।
- 28 अर्थात जो कभी खत्म या कम न होगा।
- 29 बुर्जों से सितारों की मजितें मुराद हैं, यह १२ सितारों की अलग १२ मजितें हैं।
- 30 इससे मुराद कियामत का दिन है जिसका वादा किया गया है।
- 31 शाहिद से मुराद वह सारी मञ्जूक हैं जो उस दिन गवाही देंगे।
- 32 मञ्जूक से मुराद वह भयानक जराएं हैं जिन्हें इन मुजरिमों ने इन्हीं गवाहों के साथ किया होगा जो उनके खिलाफ गवाहियाँ देंगे, और यह गवाह वे सारे लोग होंगे जो अल्लाह के गास्ते में शहीद किए गए होंगे, जैसा कि अस्थावे उखदूद का घटना है जिसका वर्दा आगे आ रहा है।
- 33 अर्थात उन लोगों के लिए हलाकत और बवादी है जिन्होंने अल्लाह पर हिंसा लाने वाले को खन्दकों में डाल कर हलाक कर दिया, और यह एक अल्लाह के जुर्म में गढ़ा खोदवाकर और उसमें आग का अल्लाह लैया करके उसमें ताल लिया था। और राजा और उसके साथी यह मन्त्रज्ञ देख रहे थे।

वह एक आग थी ईधन वाली।  
जबकि वह लोग उसके आस पास बैठे थे।  
और जो मुसलमानों के साथ कर रहे थे कियामत के दिन उसके गवाह होगे।  
वह लोग उन मुसलमानों के किसी अन्य पाप का बदला नहीं तेरहे थे, सिवाय इसके कि वे अल्लाह ग़ालिब, प्रशंसा के लायक की हस्ती पर ईमान लाए थे।  
जिसके लिए आकाशों और धरती का राज्य है, और अल्लाह (तआला) के सामने हर चीज़ है।  
वे-शक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और औरतों को जलाया, फिर क्षमा भी न मौगी, उनके लिए जहन्नम का अज्ञाब है और जलने की यातना है।  
वे-शक ईमान स्वीकार करने वालों और नेक कार्य करने वालों के लिए वे बाग हैं जिनके नीचे नहरे बह रही हैं। यही बड़ी सफलता है।  
यकीननु तेरे रब की पकड़ अधिक कठोर है।  
बही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा जिन्दा करेगा।  
वह बड़ा बख्खने वाला है और अत्यधिक प्रेम करने वाला है।  
अर्थ का मालिक महान है।  
जो चाहे उसे कर देने वाला है।  
तुझे सेनाओं की ख़बर भी मिली है।  
अर्थात फिरौन और समूद की।  
(कुछ नहीं) बल्कि काफिर तो सुठलाने में पड़े हुए हैं।  
और अल्लाह (तआला) भी उन्हें प्रत्येक ओर से घेरे हुए हैं।  
बल्कि यह कुरआन है ही वही बड़ी शान वाला।

- 1 ईधन जिसे जलाया जाता है।
- 2 खन्दक के चारों ओर कुर्सियों पर बैठ कर आग को घेरे में ले रखा था, और ईमान वालों के जलने का तमाशा देख रहे थे।
- 3 अर्थात वह कियामत के दिन स्वयं अपने ही विरुद्ध अपने किए की गवाही देंगे कि उन्होंने ईमान वालों को उन के धर्म से फेरने के लिए आग में डाला था, यह गवाही उनके खिलाफ स्वयं उनकी जुबान और उनके हाथ पर देंगे।
- 4 अर्थात उन मुसलमानों का जुर्म बस इतना ही था कि वह अल्लाह ग़ालिब पर जो प्रत्येक प्रकार की तारीफ के लायक है ईमान ले आए थे, इसके सिवाय उनका कोई दूसरा जुर्म नहीं था।
- 5 अर्थात मोमिनों के साथ जो कुछ उन लोगों ने किया है उसकी गवाही अल्लाह भी देगा, क्योंकि उनके साथ उन लोगों ने जो कुछ भी किया है उसमें से कोई भी चीज़ देगा, इसमें अस्तूरे उखदूद को भयंकर धमकी है, और उन लोगों के उससे छुपी नहीं है, इसमें अस्तूरे उखदूद को भयंकर धमकी है, और उन लोगों के लिए बलाई का बाद है जिन्हे अपने दीन पर जमे रहने के कारण सताया गया।
- 6 काफिरों ने मोमिनों को आग में डाल दिया, इसके सिवाय उन्हें कोई और अधिकार दिया ही नहीं कि वह अल्लाह के साथ कुकुर करते, इस तरह उनके धर्म के बारे में उन्हें आज़माया गया, ताकि वह इस से फिर जाए। उनके धर्म के बारे में उन्हें आज़माया गया, ताकि वह कियामत के दिन भी वही मरने के बाद उन्हें दोबारा जीवित करेगा।
- 7 अपनी इस घटया हक्कत और कुफ्र से तीव्रा भी नहीं की।
- 8 क्योंकि उन्होंने भी ईमान वालों को आग में जलाया था।
- 9 अर्थात अत्याचारियों और सरक्षों के लिए उस की पकड़ बहुत कठोर है।
- 10 अर्थात उसने संसार में सारी म़ज़लिकात को पैदा किया है और कियामत के दिन भी वही मरने के बाद उन्हें दोबारा जीवित करेगा।
- 11 अर्थात वह अपने मोमिन बन्दों के पापों को बहुत बख्खने वाला है, वे उनके पाप के कारण अपमाणित नहीं करेगा।
- 12 अर्थात अपने बलियों से जो इसके फ़र्मावार हैं बहुत प्रेम करने वाला है।
- 13 अर्थात वही महान जर्श का मालिक है।
- 14 अर्थात बहुत ही अश्विशा और करम वाला है।
- 15 अर्थात ऐ मुहम्मद! तुम्हारे पास उस काफिर जत्थे की बात पहुँच चुकी है जो अपने नवायों को सुठलाता था, जिनके पास उन से मुकाबला के लिए कोई जत्था नहीं था, और जत्थों की खबर से मराव उन के अल्लाह की पकड़ में आने का घटना है, अर्थात तुम्हें इस की जानकारी होगई है कि अल्लाह ने उन्हें किस प्रकार पकड़ा।
- 16 बल्कि यह अब वे कुशिक भी उनकी तरह उन चीजों को सुठलाने में लगे हए हैं जिन्हे तुम लेकर आए हो, उनकी घटनाओं से उन लोगों ने कोई नसीहत नहीं पकड़ी।
- 17 अर्थात इस बात की शक्ति रखता है कि उन पर भी वही अज्ञाब भेज दे जो उन से पहले के काफिरों पर भेजा था।

سُورَةُ الْبُرُوجِ  
وَالنَّمَاءُ ذَاتُ الْبُرُوجِ ١ وَالْيَوْمُ الْمَوْعِدُ ٢ وَشَاهِدٌ وَمَسْهُورٌ ٣  
قُتِلَ أَصْحَابُ الْأَخْدُودُ ٤ أَنَارَذَاتُ الْوَقُودُ ٥ إِذْ هُمْ عَلَيْهَا  
نَمُودُ ٦ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شَهُودٌ ٧ وَمَا نَفَعُوا  
بِئْمَمٍ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ٨ الَّذِي لَهُ مُلْكُ  
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ٩ إِنَّ الَّذِينَ  
تَنَوُّ المُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمَ وَلَمْ  
عَذَابُ الْجَنَّةِ ١٠ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ  
جَنَّتٌ تَبَغِرُ إِلَيْهَا الْأَتْهَرُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ١١ إِنَّ بَطْشَ  
رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ١٢ إِنَّهُ هُوَ يَبْدِئُ وَيَعِيدُ ١٣ وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ١٤  
وَالْعَرْشُ الْمَجِيدُ ١٥ فَعَالَ لَمَّا بَرِيدُ ١٦ هَلْ أَنْتَكَ حَدِيثَ الْجَنُودِ  
فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ١٧ بِلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ١٨ وَاللَّهُ مِنْ  
زَرَابِهِمْ مُحِيطٌ ١٩ بَلْ هُوَ قَرْءَانٌ مَحْمِيدٌ ٢٠ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ٢١

سُورَةُ الظَّارِفَةِ  
لَوْحٌ مَحْفُوظٌ (सुराक्षित प्रस्तक) में लिखा हुवा है।

## सूरतुत्तारिक - 86

करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रुम्म करने वाला है।  
कसम है आकाश की और अंधेरे में रौशन होने वाले की।  
तुझे पता भी है कि वह रात को नमूदार (प्रकट) होने वाली चीज़ क्या है?  
वह रौशन सितारा है।  
कोई ऐसा नहीं जिस पर निगहबान (फरिश्ते) न हो।  
इसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से बनाया गया है?  
वह एक उछलते पानी (वीर्य) से पैदा किया गया है।

- 18 अर्थात अनगिनत फ़ज़ल, शरफ़ और बक्तु वाला है, यह कविना, कहानत और जादू नहीं है जैसा कि यह काफिर कह रहे हैं।
- 19 अर्थात लौहे मस्फूज में लिखा हुवा है, और अल्लाह के पास सुराज है, शैतानों की उस तक पहुँच नहीं।
- 20 अल्लाह तआला आकज्ञ की और रात में प्रकट होने वाले मिलारों की सूमन तेर है, मिलारों को तारिक इसलिए कह रहा गया है कि वह रात में निकलता है, और तेर में गुन रहता है, और जो चीज़ रात में निकलता है उन्हें तारिक कहा जाता है।
- 21 निगहबान मिलारा, जिसकी रौशनी इन्हीं लेने हो, लेना वह रात के अंधेरे को सूखी से फ़ाड़ रही हो।
- 22 यह कसम का जवाब है, अर्थात प्रत्येक व्यक्ति पर अल्लाह की ओर पर नियुक्त है, और यह वही निया फ़रिश्ते है, जो इन्हान की लियाँ जो भी अज्ञाइ या बराई करता है उसे लिया कर सरीखत रखते हैं, और
- 23 अर्थात पानी के टोप से, जो तेजी से बच्चायानी में जाकर नियत है, और

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَاوَاتِ الظَّارِفِ ۖ وَمَا ذَرَكَ مَعَ الظَّارِفِ ۗ الْجَمَانُ الْأَقْبَلُ ۖ  
نَفْسٌ لَا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۖ فَلَيَنْظُرِ الْإِنْسَنُ مِمَّ خُلِقَ ۖ خُلُقُ مِنْ مُلْءِ  
دَافِقٍ ۖ يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الْأَصْلَبِ وَالثَّرَابِ ۖ إِنَّهُ عَلَىٰ جَمِيعِ الْقَادِرِ  
يُومَ تَبْلِي السَّرَّايرِ ۖ فَالَّهُ مِنْ فُوقَ وَلَا نَاصِرٌ ۖ وَالسَّمَاوَاتِ الْأَنْلَاعِ  
وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّنْعِ ۖ إِنَّهُ لِقَوْلِ فَصْلٍ ۖ وَمَا هُوَ بِالْمُهَزِّ  
يَكِيدُونَ كَيْدًا ۖ وَأَكِيدُكَيْدًا ۖ فَمَهِلْ الْكُفَّارُنَّ أَمْهِلُهُمْ رِوَاهُ ۖ

شُورَةُ الْأَغْنَىٰ

سَبِّحْ أَسْمَرِيكَ الْأَعْلَىٰ ۖ الَّذِي خَلَقَ فَسَوَىٰ ۖ وَالَّذِي قَدَرَ فَهْدَىٰ  
وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ۖ فَجَعَلَهُمْ غُشَّاءً أَحَوَىٰ ۖ سَفَرَكَ  
فَلَا تَنْسَىٰ ۖ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهَرَ وَمَا يَخْفِيٰ ۖ وَنِسَرَكَ  
لِلْسُّرَىٰ ۖ فَذَكَرَ إِنْ نَفَعَتِ الْذِكْرَىٰ ۖ سَيِّدُكَ مِنْ بَخْشَىٰ  
وَيَنْجِبُهَا الْأَسْفَىٰ ۖ الَّذِي يَصْلِي النَّارَ الْكُبْرَىٰ ۖ شَمْ لَا يَمُوتُ  
فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۖ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَرَكَ ۖ وَذَكَرَ أَسْمَرِيهِ، فَصَلَّىٰ

जो पीठ तथा छारी<sup>1</sup> के बीच से निकलता है।  
वे-शक वह उसे फेर लाने पर अवश्य शक्ति रखने वाला है।<sup>2</sup>  
जिस दिन पोशीदा (गुप्त) भेदों की जाँच पड़ताल होगी।<sup>3</sup>  
तो न कोई जोर चलेगा उसका और न कोई सहायक होगा।<sup>4</sup>  
बारिश वाले<sup>5</sup> आकाश की कसम।  
और फटने वाली<sup>6</sup> धरती की कसम।  
वे-शक यह (कुरआन) अवश्य दो टूक निर्णय करने

वाली<sup>7</sup> कथन है।

यह हँसी की (और व्यर्थ की) बात नहीं।

अल्लाह वे (काफिर) दाँव-धात में हैं।<sup>8</sup>

और मैं भी एक दाव चल रहा हूँ।<sup>9</sup>

त्रु काफिरों को अवसर दे, उन्हें थोड़े दिनों के लिए छोड़ दे।<sup>10</sup>

سُورَةُ الْأَغْنَىٰ - 87

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेर्हबान बहुत रहम करने वाला है।

अपने बहुत बुलन्द रब के नाम की पांकी बयान कर।<sup>11</sup>

जिसने पैदा किया और सही और स्वस्थ बनाया।<sup>12</sup>

और जिसने ठीक-ठाक अनुमान लगाया और फिर रास्ता दिखाया।<sup>13</sup>

और जिसने ताजा धास पैदा की।

फिर उसने उसको (सुखा कर) काला कूड़ा कर दिया।<sup>14</sup>

हम तुझे पढ़ाएंगे,<sup>15</sup> फिर तू न भूलेगा।<sup>16</sup>

मगर जो कुछ अल्लाह चाहे,<sup>17</sup> वह ज़ाहिर और छुपा को जानता है।<sup>18</sup>

हम आप के लिए आसानी पैदा कर देंगे।<sup>19</sup>

तो आप नसीहत करते रहें यदि नसीहत कुछ लाभ दे।<sup>20</sup>

डरने वाला तो नसीहत ले लेगा।

(मगर) दुर्भाग्य पूर्ण उससे दूर रह जाएगा।<sup>21</sup>

जो बड़ी आग में जाएगा।<sup>22</sup>

7 अर्थात् कुरआन ऐसा कलाम है जो सत्य और असत्य के बीच फर्क करता है, और उसे स्पष्ट कर देता है।

8 अर्थात् अल्लाह के रसूल जो दीन लेकर आए हैं उसे विफल करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

9 और मैं भी उन्हें इस तरह ढील देता जारहा हूँ कि उन्हें उसका एहसास नहीं, उन की दाँव का मैं उन्हें कठोर बदला द्यूंगा।

10 अर्थात् उन पर जल्द अजाव लाने की मांग न कर, उन्हें कुछ ढील दें ताकि वह अपनी दुश्मनी और सरकशी में और आगे निकल जाए।

11 प्रत्येक उस चौंज से जो उसकी शान के लायक नहीं "سبحان ربِي" "بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ" कह कर।

12 अर्थात् जिसने इन्सान को सीधे डील-डाल का बनाया, और उसने अंगों में बराबरी रखी और उसे समझ बूझ की नेमत अता की। और उसे मुकल्लफ होने के काविल बनाया।

13 अर्थात् जिसने सारी चीज़ों का अनुमान किया और प्रत्येक व्यक्ति को उस मार्ग पर चलाया जो उन के लिए उचित है।

14 अर्थात् उन्हें सुखा कर सुखा और काला कर दिया, जबकि वह हरे भेरे थे।

15 अर्थात् कुरआन पढ़ाएंगे।

16 अर्थात् आप जो पढ़ाएंगे उसे भूलेंगे नहीं, जिन्द्राइल जब वह्य लेकर आते और अन्तिम आयत तक पढ़ कर अभी फ़ारिश नहीं होते कि नवी इस डर से कि उसे भूल न जाएं पढ़ना शुरू कर देते, तो यह आयत उतरी कि हम आप को ऐसा पढ़ा देंगे कि आप भूलेंगे नहीं, इस प्रकार अल्लाह तालाला ने कुरआन को भूल जाने से आप की हिफाजत की।

17 सिवाय उस के जिसकी अल्लाह आप से मुला देना चाहे।

18 अर्थात् सारी चीज़ों को जानता है, चाहे वह ज़ाहिर हो या ग़ल्त।

19 अर्थात् जन्मत के कर्म को हम आप के लिए आसान कर देंगे।

20 अर्थात् ऐ मुहम्मद! आप लोगों को उन चीजों द्वारा नसीहत कीजिए जो हमने आप की ओर व्यक्त की है, और भलाइ के मार्ग और दीन के अहकाम की ओर उनकी राहबारी कीजिए, और यह उस जगह जहां नसीहत लाभदायक हो, रहा वह व्यक्ति जिसे नसीहत की ज़रूरत नहीं, वह उस अवस्था में जब बोचारा तिचारा दावत दी जा रही हो, और यह पहले पहल दावत दी जा रही हो तो यह सभों को दी जाएगी।

21 अर्थात् आप की नसीहत से वह ज़स्तर लाभ उठाएगा जो अल्लाह से डरता होगा, नसीहत के कारण उस में अल्लाह से डरने और अपनी इस्लाह करने की भावना अधिक बढ़ जाएगी, और इस से वह व्यक्ति लाभ न उठा सकेगा जो अपने कुक्फ पर अड़ा रहेगा, और नसीहत से मुंह मोड़ेगा।

22 अर्थात् बड़ी भयानक आग, बड़ी आग से मुराद जहननम की आग है, और छोटी आग सांसारिक आग है।

(1) जहाँ पिर न वह मर सकेगा । न जिएगा । (बल्कि प्राण निवालने की अवस्था में पड़ा रहेगा) ।  
 (2) वे-शक उसने सफलता प्राप्त कर ली, जो पाक हो गया ।  
 और जिसने अपने रब का नाम याद रखा । और नमाज पढ़ा रहा ।  
 लेकिन तब तो सौभारिक जीवन की तरीक (बेकला) देख हो ।  
 और आधिकार (प्रलय) अत्यन्त सुखद, और स्थाई है ।  
 यह बातें यहाँ किताबों में भी हैं ।  
 (अधीत) इब्राहीम और मूसा की किताबों में ।

## سُرطُلُوْ گاؤشیا - 88

इन कवात हैं अल्लाह के नाम से जो बड़ा महब्बत बहुत रहम करने वाला है ।  
 क्या तज्ज्वल भी छिपा लेने वाली (प्रलय) (कियामत) की  
 सच्चाना पहेंची है ।  
 उस दिन बहुत से बेहरे जलील (अपमानित) होंगे ।  
 (और) भेहनत करने वाले यहके हुए होंगे ।  
 वे दहकती हुई आग में जाएंगे ।  
 और अत्यन्त गम्ब (उबलते हुए ग्रोल) चर्खें<sup>12</sup> का पानी  
 उनको पिलाया जाएगा ।  
 उनके लिए मात्र कॉटिदार दरख्तों<sup>13</sup> (वृक्षों) के अन्य  
 कुछ खाना न होगा ।  
 जो न मोटा करेगा और न मूख मिटाएगा ।  
 बहुत से बेहरे उस दिन प्रसन्न और हरे-भरे होंगे ।  
 अपने कमों के कारण खूब होंगे ।  
 उच्च स्थर्य में होंगे ।  
 जहाँ कोई बेहदा (अल्लील) बात नहीं मुनेंगे ।  
 जहाँ बहता हुआ चश्मा होगा ।  
 (और) उसमें ऊँचे-ऊँचे ताला (सिंडासन) होंगे ।  
 और घाले रखे हुए (होंगे) ।  
 और एक लाइन में रखे हुए तकिए होंगे ।  
 और मध्यमी कालीने बिठ्ठी होंगी ।<sup>17</sup>

- 1 कि जिस अजाब में वह पड़ा है उससे कुटकारा पा जाए ।
- 2 अज्ञात ऐसा जीवन जो उस के लिए लाभ-दायक हो ।
- 3 अज्ञात जिसने जिक्र से पवित्रता अपनाई, और अल्लाह और उसकी  
     बालानीयत पर ईमान ले आया, और उसके आदेश का पालन करता रहा ।
- 4 और अपनी जुलान पर उसके नाम का जिक्र जारी रखा ।
- 5 और फौरी समय की न्यूनत की पावनी की ।
- 6 जहाँ उनमें यह बातें बर्चित हैं ।
- 7 अज्ञात उनमें यह बातें बर्चित हैं ।
- 8 अर्थात् अल्लाह न इब्राहीम और मूसा<sup>14</sup> पर जो किसावें ज्ञाएँ हैं उन में  
     यह बात बर्चित हुई थी कि पर्याप्त संसार के मुकाबले बहुत अधिक जल्द है ।
- 9 जैसे जैसे बर्चित है, और अधिक जैसे जैसे से मुराब कियामत है, अर्थात् ए पूर्णमांडा  
     जाप के पास जियामल की बाल भी बुझी है, उसे छिपा नहीं वाली इसलिए कठा  
     गुरु है कि अपनी कठोरता और भयकरण सारी मञ्जूक के दोष लेगी ।
- 10 लग जियामल के दिन ये दली में बढ़े हुए होंगे, एक दल बालों के बेहरे हुके  
     हुए अल्लानील होंगे, उस अजाब के कारण जिसमें वह डाले जाने वाले होंगे ।
- 11 यह पूरा में अधिक गिरनाल करते थे और अपने आप को यका देते थे,  
     जैसकि वह सब बेकार हो जाएगा और उन्हें उन पर कोई पूछ नहीं पिलेगा,  
     जैसकि वे जिस पूछ और जवाबी में पड़े थे, उस पर हटे हुए थे ।
- 12 अर्थात् ये दलों से जियामल की बहुत गरम होगा ।
- 13 यह एक कॉटिदार बाह की किस्म है, जब वह हरा भरा हो तो कौशंग की  
     जूबान में उसे बरकर कहते हैं और जब मध्य जाए तो जरीबु कहते हैं ।
- 14 अर्थात् यह प्रकार की नैतिकी से प्रसन्न और हरे भरे, और यह इसरे दल के  
     बेहरे होंगे जो जाने वाले के अच्छे परिणाम के देखकर खुशी से खिल होंगे ।
- 15 अपने उस काम के कारण जो दुर्दिनों में उन्होंने किया था यह बहुत होंगे  
     क्षयोंकि उन्हें अपना इतना साधारण मिलेगा जो उन्हें प्रसन्न कर देगा ।
- 16 अर्थात् जाइन में एक दूसरे से ला हाए तकिए होंगे ।
- 17 और सालों दीर्घी दीर्घी, जिनके प्रालूप पाले प्रकार के होंगे, जो सभाओं में बाते और  
     जाह बाते होंगे और जन्मी जहाँ आगम कला बाहेंगे कर सकेंगे ।

فِي تَوْبَرِ الْحَيَاةِ الْمُنْكَرِ وَالْمُنْهَى وَأَبْقَى إِنَّ  
 هَذَا لِكَيْضٍ أَلَّا دَلِيلٌ (١) صَحْدُوفٌ إِبْرَاهِيمَ دَمْوَسَى  
 سُلْطَانُ الْجَاهِيَّةِ (٢)

فَلَمْ يَكُنْ حَدِيثُ الْفَلَشِيَّةِ (٣) وَجْهٌ يَوْمَئِلُ حَسْبَهُ  
 كَوْلَهْ نَاصِبَهْ (٤) تَصْلِيْلَ نَارَ حَمَامِيَّةِ (٥) اَتَسْقَى مِنْ عَيْنِيْ اَنْيَةِ  
 بَسْ هَمْ طَعَامٌ لِلْاَمِنِ ضَرِيعَ (٦) لَا يَسْمَعُ وَلَا يَغْنِي مِنْ جُوعِ (٧)  
 رَبِّهِ يَوْمَئِلُ نَاصِبَهْ (٨) لَسْعِيْهَا رَاضِيَّةِ (٩) فِي جَهَنَّمَ عَالِيَّهُ  
 لَأَتَسْمَعُ فِيهَا لَيْلَيْهُ (١٠) فِيهَا عَيْنُ جَارِيَّهِ (١١) فِيهَا دُورُ مَرْفُوعَةِ (١٢)  
 وَكَوْبَ مَوْضُوعَةِ (١٣) وَمَارِقَ مَصْفُوفَةِ (١٤) وَزَرَابِيْ مَبْشُوهَةِ (١٥)  
 لَا يَنْظَرُونَ إِلَى الْأَبْلِيْلِ كَيْفَ خَوْقَتِ (١٦) وَلَمَّا اَسْهَلَ كَيْفَ  
 رَفَعَتِ (١٧) وَلَمَّا لَجَبَالِيْلِ كَيْفَ نُصْبَتِ (١٨) وَلَمَّا اَرَضَ كَيْفَ  
 سُطَحَتِ (١٩) فَذَكَرَ اِنَّمَا اَنَّ مُذَكَّرِ (٢٠) لَسْتَ عَلَيْهِمْ  
 بِصَيْطَرِ (٢١) اِلَّا مَنْ تَوْلَى وَكَفَرَ (٢٢) فِي عِذَابِهِ اَللَّهُ اَعْذَابُ  
 الْكَبَرِ (٢٣) اِنَّ اِلَيْنَا اِيَّاهُمْ (٢٤) لَمْ اَنْ عَلَيْنَا حِسَابُهُمْ (٢٥)

- 1 क्या ये ऊँटों को नहीं देखते<sup>18</sup> कि वे किस तरह पैदा किया गया ।
- 2 और आकाशों को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया है<sup>19</sup> ?
- 3 और पवरों की ओर, कि किस प्रकार गाढ़ दिए गए हैं<sup>20</sup> ?
- 4 और घरती की ओर, कि किस प्रकार बिछाई गयी है<sup>21</sup> ?
- 5 तो आप नसीहत कर दिया करें<sup>22</sup> (क्योंकि) आप के  
     नसीहत करने वाले हैं ।
- 6 आप कुछ उनपर दारोगा तो नहीं हैं<sup>23</sup> ?
- 7 हाँ, जो व्यक्ति पीट करे और कुक करे<sup>24</sup> ?
- 8 उसे अल्लाह (ताआला) अत्यन्त कठोर अजाब देगा ।<sup>25</sup>
- 9 वे-शक हमारी और उनको लौटना है<sup>26</sup> ?
- 10 फिर वे-शक हमारे जिम्मे हैं उनसे हिसाब लेना<sup>27</sup> ?

- 18 वे अपनी पैदाहश के लिहाज से किनने अरीब, और किस प्रकार ताकतवर और शक्तिमान हैं और कैसे अरीब अरीब उनमें गुण हैं ।
- 19 अर्थात् घरती पर बिना किसी खब्बे के इस प्रकार खड़ा है कि एक अकली से समझ दे बाहर है ।
- 20 अर्थात् इस प्रकार घरती पर मन्त्रियों से गढ़ दिए गए हैं कि वह जानी जा से न दिल सकते हैं, न इतर उत्तर मुक्क सकते हैं, और न हट सकते हैं ।
- 21 अर्थात् ऐसे मुहम्मदी आप उन्हें नसीहत कीजिए और अल्लाह के अजाब से डरा यानना या न मानना उनका काम है ।
- 22 अर्थात् आप की जिम्मेदारी पात्र इतनी है कि आप उन्हें समझ करें, कि आप उन्हें जिम्मे दें ।
- 23 कि आप उन पर ईमान लाने के लिए जोर दें ।
- 24 अर्थात् नसीहत से मृद भोड़ेगा ।
- 25 वह अजाब से पुराद जहन्नम का हमेशी का अजाब है ।
- 26 अर्थात् परने के बाद हमारी ही और फलट कर जाएंगे ।
- 27 अर्थात् कब्रों से उनके उदाएं जाने के बाद तब ही उन का जिम्मा ।

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَاللَّفْجَرِ ۖ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۖ وَالشَّفْعِ وَالْوَافِرِ ۖ وَالْأَيَّلِ إِذَا سَرَّ  
 هُلْ فِي ذَلِكَ قَسْمٌ لِذِي حِجْرٍ ۖ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعِمَاءِ  
 إِرْمَ دَاتِ الْعِمَادِ ۖ أَلَّا لَيَمْخُلَقَ مِثْلُهَا فِي الْإِلَنِدِ  
 وَتَمُودُ الدَّيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۖ وَفَرْعَوْنَ ذِي الْأَوْنَادِ  
 الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْإِلَنِدِ ۖ فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۖ فَصَبَّ  
 عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطًا عَذَابٍ ۖ إِنَّ رَبَّكَ لِيَعْرِصَادَ ۖ فَلَمَّا  
 إِلَانْسَنْ إِذَا مَا أَبْنَلَهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَمَهُ فَيَقُولُ رَبِّيْتُ أَكْرَمَنِ  
 وَأَمَّا إِذَا مَا أَبْنَلَهُ فَقَدْرُ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّيْتُ أَهْتَنِ  
 كَلَّا بَلْ لَا تُكْرُمُونَ الْيَتَمَ ۖ وَلَا تُحَضِّرُونَ عَلَى طَعَامِ  
 الْمُسْكِنِينَ ۖ وَتَأْكُلُونَ الْرِّثَاثَ أَكْلًا لَمَّا  
 وَتَحْبُّونَ الْمَالَ حَاجَمًا ۖ كَلَّا إِذَا دَكَّتِ الْأَرْضُ دَكَّ  
 دَكَّ ۖ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفَّاصَفًا ۖ وَجَاءَ يَوْمَئِيلَ  
 بِجَهَنَّمَ يُوَمِّدُ يَنْذَكَرُ إِلَانْسَنَ وَأَنَّ لَهُ الْذِكْرَى

## سُورَتُوْلُوْلُ فَصْ - 89

करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।

कसम है फज्र की।  
 और दस रातों की।  
 और जोड़े और ताक (सम और विषम) की।  
 और रात की जब वह चलने लगे।  
 क्या उनमें बुद्धिमानों के लिए काफी कसम है?  
 क्या आप ने नहीं देखा कि आपके रब ने आदियों के  
 पाथ किया?  
 स्त्रियों वाले इरम के साथ।  
 जिनके जैसे लोग (अन्य किसी) देशों में पैदा नहीं किए गए?

और उनके कपों का उनके बदला देंगे।

अल्लाह तज़ाला ने फज्र की कसम खाई है इसलिए कि यह दिन से अधेरापन के  
 काम का साध है, पुणिह कठत है इस से मुगद दस जुलहिज्जा की फज्र है।  
 यह जुलहिज्जा के शुरू की दस राते हैं।  
 शफ़्य के मायने हर चीज के जोड़े, और वित्र के मायने बेजोड़ के हैं,  
 और एक कौल यह है कि शफ़्य से मुगद ۹۹ और ۹۲ जुलहिज्जा है  
 और वित्र से मुगद ۹۳ जुलहिज्जा है।

अर्थात जब यह आए, जारी रहे, फिर बली जाए।

के मायना अक्सल है, अर्थात बुद्धिमान को इसकी जानकारी है कि अल्लाह  
 जिन चीजों की कसम खाई है वह इस लायक है कि उनकी कसम खाई जाए।  
 इस आई उसका दुसरा नाम है, और एक कौल यह है कि यह आद कौम  
 के साथ का नाम है, और एक तीसरा कौल यह है कि यह उस जगह का नाम है  
 जहाँ यह आशाव थे, यह दिमक है या अक्खफ का कोई नगर जिसकी विल्हिंगे  
 पर्वतों के तराश करके लम्बे लम्बे खम्बों पर बनाई गई थी।

और समदियों के साथ जिन्होंने घाटियों में बड़े-बड़े  
 पत्तर काटे थे?

और फिऔन के साथ जो खैंटों वाला था?

उन सभों ने नगरों में सिर उठा रखा था।

और बहुत उपद्रव मचा रखा था।

अन्त में तैरे रब ने उन सब पुर अज़ाब का कोड़ा बरसाया।

अवश्य तेरा रब घात में है।

इन्सान (का यह हाल है) कि जब उसका रब उसे

आजमाता है और इज़ज़त और नेमत देता है, तो वह कहने

लगता है कि मेरे रब ने मेरा सम्मान किया।

और जब वह उसकी परीक्षा लेते हुए उसकी रोज़ी को

कम कर देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा

अप्रमाण किया।

ऐसा कभी भी नहीं, बल्कि (बात यह है कि) तुम (ही)

लाग यतीमों (अनाथों) का आदर नहीं करते।

और निधनों को खिलाने की एक-दूसरे को तरीब

(प्रेरणा) नहीं देते।

और (मृतकों की) मीरास समेट-समेट कर खाते हो।

और धन से जी भरकर प्रेम करते हो।

अवश्य जिस समय धरती कूट-कूट कर बिल्कुल

(बराबर) समतल कर दी जाएगी।

और तेरा रब (स्वयं) आ जाएगा। और फरिश्ते सभे

बाध्यकर (पंक्तिबद्ध होकर) आ जाएगा।

और जिस दिन जहन्नम भी लाई जाएगी, उस दिन

<sup>7</sup> अर्थात अपनी इमारतों की मज़बूती में इस जैसा कोई और नगर किसी

देश में बसाया ही नहीं गया।

<sup>8</sup> जो पहाड़ों को तराशते थे, और उन्हे काट कर घर बनाते थे, और

उसमें रहते थे, और उनकी बादी का नाम हिज़ या वादिलकुरा था जो

मदीना से शाम के रास्ते में पड़ता है।

<sup>9</sup> औताद से मुराद अहरामे मिस्त है, जिन्हे फिरओनियों ने बनवाया था, ताकि

उनमें उनकी कब्रें हों, और एक कौतूहल यह है कि ۴۵, ۴۶, ۴۷ से मुराद ऐसे

लक्षकरों वाला है जिसके पास अमगिन्त खेमे थे, जिन्हे वे खूंटों से बांधते थे।

<sup>10</sup> यह आद, समूद और फिरओन की सिफत है, अर्थात उन्हें से प्रत्येक

ने अपने अपने नगरों में उपद्रव मचा रखा था।

<sup>11</sup> अर्थात कुफ़ और पाप करके और अल्लाह के बन्दों पर अत्यधिकर करके।

<sup>12</sup> अर्थात उन पर आकाश से अपना अज़ाब उतार उन्हे हताक कर दिया।

<sup>13</sup> अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के कर्म की नियानी कर रहा है और उसकी ताक में

है ताकि उसकी अच्छाइयों का उसे अच्छा बदला है, और याप पर उसे सत्ता

दे, हसन बसरी कहते हैं कि बन्दों का रास्ता इसी से होकर

आगे बढ़ता है इस से कोई बद्ध कर नहीं जासकता।

<sup>14</sup> अर्थात उसे धन देता है और उस की जीविक बड़ा देता है।

<sup>15</sup> अर्थात जो धन सम्पत्ति उसे मिली है उससे प्रसन्न होकर उसी की

असल समझने लगता है।

<sup>16</sup> अर्थात तंगी में डाल कर उसे आजमाता है।

<sup>17</sup> यह काफिर की सिफत है, रहा मोमिन तो उसके पास असल सम्मान था है

कि अल्लाह उसे अपनी इताउत से नवाज़े, और परलोक के लिए कर्म करने की

तौफीक दे, और उसके पास असल अपमान यह है कि अल्लाह उसे अपनी

इताउत और परलोक के लिए कर्म करने की तौफीक से बहस्तर रहे।

<sup>18</sup> अल्लाह तज़ाला के लिए हुए इस धारा यहि तुम उपकृत आर

करते तो इसके कारण अल्लाह के पास तुम्हारा आदर होता।

<sup>19</sup> अर्थात न तो तुम स्वयं उसकी ओर रुक्खिये हो, और न अपने में एक दुसरे की

उम्रकी प्रेमा और अदेश देने हो, और उसकी रह लियाने हो, इस रक्ता लियाने

तम्हारे बीच लाचार पड़ा रहता है, कोई उसकी सलाह करने वाल नहीं होता।

<sup>20</sup> अर्थात अनाथों विद्यार्थियों और कमज़ोरों के मालों के समेत समेत कर

खूब खा रहे हो।

<sup>21</sup> अर्थात तुम्हारा यह व्यवहार विल्कुल उचित नहीं।

<sup>22</sup> अर्थात झ़ोड़ दी जाएगी और बराबर हिलाई जाएगी, या उसके पासी

को कूट-कूट कर बराबर कर दिया जाएगा।

<sup>23</sup> अपने बन्दों के बीच नियांय करने के लिए लेश या स्वयं आत्मा होती है।

<sup>24</sup> इस प्रकार कि हर हर आकाश के परिवर्ती की सर्वे अल्लाह अल्लाह होती है।

<sup>25</sup> इस अवस्था में कि वह (७० हजार) लगामों से जकड़ी तुड़ होती है।

(हर लगाम के साथ ७० हजार) फरिश्ते उसे बीच रहे होते।

इन्हान को समझ आएगी, पर आज समझने का लाभ कहाँ? वह कहेगा कि काश कि मैंने इस जीवन के लिए, कुछ नहीं का काम) पहले से किया होता। तो आज (अल्लाह) के अजाब जैसा अजाब किसी का न होगा।<sup>1</sup> न उसके बच्चन के जैसा किसी का बन्धन होगा।<sup>2</sup> ऐ हत्थीनान वाली रुह (आत्मा)। त अपने प्रभु की ओर लौट चल, इस तरह कि तू उससे प्रसन्न और वह तुझ से खुश। तो तू मेरे खोस बन्दी में सम्मिलित हो जा।<sup>6</sup> और मेरी जन्मत में चली जा।<sup>6</sup>

## सुरतुल बलद - 90

इस करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।<sup>8</sup> मैं इस नगर की कसम खाता हूँ।<sup>9</sup> और आप इस नगर में मुकीम (ठहरे हुए) हैं।<sup>10</sup> और कसम है इन्सानी बाप और सन्तान की। यधीन हम ने इन्सान को (बड़ी मशक्त) परिश्रम में पैदा किया है।<sup>11</sup> क्या यह विचार करता है कि यह किसी के बस में ही नहीं?<sup>12</sup> कहता (फिरता) है कि मैंने तो अत्यधिक माल खर्च कर डाला।<sup>13</sup> क्या (इस तरह) समझता है कि किसी ने उसे देखा (ही) नहीं?<sup>14</sup> क्या हम ने उसकी दो आँखें नहीं बनायीं? और एक जीभ और दो होंठ (नहीं बनायें)?<sup>15</sup> और उसको दोनों रास्ते दिखा दिए।<sup>16</sup> तो उससे न हो सका कि घाटी में प्रवेश करता।

- अर्थात जिस प्रकार अल्लाह काफिरों को अजाब देगा कोई और नहीं दे सकता।
- और जिस प्रकार वह ज़नीरी और बैड़ियों से जकड़ेगा कोई और नहीं।
- जकड़ सकता, क्योंकि उस दिन सारे अधिकार मात्र उसी के पास होंगे, किसी को उसके सामने पर मारने की हिम्मत न होगी।
- अर्थात ऐसा नफस जो अल्लाह पर और उसकी वहदनियत पर ऐसा विश्वास रखने वाला था, जिसमें कण बराबर भी शंका न था।
- अर्थात उस सवाब से जो तेरे रब ने तुझे दिया है।
- और तू उसके पास पसंदीदा है।
- अर्थात मेरे नेक बन्दी के दल में सम्मिलित होजा।
- उनके साथ (और यह ऐसा सम्मान है जिस से बढ़कर कोई सम्मान नहीं)।
- अर्थात मैं इस हृष्टत वाले नगर की कसम खाता हूँ। यह कसम अल्लाह के पास मका की महानता को स्पष्ट करने के लिए है, क्योंकि इस नगर में काना है, और हम्साईल <sup>जल्दी</sup> और हमारे नवी <sup>जल्दी</sup> का शहर है, और इसी शहर में हज्ज के कर्म पूरे किए जाते हैं।
- अर्थ यह है कि मैं इस नगर की कसम जिसमें आप हैं आप की बड़ाई और आप के रुखे को स्पष्ट करने के लिए खा रहा हूँ। क्योंकि आप के कियाम के कारण यह नगर महान बन गया है।
- अल्लाह तआला बाप और उसकी औलाद की कसम खा रहा है, जैसे आदम की और उनकी नसल से जो सन्तान हुई उसकी, इसी प्रकार जानवरों में से प्रत्येक बाप और उसके औलाद की, यह कसम नसल की अहमियत और अल्लाह की जैक, और उसकी जान पर उसकी ताँबू है और आगाही के लिए है।

अर्थात वह पैदा होने के समय से लेकर बराबर संसार की कठिनाईयों में उलझा रहता है, और उसे बराबरत करता रहता है, यहाँ तक कि वह मर जाता है, फिर मरने के बाद उसे कब्र और बर्ज़ख की कठिनाईयां ज्ञेलनी पड़ती हैं, किर उसे आधिरकी की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

अर्थात क्या इन्हे आदम यह समझता है कि उस पर किसी की शक्ति नहीं बल्कि, और कोई उससे बदला नहीं ले सकता, चाहे वह कितनी भी बराईयां क्यों न करे, यहाँ तक कि उसका खालिक और पालनहार भी।

<sup>17</sup> का अर्थ है बहुत अधिक थन। अर्थ यह कि सांसारिक कामों में दिल खोल कर पैसा खर्च करता है और फिर लोगों से उसका चर्चा करता किरता है।<sup>18</sup> अर्थात क्या वह यह समझता है कि अल्लाह उसे देख नहीं रहा है, और वह उससे उसके घन के बारे में पूछेगा नहीं कि उसने उसे कहाँ से कमाया और कहाँ खर्च किया।

<sup>19</sup> मतलब यह है कि क्या हमने उसे भलाई और बुराई दोनों के रास्ते कूचे मार्ग स्पष्ट होते हैं?

بِوَلِيلَتْنَى قَدَمَتْ لِحَيَاٰٰ فَيُؤمِدُ لَا يَعْذِبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ<sup>٢٥</sup>  
لَا يُونِقُ وَنَاقَهُ أَحَدٌ<sup>٢٦</sup> يَأْتِيهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَةُ<sup>٢٧</sup> أَرْجِعِ  
لَدِيكَ رَأْصِيَهُ مَرْضِيَهُ<sup>٢٨</sup> فَادْخُلِي فِي عَبْدِيٰ<sup>٢٩</sup> وَادْخُلِي جَنَّتِي<sup>٣٠</sup>

## شُورَكُ الْبَلَد

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا قُسْمٌ هَذَا الْبَلَدُ<sup>١</sup> وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ<sup>٢</sup> وَوَالِدٌ وَمَوْلَدٌ  
لَقَدْ خَلَقْنَا إِلَيْسَنَّ فِي كَبِيرٍ<sup>٣</sup> أَيْحَسَبُ أَنَّ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ<sup>٤</sup>  
أَهْلَكْتُ مَالًا لَبَدًا<sup>٥</sup> أَيْحَسَبُ أَنَّ لَمْ يَرُهُ أَحَدٌ<sup>٦</sup>  
أَلْمَجَعَلَهُ، عَيْنَيْنِ<sup>٧</sup> وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ<sup>٨</sup> وَهَدِيَّتِهِ<sup>٩</sup>  
الْجَدِينَ<sup>١٠</sup> فَلَا أَقْنَحْمُ الْعَقَبَةَ<sup>١١</sup> وَمَا أَذْرَنَكَ مَا الْعَقَبَةُ<sup>١٢</sup>  
كُدْرَقِيَّةٌ<sup>١٣</sup> أَوْ إِطْعَنَمُ فِي يَوْمِ ذِي مَسْغَبَةٍ<sup>١٤</sup> يَلِيمًا دَامَقَرَبَةٌ<sup>١٥</sup>  
أَوْ مُسْكِنَادَامَرَبَّةٌ<sup>١٦</sup> شَرَكَانَ مِنَ الَّذِينَ أَمْنَوْا وَتَوَاصَوْا<sup>١٧</sup>  
الصَّبَرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَةَ<sup>١٨</sup> أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ<sup>١٩</sup> وَالَّذِينَ<sup>٢٠</sup>  
كَفَرُوا إِنَّا لَهُمْ أَصْحَابُ الْمَشْمَمَةِ<sup>٢١</sup> عَلَيْهِمْ نَارٌ مَوْصَدَهُ<sup>٢٢</sup>

## شُورَكُ الْمُهْسِنِ

أَوْرُ تُو क्या समझता कि घाटी है क्या?<sup>12</sup> किसी गर्दन (दास-दासी) को आज़ाद (स्वतन्त्र) करना।<sup>13</sup> या भूख वाले दिन <sup>17</sup> खाना खिलाना।<sup>14</sup> किसी रिश्तेदार यतीम <sup>18</sup> को।<sup>15</sup> या भूमि पर पड़े गरीब <sup>19</sup> को।<sup>16</sup> फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाते और लद्दर को सब्र की <sup>20</sup> और दया करने की <sup>21</sup> वसीयत करते हैं।<sup>17</sup> यहीं लोग हैं दाएं हाथ वाले।<sup>18</sup> और जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ किए हैं लोग हैं बाएं हाथ वाले।<sup>22</sup>

16 अर्थात वह क्यों तैयार नहीं रहा, और उसने आपने और अल्लाह की कर्मावर्दारी के बीच नफस के बहकावे और शैतान की पैरवी किसी तुकारा क्यों दूर नहीं की।<sup>17</sup> مسفلة का अर्थ मूक है, और वह योग्य होती है।<sup>18</sup> जिसमें खाने की इच्छा होती है।<sup>19</sup> अर्थात किसी अनाथ को, जिसके बचपने में उम्मे पिल का निर्माण होगा हो, खाना खिलाना।<sup>20</sup> और वह अनाथ उसके रिश्तेदारों में से हो।<sup>21</sup> मुहताजी के कारण मिट्टी से चिपका हुआ है।<sup>22</sup> मुजाहिद करते हैं कि वह उसके पास पहनने के कपड़े भी न हों जिसके द्वारा वह मिट्टी से बच सके।<sup>23</sup> अर्थात अल्लाह की इताजत करने और उसके पास से बचने और ही मार्ग में आने वाली मुसीबतों और कठिनाईयों पर रहने सके।<sup>24</sup> अर्थात अल्लाह के बन्दी पर रहम करने सके।<sup>25</sup> अर्थात जिनके दाएं हाथ में कर्मण कियेगा।

21 अर्थात इसे गरीब निसके पास कुछ भी न हो, ऐसा कि वह उसके पास पहनने के कपड़े भी न हों जिसके द्वारा वह मिट्टी से बच सके।<sup>22</sup> अर्थात अल्लाह के बन्दी पर रहम करने सके।<sup>23</sup> अर्थात जिनके दाएं हाथ में कर्मण कियेगा।

جامعة الملك عبد الله

وَالْمُنْسِ وَضَعْنَا ۝ وَالْفَعْرَ إِذْ أَلْمَنَهَا ۝ وَالنَّهَارُ إِذْ أَطْلَنَهَا  
وَأَتَيْلَ إِذَا يَغْشِنَهَا ۝ وَالسَّاهَرُ وَمَا بَنَهَا ۝ وَالآرْضُ وَمَا طَبَّهَا  
وَنَفْسٌ وَمَا سَوَّهَا ۝ فَأَلْمَهَا هُبُورُهَا وَنَفَوْنَهَا ۝ فَدَّ  
أَفْلَحَ مِنْ زَكْنَهَا ۝ وَقَدْ حَابَ مِنْ دَسَنَهَا ۝ كَدَّتْ لَعْوَدَ  
إِطْعَوْنَهَا ۝ إِذَا أَبْعَثْتَ أَشْفَنَهَا ۝ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ  
نَافَةَ اللَّهِ وَسُقْيَهَا ۝ فَكَذَبُوهُ فَعَفَرُوهَا فَدَمْدَمُ

卷之三

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

۱۰) وَالْأَلِيلُ إِذَا يَغْشَى (۱۰) وَالنَّهَارُ إِذَا جَلَّ (۱۰) وَمَا حَلَّ الذَّكْرُ وَالْأَخْيَرُ  
 ۱۱) إِنْ سَعِيكَ لِشَقَقِ (۱۱) فَامَّا مَنْ أَعْطَنَا وَالْفَقِيرُ (۱۱) وَصَدَقَ بِالْحُسْنَى  
 ۱۲) فَسَيِّسِرْهُ لِلْيُسْرَى (۱۲) وَمَآمَنْ بَعْلَ وَاسْتَغْفَرَ (۱۲) وَكَذَبَ بِالْحُسْنَى  
 ۱۳) فَسَيِّسِرْهُ لِلْعُسْرَى (۱۳) وَمَا يَغْفِي عَنْهُمْ اللَّهُ إِذَا أَرْدَى (۱۳) إِنْ عَلِيْنَا  
 ۱۴) لِهُدَىٰ (۱۴) وَلَانَّ لِلآخرةِ وَالْأُولَى (۱۴) فَانْدِرْتُكُمْ نَارًا تَلْعَنُ

सूरतुश शम्स - 91

करता है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 कसम है सूरज की और उसकी थप की।  
 कसम है चाद की जब उसके पीछे आए।  
 कसम है दिन की जब सूरज को जाहिर करे।  
 कसम है रात की जब उसे ढाँक ले।  
 कसम है आकाश की और उसके बनाने की।  
 कसम है धरती की और उसे हच्चार (समतल) करने की।  
 कसम है नफ्स (आत्मा) की और उसके सुधार करने की।  
 फिर समझ दी उसको पाप की और उससे बचने की।  
 जिसने उसे पाक किया वह सफल हो गया।

अपने का आग चारों ओर से बढ़ जाएगी ताकि कोई उससे बाहर न निकल सके।  
 अब पुराज निकलने के बाद उसके ऊपर घड़ आने का समय, जब  
 यहाँ फैलावी पूरी हो जाती है।  
 अपने पुराज छुबने के बाद जब चौंद निकला।  
 पुराज पैसे बैसे फैलाता जाता है दिन पूरी तरह स्पष्ट होता चला जाता है।  
 निकलने से चारों ओर बिल्डा और फैलाया।  
 फैलने से पैदा किया और आत्मा से उसे जीड़ा, और उसे अनगिन्त  
 शरीरों और सलाहियतों और अनेक प्रकार के अनुभवों से जात किया,  
 और उसे खींच लील-डाल का और फिलत के बमोजिब बनाया, जैसा कि  
 यहाँ मैं हूँ कि हर बस्ता फिलत पर पैदा होता है, फिर उसके माला  
 पिंग और यहाँ या नस्थानी या मधुसी बना देते हैं।  
 अपने इन दोनों के डालात से जात कर दिया, और इन दोनों की  
 अपनाई और बुराई को बता दिया।

- १० और जिसने उसे मिट्टी में मिला दिया वह असफल हवा<sup>9</sup>  
 ११ समृद्धियों ने अपनी उद्घट्टन के कारण झुठलाया।<sup>10</sup>  
 १२ जब उनमें का बड़ा बद्द-बख्त (दर्भग्यशाली) उठ खड़ा हुआ<sup>11</sup>  
 १३ उन्हें अल्लाह के रसूल ने<sup>12</sup> कह दिया था कि अल्लाह (तिंआला)  
 की ऊटनी<sup>13</sup> और उसके पीने की बारी की (सुरक्षा करो)।<sup>14</sup>  
 १४ उन लोगों ने अपने संदेष्टा को झूठा समझ कर उस  
 ऊटनी की कूचे काट दीं, तो उनके खें ने उनके पाप के  
 कारण उन पर हलाकत (विनाश) डाल दिया<sup>15</sup>, और फिर  
 विनाश को आम (आम लोगों के लिए) कर दिया, और उस  
 बस्ती की बगाबर कर दिया।<sup>16</sup>  
 १५ वह निर्भय है इस प्रकार के परिणाम से।<sup>17</sup>

सुरत्रुलू लैल - 92

ग्रन्थ करता है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।  
कसम है रात की जब छा जाए।  
और कसम है दिन की जब रौशन हो जाए।  
और कसम है उस (शक्ति) की जिसने नर-माद <sup>19</sup> पैदा किया।  
अवश्य तुम्हारी कोशिश विभिन्न प्रकार की है।  
तो जो व्यक्ति देता रहा और डरता रहा <sup>20</sup>  
और नेक बातों की तस्वीर (पुष्टि) करता रहा <sup>21</sup>  
तो हम भी उसके लिए सरल रास्ते की आसानी कर देंगे <sup>22</sup>  
मगर जिसने कंजसी की और लापर्वाही बर्ती।  
और नेक बातों को झुटलाया।  
तो हम भी उस पर तंगी और कठिनाई का साधन  
उपलब्ध करा देंगे <sup>23</sup>

<sup>8</sup> अर्थात् जिसने अपने को साफ़ सुधरा किया, उसे बढ़ाया और तक़वां द्वारा उसे ऊँचा किया तो वह अपने हर उद्देश्य में सफल और अपनी प्रत्येक मन-प्रसंद चीज़ को पाने में कामयाब रहा।

९ अर्थात् वह घाटे में रहा जिसने उसे गुप्ताह किया, और सीधे रास्ते से पटकाया, और अल्लाह के पास उसे गुमनाम कर दिया और उसे ताअत और अमले-सालेह के द्वारा शोहरत नहीं दी।

10 ار्थात کامے سمود کو جھुٹالانے پر عنکی ٹھڈنٹا نے عبارا۔ طفیلان  
کا ار्थ پاپ اور سرکشی میں سیما پار کر جانا ہے।  
11 ار्थात جس سमی سمود کا یا سوچی کا سب سے بڑا-بخت یعنی  
خدا ہوا، اسکا نام کیدار بین سالیک یا، اس نے جاکر ڈنی کی  
کوئی کاٹ دی، ابھی کاٹ دی کے انبیع کا ار्थ ہے اس کام کے لیے اپنے آپ کو آگے  
کھڑا پائے جائے کر جاتا۔

<sup>१७</sup> अल्लाह के रसल से पुराद उनके नवी सालिह हैं।

13 अर्थात् अल्लाह की ऊँटनी को छोड़ दे, उससे छेड़-छाड़ न करो, और जमे कोई नवसान न पहुँचाओ, उन्होंने उससे उहे डारया।

14 और उसके पानी के पीने का ख्याल रखना, और उसकी बारी के दिन  
उसे काइ लूँगा ॥

15 अधीत उन्हें हल्क कर दिया और उन पर कठोर अजाव नाजिल किया।

16 फिर धरती उन पर बराबर कर दी और उन्हें मिट्टी के नीचे गाढ़ दिया।

17 अर्थात् उन्हें अज्ञाव देने के कारण अल्लाह को किसी का डर नहीं है।  
 18 अल्लाह ने अपनी मख्तुक में से दोनों जिनसों नर और मादा की कृतम खाई है,  
 जाएँगे यह नर और मादा इस्मानों में से हों या दूसरी मख्तुकत में से।

19 अर्थात् तुमहारे कर्म अलग अलग है कोई जनन के लिए कर्म कर रहा है ऐसे कर्म जननम् के लिए।

20 ह ता कांज जहनान करता।  
अर्थात जिसने नेको के कामों में अपना यह खर्च किया और अलाह  
ने उसी से ऐसा उन से बचा।

21 अपेक्षात् अल्लाह की ओर से मिलने वाले अच्छे की पुष्टि की और उसके गाने  
22 औ गाने पर दिस समाज का उसने बढ़ा किया है उसे सब जाना।

में खर्च करन पर जिस तरीका वह उत्ता करने की विधि है। अल्लाह के 22 तो हम उसके लिए पुण्य के ग्रासे में खर्च करने को, और अल्लाह के लिए अनुकरण को आसान कर देंगे, यह आयतें अबू बक्र सिद्दीक के बारे में उत्तरी हैं, जिन्होंने ६ मीठने मूलाय आजान किए, जो मका के काफिरों में उत्तरी हैं, जिन्होंने ६ मीठने मूलाय आजान किए।

की गुलामी में थे और वे उन्हे कठार यातना पहुंचा रहे थे।  
 23 बराई के काम को अर्थात् कुकुर, गुनाह और नाकर्मणी के काम को हम  
 देखते ही देखते ही भृत्य जाएँगे।

उसके लिए आसान कर दें, यह तक कि नका के द्वारा उनके लिए कठिन हो जाएगी, और अच्छे कामों के करने की तौफीक से वह महसूम होगा, और कुछ और पाप में बहुत धना जाएगा जो उसे जहन्नम में पहुँचा देंगे।

1) और उसका माल<sup>1</sup> उसके (मुख के बल औंधा) गिरते समय कोई काम न आएगा।  
 2) वे-शक रास्ता दिखा देना हमारे जिम्मे है।  
 3) और हमारे ही हाथ में आखिरत (परलोक) और संसार है।  
 4) मैंने तो तुम्हें शोले मारती हुई आग से डरा दिया है।  
 5) जिसमें केवल वही बद-बज्जत (दुर्भाग्यशाली)<sup>6</sup> जाएगा।  
 6) जिसने झुटलाया और (उसके अनुकरण से) मुह़ फेर लिया।  
 7) और उससे ऐसा व्यक्ति दूर रखा जाएगा जो परहेज़गार होगा।  
 8) जो पाकी हासिल करने के लिए अपना माल देता है।  
 9) किसी का उस पर कोई एहसान नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा है।  
 10) बल्कि केवल अपने महान और बर्तर रब की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए।  
 11) यकीनन् वह (अल्लाह भी) जल्द ही राजी हो जाएगा।

## سُورَةُ الدُّخْنِ - 93

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा महब्बन बहुत रहम करने वाला है।  
 कसम है चाश्त (सूर्य के ऊँचे हो जान) के समय की।  
 और कसम है रात की जब छा जाए।  
 न तो तेरे रब ने तुझे छोड़ा है,<sup>15</sup> न बेज़ार (विमुख) हो गया।<sup>16</sup>  
 अवश्य तेरे लिए अन्जाम आगाज़ (अन्त आरम्भ) से बेहतर है।<sup>17</sup>  
 तुझे तेरा रब बहुत जल्द (पुरस्कार) देगा<sup>18</sup> और तू खूश हो जाएगा।  
 क्या उसने तुझे यतीम (अनाथ) पाकर जगह नहीं दी?<sup>19</sup>  
 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

1) अर्थात् उसका धन जिसे उसने अल्लाह के रास्ते में खर्च करने में बख़ीली की थी उसके कुछ भी काम न आएगा।

2) अर्थात् उसके हलाक होने और जहन्नम में मुंह के बल गिरने के समय।

3) अर्थात् हिदायत के रास्ते को गुमाही के रास्ते से स्पष्ट करना हमारे जिम्मे है। फर्मा कहते हैं जो हिदायत के रास्ते पर चलेगा तो हिदायत के रास्ते पर चलाना अल्लाह के जिम्मे है।

4) लोक और परलोक की सारी चीज़ें हमारी हैं, हम जिस तरह चाहते हैं उनमें फेर-बदल करते हैं।

5) शोले भड़काती हुई आग।

6) से मुराद काफिर है, अर्थात् जहन्नम की गर्मी काफिर के लिए ही होगी।  
 7) जिसने उस सत्य को झुटलाया जिसे नवी तथा रसूल लेकर आए, और ईमान के रास्ते से मुह़ मोड़ा।

8) कुफ़ से डरने वाला व्यक्ति उससे दूर रखा जाएगा। वाहिदी कहते हैं कि सारे मुफ़सिसीरन का कहना है कि انصت<sup>21</sup> से मुराद अबू बक्र सिद्दीक है। अर्थात् यह आयत उनके बारे में उतरी है, और इसका हुक्म आम है।

9) अर्थात् वह उसे भलाई के कामों में खर्च करता है और इससे वह अल्लाह के पास पाक होना चाहता है।

10) अर्थात् वह अपने धन का सदका इसलिए नहीं करता कि किसी के किए हुए एहसान का बदला चुकाए।

11) अर्थात् इस महान बदले से जिस से हम उसे जल्द नवाज़े।

12) एक बार नवी<sup>22</sup> बीमार हो गए,<sup>23</sup> दो तीन रात कियाम नहीं कर सके, तो एक औरत आप के पास आई और कहने लगी ऐ मुहम्मद! लगता है कि तेरे शैतान ने तुझे छोड़ दिया है, मैं देख रही हूं कि दो तीन गतों से वह तेरे पास नहीं आया, जिस पर अल्लाह तआला ने यह सूरत नाज़िल फरमाइ।

13) सूरज के ऊपर चढ़ आने के समय का नाम है।

14) असमाइ कहते हैं कि سُوْلَلِل का अर्थ है रात का दिन को ढांप लेना जैसे कपड़े से आदमी को ढांप दिया जाता है।

15) उसने तुझ से अपना नाता नहीं तोड़ा है, जैसे छोड़ कर चले जाने वाला करता है, और न उसने तुझ पर वस्त्र भेजनी ही बन्द की है।

16) और न ही तू उसके पास ना-पसंदीदा है, बल्कि तू उसे बहुत अधिक महबूब है।

17) अर्थात् जन्मते तेरे लिए संसार से उत्तम है, और यह बावजूद उस नुबूवत के शर्फ के जिससे आप को नवाजा गया है।

18) अर्थात् धर्म का गल्बा, सवाब, हैंजे कौसर और उम्मीदी के लिए शिफाअत इत्यादि चीज़े अल्लाह आप को देगा।

19) अर्थात् तुझे अनाथ और बे-सहारा पाया, बाप के प्रेम से भी तू महसूम था, तो उसने तुझे शरण दिया, जहाँ तू पनाह ले सके।

20) अर्थात् न कुरआन के बारे में जानता था, न शरीअत के बारे में, तो उसे माफ कर दिया।

لَا يَصِلُهَا إِلَّا الْأَشْفَى ١٥) الَّذِي كَذَبَ وَتَوْلَى ١٦) وَسِيِّجَنَهَا  
 الْأَنْقَى ١٧) الَّذِي يُؤْتَى مَالَهُ بِيَرْكَى ١٨) وَمَا لِأَحَدٍ عِنْهُ مِنْ  
 بَقِيَّةٍ بَعْرَى ١٩) إِلَّا أَشْغَاءٌ وَجَهَرَهُ الْأَعْلَى ٢٠) وَسُوفَ يَرَضِي

## سُورَةُ الْبَصَرِ

### بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الصَّحْنَ ١) وَالْأَلَيْلِ إِذَا سَجَنَ ٢) مَاوَدَ عَلَكَ رَبُّكَ وَمَا قَاتَ  
 وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لَكَ مِنَ الْأَوَّلِي ٣) وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ  
 فَتَرَضَ ٤) الَّمْ يَعْدُكَ يَتِيمًا فَأَوَى ٥) وَوَجَدَكَ ضَالًّا  
 نَهَدَى ٦) وَوَجَدَكَ عَابِلًا فَاغْفَرَ ٧) فَامَّا الْيَتِيمُ فَلَا فَهَرَّ  
 وَامَّا السَّاَبِلُ فَلَا نَهَرَ ٨) وَامَّا بِنْعَمَةِ رَبِّكَ فَحَدَثَ

## سُورَةُ النَّٰتِرِ

### بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرَّشْحَ لَكَ صَدَرَكَ ١) وَوَضَعَنَا عَنْكَ وَزْرَكَ ٢) الَّذِي  
 الْفَضْلُ ظَهَرَكَ ٣) وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ٤) فَإِنَّمَا مَعَ الْعَسْرِ سِرَّاً ٥) إِنَّ  
 بِالْعَسْرِ سِرَّاً ٦) فَإِذَا فَرَغْتَ فَاقْنَصْ ٧) وَإِلَى رَبِّكَ فَارْغَبْ

और तुझे गरीब पाकर अमीर नहीं बना दिया।  
 तो यतीम पर तू भी कठोरता न किया कर।  
 और न माँगने वाले को डाँट-डपट।  
 और अपने रब की नेपतों (उपकारों) को बयान करता रह।

## سُورَةُ الشَّٰهَدَةِ - 94

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहब्बन बहुत रहम करने वाला है।  
 क्या हम ने तेरे लिए तेरा सीना नहीं खोल दिया?  
 और तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया?  
 जिसने तेरी पीठ तोड़ दी थी।

उसने तुझे उनका मार्ग दिखाया।

21) अर्थात् उसने तुझे गरीब और बाल-बच्चों वाला पाया, तेरे पास नहीं था तो उसने तुझे धन और रोज़ी देकर बे-नियाज कर दिया।

22) अर्थात् उहे कमज़ोर और असहाय पाकर उन से कठोरता से न पेश जा, और उप अत्याचार न कर, और अपनी यतीमी बदल करके उहे उनका हक़ दे दिया कर।

23) अर्थात् मांगने वाले को डाँट-डपट न किया कर, क्योंकि तू भी यह था, तो या तो तू उसे दे दिया कर या नरमी से उसे लौटा दिया कर।

24) इसमें आदेश है कि जो नेमतें अल्लाह तआला ने तुझे दी हैं उने बदल करते और बदले रहा, कर, अल्लाह की नेमतों का बदलन यह कि उन उसका शक्तिया किया जाए, और एक कौल के अनुसार नेमत से कुरुआन है तो उसे पढ़ने और उसे बदलन करने का आदेश दिया यह।

25) अर्थ है कि ऐ मुहम्मद इम्मे ने तेरा सीना नुदुवत करने के दिया, बुनाचि उसी समय से तू दावती जिम्मेदारिया अन्जाम दे रहा है, और बोझ को उठाने और वस्त्र को सुरक्षित रखने पर शक्ति ताला हो रहा है।

26) अर्थ है कि ऐ मुहम्मद इम्मे ने तेरा सीना नुदुवत करने के दिया, बुनाचि उसी समय से तू दावती जिम्मेदारिया अन्जाम दे रहा है, और बोझ को उठाने और वस्त्र को सुरक्षित रखने पर शक्ति ताला हो रहा है।

## شُورَةُ التَّيْنِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالَّذِينَ وَالرَّئِسُونَ ۖ وَطُورِسِينَ ۖ وَهَذَا الْبَلْدُ الْأَمِينُ  
لَقَدْ خَلَقْنَا لِلنَّاسِ فِي الْخَيْرِ ۖ تَقْوِيمٌ ۖ شَعَرَدَنَهُ أَسْفَلَ سَنَفِينَ  
إِلَّا الَّذِينَ مَأْمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ عَيْنُوْنَ  
فَمَا يُكَذِّبُكُمْ بَعْدَ مَا لَدُنْتُمْ ۖ أَتَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَكْمِينَ

## شُورَةُ الْعَكْلِ

أَفْرَا يَأْسِرَ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۖ خَلَقَ الْإِنْسَنَ مِنْ عَلِقٍ ۖ أَفْرَا وَرِبُّكَ  
الْأَكْرَمُ ۖ الَّذِي عَلَمَ بِالْقَلْمَ ۖ عَلَمَ الْإِنْسَنَ مَا لَزِمَ عِلْمَهُ ۖ كَلَّا إِنَّ  
الْإِنْسَنَ لَيَطْعَمُ ۖ أَنَّ رَبَّهُ أَمْسَغَعٌ ۖ يَا إِنَّ رَبِّكَ الرَّجُعُونَ ۖ أَرَدَتْ  
الَّذِي يَنْهَى ۖ أَرَدَتْ إِنْ كَانَ عَلَىٰ هُدًى ۖ أَوْ أَرَدَتْ  
بِالنَّقْوَى ۖ أَرَدَتْ إِنْ كَذَبَ وَنَوَّقَ ۖ لَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَى ۖ كَلَّا إِنَّ  
لَمْ يَنْتَهِ لَنْتَفَعَا بِالنَّاصِيَةِ ۖ نَاصِيَةٌ كَذَبَةٌ حَاطِثَةٌ ۖ فَلَيْسُ نَادِيَهُ  
كَلَّا لَنَطْعَمُهُ وَأَسْجُدُهُ وَأَقْرَبُهُ ۖ سَنَدَعُ الْرَّبَّانِيَةَ ۖ

ओर हमने तेरा चचो बुलंद कर दिया ।  
तो यकीनन् कठिनाई के साथ आसानी है ।  
यकीनन् कठिनाई के साथ आसानी है ।  
तो जब तू खाली हो तो (इबादत में) मेहनत (परिश्रम) कर ।  
और अपने रब की ओर दिल लगा ।

## سُورَتُ التَّوْتُونَ - 95

करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
कसम है इंजीर की ओर जैतून की ।  
और सीनीन के तूर (पर्वत) की ।

<sup>1</sup> अर्थात वह बोझ यदि तेरी पीठ पर लदा रहता तो यह बात सुनी गई होती कि उसने तेरी पीठ लोड दी ।

<sup>2</sup> अर्थात लोक और परलोक दोनों जगहों पर तेरे चर्चे को बुलंद किय, कुछ चीजों का आदेश देकर जिसमें से एक बात यह है कि जब वह भू ।

<sup>3</sup> कहे तो इसी भी कहे, इसी तरह अज्ञान में आप का नाम कुलन्द करने को चिह्नायत कर्माई, और लोगों को आप पर बहुत अधिक दखल पैजने का आदेश दिया ।

<sup>4</sup> अर्थात उस कठिनाई के साथ जिसका अभी चर्चा हुआ एक और आसानी ही है और यह दोनों आसानियां अल्लाह की ओर से हैं ।

<sup>5</sup> अर्थात अपनी नमाज से या तक्बीर से या जिहाद से खाली हो ।

<sup>6</sup> दुआ करने में और अल्लाह से मांगने में लग जा, या इबादत में अपने आप को धका दे ।

<sup>7</sup> अर्थात जहन्स में डाले हुए और जन्म की बाहत रखते हुए उसकी ओर दिल लगा ।

<sup>8</sup> अल्लाह तभाला इन्जीर की जिसे लोग खाते हैं और और जैतून की जिस से तेल निचोड़ते हैं कसम खा रहा है, इन दोनों चीजों से इशारा किसीनीन की धरती की ओर है जो इन्जीर और जैतून खाली धरती है ।

<sup>9</sup> ही सीनीन से वह पर्वत मुराद है जिस पर अल्लाह तभाला ने मूस से

और इस शान्ति वाले नगर की ।  
यकीनन हमने इन्सान को बेहतरीन सूफ<sup>10</sup> में पैदा किया ।  
फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया ।  
लेकिन जो लोग इमान लाये और फिर नेकी के कर्म किये<sup>12</sup>,  
तो उनके लिए ऐसा बदला है। जो कभी समाप्त न होगा<sup>13</sup>,  
तो तुम्हे अब बदले के दिन को झुठलाने पर कौन-सी  
बात आमादा (उत्साहित) करती है<sup>14</sup>।  
क्या अल्लाह (तआला) सारे हाकिमों का हाकिम नहीं है?<sup>15</sup>

## سُورَتُ الرُّتُلُ - 96

करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
अपने रब का नाम लेकर पढ़<sup>16</sup> जिसने पैदा किया है।  
जिसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया।  
तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करम वाला (उदार) है<sup>18</sup>।  
जिसने कलम के द्वारा (इल्म) सिखाया।  
जिसने इन्सान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था<sup>20</sup>,  
वास्तव में इन्सान तो आपे से बाहर हो जाता है<sup>21</sup>।  
इसलिए कि वह अपने आप को बे-पर्वा (निश्चिन्त या धनवान) समझता है।  
अवश्य लौटना तेरे रब की ओर है<sup>22</sup>।

बात की थी, अर्थात तुरे सैना ।

<sup>9</sup> अर्थात मक्का की, इसे बदले अभी कहा गया; क्योंकि वह शानि वाला है, इसमें इन्सान ही नहीं, पूरी तथा पक्षी भी शानि पाते हैं, गोपा कि अल्लाह तभाला इन तीनों चीजों की कसम खा रहा है इसलिए कि यह प्रारम्भ से ही वस्त्र के स्थान है, मूस से और मुम्पद भी पर वस्त्र इन्हीं स्थानों में नाजिल हुई, और तीनों आसमानी किताबें तौरत, इन्जील तथा कुरआन इनी जगहों में उतरी, और हिदायत का प्रकाश यही से निकला ।

<sup>10</sup> अर्थात हम ने उसे लम्बा और सीधा बनाया जो अपनी रोकी को अपने लाघ में सकता है, और उसे जान दिया, बोलने, उपर करने और समझने बुझने की शक्ति थी, और उसे बरती पर हुक्मसूत करने के क्षमित बनाया ।

<sup>11</sup> अर्थात हम ने उसे उम की अन्तिम सीधा को पहचा दिया जिसमें जानानी और शक्ति के बाद बुद्धापा और कमज़ोरी हो जाती है, और एक फैल के अनुसार इन्सान जिसे अल्लाह तभाला भले स्पष्ट में पैदा किया किस्तरार की तेजी गिरावट और पत्ती में बला जाता है कि वह पशुओं से भी अधिक गंगा-गुजर हो जाता है, और उस की हालत सारी मशुकूक से बुरी हो जाती है, और नरक के सब से निचले दरजे में डाल दिया जाता है ।

<sup>12</sup> अर्थात वह नरक में नहीं लौटाए जाते, बल्कि अल्लाह की कुलाय जन्म इस्लामीन की ओर लौटाए जाते हैं ।

<sup>13</sup> अर्थात उनकी नेकी का उहै ऐसा स्वाव मिलता है जिसमें सिलसिला सदा जारी रहेगा, कभी बद्न नहीं होगा ।

<sup>14</sup> अर्थात ऐसे इन्सान! जब तुमने यह जान लिए कि अल्लाह ने तुम्हे भले स्पष्ट में पैदा किया और तुम्हे नरक में भी लौटा सकता है, तो किस तुम्हें दोकान लौटाना न जाने और जन्मा व सज्जा को झुठलाने पर कौन सी बीजु उभार रही है? और तुम क्यों उनका इनकार करता है?

<sup>15</sup> अर्थात न्यायपूर्ण न्याय करने के हिसाब से, क्योंकि उम ने इन्जान को अल्ला स्पष्ट का बनाया, फिर जिसने उसके माल कुक्कु पैदा किया उसे जीवि मूल नरक में डाल दिया, और जो उम पर इस्लाम लाय उसे कुलन्द देते जाते तिन ।

<sup>16</sup> यह सब से पहली वायप है जो नवी भू पर उतरी, अर्थात ऐसे मूल्याद अपने रब के नाम से पहला आरम्भ कीतिए, और एक फैल के अनुसार अपने रब के नाम से सहायता चाहते हुए लौटे ।

<sup>17</sup> जो पहले गलीज पानी के रूप में होता है फिर अल्लाह की कुलाय से खून में बदल जाता है जैसे वह जमे हुए खून का कोई दुक्का ही ।

<sup>18</sup> यह उम के करम का ली कल है कि उम ने तुम्हे यहने की शक्ति से बाबत्रुद इस के तुम अनपढ़ हो ।

<sup>19</sup> अर्थात जिस रब ने इन्जान को कलम द्वारा लिखा लिखा, अल्लाह तभाला इस्लाम की दशत का आरम्भ पैदा और लिखने की दशत और उम की ओर दिल लगाने से की, क्योंकि वह दोनों लोगे बहुत ही नाम-यात्रा है ।

<sup>20</sup> अर्थात उम ने इन्जान को कलम द्वारा ऐसी लेने सीधाई लिखे जानी जानता था ।

<sup>21</sup> अर्थात अपने दान और अपनी शक्ति के कारण उमने आप को लिखा समझ कर उद्घाटता करता है ।

<sup>22</sup> व कि किसी दूसरे की ओर ।

(भला) उसे भी तूने देखा, जो (एक बन्दे को) रोकता है?<sup>1</sup>  
जबकि वह बन्दा नमाज़ अदा करता है?  
भला बताओ तो यदि वह सीधे मार्ग पर हो? <sup>2</sup>  
या परहेजगारी का हुक्म देता हो? <sup>3</sup>  
भला देखो तो यदि यह मुठलाता हो और मुँह फेरता हो? <sup>4</sup> तो  
क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह (तआला) उसे खूब  
देख रहा है! <sup>5</sup>

अवश्य यदि ये नहीं रुका तो हम उसकी पेशानी  
(लिस्ट) के बाल पकड़कर घसीरेंगे। <sup>6</sup>  
ऐसी पेशानी जो झूठी और पापी है! <sup>7</sup>  
यह अपने सभा बालों को बुला ले। <sup>8</sup>  
हम भी नरक के रक्षकों को बुला लेंगे। <sup>9</sup>  
सावधान! उसका कहना कभी भी न मानना और सजदा  
करे और करीब होजा। <sup>10</sup>

सुरत्तुल कद्द - 97

शून्य करता है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 यकीनन हमने उसे<sup>12</sup> कद्र की (शुभ) रात में उतारा।  
 तू क्या समझा कि कद्र की (शुभ) रात क्या है?<sup>13</sup>  
 कद्र की रात एक हजार महीनों से बेहतर (श्रेष्ठ) है।<sup>14</sup>  
 इसमें (प्रत्येक कार्य को पुरा करने के लिए)<sup>15</sup> अपने रब  
 के रहम से फरिश्ते और रूह<sup>16</sup> (जिब्रील) उत्तरत हैं।<sup>17</sup>  
 यह रात सरासर शान्ति की होती है<sup>18</sup>, और फज्र के

१ जो बन्दे को रोकता है उससे मुराद अबू जहल है, और बन्दे से मुराद मुहम्मद है।  
२ अर्थात् मुहम्मद अगरचे सीधे मार्ग पर हो और और अपने मानने वालों को सीधे मार्ग पर ले जारहे हो।  
३ या उसे परहेजनारी अर्थात् इस्लाम, तौहीद और नेकी का आदेश दे रहा हो जिस से नरक से बचा जा सकता हो।  
४ अर्थात् अबू जहल जो रसूल की लाइ हूई चीज़ों को झुठलाता है और इमान से मुहूर फेरता है।  
५ कि अल्लाह उस की सारी बातों को जानता है, और उसे उस के किए की भजा देगा, फिर उसे इस की जुअत कैसे है?  
६ यह उस के लिए डॉट और फटकार है, अर्थात् यदि वह अपनी इस धिनावनी हँक्कत से नहीं स्वता तो हम उस की पेशानी पकड़ कर घरीट कर उसे नरक में डाल देंगे, **بِاسْتَ** का अर्थ ललाट है।  
७ हूठी और पापी पेशानी से मुराद पेशानी वाले का झूठा और पापी होना है।  
८ **لَد्य** का अर्थ सभा है, जिस में लोग बैठते हों, अर्थात् अपने सभा वालों को बुला ले, और एक कैल यह कि अबू जहल ने अल्लाह के रसूल को कहा था कि मुहम्मद तुम मुझे धमकी दें रहे हो तो जबकि इस वादी में भेरे हिमायती, और भेरे सभा वाले सब से अधिक हैं, तो यह आयत उतरी।  
९ अर्थात् परिश्रो को जो बहुत कठोर दिल वाले हैं, वह उसे पकड़ कर नरक में डाल देंगे।

10 अधीत तुर्हे जो वह नमाज से रक्त रहा है तो उस तरह यह चाकवालीपि न मानना, और उसके रोकने की परवाह किए बिना मात्र अल्लाह की सुझी के लिए नमाज पढ़ते रहना।

11 और इत्तात तथा इचावत द्वारा अपने रब की नजदीकी चाहते रहना।

12 अधीत मूर्खान के जो शम राती में लौहे महूज से बैतुल इज्जत में जो कि पहले आज्ञान पर है एक सी बार पूरा उतार दिया गया, और वहाँ से असरत के अनुसार नवीं पर पूरे २३ वर्ष उत्तरता रहा, शब्द कब्द रमज़ान की असरम ३० रातों में से कमें एक रात है, जिस में करुआन उतारा गया।

13 एक या अधी अन्यान्ता और फैसला करने के हैं, इसे कब की रात इसलिए करा गया है कि इसमें अल्लाह परे साल के काम के अन्यान्त और फैसले करता है, और एक कौतूहल के अनुसार कब का अधी महानाना और शर्क है, और इसे कब बाली रात इसलिए करा गया है। [१] यह कब व मन्त्रितात और शब्द बाली रात है।

14 अधीत उस में एक रात की इचावत हजार महीनों (२३ वर्ष ४ महीने) की इचावत से उत्तम है।

15 सारे कामों का पूरा करना चाही है।  
 16 स्वयं से पुराह जिबड़ता चाही है।  
 17 अप्रीत जबकि उसे धरती पर उतारते हैं।  
 18 अप्रीत यह पूरी रात शानि और भलाई वाली है, इस में कोई बुराई नहीं, इसमें हितन न कोई गलत बहम कर सकता है और न किसी को दुख दे

شُوَّدَةُ الْبَيْتَنَةِ

**त्रिलोभ (उदय) होने तक (होती है)।**

## **सूरतुल् बध्यनः - 98**

**शूल करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।**

**अहले किताब के काफिर<sup>19</sup> और मूर्तिपूजक लोग<sup>20</sup> जब तक कि उनके पास स्पष्ट निशानी<sup>21</sup> न आ जाए, रुकने वाले न थे<sup>22</sup> (वह निशानी यह थी कि)।**

**अल्लाह (तआला) का एक रसूल<sup>23</sup>, जो पाक किताबें<sup>24</sup> पढ़े, जिसमें ठीक और उचित आदेश हों।**

**अहले किताब अपने पास जाहिर निशानी आ जाने के**

सकता, और यह सिलसिला फजर के उदय होने तक रहता है, फरिश्तों के दल के दल आकाश से उतरना फजर तक बन्द नहीं होता।  
अर्थात् यहूद और नसारा।

अर्थात् अब के मुश्किलों जो मूर्तियों के पूजारी थे।

अर्थात् अपने कुक से नक्कने वाले नहीं थे, स्पष्ट निशानी से प्राद मुहम्मद  
और कुरुआने मजीद है जिसे लेकर आप आए और आप ने उन की  
गुणाओं को उन पर स्पष्ट किया, और उन्हें ईमान की दावत दी।

अर्थात् मुहम्मद है।

जो हंड-फैट और स्पष्ट है।

24 इस से मुराद आयात और अहकाम हैं जो उनमें लिखी हैं।  
**قیمة سیفیہ مہکم جنیمے** इक से इन्हिराफ़ और टेडापन न हो, जो कुछ  
 उस में हो पूरा का पूरा हवायत और हिक्मत हो, जैसा कि अल्लाह तजील  
 کा फरमान है : **عَدَ اللَّهُ الْمُفْلِحُ عَلَىٰ عِبْدِ الْكِتَابِ وَلِمَ يَحْلِلَ لَهُ عُوْجَا :**  
 "सम्पूर्ण प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिस ने आपने उत्तरी, और  
 उत्तरी पैरवी करे वह सीधे मार्ग पर होगा" ।

جزاؤهم عند ربهم جئت عند نجيري من تحبها الآخرة حلب  
فيها آباء أرضي الله عنهم ورضوا عنه ذلك يعنى حتى ربها

شُوَّدَةُ الْكَلَّ

سِنَةِ رَبِّ الْجَمَادِ إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزاً لَهَا ۖ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَنْفَالَهَا ۗ  
وَقَالَ إِلَيْهِنَّ مَا هَذَا ۖ يَوْمَئِذٍ تُحَدَّثُ أَخْبَارُهَا ۗ  
إِنَّ رَبَّكَ أَوْحَى لَهَا ۖ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْكَالًا ۗ  
لِئَلَّا يَرَوْا أَعْمَلَهُمْ ۖ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا ۗ  
وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۖ

سِوَّدَةُ الْعَادِيَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
وَالْعَدِيْدَ ضَبَّاحاً ١ فَلِلْمُؤْبَدِ قَدْحًا ٢ فَالْمُغَرَّبَ صِبَّاعًا  
فَأَثْرَنَ يَهُ نَقْعًا ٣ فَوَسْطَنَ يَهُ جَمْعًا ٤ إِنَّ الْإِنْسَنَ  
مِنْ يَهُ لَكَنُودٌ ٥ وَإِنَّهُ عَلَى ذَلِكَ لَشَهِيدٌ ٦ وَإِنَّهُ لِحُبٍ  
أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بَعْرَرَ مَا فِي الْقُبُورِ ٧ لَخَيْرٌ لَشَدِيدٌ ٨

ब्रह्म ही (मतभेद में पड़कर) मुतफर्रिक (विभाजित) हो गए।  
 १ उन्हें इसके सिवा कोई आदेश नहीं दिया गया कि केवल  
 अल्लाह की इब्बुदत करें, उसी के लिए धर्म को खालिस  
 (गुण) कर रखें। इब्राहीम हनीफ (एकेश्वरवादी) के धर्म पर,  
 और नमाज को कायम रखें, और ज़कात देते रहें, यही है  
 शैतानी साथी मिलात का।

व-शक जो लोग अहले किताब में से काफिर हए आरम्भिक, वे जहन्नम की आग (में जाएंगे) जहाँ वै हमेशा ये लोग बद-तरीन (तुच्छ) मख्लुक हैं।

व-शक जो लोग ईमान लाये और नेक कार्य किये, ये वेदतरीन (सर्वोच्च श्रेणी) की मख्लुक हैं।

जब उन के बीच इतिहास इस कारण नहीं हुआ कि उन पर हक स्पष्ट नहीं था, लेकिन वह कोई प्रधान कर कुछ लोग इमान ले आए, और कुछ लोगों ने यह देखा, जबकि उन पर एक ही मार्ग को अपनाना लाजिम था। जब उन किसानों में जो उन पर उतरी थी और कुछ अने मजीद में भी। यह जमादात की इवादत को लाजिम पकड़ दें उस के साथ किसी को सहायता न देना। और इवादत को उसी के लिए शुद्ध रखें। अर्थात् सभी लोगों द्वारा।

जब इस कारण ईमान नहीं लाए कि वह इस्माईल की ओलाद में पैदा हुए। अब इस कारण से मध्यकूर्म में सब से बड़े लोग हैं।

**८** उनका बदला<sup>९</sup> उनके रब के पास हमेशगी वाली जन्तुं हैं जिनके नीचे<sup>१०</sup> नहरें वह रही हैं जिनमें वे हमेशा-हमेश रहेंगे।<sup>११</sup> अल्लाह (तआला) उनसे खुश हुआ और वे उससे ये हैं उसके लिये जो अपने रब से डरे।

सूरतुज्जित्याल - 99

श्रृंग करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरांन बहुत रुक्म करने वाला है।  
 जब धरती पूरी तरह झंझोड़ दी जाएगा ।  
 और अपने बीज बाहर निकाल फेंकेगी।  
 और इन्सान कहने लगेगा कि उसे क्या होगया? ।  
 उस दिन धरती अपनी सारी ख़ब्रें बयान कर देगी।  
 इसलिए कि तेरे रब ने उसे आदेश दिया होगा।  
 उस दिन लोग विभिन्न दलों में होकर (वापस) लौटेंगे।  
 ताकि उन्हें उनके कर्म दिखा दिए जाएं।  
 तो जिसने कण के बराबर भी नेकी की होगी वह उसे  
 देरबंद लेगा।  
 और जिसने कण के बराबर भी पाप किया होगा, वह  
 उस देख लेगा।

संस्कृत आदियात-100

प्रेरणा करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
 हाँपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की कसम ।<sup>21</sup>  
 फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की कसम ।<sup>22</sup>  
 फिर सवेरे धावा बोलने वालों की कसम ।<sup>23</sup>  
 तो उस समय धूल उड़ाते हैं ।<sup>24</sup>  
 फिर उसी के साथ सेनाओं के बीच धूस जाते हैं ।<sup>25</sup>

<sup>9</sup> अर्थात् वह जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनका बदला।

**अर्थात् जिन के पेड़ों और महलों के नीचे।**

११ अर्थात् उस से न वह निकाले जाएंगे और न स्वयं छोड़ कर कही जाएंगे, और न ही उन्हें मौत आएगी।

12 अर्थात् पूरी कठोरता के साथ हिला दी जाएगी, और इस तरह वधरयने लेगी कि जो धीज भी उस पर होंगी सब टूट फूट जाएगी, और यह पहली फूंक के समय होगा।

13 अर्थात् जितने मुद्दे और खुजाने उस में दफन हैं सब को निकाल बाहर करेगी, और सारे लोग जिन्दा होकर उठ खड़े होंगे, और यह दूसरी फूंक के समय होगा।

14 अर्थात् वह इसके मामला में हैरान परीक्षण और भयभीत होकर कठेगा :

यह क्यों हिलाई जा रही है और अपने बाज़ निकलत कर फक्त रहा है?  
**15** अर्थात् वह अपनी खबरें बयान करेगी और जो भी पुण्य तथा पाप उस पर किए गए हैं उसे बताएंगी, अल्लाह उसे बोलने की शक्ति दे देगा ताकि वह बन्दों के खिलाफ गवाही दे।  
**16** अर्थात् वह अपनी खबरें अल्लाह की वद्य और उस के इशारे पर बयान करेगी, अल्लाह की ओर से उसे आदेश मिला होगा कि वह उन्हें बयान करे, और जोगे के खिलाफ गवाही दे।

17 अर्थात् अपनी कब्रों से लोग महशर की ओर अनेक दलों में पलटीं, कुछ जोग दाईं ओर से आएं और कुछ बाईं ओर से, इसी प्रकार उन के घर्म

मजहब और कर्म भी विभिन्न होंगे।  
 18 लाइक अल्लाह उन्हें उनके कर्म दिखाए जो उन पर पेश होंगे, और एक

१० ताकि अल्लाह उन्हें वह दिखाए।  
कौल यह है कि उन के कर्म का बदला दिखाए।  
११ ते जिस संस्था में क्रम बरबर  
भी नेकी की होगी वह उसे कियामत के दिन

19 तो जिसने संसार में काँप बराबर ना किया होगा, या उस नेतृत्व की अस्ती आँख में देखेगा।  
 अपने नाम-आमाल पाकर खुश होगा, 20 इसी प्रकार संसार में कोई बुराई की होगी उसे कियामत के दिन अपने नाम-आमाल में पाकर दूर कर देगा, कण उस गर्द व गुवाह को कहते हैं जो सूरज की रोशनी में दिखाई देता है।

जो पूर्ण नहीं है, वह अल्लाह के गति में जिहाद करन के लिए बड़ा-सवारी का  
इस से मुश्यद वह धोड़े हैं जो अल्लाह के गति में जिहाद करन के लिए बड़ा-सवारी का  
लेकर उन काफिर शत्रुओं की ओर दौड़ते हैं, जो अल्लाह और उस के रसूल से दुम्पमी

लकर उन वालों के समय योड़े की सास से निकलन वाला आवाज।  
रखने वाले हैं। **صُبْحٌ** दीड़ने के समय योड़े की सास से निकलन वाला आवाज।  
**22 موربات، الداء** **دَهْر** का अर्थ आग निकालना है, और इसका अर्थ  
से है, जिसका अर्थ आग निकालना है, और इसका अर्थ  
तें तें चिर सी तापों की गऱ्ब से प्रथगों से आग

है टाप मारना, मुराद वह थोड़े हैं जिन का टाप का गड़ स पर्यात स अग निकलती है, जैसे चकमाक के टकराने से आग निकलती है।

23) **میرات، اغارہ** سے ہے، سुوہ کے سامنے ہملا کرنے والی یا بھاٹا کلائن فائٹر  
24) **بیتلز** جسے جیہاد کے سامنے ڈوڈے دشمن کے چہرے پر ڈھاتے ہیں۔  
25) **بیتلز** کے گئی بھائی ہم جانتے ہیں।

२५ जो दोड़ कर दुश्मनों के बाच तुम स जात हो।

अर्थात् इन्सान अपने रब का बड़ा ना-शुक्रा है।  
और निश्चित रूप से वह खुद भी उस पर गवाह है।  
और यह खुर्द के प्रेम में भी बड़ा कठोर है।  
क्या उसे उस समय की जानकारी नहीं, जब कब्रों में जो  
कहा है निकाल दिए जाएंगे।  
और सीनों में छिपी बातों को जाहिर कर दिया जाएगा।  
जैसे जल उनका रब उस दिन उनके हाल से पूरी तरह से  
बाहर (परिवित) होगा।

## सूरतुल कारिया: - 101

इस कल्प हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
खड़खड़ा देने वाली?  
क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?  
नुझे क्या पता कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?  
जिस दिन इन्सान बिखरे हुए पतिंगों जैसे हो जाएंगे।  
और पर्वत धुने हुए रंगीन ऊन जैसे हो जाएंगे।  
फिर जिसके पलड़े भारी होंगे।  
वह तो दिल पसंद आराम की जिन्दगी में होगा।  
और जिसके पलड़े हल्के होंगे।  
उसका ठिकाना 'हाविया' है।  
नुझे क्या पता कि वह क्या है?  
वह बहुत तेज़ भड़कती हुई आग है।

## सूरतुत तकासुर - 102

<sup>1</sup> कहु, كفُور के मायने में है, अर्थात् इन्सान बड़ा ना-शुक्रा है, वह अल्लाह के उपलागों का कदर नहीं करता, और न उनका हक् अदा करता।  
<sup>2</sup> अर्थात् वह अपने विरोध में स्वयं गवाही देता है कि वह बड़ा ना-शुक्रा है, क्योंकि उस के ना-शुक्रे होने का छाप उस पर स्पष्ट होता है।  
<sup>3</sup> खुर से मराद बन है, अर्थात् वह धन से बहुत ही अधिक प्रेम करने वाला, उसको तलब और खोज में दौड़-भाग करने वाला है, और उस के लिए मर मिट्टने वाला है।

<sup>4</sup> अर्थात् कब्रों में जो मुर्दे हैं निकाल कर बाहर फेंक दिए जाएंगे।  
<sup>5</sup> अर्थात् तथा بَنْ के मायने में है, अर्थात् सीने में छुपे भेदों को स्पष्ट कर दिया जाएगा, और खोल दिया जाएगा।  
<sup>6</sup> अर्थात् जो रब उन्हें उनकी कब्रों से निकालेगा, और उनके सीनों के भेदों को स्पष्ट करेगा, उस के बारे में हर व्यक्ति जान सकता है कि वह कितना खबर रखने वाला है, उस पर कोई भी चीज़ छुप नहीं सकती, और न ही उस दिन और उसके अलावा इससे दिनों में उस से कोई चीज़ छुपी रह सकती है, वह उस दिन हर एक को उस के कर्म के अनुसार बदल देगा, तो जब उन्हें इसकी जानकारी हो तो यह उचित नहीं कि वह का प्रेम उन्हें अपने रब के शुक्र और उसकी इवादत से और कियामत के दिन के लिए कर्म करने से उन्हें फेर दें।  
<sup>7</sup> कियामत के नामों में से एक नाम है, इसे कारिअह इसलिए कहा गया है कि यह दिलों को अपनी हीलानकियों से खड़खड़ा देगी, या अल्लाह के दृश्मणों को अन्नाव से खड़खड़ा देगी।

<sup>8</sup> المُفْرِس, जो रैश्नों के चारों ओर मंडलाते हैं। <sup>البَيْثُر</sup> बिखरे हुए। अर्थात् कियामत वाले दिन मारे डर के लोग बिखरे हुए पतिंगों की तरह इधर उत्तर भागते रहिएंगे, यांत्रे तक कि वह मैदान मध्यशर में इकट्ठा कर दिए जाएंगे।  
<sup>9</sup> अर्थात् धून हुए, उन की तरह जो विष्वन रंग के हों, यह हालत उन की इसलिए होंगी कि वह कण-कण लेकर उड़ रहे होंगे, इसके बाद फिर अल्लाह तमाज़ा ने मैदान मध्यशर में हिसाबी-किताब के समय लोगों की स्थिति और उन के दो दलों में बटे होने का इजामाली रूप से वर्चा किया है।

<sup>10</sup> مُؤْزِن, مُؤْذِن की जमाज़ है, इस से मुआद नेक कर्म है, और एक कौला अनुसार यह ميزان की जमाज़ है, तराजू के मायने में जिसमें कर्म तौल जाएंगे, अर्थात् नेकियों के पलड़े बुगाइयों के पलड़ों से छुके हुए होंगे।

<sup>11</sup> अर्थात् परसंदीदा जिसे आदमी परसंद करता हो।

<sup>12</sup> अर्थात् उसका ठिकाना नरक होगा, उसे भी कहा गया है क्योंकि उसी की ओर शरण लेने जैसे दृढ़ पीला चच्चा मां की गोद में शरण लेता है।

<sup>13</sup> उसकी भवंतरपन और कठोर अन्नाव को बताने के लिए है, कि वह इन्सान की सोच से ऊपर है, वह उसकी वास्तविकता तक नहीं पहुंच सकता।

<sup>14</sup> अर्थात् उसकी गर्मी अपनी अन्तिम सीमा की और तेज़ी अपनी इन्तहा को छोड़ दी गी।

وَخَلَقَ مَا فِي الصُّدُورِ إِنَّ رَبَّهُمْ يَوْمَ يَوْمَ يَوْمَ لَخَيْرٍ

شُوَكَّةُ الْقَلْعَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْفَارِعَةُ ۱۰۱ مَا أَفَارِعَةُ ۱۰۲ وَمَا أَدْرَنَكَ مَا أَفَارِعَةُ

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاسِ الْمُبْثُوثِ ۱۰۳

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَأَعْهَنِ الْمَنْفُوشِ ۱۰۴ فَمَا

مَنْ نَقْلَتْ مَوَازِينُهُ ۱۰۵ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ

وَمَآمَانَ حَفَقَتْ مَوَازِينُهُ ۱۰۶ فَأُمَّهُ هَادِيَةٍ

وَمَا أَدْرَنَكَ مَاهِيَةُ ۱۰۷ نَارُ حَامِيَةٍ ۱۰۸

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْهَمْكُمُ الْكَاتِرُ ۱۰۹ حَقَّ زُرْتُمُ الْمَقَابِرُ ۱۱۰ كَلَّا سَوْفَ

تَعْلَمُونَ ۱۱۱ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۱۱۲ كَلَّا لَوْتَعْلَمُونَ

عِلْمَ الْيَقِينِ ۱۱۳ لَرَوْتَ الْجَحِيمَ ۱۱۴ ثُمَّ لَرَوْنَهَا

عِنْ الْيَقِينِ ۱۱۵ ثُمَّ لَتَسْتَلِنَ يَوْمَيْنِ عَنِ التَّعْيِمِ ۱۱۶

शूल करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।

अधिकता की चाहत ने तुम्हें गाफिल (अचेत) कर दिया।

यहाँ तक कि तुम कविस्तान जा पहुंचे।

कभी भी नहीं तुम जल्द ही जान लोगे।

कभी भी नहीं फिर तुम जल्द ही जान लोगे।

कभी भी नहीं यदि तुम निश्चित रूप से जान लो।

तो बे-शक तुम जहन्नम देख लोगे।

और तुम उस विश्वास की आँख से देख लोगे।

फिर उस दिन तुमसे अवश्य-अवश्य नेमतों का प्रश्न होगा।

<sup>9</sup> अर्थात् धन और संतान की अधिकता की चाहत में लगे रहने, उनके अधिकता पर आपस में फवर (गर्व) करने, और एक दूसरे पर गालिव और उनके अधिक से अधिक प्राप्त करने की चाहत ने तुम्हें अल्लाह की इताउत और पलोक के लिए कर्म करने से अचल कर दिया है।

<sup>10</sup> यहाँ तक कि तुम्हें मौत ने आ लिया और तुम उसी गफ्तल में पड़े रहे।

<sup>11</sup> इसमें उनके लिए अधिकता की चाहत में पड़े रहने पर डाट और इस बात के वारंगिंग है कि वह जल्द कियामत के दिन उसके परिणाम से अदगत हो जाए।

<sup>12</sup> अर्थात् तुम जिस गफ्तल में पड़े हुए तो उसके परिणाम की वास्तविक स्थ

तुम्हारे पास है तो यह तुम्हें अधिकता की चाहत और आपस में फवर करने से व्यस्त कर देगा और इस अहम और संगीन मामले में तुम गफ्तल और लापवाही से काम नहीं लोगे।

<sup>13</sup> अर्थात् तुम परलोक में नरक को अपनी आँखों से देखो गे।

<sup>14</sup> अर्थात् तुम नरक को देखो गे, इसी को विश्वास की आँख कर दग।

<sup>15</sup> और इससे जहन्नम को देखना मुश्वर है।

<sup>16</sup> अर्थात् संसार की नेमतों के बारे में जिसने तुम्हें आविष्ट के लिए करने से अचेत कर रखा था, उदाहरण स्वपरूप अल्लाह ने तुम्हें जो स्व

बड़ी खुराकी है उस व्यक्ति की जो त्रुटियाँ टटोलने वाला चगली करने वाला हो।

जो माल को इकट्ठा करता जाए और गिनता जाए,<sup>6</sup>  
वह समझता है कि उसका माल उसके पास हमेशा रहेगा।  
कभी भी नहीं<sup>7</sup> यह तो अवश्य तोड़-फोड़ देने वाली आग में फेंक दिया जाएगा।

और तुझे क्या पता कि ऐसी आग क्या कुछ होगी?  
वह अल्लाह (तभीला) की सुलगायी हुई आग होगी।  
जो दिलों पर चढ़ती चली जाएगी।  
और उन पर बड़े-बड़े खम्बों में<sup>10</sup>, हर ओर से बंद की हुई होगी।

## سُورَةُ الْمُهَاجَرَةِ - 105

इसुर करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
क्या तू ने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों<sup>12</sup> के साथ क्या किया?  
क्या उसने उनके मक्का (दु-प्रयोजन) को अकारथ नहीं कर दिया<sup>13</sup>  
और उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दिए<sup>14</sup>?  
जो उन्हें मिट्टी और पत्थर की कंकरियाँ<sup>15</sup> मार रहे थे।  
तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।

## بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

५ बिल का अर्थ रुसवाई (अपमान), या अजाब, यर बर्बादी है, उस व्यक्ति को कहते जो लोगों के मुंह पर उनकी बुराई करता है, लूरा उस व्यक्ति को कहते हैं जो पीठ पीछे लोगों की बुराई करता है।

६ इसमें गीबत करने का कारण बताया गया है, अर्थात् इकट्ठा किए गए धन के कारण वह स्वयं को सब से उत्तम समझने लगा है, और दूसरे उसे बौने दिखते हैं।

७ अर्थात् वह समझता है कि अपने धन के कारण हमेशा हमेशा जीवित रहेगा कभी मरे गा ही नहीं; क्योंकि वह अपने इकट्ठा किए हुए धन के कारण सख्त किसी की खुद पसंदी में पड़ गया है, और उसका व्यापार इस ओर जाता ही नहीं है कि वह मरने के बाद के बारे में भी कुछ सोच सके।

८ अर्थात् मामला ऐसा नहीं है जैसा वह समझे रहा है बल्कि वह और उसका धन ऐसी आग में फेंक दिए जाएंगे जो हर उस चीज़ को जो उसमें डाली जाएगी तोड़ फोड़ डालेगी।

९ अर्थात् उसकी गर्मी दिलों को पहुँच जाएगी, और पूरे दिल को ढक लेगी, क्योंकि दिल में ही नापाक इरादे, दुर्व चिन्ता और हऱ्सद पाया जाता है।

१० अर्थात् वे लघ्ये खम्बों में बांध दिए गए होंगे, मुकातिल कहते हैं : उन पर दरवाजे बद कर दिए जाएंगे फिर उन्हें लोहे के खम्बों से बांध दिया जाएगा, फिर न कोई दरवाजा खुलेगा और न किसी तरह का आराम उन्हें मिल सकेगा।

११ अर्थात् उसके सारे दरवाजे उन पर बन जाएंगे, वह उससे निकल नहीं सकेगी।

१२ वह हृष्णा के कृष्ण नसरानी थे जो यमन पर हृकूमत कर रहे थे, किर वे कांवा को गिराने के इरादे से निकले, और मक्का पहुँच गए, तो अल्लाह ने उन पक्षियों को भेज जिनका चर्चा इस सूरत में है, उन पक्षियों ने उन्हें हत्याक कर दिया, यह एक चिन्ह था, और यह नवी<sup>१३</sup> की वेसत में ४० साल पहले की बात है, और जिन लोगों ने इस घटने को अपनी आँखों से देखा था उन में बहुत से लोग आप की वेसत के समय भी जीवित थे।

१३ अर्थात् क्या अल्लाह ने उनके मक्का और कांवा को गिराने की प्रवास को अकरत नहीं कर दिया, और उस स्वयं उनकी बर्बादी का कारण नहीं बना दिया?

१४ अर्थात् उन पर पक्षियों के हुन्ड भेज दिए, यह पक्षियाँ कळते रंग की थीं, जो समुन्दर की ओर से दल के दल आई थीं, हर पक्षि के साथ तीन तीन कंकरियाँ थीं, दो उनके दोनों पैरों में और एक उनकी चोच में, जिसे भी यह कंकरियाँ लगाती उसे खाए हुए भूसे की तरह कर देती।

१५ लोगों का कहना है कि यह ऐसी कंकरियाँ थीं जो नरक की आग में पकाई गई थीं, और जिन लोगों को यह लगाती थीं उस पर उनका नाम लिखा होता था, जो चंदे की तरह मसूर से कुछ बड़ी थीं।

१६ तो वह उन्हें खाए हुए भूसे की तरह कर देती थीं, जिसे पश्च पनियाँ खाकर पायाने के रास्ते से निकालता है, और एक कोल यह है कि वह खेत की उन पत्तियों की तरह होगा जिसे जानवरों ने खानिया हो और इन्हें बाकी रह गया हो।

## سُورَةُ الْمُهَاجَرَةِ - 104

## सूरतु कुरैश - 106

इस काल हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।

कुरैश को प्रेम दिलाने के लिए।

(अर्थात्) उन्हें जाड़े और गमी की यात्रा से<sup>1</sup> मानूस करने के लिए।

जो (उसके शुक्रिया में) उन्हें चाहिए कि इसी घर के रब के इवादत करते हैं।

जिसने उन्हें भूख में भोजन दिया<sup>3</sup> और डर (और भय) में अपन और शान्ति दिया।

## सूरतु लू माऊन - 107

इस काल हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।

क्या तूने (उसे भी) देखा जो बदले (के दिन) को छोड़ता है?

यही वह है जो यतीम को धक्के देता है<sup>6</sup>

और निर्धन (भूखे) को खिलाने की तर्जीब नहीं देता।<sup>7</sup>

उन नमाजियों के लिए अफसोस (और वैल नामी जहन्नम की जगह) है।

जो अपनी नमाज से गाफिल हैं<sup>8</sup>

जो दिखावे का कार्य करते हैं।<sup>9</sup>

और प्रयोग में आने वाली चीजें रोकते हैं।<sup>10</sup>

سُورَةُ قُرْيَشٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِلَيْكُمْ رِحْلَةُ الشَّتَاءِ وَالصَّيفِ

فَلَيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ

مَنْ جُوعَ وَأَمْنَهُمْ مِنْ حَوْفِ

سُورَةُ الْمَاعُونَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَرَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْدِينِ

فَذَلِكَ الَّذِي

بَدَعَ الْيَتِيمَ

وَلَا يَحُصُّ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ

فَوْيَلٌ لِلْمُصَلِّيَّكَ

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ

الَّذِينَ هُمْ يَرَاءُونَ

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ

سُورَةُ الْكَوْثَرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَأَنْجُزْ

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْرَؤُ

## سूरतु लू कौसर - 108

श्रू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला।

यकीनन् हम ने तुझे कौसर<sup>11</sup> (और बहुत कुछ) दिया।

तो तू अपने रब के लिए नमाज पढ़ और कुबानी कर।

अवश्य तेरा शत्रु<sup>13</sup> ही लावारिस और बेनाम व निशान है।

## سूरतु लू काफिस्लन - 109

श्रू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला।

आप कह दीजिये कि हे काफिरो!<sup>14</sup>

हिचकिचाते।

<sup>11</sup> कौसर जन्त की एक नहर का नाम है जिसे अल्लाह तजाला रसुलुल्लाह<sup>12</sup> और आप की उम्मत के सम्मान का कारण बनाया है।

<sup>12</sup> इस से मुराद पांचों समय कर्ज नमाजों की अदायगी है, लोग ऐसा करने के लिए नमाज पढ़ते और कुबानीयां करते थे, अल्लाह तजाला ने अनन्दी को आदेश दिया कि आप अपनी नमाज और कुबानी अल्लाह लिए शुद्ध कीजिए, कतादा, अता और इक्मा कहते हैं कि मुराद इन नमाज, और बकर्दूद की कुबानी है।

<sup>13</sup> अवश्य तेरा शत्रु ही ऐसा है कि उसके मरने के बाद उसका कोई नामलेन नहीं रहेगा। ऐसे वक्त के कहते जिसकी कोई नरीना संतान न हो, जब स्मृति

<sup>14</sup> के बेटे की वंशत ही तो कुछ मुश्किल कहने लगे कि इनकी जड़ कट गई तो वे नसल होंगे, तो उसके जबाब में अल्लाह तजाला ने यह सुन उठाया।

<sup>14</sup> इस सूरत का शाने नजूल यह है कि काफिरों ने अल्लाह के रस्ते समने यह मांग रखी कि आप एक साल उनके उपास्तों की पूजा और एक साल वे आप के मावद की इवादत करें, तो उस अल्लाह तजाला ने आप को उन से यह कहने का आदेश दिया।

<sup>1</sup> इस सूरत का नाम सूरए ईलाफ़ भी है।

सूरत मध्ये बार कुरैश का व्यापार के लिए यात्रा होता था, एक यमन की ओर जो सारियों में होता था व्योके वह गरम मुस्क है, दूसरा शाम की ओर जो गरमियों में होता था, क्योके वह ठंडा मुस्क है, कुरैश की गुजरात का माध्यम व्यापार था, यदि यह दोने यत्रा न होते तो उन्हें कोई समान प्राप्त न होता, और यदि वे अपने यात्रान्-ए-काबा के पड़ोस में रहने के कारण सुरक्षित न होते तो यह दोनों यात्रा उन के लिए सम्भव न होता। मक्कद यह है कि यह अल्लाह का उन पर एहसान है कि उसने उन्हें इन दोने यत्राओं से मनस किया, और उन्हें इनके लिए आसान कर दिया, तो इस कारण उन्हें मात्र अल्लाह की ही इवादत करनी चाहिए।

तो अल्लाह तजाला ने उन्हें इस बात से आगाह किया कि वही इस घर का रब है; क्योकि उन्होंने बहुत सी मूर्तियां बना रखी थीं, जिनकी वे पूजा करते थे, तो अल्लाह ने उन से अपने आप को छान्ट कर अलग कर लिया।

अर्थात् उन्हें इन दोने यत्राओं के माध्यम से भोजन दिया, और उन्हें उस मुक्क से मुटुकारा दिया जिस में वे इस से पहले गिरफ्तार थे।

इस से पहले अरबों में हव्या और तुट-पाट साधारण सी बात थी, लोग एक दूसरे को बन्दी बना कर दास बना लिया करते थे, लेकिन कुरैश को इवाद के कारण इस मध्य और डर से सुरक्षित रखा, और उसने उन्हें उन हव्याशियों के भय से भी सुरक्षित कर दिया जो अपने हाथी द्वारा यात्रान्-ए-काबा को ढाने आए थे।

अर्थात् यह किसाब-व-किसाब और बदले के दिन को झटलाने वाले को तुने देखा।

अर्थात् यह तू ध्यान से देखे तो यह वही व्यक्ति है जो अनाथ की धक्के देता है और उस के हक्क को पापाल करता है। जाहिलियत काल के अरब और तो और बच्चों की वरासत में हिस्सा नहीं देते थे।

अर्थात् ऐसे व्यक्ति में वह की ऐसा लालच होती है कि वह फ़कीर को खाना लेकर नहीं खिला सकता, और न ही वह अपने बाल बच्चों और दूसरों को उस पर उमार सकता है।

नमाज से गफ्फल और लापरवाही करने वाले, ऐसे लोग यदि नमाज फ़ूल भी हैं तो उन्हें अपनी नमाजों से पूर्ण की उमीद नहीं होती और यदि छोड़ देने हैं तो उन्हें सज्जा का कोई डर नहीं होता, इस कारण उन्हें इस की कोई फ़ूल नहीं होती वहीं तक कि उसक समय जाता रहता है।

अर्थात् यदि वे नमाज पढ़ते भी हैं तो मात्र दिखावे के लिए पढ़ते हैं, इस तरह जो भी नेहीं के काम वे करते हैं, मात्र दिखावे के लिए करते हैं, ताकि लोग उनकी प्रशंसा करें।

ऐसी चीज को कहते हैं जिसे लोग एक दूसरे से मांग लिया करते हैं, जैसे डोल, और हाँड़ी वैरा, या ऐसी चीज जिसे देने से कोई नहीं रोकता, जैसे पानी, नमक और आग वैरा, और एक कौल यह है कि माऊन से मुराद जकात है, अर्थात् जो कियामत के दिन के बदले पर ईमान नहीं रखते वे ऐसे कन्जूस होते हैं कि उनका जकात नहीं देते सकते, बल्कि ऐसे लोग ऐसी चीजें भी आरियत में नहीं देना चाहते जिसे साधारण लोग देने से नहीं अल्लाह तजाला ने आप को उन से यह कहने का आदेश दिया।

شُورَةُ الْكَافِرُونَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

فَلِيَأْتِهَا الْكَافِرُونَ ۝ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ  
۝ وَلَا أَنْتُ عَبْدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ وَلَا أَنْتَ عَبْدُ مَا عَبَدْتُمْ  
۝ وَلَا أَنْتُ عَبْدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ

شُورَةُ النَّصَارَاءِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
إِذَا جَاءَهُ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَأَيْتَ أَنَّاسَ  
يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۝ فَسَيَّغُ حَمْدِ رَبِّكَ  
وَأَسْتَغْفِرُهُ إِلَيْهِ كَانَ تَوَابًا ۝

شُورَةُ الْمُسْكِنَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
تَبَّأْتَ يَدَآءِي لَهُبِّ وَتَبَّ مَا أَغْنَى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا  
كَسَبَ ۝ سَيَصْلِنَ نَارًا ذَاتَ لَهُ ۝ وَأَمْرَانُهُ  
حَمَالَةُ الْحَطَبِ ۝ فِي جِيدِهَا حَجَلٌ مِنْ مَسِيدِ

ن तो मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम पूजा करते हो।  
और न तुम इबादत करने वाले हों उसकी जिसकी मैं  
इबादत करता हूँ।  
और न मैं इबादत करने वाला हूँ उसकी जिसकी तुमने इबादत की।  
न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी इबादत मैं कर रहा हूँ।  
तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म है और मेरे लिये मेरा धर्म है।

سُورَةُ النَّلَّاَةِ - 110

शूर करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

जब अल्लाह की मदद और विजय प्राप्त हो जाए।  
और त लोगों को अल्लाह के धर्म की ओर झुण्ड के

तो अपने रब की पाकी करने लग प्रशंसा के साथ,  
और उससे माफी की दुआ कर<sup>10</sup>, वे-शक वह बड़ा ही तौवा  
स्वीकार करने वाला है।<sup>11</sup>

سُورَةُ الْنَّلَّاَةِ - 111

शूर करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये और वह (स्वय) नाश हो गया।<sup>12</sup>

न तो उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमाई।<sup>13</sup>

वह जल्द ही भड़कने वाली आग में जाएगा।<sup>14</sup>

और उसकी पत्नी भी (जाएगी), जो लकड़ियाँ ढोने वाली है।<sup>15</sup>

उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुयी रस्सी होगी।<sup>16</sup>

अल्लाह के रसूल ने फर्माया इस में मुझे मेरी मौत की खबर दी गई है।  
अर्थात् ऐ मुहम्मद! जब आप के पास कुरैश के विरुद्ध जिन्होंने आप से दुश्मनी

दुश्मनी कर रखी है अल्लाह की सहायता आजाए और मक्का विजय होजाए।

نस्र से मुराद अल्लाह की मदद है जिससे आपके शत्रु पराजित हो जाएं और आप उन पर गतिविहार हो जाएं। और वह जल्द ही भड़कने वाली आग में जाएगा।

पराजित कर देना तथा उनके घरों में पुस जाना, और उनके दिलों को हक्क स्वीकार करने के लिए खोल देना।

अर्थात् लोगों को अल्लाह के धर्म में झुण्ड के झुण्ड आता देख ले, क्योंकि जब अल्लाह के रसूल ने मक्का फतह किया तो अरब-वासी कहने लगे कि जब मुहम्मद को हरम वालों पर सफलता मिल गई जिन्हे अल्लाह तआला ने हाथी वालों से पनाह दी थी, तो इसका अर्थ यह है कि वह सत्य पर हैं और तुम उन्हें पराजित नहीं कर पाओगे, इसलिए लोग इस्लाम में झुण्ड के झुण्ड

आने लगे, जबकि इस से पहले लोग इस्लाम में इक्का दुका आ रहे थे।

चानंचे पूरे का पूरा कबीला इस्लाम में दाखिल होने लगा।

इसमें अल्लाह की तस्वीह और हम्म दोनों का एक साथ चर्चा है, तस्वीह तस्वीह में इस बात पर तज़ज़ब किया गया है कि अल्लाह ने आप को ऐसी चीजों की तौफीक दी है और उन्हें आप के लिए सरल कर दिया है, जिनके बारे में आप को या दूसरों को गुमान तक न था, और हम्म इस महान एहसान पर है कि अल्लाह ने आप की मदद की, मक्का फतह कराया, और लोगों को झुण्ड के झुण्ड इस्लाम में दाखिल कराया।

अर्थात् आप अल्लाह के सामने जुकते हुए अपने गुनाहों की माफी मांगिए।

क्योंकि वह बड़ा ही तौवा स्वीकार करने वाला है, क्योंकि उसकी शान यही है कि जो भी उससे माफी चाहे उसकी माफी स्वीकार करे। इमाम बुखारी वौरने इन्हें अब्बास से रिवायत की है कि उन्होंने फर्माया : कि इस सूरत में अल्लाह तआला ने अल्लाह के रसूल को आप की मौत की खबर दी है, और कहा है कि जब अल्लाह की सहायता आजाए और मक्का फतह होजाए, तो यह इस बात की निशानी है कि आप की मौत का समय करीब आ चुका है, इसलिए आप अपने रब की तस्वीह में रहें और उससे बद्धिशाली तलब करने में लग जाइए, अबश्य वह बड़ा ही तौवा स्वीकार करने वाला है।

तस्वीह की तस्निया (ख्वीचन) है, मुराद इससे उसकी जान है, अर्थात् जो शाप उसने नवी को दी थी “तुम्हारी हलाकत हो, क्या तुमने हमें इसी लिए इकट्ठा किया था” कह कर, उलट कर स्वयं उसी पर आएगी और वही नष्ट होगा। अबू लहब नवी का चचा था, और उसका नाम अब्बुलज़ज़ा था।

अर्थात् जो बर्बादी उसे आई उसे न तो उसका इकट्ठा किया हुआ माल उससे दूर कर सका, न उसकी सरवारी और न ही उसका सम्मान।

जल्द ही वह भड़कती हुई आग में जाएगा जो उसकी बमड़ी जला देगी, जो कि जहननम की आग है।

और उसके साथ उसकी पत्नी भी उस भड़कती हुई आग में जाएगी, और वह अबू सुफ्यान की बहन उसे जमील बिन्ने हर्ब है जो कि कांटे-दार झाड़ ढो ढो कर लाती और रात में आपके गरस्ते में डाल दिया करती थी।

उस पत्नी को कहते हैं जिस से रस्सी बटी जाती है, उसके पास एक कीमती हार था, उसने कहा कि लात और उन्जा की कसम मैं इसे मुहम्मद की दुश्मनी पर खर्च कर दूंगी तो कियामत के दिन उसकी सजा यही होगी कि उस हार की जगह उसकी गर्दन में यह रस्सी होगी।

अर्थात् जिन दुनों की इबादत का तुम प्रस्ताव रख रहे हो मैं उनकी इबादत

और न तुम जब तक अपने शिर्क और कुफ्र पर कायम रहोगे उस

अल्लाह की इबादत करने वाले होगे जिस की इबादत मैं करता हूँ।

अब्बास मैं भविष्य में भी तुम्हारे उन उपास्यों की पूजा नहीं कर सकता जिन

मैं तुम पूजा करते हो।

अर्थात् तुम अपनी भविष्य काल में जब तक अपने कुफ्र और शिर्क पर

अब्बास गोरे अल्लाह की इबादत नहीं कर सकते, क्योंकि यदि तुम इबादत

करोगे तो वह स्वीकार नहीं होगी। और एक कौल यह है कि इन आयतों में

तकाल है जिसका उद्देश्य काफिरों के दिलों से इस प्रम को निकाल बाहर

करना है कि आप उन की मांग मान लेंगे।

अर्थात् यदि तुम अपने धर्म से प्रसन्न हो जो कि शिर्क, और महान पाप है,

और उसे नहीं छोड़ सकते, तो मैं भी अपने धर्म से प्रसन्न हूँ, जो कि

“अल्लाह” की इबादत है, और भला मैं इसे कैसे छोड़ दूँ।

अब्बास सत्य इश्वर “अल्लाह” की इबादत है, और भला मैं इसे कैसे छोड़ दूँ।

इस सूरत को सुरते-तीर्ती अू भी कहते हैं, अहमद और इन्हे जरीर ने

अब्बास से रिवायत किया है कि जब यह सूरत नाजिल हुई तो

## सूरतुल इख्लास - 112

कला हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक (ही) है।  
 अल्लाह (क्षणात्ता) वे-नियाज है। (किसी के अधीन नहीं  
 उसके अधीन है।)  
 ग उससे कोई पैदा हुवा और न वह किसी से पैदा हुवा।  
 और न कोई उसका हमसर (समकक्ष) है।

## सूरतुल फलक - 113

कला हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 आप कह दीजिये कि मैं सद्वेर के रब की शरण में आता हूँ।  
 भयेक उस चीज की बुराई से जो उसने पैदा की है।  
 और अद्वैती गत की बुराई से, जब उसका अंधकार फैल जाए।  
 और गौठ (तग) कर उन में पूँछने वालियों की बुराई से (भी)  
 और हस्त करने वाले की बुराई से भी जब वह हस्त करे।

## सूरतुन्नास - 114

कला हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रब की शरण में आता हूँ।  
 लोगों के मालिक की। (और)

<sup>1</sup> उै दिन कउब ने रियात है कि मुशिरकों ने नवी क्ल से कहा : ऐ  
 मुश्यात् तुम अल्लाहे रब का नसब बयान करो, तो वह सूरत नाजिल है। इस  
 शब्दे नुहून की रैखी में इसका अर्थ यह हुवा कि यदि तुम उसके नसब की  
 नफ़्तत् बालने हो तो जान लो कि वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं।

<sup>2</sup> देखी हैन को कहते हैं जिसकी ओर हाजत लेकर जाया जाए,  
 क्योंकि वह उसे पूरी करने की शक्ति रखता है। इन्हें अब्बास कहते हैं कि:  
 समझ वह समझार है जो अपनी सरदारी में पूरा हो, और वह शरीफ है जो  
 अपनी बहाव में पूरा हो, और वह बर्दावार है जो अपनी बुर्दावारी में पूरा हो,  
 और वह बे-नियाज है जो अपनी बे-नियाजी में पूरा हो, और वह ज्ञानी है  
 जो अपने जान में पूरा हो, और वह हकीम है जो अपनी हिक्मत में पूरा हो,  
 और ऐसी हस्ती मत्र अल्लाह की हस्ती है, और समाधियत ऐसा गुण है जो  
 अल्लाह के सिवाय किसी और को शोभा नहीं देता।

<sup>3</sup> अधीत उसकी बोहं संतान नहीं है और न वह स्वंयं किसी का संतान है,  
 इसलिए कि बोहं उसका हम-जिस नहीं, और इसलिए भी कि उसकी ओर  
 लोग और वह लोगों की निष्कल मुराद है, क्योंकि यदि वह पैदा हुवा तो  
 उसका अर्थ है कि वह पैदा होने से बचते नहीं था, कृतादः कहते हैं कि अरब  
 के मीराक बहाते थे कि उन्हें अल्लाह की बेटियाँ हैं, और यहाँ कहते थे  
 कि उन्होंने अल्लाह के बेटे हैं, और इन्हाँ कहते थे कि इस अल्लाह के के हैं,  
 जो अल्लाह तज़ाह्वा ने इसे नकारा, और कहा : **لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ** “उसने न  
 किसी को जना है और न वह जना गया है”।

<sup>4</sup> अधीत उसकी बहावी कोई नहीं कर सकता, और उसके गुणों में कोई  
 उम्मा साही नहीं है।

<sup>5</sup> वा अर्थ सेवा है इसलिए कि वह गत को फ़ाइ कर निकलता है, और  
 एक बीते के अन्यतर इससे मरण वह सारी सुष्टि है जो किसी चीज़ को फ़ाइ  
 कर निकलती है। और एक फ़ीते वह भी है कि इस से इशारा इस बत की ओर  
 है कि जो हस्ती इस बुरी दुनिया में गत के अंधकार को खत्म करने की शक्ति  
 रखती है वह इसी तरह इस बत की भी शक्ति रखती है कि पनाह में आने वाले  
 व्यक्ति में को सारी लींगे दुर कर दे जिस का ज्ञान है।

<sup>6</sup> अधीत मैं अल्लाह के नाम में अल्लाह के नाम में प्रस्त्रेक उस चीज़ की बुराई  
 से जिसे उसने पैदा किया है, वह अम है इसमें जैतान उसकी संतान, जहनम  
 इसलिए प्रस्त्रेक वह यहु सम्प्रिणत है जिससे इन्हान को हानि हो सकती है।

<sup>7</sup> अधीत मैं गत के अंधकार में जब वह आकर हर चीज़ को ढाक लेता है  
 अल्लाह की पूजा वाला है। इसलिए कि गत को यह दर्शाये अपने इन्हाँ में  
 जहनम अपने जिसे से और मूर्खिय लेग अपने नाशक मंथ को तकर  
 निकलते हैं, इन लक्ष्यों द्वारा इन सारी चीजों से पनाह मांगी गई है।

<sup>8</sup> अधीत मैं अल्लाह की पूजा में जात हूँ जातुनिकों की बुराई से, उक्ते **نَفَثَتْ**  
 इसलिए जला गया है, क्योंकि वह जल करने समय लगे के बांध पर कुक्ली थी।

<sup>9</sup> अल्लाह तज़ाह्वा ने जिस पर इन्हाँ किया है उससे नेभत के छिन जाने  
 की नमना करना हमसर कहलाता है, और वह एक महान पाप है जो

<sup>10</sup> लोगों का रब बनी है जिसने उहैं पैदा किया, और जो उनके  
 सम्बद्धों को सुलझाता है।

<sup>11</sup> लोगों के हक्कों का साधारण के शरण में जिसकी पूरे संसार पर राज है।

سُورَةُ الْإِخْلَاصِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۖ ۱َ اللَّهُ الصَّمَدُ ۖ لَمْ يَكُنْ

وَلَمْ يُوْلَدْ ۖ ۲ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُواً أَحَدٌ ۖ ۳

سُورَةُ الْفَلَقِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۖ ۱ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۖ ۲ وَمِنْ

شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۖ ۳ وَمِنْ شَرِّ الْفَتَنَ ۖ ۴

الْعُقَدِ ۖ ۵ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۖ ۶

سُورَةُ النَّاسِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۖ ۱ مَلِكِ النَّاسِ ۖ ۲ إِلَهِ

النَّاسِ ۖ ۳ مِنْ شَرِّ الْوَسَوَاسِ الْخَنَّاسِ ۖ ۴ الَّذِي

يُوْسُوسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۵ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۶

لोगों के मांबूद का (शरण में)

शंका डालने वाले पैछे हट जाने वाले की बुराई से।  
 जो लोगों के सीने में शंका डालता है।  
 (चाहे) वह जिन में से हो या इन्सान में से।

<sup>12</sup> क्योंकि बादशाह कभी पूजनीय होता है कभी नहीं होता, कह का  
 यह स्पष्ट कर दिया गया कि ۴۱ “माकूद” शब्द उसी हक्कों का बादशाह के माल  
 खास है जिस की पूरे संसार पर राज है, जिसमें उसका कोई भी साझी नहीं।

<sup>13</sup> शुष्पे तरीके से इन्हान के दिल में बुरा चाले डाल देता है।  
 खناس का अर्थ खिसक जाने वाला है, यह शैतान का गुण है, जब  
 अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो खिसक जाता है, और जब अल्लाह  
 के जिक्र से गाफिल हो जाया जाए तो फैल कर दिल पर द्या जाता है, और  
 वसवास डालता है।

<sup>14</sup> शैतान का वसवास उसका देसी दीमी आवाज में आपने अनकरण की  
 ओर बुलाना है जो दिल तक पहुंच जाए, पर कान से मनी न जाँचे।

<sup>15</sup> आप अल्लाह तज़ाह्वा ने इस बत को यह कर दिया है कि वसवास डालने

<sup>16</sup> जैतान दो प्रकार के हैं, एक जिसने मेरे और दूसरा इन्हाँ मेरे से।

<sup>17</sup> जिसी जैतान लोगों के दिलों में वसवास डालता है, जैसा कि उन

इसका वर्चा किया गया, और इन्हाँ जैतान भी लोगों के दिलों में वसवास

की बुराई है वह बातों को बढ़ाव देकर अन्दर जैसा कि उनके दिलों में वसवास

हो जाता है और एक कौल यह है कि इन्हाँ इन्हाँ लोगों के दिलों में वसवास

## मुसलमान के जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्न

**1- मुसलमान अपने अकीदे के बारे में जानकारी कहाँ से प्राप्त करे?** वह अपने अकीदे के बारे में जानकारी अल्लाह तआला की किताब और उसके उस नबी ﷺ की सही हड्डी से प्राप्त करे जो अपनी ओर से कोई बात नहीं कहता ﴿إِنَّهُ مُؤْمِنٌ وَّمُحَمَّدٌ﴾ “वह तो मात्र वस्त्य है जो उतारी जाती है”। और यह जानकारी सहाबए किराम ﷺ और सलफ़ सालिहीन की समझ के अनुसार होनी चाहिए।

**2- यदि हमारे बीच इख्�तिलाफ़ होजाए तो उसका हल कहाँ है?** उसके हल के लिए हम शरीअत की ओर लौटें, इस बारे में हुक्म (फैसला) अल्लाह की किताब और उस के रसूल ﷺ की सुन्नतों में है, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿فَإِنْ تَنْزَعُمْ فِي شَيْءٍ فَرْدُوا إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ﴾ “फिर किसी बात में इख्तिलाफ़ करो तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर लौटाओ”। और नबी ने फरमाया: “मैं तुम्हारे बीच दो चीज़ें छोड़े जाता हूँ जब तक तुम इन्हें मञ्चूती से थामे रहोगे गुम्भाह नहीं होगे : एक अल्लाह की किताब है और दूसरी चीज़ है उसके रसूल की सुन्नत”। (हाकिम)

**3- कियामत के दिन नजात पाने वाली जमाअत कौन सी है?** नबी ﷺ ने फरमाया : “मेरी उम्मत 73 फ़िर्कों में बट जाएगी, सारे फ़िर्के जहन्नम में जाएंगे सिवाए एक के, सहाबए किराम ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! वह कौन सी जमाअत होगी? तो आप ﷺ ने फरमाया: यह वह जमाअत होगी जो मेरे और मेरे सहाबए किराम के तरीके पर होगी।” (अहमद और तिर्मज़ी)

अतः हक़ उस चीज़ में है, जिस पर आप और आप के सहाबए किराम थे, इसलिए यदि तुम नजात और आमाल की कुबूलियत चाहते हो तो उनकी पैरवी करो और बिद्दअतों से बचो।

**4- नेक कर्म के स्वीकार होने की क्या शर्तें हैं?** इसकी तीन शर्तें हैं : ① अल्लाह और उसकी तौहीद पर ईमान लाना; अतः मुश्विरक का कर्म स्वीकार नहीं होता। ② इख्लास, अर्थात् कर्म द्वारा मात्र अल्लाह की मर्जी चाही जाए। ③ नबी ﷺ की मुताबउत, वह इस तरह की आप की सुन्नत के अनुसार कर्म किया जाए। अतः आप के बताए हुए तरीके मुताबिक ही अल्लाह की इबादत की जाए। और यदि इनमें से कोई भी एक शर्त नहीं पाई गई तो उसका कर्म रद्द कर दिया जाएगा, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿وَقَدْمَنَا إِلَى مَا عَمَلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَكَاءً مَنْشُورًا﴾ “और उन्होंने जो जो कर्म किए थे हमने उनकी ओर बढ़कर उन्हें कणों (ज़र्रों) की तरह तहस-नहस कर दिया”।

**5- इस्लाम धर्म के कितने मर्तबे हैं?** तीन हैं : इस्लाम, ईमान और एह्सान।

**6- इस्लाम का अर्थ क्या है, और इसके कितने अर्कान हैं?** तौहीद को स्वीकारते हुए अपने आप को अल्लाह के सपुर्द कर देने, उस की इताअत (आज्ञा पालन) करने, और शिर्क और मुश्विरकों से बराअत (संपर्क न रखने) का नाम इस्लाम है। इसके पाँच अर्कान हैं, जिन्हें नबी ﷺ ने अपनी हड्डी से ज़िक्र किए हैं : “इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर कायम है; इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, और यह कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ कायम करना, ज़कात देना, बैतुल्लाह (अल्लाह के घर कावा) का हज्ज करना, और रमज़ान का रोज़ा रखना”। (बुखारी और मुस्लिम)

**7- ईमान का अर्थ क्या है और इसके कितने अर्कान हैं?** दिल से एतिकाद, जुबान से इकार और अंगों से अमल करने का नाम ईमान है जो नेकी करने से बढ़ता है, और पाप करने से घटता है, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿لَيَزَدُ دُوَّاً إِبْتَئَنَّا مَعَ إِيمَانِهِمْ﴾ “ताकि वे अपने ईमान के साथ और भी ईमान में बढ़ जाएं”। और नबी ﷺ ने फरमाया : “ईमान की सत्तर से अधिक शाखाएं हैं, इनमें सब से बुलन्द ‘ला-इलाहा इल्लल्लाह’ कहना है, और सब से कमतर रास्ते से कष्ट-दायक चीज़ को हटा देना है, और शर्म व हऱ्या ईमान का एक हिस्सा है।”

(मुस्लिम) इस बात की ताकीद इस से भी होती है कि नेकियों के मौसम में एक मुसलमान अपने मन में नेकी के कामों में चुस्ती महसूस करता है जब्कि पाप करने के कारण बुझा बुझा से रहता है। अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿إِنَّ الْحَسَنَاتِ بُدْهِنَ الْسَّيْئَاتِ﴾ “अवश्य नेकियों बुराइयों को दूर कर देती हैं”। और ईमान के 6 अर्कान हैं जैसा कि आप ﷺ ने फरमाया कि : “ तुम अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आखिर के दिन पर, और अच्छी और बुरी किस्मत पर ईमान ले आओ ”। (बुखारी और मुस्लिम)

**8- ला-इलाहा इल्लल्लाह का क्या अर्थ है?** गैरुल्लाह के इबादत का हक़दार होने का इन्कार करना और मात्र अल्लाह तआला के लिए इबादत को साबित करना।

**9- क्या अल्लाह हमारे साथ है?** हाँ, अल्लाह तआला अपने इल्म द्वारा हमारे साथ है, वह हमारी बातों को सुनता है, हमें देखता है, हमारी रक्षा करता है, हमें धेरे हुए है, वह हम पर कादिर है, हमारे अन्दर उसकी मशीयत (चाहत) चलती है। लेकिन उसकी ज़ात मख्लूक (सृष्टि) के अन्दर मिली हुई नहीं है, और न ही कोई मख्लूक उसे धेरे में ले सकती है।

**10 क्या अल्लाह तआला को आँखों द्वारा देखा जा सकता है?** मुसलमानों का इस बात पर इतिफाक है कि संसार में अल्लाह तआला को नहीं देखा जा सकता है, पर मोमिन बदल परलोक में मैदाने महशर में और जन्नत में अल्लाह तआला को देखेंगे, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿وَجُوهٌ يَوْمَئِنْ نَاضِرٌ إِلَىٰ رَبِّكَانَاطِرٌ﴾ “उस दिन बहुत से चेहरे रौनक वाले होंगे जो अपने रव की ओर देखते होंगे”।

**11 अल्लाह तआला के नाम और गुण जानने से क्या लाभ होगा?** अल्लाह तआला ने बदल पर सब से पहले अपने बारे में जानकारी प्राप्त करने को फ़र्ज़ किया है, तो जब लोग अपने रव के बारे में जान लेंगे तो कमा हक्कुहू (यथायथ) उसकी इबादत करेंगे, उसका फरमान है :

﴿فَاعْلَمُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَأَسْتَغْفِرُ لِذَنبِكُمْ﴾ “आप जान लें कि अल्लाह के सिवाय कोई सत्ता उपास्य नहीं, और अपने पार्थों की बखिश मांगा करें”। चुनाँचे अल्लाह का उसकी विस्तार रहमतों के साथ ज़िक्र करना उससे उम्मीद रखने का कारण है, और उसकी कठोर सज़ाओं का चर्चा उससे ख़ौफ को वाजिब करता है, और अकेले उसके मुऩइम (एहसान करने वाला) होने का चर्चा उसके शुक्र को लाज़िम करता है।

**और अल्लाह तआला के नामों और उसके गुणों द्वारा उसकी इबादत करने का अर्थ यह है कि :** सेवक को इन चीजों की जानकारी हो, उनके अर्थ की समझ हो, और उनके अनुसार उसका अमल हो, अल्लाह तआला के कुछ नाम और गुण ऐसे हैं कि जिन्हें अपनाना बन्दे के लिए प्रशंसा का पत्र है, जैसे : इल्म, दया और इंसाफ़, और कुछ ऐसे हैं जिन को अपनाने से बन्दे की मज़म्मत होती है, जैसे : उलूहियत (इबादत की योग्यता) तजब्बुर (गल्वे वाला होना) तकब्बुर (बड़ाई वाला होना), और बन्दों के कुछ गुण ऐसे हैं जिन पर उनकी प्रशंसा होती है, और जिनका उन्हें आदेश दिया जाता है, जैसे : बन्दगी, फ़कीरी, मुह्ताजी, आजिज़ी, सवाल इत्यादि। लेकिन यह गुण अल्लाह तआला के नहीं हो सकते, और अल्लाह तआला के पास सबसे अधिक महबूब (पसन्दीदा) व्यक्ति वह है जो ऐसे गुण अपनाए जिन्हें अल्लाह तआला पसन्द करता है, और मबूज (ना-पसन्दीदा) व्यक्ति वह है जो ऐसे गुण अपनाए जिन्हें अल्लाह तआला ना-पसन्द करता है।

**12 अल्लाह तआला के अच्छे अच्छे नामों का अर्थ क्या है?** : अल्लाह ﷺ का फर्मान है ﴿وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْمُكَ�بِلَةُ فَالْمَعْوُذُ بِهِ﴾ “और अच्छे अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं, सो इन नामों से



उसी को पुकारा करो”। और नबी ﷺ से साबित है कि आप ने कहा : “अल्लाह तआला के ६६ नाम हैं, १०० में ९ कम, जिसने उन्का इहसा किया वह जन्त में दाखिल होगया”। बुखारी और मुस्लिम। इहसा का अर्थ है : ① उस के शब्द तथा संख्या की गिन्ती करना। ② उस के अर्थ को समझना और उस पर ईमान लाना। चुनान्वि जब बन्दा (अल-हकीम) कहता तो अपनी सारी चीज़ें अल्लाह के हवाले कर देता है; क्योंकि सारी चीज़ें उसी की हिक्मत के आधार पर होती हैं। और जब (अल-कुदूस) कहता है तो उस के ध्यान में यह चीज़ आती है कि वह हर प्रकार की कमी से पवित्र है। ③ इन नामों द्वारा अल्लाह तआला से दुआ करना। दुआएं दो प्रकार की होती हैं। ① जिसमें प्रशंसा और इबादत हो, ② जिसमें तलब और मांग हो। और कुर्झन व सुन्नत का तत्त्वु’अ (अनुसन्धान) करने वाला इन नामों को इन प्रकार पाएगा :

नाम	अर्थ
अल्लाह :	उपास्य, जो सारी सृष्टि की इबादत का हक्कदार है, चुनान्वि वही वह सत्य उपास्य और माँबूद है जिस के लिए झूका जाता, रुकूअ़ और सज्दा किया जाता, और हर तरह की इबादत उसी के लिए खास की जाती है।
अर्रस्मान :	अल्लाह तआला के इस नाम से यह अर्थ पाया जाता है कि वह सारी सृष्टि पर दयावान है, और यह नाम मात्र अल्लाह तआला के लिए खास है, दूसरे के लिए इस का प्रयोग सहीह नहीं है।
अर्रहीम :	लोक तथा प्रलोक में मोमिनों पर मेहर्बान है, उस ने संसार में उन्हें अपनी इबादत की राह दिखाई और आखिरत में जन्नत अंता करके उनका सम्मान करेगा।
अल-ग़फूर :	जो अपने बन्दे के गुनाहों पर पर्दा डाल देता है, और उन्हें रुसवा नहीं करता, न उन के पाप पर उन्हें सज़ा देता है।
अल-ग़फ़्फार :	क्षमा चाहने वाले बन्दे के गुनाहों को बहुत अधिक माफ करने वाला।
अर्रज़फ :	यह रा’फ़त से है जिसका अर्थ होता है हृद दर्जा मेहर्बान, यह दया संसार में सारी सृष्टि के लिए आम है, और आखिरत में मोमिन औलिया के लिए खास है।
अल-ह़लीम :	शक्ति के बावजूद जो सज़ा देने में जल्दी नहीं करता, बल्कि यदि वह माफी चाहें तो उन्हें माफ कर देता है।
अत्तौवाब :	जो अपने बन्दों में से जिसे चाहे तौबा की तौफीक देता है, और उनके तौबा को कबूल करता है।
असिसत्तीर :	जो अपने बन्दे के गुनाहों पर पर्दा डालता है, और उन्हें सरे आम रुसवा नहीं करता, और वह यह पसन्द भी करता है कि बन्दा स्वयं अपने और दूसरे के ऐब को पर्दे में रखें, और अपनी गुप्ताड़ की रक्षा करे।
अल-ग़नी :	जो अपने परिपूर्ण विशेष्ज्ञाओं के कारण किसी का मुहताज नहीं है, जिन्हि सारी मख़्तुक उस की मुहताज है, और उसके उपहार और दया के जरूरतमन्द हैं।
अल-करीम :	बहुत अधिक भलाई वाला और अंता करने वाला, जो अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, जो चाहता है, जैसे चाहता है सवाल या बिना सवाल किए देता है, इसी तरह गुनाहों को माफ करता है, और लोगों के ऐब पर पर्दा डालता है।
अल-अक्रम :	जो बेइन्तिहा करम वाला है, जिसमें उस की कोई बराबरी करने वाला नहीं, चुनान्वि सारी भलाई उसी की ओर से है, और वही मोमिनों को अपने फ़ज़्ल से बदला देता है, और मुह मोड़ने वाले का हिसाब अपनी अद्वल की बृन्दाद पर करता है।
अल-वहाब :	बहुत अधिक देना वाला, जो बिना किसी बदले और मक्सद के देता है, और बिना सवाल किए इन्आम करता है।
अल-जौवाद :	जो अपनी सम्पूर्ण सृष्टि को बहुत अधिक देने वाला और उन पर फ़ज़्ल करने वाला है, और उस के जूद-व-करम का एक बड़ा हिस्सा मोमिनों के नसीब में है।

<b>असुब्बूहः</b>	अपने बलियों से मुहब्बत करता है, उन्हे माफ करता है, अपनी नेमतों को उन वालों के दिलों में उनकी मुहब्बत डाल देता है।
<b>अत्-मु'अत्ती</b>	अपने बन्दों में से जिसे चाहता है अपने ख़जाने से अता करता है, और उस में उन के बलियों का एक बड़ा हिस्सा है, और वही है जिसने हर चीज़ को पैदा किया और उनकी सूरत बनाई।
<b>अल्-वासि'अ्</b>	महान सिफरों वाला है, कमा हक्कह कोई उस की तारीफ नहीं कर सकता, वह बहुत वाला, महान सलतनत वाला है, बहुत अधिक माफ करने वाला दयावान है, और वह अधिक फ़ूज़ल और इहसान करने वाला है।
<b>अल्-मुहिसन्</b>	जो अपने नाम, सिफात, कर्म और व्यक्तित्व में सब से सुन्दर है, और जिसने हर को सुन्दर बनाई, और उन पर इहसान किया।
<b>अर्राजिकः</b>	जो सारी मख्लूक को रोज़ी देता है, जिसने उन्हें पैदा करने के पहले ही उनकी मुकद्दर दी, जो उन्हें हर हाल में मिल कर रहेगी।
<b>अर्राज्जाकः</b>	जो बहुत अधिक मात्रा में सृष्टि को जिविका प्रदान करता है, चुनान्वित प्रश्न करने से वह उन्हें रोज़ी देता है, बल्कि नाफर्मानी के बावजूद वह उन्हें रोज़ी देता है।
<b>अल्लतीफः</b>	जिसे हर छोटी बड़ी चीज़ की जानकारी है, चुनान्वित कोई भी चीज़ उस से छुपी हुई नहीं है, वह खैर-व-भलाई को बन्दे तक ऐसे छिपे रास्ते से पहुंचाता है कि उन्हे उसका एक तक नहीं होता।
<b>अल्-ख़बीरः</b>	वह छुपी हुई और बातिनी चीजों को भी जानता है जैसा कि उसे जाहिरी वीजों की जानकारी है।
<b>अल्-फत्ताहः</b>	जो अपनी हिक्मत और ज्ञान स्वरूप जितना चाहता है अपनी सलतनत, रहमत और रोज़ी के ख़जाने को खोलता है।
<b>अल्-अलीमः</b>	जिसे जाहिरी और बातिनी, ढकी और छुपी, और गुजरी हुई, मौजूदा और भविष्य की जानकारी है, चुनान्वित उस से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं है।
<b>अल्-बर्रः</b>	जो अपनी मख्लूक पर बहुत अधिक इहसान करने वाला है, इस कदर अता करता है कि कोई उन्हें श्रमार नहीं कर सकता, वह अपने बन्दे में सच्चा है, बन्दों के गनाहों से दरण्डा करता, उनकी मदद करता और उनकी सहायता करता है, थोड़ी चीज़ों को भी स्वीकार करके उनमें बर्कत देता है।
<b>अल्-हकीमः</b>	जो सारी चीजों को उचित स्थान देता है, और उसके निजाम में किसी प्रकार की कठोराही नहीं होती।
<b>अल्-हकमः</b>	जो न्याय के साथ मख्लूक के बीच फैसला करता है, और किसी पर अन्याय नहीं करता, और उसी ने अपनी ग़ालिब किताब कुआन नाज़िल फ़र्माई ताकि लोगों के बीच फैसला करने वाला हो।
<b>अशशाकिरः</b>	जो अपने इत्ताअत-गुजारों की प्रशंसा करता है, और कर्म चाहे थोड़ा ही क्षेत्र न हो उपर उन्हें बदला देता है, जो उस की नेमतों पर शुक बजा लाते हैं उन्हें दुनिया में अपना देता है और आखिरत में बदला उत्तम बदला देता है।
<b>अशशाकूरः</b>	जिस के पास बन्दे का थोड़ा कर्म भी बढ़ जाता है और उस पर उन्हें कई गुना बातांक बदला देता है, चुनान्वित अल्लाह का बन्दे के लिए शुक अद्य करने का मतलब है बन्दे की शृकगुजारी पर सवाब देना और उनकी इत्ताअत कबूल करना।
<b>अल्-जमीलः</b>	जिसकी व्यक्तित्व, नाम, सिफात और कर्म खूबसूरत तर है, और सूर्णि की सारी सुवर्णता उसी द्वारा है।
<b>अल्-मजीदः</b>	जिस के लिए आकाश तथा धर्ती में फ़ख़, करम, प्रातिष्ठता और बनन्दी है।
<b>अल्-वलीः</b>	जो अपनी सलतनत का निजाम चलाने वाला कारसाज है, और अपने बलियों का मदूरा और सहायक है।
<b>अल्-हमीदः</b>	जिसके नाम, विशेषता और कर्म पर उसकी तारीफ होती है, और उसी की व्यक्तित्व है जो खूशी गमी, सख्ती और नर्मी के हर अवसर में प्रशंसा योग्य है, क्षेत्रों के वाले अपने विशेषाओं में परिपूर्ण है।

<b>अल्-मौता :</b>	वही रब है, मलिक है, सैयद है और अपने वलियों का सहायक और मददगार है।
<b>अन्सीर :</b>	वह अपनी मदद से जिसकी चाहे सहायता करता है, चुनान्वि जिस की उसने सहायता की कोई उस पर गालिब नहीं होसकता, और जिसे उसने रुस्वा कर दिया कोई उसका सहायक नहीं होसकता।
<b>अस्समीअू :</b>	जो कि हर भेद और कानाफूसी को, ज़ाहिर और खुले को, बल्कि सारी धीर्मी और तेज़ आवाज़ को सुनता है, और वही है जो दुआ करने वाले की सुनता है।
<b>अल्-बसीर :</b>	वही है जिसकी निगाह ने लोक और प्रलोक की सारी चीज़ों को वह चाहे जितनी ख़र्ली या छिपी हों, छोटी या बड़ी हों अपने घेरे में ले रख्दी है।
<b>अश्शहीद :</b>	जो कि निगहबान है अपनी सृष्टि पर, जिस ने अपने लिए वहदानियत और इन्साफ के साथ कायम रहने की गवाही दी है, और मुमिन यदि उसकी वहदानियत बयान करते हैं तो उनकी सच्चाई पर गवाह है, और अपने रसूलों और फ़रिश्तों के लिए भी गवाह है।
<b>अर्रकीब :</b>	जिसे अपनी सृष्टि की पूरी जानकारी है, उनके कर्मों को एक-एक करके गिन रख्दा है, लिहाज़ा कोई चीज़ उस से फौत नहीं होसकती।
<b>अर्रफीक :</b>	जो अपने कर्मों में नर्मी बरतता है, और थोड़ा थोड़ा करके पैदा करता और आंश देता है, और अपने बन्दों से नर्मी का मुआमला करता है, उन पर ऐसी चीज़ें फ़र्ज़ नहीं करता जिस के करने की उन्हें ताक़त न हो। और वह अपने बन्दों में से नर्मी करने वालों को पसन्द करता है।
<b>अल्-करीब :</b>	जो अपने ज्ञान और शक्ति द्वारा अपनी आम सृष्टि से करीब है, और नर्मी और सहायता द्वारा मोमिनों से करीब है, जबकि वह अर्श पर है, और किसी मख्लूक के अन्दर नहीं है।
<b>अल्-मुजीब :</b>	वही है जो अपने इल्म और हिक्मत के आधार पर दुआ करने वाले की दुआ और मांगने वाले की मांग को प्रीरी करता है।
<b>अल्-मुकीत :</b>	वही है जिसने रोज़ी पैदा करके मख्लूक तक उसे पहुंचाने की जिम्मादारी ले रख्दी है। और वही है उस का और बन्दों के कर्मों का विना कर्मों किए रक्षा करने वाला।
<b>अल्-हसीब :</b>	वही है जो अपने बन्दों के लिए दीन और दुनिया के सारे गर्मों की ओर से काफ़ी होता है, और ख़ास कर मुमिनों के लिए, और वही है जो उनके कर्मों के आधार पर उनका मुह़ासबा करेगा।
<b>अल्-मुअमिन :</b>	अपने रसूलों और उनके पैरोकारों की तस्तीक करने वाला उन्की सच्चाई की गवाही देकर, और उन्हें मो'अज़ज़ा अ़ता करके, चुनान्वि दुनिया और आखिरत में हर प्रकार की शान्ति कायम करने वाला वही है, और जो उस पर ईमान लाता है वह उसकी ओर से अत्याचार, अज़ाब और कियामत के दिन की घब्राहट से सुरक्षित रहता है।
<b>अल्-मन्नानु :</b>	बहुत अधिक देने वाला, महान इन्ड्राम करने वाला, और वाफ़िर मात्रा में इहसान करने वाला।
<b>अत्तैयिब :</b>	वह हर प्रकार के ऐब और कर्मी से पवित्र तथा परिपूर्ण है, उसी के लिए सून्दरता है, और वह अपने बन्दे को बहुत अधिक मात्रा में भलाई से नवाज़ता है, और वही कर्म तथा सद्का स्वीकार करता है जो पवित्र तथा सूध हो।
<b>अश्शाफी :</b>	जो दिल तथा शरीर को हर प्रकार की बीमारी से निरोग करता है, लोगों के पास मात्र दवाएं हैं जबकि शिफ़ा अल्लाह के होथ में है।
<b>अल्-हफीज :</b>	जो अपने फ़ज़्ल द्वारा अपने मुमिन बन्दों और उनके कर्मों का रक्षा करता है, और अपनी शक्ति द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि की हेर चाह करता है।
<b>अल्-मुतवक्तिल :</b>	जिसने अपने जिम्मे संसार को बनाने और उसके इन्तज़ाम की जिम्मेदारी ले रख्दी है, चुनान्वि उसी ने इसे बनाया और संवारा है, और वह मुमिनों का कारसाज़ है जिसने करने से पहले उसके जिम्मे अपने काम सौंप दिए, और करते समय उस से मदद चाही, तौफ़ीक मिलने पर उसका शुक्रिया अदा किया, और आज़माइश पर रिज़ामन्दी ज़ाहिर की।
<b>अल्-ख़ल्लाक :</b>	अल्लाह तआला के लिए अनुग्रहित पैदा करने का माना इस नाम में पाया जाता है, चुनान्वि अल्लाह तआला हमेशा से पैदा कर रहा है, और अभी भी उसकी यह महान सिफ़त है।
<b>अल्-ख़ालिक :</b>	जिसने सारी सृष्टि बिना किसी उदाहरण के अनोखी बनाई।
<b>अल्-बारिम :</b>	जिसने निर्धारित सृष्टि को पैदा किया और उन्हें बुजूद में लाया।
<b>अल्-मसीविर :</b>	जिस ने अपने बन्दों को अपनी पसन्दीदा सुरत पर पैदा किया

<b>अरब्बू :</b>	जो अपनी नेमतों द्वारा अपनी मख्तूक की तर्कियत करता है, उन्हें पर्वान चढ़ाता है, और अपने वलियों की ऐसी तर्कियत करता है, जिस से उनके दिलों इस्लाह होजाए, और वह सष्टा, मालिक और सैय्यद है।
<b>अल्-अज़ीम् :</b>	जो अपनी व्यक्तित्व, नाम और सिफात में महान है, इसी लिए सृष्टि पर उसकी महानत और बड़ाई करना वाजिब है, और यह भी कि उसके आदेश का पालन करें।
<b>अल्-काहिर :</b>	जो अपने बन्दों को अपने अधिन में रखता है, उन्हें अपना दास बनाता है, और वह ज्ञ से उच्चतर है, वह ग़ालिब है जिस के लिए गर्दने झुक गई, और चेहरे ताबेदार होगई, और काहिर से मुबालगा का सेगा है।
<b>अल्-मूहैमिन् :</b>	सारी चीज़ों पर कायम, उनका निगरां, उन पर गवाह और उन्हें अपने धेरे में रखने वाला।
<b>अल्-अज़ीज़ :</b>	उस के लिए सम्पूर्ण प्रकार की अभिमानता है, वह शक्तिशाली है, कोई उस पर ग़ालिब नहीं होसकता, वह किसी का मुहताज नहीं, सभों को उस की ज़रूरत है, और वही है कठा ढाने वाला प्रभुत्व जिस की अनुमति के बिना कोई चीज़ हिल नहीं सकती।
<b>अल्-जब्बार् :</b>	जिसकी इच्छा पूरी होती है, जिस की अधिनता में सारी मख्तूक है, जिस की महानत के आगे झुकी हुई है, और जिस के आदेशों का पालन करती है, और वही है जो कभी पूरी करता है। फ़क़ीर को धनी बनाता है, कठिन को सहज बनाता है, और रोगी को निरोग करता है।
<b>अल्-मूतकब्बिर :</b>	महान, हर प्रकार की बीमारी और कभी से उच्च, बन्दों पर अत्याचार करने से पवित्र तानाशाहों को निचे करने वाला, जिस के लिए बड़ाई की सिफत है, और जो उसे प्राप्त करना चाहता है उसे तोड़ देता और सजा देता है।
<b>अल्-कबीर् :</b>	जो अपनी व्यक्तित्व, सिफात और नाम में महान है, और कोई भी चीज़ उस से बड़ी नहीं है, बल्कि उस के सिवाय सारी चीज़ें उस की महानत के आगे निच्च हैं।
<b>अल्-ह़यीम्य :</b>	वह ह़या और शर्म करता है जैसा कि उस के पूरे नूर चेहरे और महान सलतनत के लायक है, अल्लाह की करम, नेकी, उदार और महिमा की ह़या है।
<b>अल्-हैय्य :</b>	जिस के लिए परिपूर्ण स्थायी जीवन है, और ऐसी अस्तित्व है जिसकी न तो कोई शुरूआत है और न अंत। और हर जिवित वस्तु को उसी ने जीवन प्रदान की है।
<b>अल्-कैय्यूम् :</b>	जो ख़ुद से कायम है, अपनी सृष्टि से बेनियाज़ है, आकाश और पृथ्वी में बसने वाले सभों को थामने वाला है, और सब उसके ज़रूरतमंद हैं।
<b>अल्-वारिस :</b>	सुष्टि के फ़ना होजाने के बाद भी जो बाकी रहेगा, और सारी चीज़े फ़ना होकर उसी की ओर पलट कर जाने वाली हैं, और जो भी चीज़ हमारे पास है वह अमानत है जो एक एक दिन अपने मालिक के ओर पलट कर चली जाएगी।
<b>अदैद्यान् :</b>	सारी चीज़ें जिसके अधिन में हैं, और जो अपने बन्दों को कभी पर बदला देता है, यदि कभी नेह हो तो बढ़ा कर देता है, और यदि बुरा हो तो उस पर सजा देता है या माफ कर देता है।
<b>अल्-मलिक :</b>	जो आदेश देता है, मना करता है, और ग़ालिब है, वही है जिस के आदेश सृष्टि पर लाभ होते हैं, वह स्वयं अपनी सलतनत का देख रेख करता है, उस पर किसी की इत्सान नहीं है।
<b>अल्-मालिक :</b>	जो शुरू से ही मालिक है और उसका ह़क़दार है, जब से उसने संसार का निर्माण किया मालिक है, उसमें कोई उसका साझी नहीं, और उस समय भी वही मालिक होगा जब तक इसका अंत होगा।
<b>अल्-मलीक :</b>	इस नाम के अन्दर उसके मुतलक मालिक होने का अर्थ पाया जाता है, जो कि मलिक है बढ़कर है।
<b>अस्सूब्बह :</b>	जो कि हर ऐब और कभी से पवित्र है, क्योंकि उसकी सिफते सुन्दर तथा परिपूर्ण हैं।
<b>अल्-कुहूस :</b>	जो कि किसी भी तरह की कभी और ऐब से पवित्र और पाक है; क्योंकि वही तने तना परिपूर्ण सिफतों मुत्तसिफ है, लिहाज़ा उस के लिए मिसाल नहीं दी जासकती।
<b>अस्सलाम :</b>	जो सम्पूर्ण प्रकार की ऐब और कभी से सालिम है, अपनी व्यक्तित्व में, नाम में, सिफात में और कर्मों में, और दुनिया तथा आखिरत में हर प्रकार की सलामती उसी की ओर से है।
<b>अल्-ह़क :</b>	जिस के बारे में किसी प्रकार का शंका नहीं है, न तो उस के नाम में, न सिफात में, बन्दगी में, वही सच्चा माबूद है, जिसके सिवाय कोई प्रजा के योग्य नहीं।

<b>अल-मुबीन :</b>	वह्दानियत, हिक्मत तथा रहमत में जिसका मामला स्पष्ट है, और जो अपने बन्दों के लिए भलाई का मार्ग स्पष्ट करता है ताकि उसकी तावेदारी करें, और बूराई का मार्ग भी ताकि उस से बचें।
<b>अल-कवी :</b>	जो कि परिपूर्ण इच्छा के साथ शक्तिमान है।
<b>अल-मतीन :</b>	जो कि अपनी ताक्त और शक्ति में ठोस है, और जिसे अपने कर्म में किसी प्रकार की कठिनाई, परीशानी और धकन नहीं होता।
<b>अल-कादिर :</b>	जिस की शक्ति तले हर चीज़ है, आकाश और पृथिवी में कोई भी चीज़ उसे मग़लूब नहीं कर सकती, और वही हर चीज़ को निर्धारित करने वाला।
<b>अल-कवीर :</b>	यह भी अल-कादिर के अर्थ में है, मगर इसमें अल्लाह तआला के लिए प्रशंसा का मात्रा अधिक पाया जाता है।
<b>अल-मुक्तदिर :</b>	अपने ज्ञान अनुसार तकदीर लागू करने तथा पैदा करने पर अल्लाह तआला के अधिक शक्तिशाली होने का अर्थ इस नाम में पाया जाता है।
<b>अल-अली :</b>	जो अपनी शान, कहर, और ज़ात में उच्च तथा महान है, सारी चीज़ें उस की सलतनत के अधिन में हैं, और कोई भी चीज़ उस से बालातर नहीं है।
<b>अल-आ'ला :</b>	जिसकी बुलन्दी के आगी सारी चीज़ें झुकी हुई हैं, और कोई भी चीज़ उस के ऊपर नहीं है, बल्कि हर चीज़ उसके नीचे, और उस की सलतनत के अधिन में है।
<b>अल-मुकदिम :</b>	जो वस्तुओं को आगे बढ़ाता है, और अपनी चाहत तथा हिक्मत अनुसार सारी चीज़ों को उसके समान जगह देता है, और अपने इल्म और फ़ज़ल के अनुसार किसी सृष्टि को दूसरे पर बढ़ावा देता है।
<b>अल-मुअ़ि़्ज़िर :</b>	जो प्रत्येक वस्तु को उचित स्थान देता है, और अपनी हिक्मत से जिसे चाहे आगे पीछे करता है, और जो अज़ाब को टाले रखता है ताकि बन्दे तौबा करके के उसकी ओर पलट आएं।
<b>अल-मुस़भिर :</b>	जो सामान का मोल, उसका सम्मान और प्रभाव बढ़ाता है, या कम करता है, चूनान्यि उसकी हिक्मत और इल्म के आधार पर चीज़ें सस्ती और महंगी होती हैं।
<b>अल-काबिज़ :</b>	जो रुह कब्ज़ करता है, और अपनी हिक्मत और शक्ति के आधार पर जिस की चाहे रोज़ी तंग कर देता है, ता कि उन्हें आज़माए।
<b>अल-बासित :</b>	जो अपनी सखावत और रहमत के कारण जिस की चाहे रोज़ी बढ़ा देता, और अपनी हिक्मत से इस द्वारा भी उस की आज़माइश करता है, और कुर्किर्मियों के लिए तौबे के साथ दोनों हाथों का भैलाता है।
<b>अल-अब्ल :</b>	जिस से पहले कोई चीज़ नहीं थी, बल्कि सम्पुर्ण सृष्टि उस द्वारा रचना में आई, और स्वयं उस की शुरूआत की कोई सीमा नहीं है।
<b>अल-आदिर :</b>	जिस के बाद कोई चीज़ नहीं होगी, वह सदा बाकी रहने वाला है, और संसार में जो भी है वह फ़ना होजाने वाला है, फिर उसी की ओर उसे पलट कर जाना है, और उस के वृजूद की कोई अंत नहीं है।
<b>अल-ज़ाहिर :</b>	जो कि हर चीज़ के ऊपर है, और कोई भी चीज़ उस से ऊपर नहीं है, जो कि हर चीज़ को अपने अधिन में रख्खे हुए है, और उन्हें धेरे हुए है।
<b>अल-बातिन :</b>	जिस के बरे कोई चीज़ नहीं है, वह सब से करीब है, उन्हें धेरे में लिए हुए है, और संसार में मख्लुक की निगाहों से ओझल है।
<b>अल-वित्र :</b>	वह अकेला है जिसका कोई साझी नहीं है, तन्हा है जिस जैसा कोई नहीं है।
<b>अस्मीहद :</b>	जिसे अपनी सृष्टि पर पूरी सरदारी प्राप्त है, वह उनका मालिक और प्रभु है, और वे उसके बन्दे और दास हैं।
<b>अस्समद :</b>	ऐसा सरदार जो अपनी सरदारी में कामिल है, सारी मख्लुक सङ्ग महताजी के कारण जिस की ओर अपनी ज़खरत पूरी होने के लिए ध्यान लगाती है। वही हैं जो खिलाता है और खिलाया नहीं जाता।
<b>अल-वाहिद :</b>	जो अपनी सारी ख़ुवियों में यकता है, उन्में उसका कोई साझी नहीं है, और न ही कोई
<b>अल-ग़ाह :</b>	उस जैसा है, और यह ख़ूबी यह लाज़िम करती है कि इबादत के लायक मात्र वह अकेले है, जिसमें कोई उस का साझी नहीं है।
<b>अल-ख़ाल :</b>	सच्चा माँबूद, दूसरों के सिवाय तन्हा इबादत के लायक।

**13** अल्लाह के नाम और उसके गुण में क्या फ़र्क हैं? पनाह लेने और क़सम खाने में कोई महत्वपूर्ण यह है : **①** अल्लाह तआला के नामों के द्वारा दुआ करना, और उसके नामों आगे अब्द बढ़ाकर नाम रखना जायज़ है, किन्तु उसके गुणों के द्वारा जायज़ नहीं, और (अब्दुल् करीम) नाम रखना जायज़ है, लेकिन (अब्दुल् करम) नाम रखना जायज़ नहीं, और (या करीम) कह कर दुआ करना जायज़ है, लेकिन (या करमल्लाह) कह कर दुआ करना जायज़ नहीं है। **②** अल्लाह के नामों द्वारा उसके गुण साबित होते हैं जैसे उसके नाम (अर्रह्मान) द्वारा उसकी सिफ़त (रह्मत) साबित हुई। लेकिन उसकी सिफ़तों द्वारा उसके नाम साबित नहीं किए जा सकते जिनका चर्चा कुरूआन और हडीस में न हुवा हो, जैसे उसकी सिफ़त (अल्लाहस्तिवा) द्वारा उसके लिए (अल्लामुस्तवी) नाम नहीं रखा जा सकता। **③** अल्लाह तआला के कामों के द्वारा उसके ऐसे नाम साबित नहीं किए जासकते जिनका चर्चा कुरूआन और हडीस में न हुवा हो, अल्लाह तआला के कामों में से (अल्लाज़ब) गुस्सा होना है, लेकिन यह नहीं कहा जाएगा कि अल्लाह तआला के नामों में से एक (अल्लाज़िज़ब) है, अलबत्ता उसके कामों से उसकी सिफ़त साबित होगी, तो उसके लिए हम (ग़ज़ब) गुस्सा होने की सिफ़त साबित करेंगे, इसलिए कि गुस्सा होना भी उसके कामों में से है।

**14** फ़रिश्तों पर ईमान लाने का अर्थ क्या है? उन पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि उनके अस्तित्व को स्वीकार किया जाए, और इस बात को भी कि अल्लाह तआला ने उनको अपने इबादत और अपने आदेश-पालन के लिए पैदा किया है,

﴿لَا سَيِّقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ يَأْمُرُونَ﴾

“उसके सम्मानित बने हैं, किसी बात में अल्लाह पर पहल नहीं करते, बल्कि उसके आदेश पर कारबन्द हैं”। और उन पर ईमान लाना चार चीज़ों को शामिल है : **①** उनके अस्तित्व पर ईमान लाना। **②** उन में से जिनके नाम को जानते हैं उन पर (उनके नामों के साथ) ईमान लाना, **③** उनके जिन गुणों को जानते हैं उन गुणों पर ईमान लाना, **④** उनके जिन खास कामों को जानते हैं उन पर ईमान लाना। जैसे मलकुलमौत

**15** कुरूआन क्या है? कुरूआन अल्लाह तआला का कलाम है, जिसकी तिलावत इबादत है, उसे आरम्भ हुवा है, और उसी की ओर पलट जाएगा, हकीकत (वास्तव) में अक्षर और आवाज़ के साथ अल्लाह तआला ने उसे बोला है, जिब्रील ﷺ ने अल्लाह तआला से उसे सुना कि उसे मुहम्मद ﷺ तक पहुँचाया, और सारी आसमानी किताबें अल्लाह तआला का कलाम हैं।

**16** क्या हम कुरूआन को लेकर नबी ﷺ की सुन्नत (हडीसों) से बेनियाज़ हो सकते हैं? यह जायज़ नहीं, बल्कि सुन्नत के अनुसार अमल करना ज़रूरी है, अल्लाह तआला ने इसका आदेश देते हुए फरमाया : **﴿وَمَا مَا لَكُمْ أَرْسَلْنَاكُمْ فَحْذِرُوهُ وَمَا تَهْمِلُوا﴾** “और तुम्हें जो कुछ रसूल हैं उसे ले लो, और जिससे रोके रुक जाओ”。 और सुन्नत, कुरूआन की तफसील है जैसे नमाज़ के बारे में इस के बिना नहीं जाना जा सकता, नबी ﷺ ने फरमाया : “सुन लो! मुझे किताब दी गई है, और उसके साथ उसी जैसी (सुन्नत), सुन लो! करीब है कि कोई आसदा आदमी अपनी मसनद पर टेक लगाए हुए कहे : तुम मात्र इस कुरूआन को लाज़िम पकड़ो, और इसमें जो चीज़ें हलाल हैं उन्हें हलाल जानो, और जो हराम हैं उन्हें हराम जानो”।

**17** रसूलों पर ईमान लाने का क्या अर्थ है? रसूलों पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि विश्वास रखा जाए कि अल्लाह तआला ने हर समुदाय में उन्हीं में से एक रसूल मात्र आया

इबादत की ओर दावत देने, और गैरों की इबादत को नकारने के लिए भेजे हैं, और वे सब सच्चे, भले, इज्जत वाले, नेक, मुत्तकी, अमीन, हिदायत याप्ता, और मार्ग-दर्शक हैं, उन्होंने हम तक धर्म को पहुँचाया, वे अल्लाह के सब से अफ़ज़ल मख़्तूक हैं, और वे पैदाइश से लेकर मौत तक अल्लाह के साथ शिर्क करने से पाक हैं।

**18 कियामत के दिन शफ़ाअत की कितनी किस्में होगी?** शफ़ाअत कई प्रकार की होगी, इनमें सब से बड़ी शफ़ाअत ① (शफ़ाअते उज्मा) होगी, जो कि हश्श के मैदान में होगी, बाद इसके कि लोग पचास हज़ार साल तक ठहरे रहेंगे, अपने बीच फैसले के इन्तिज़ार में होंगे, उस समय मुहम्मद ﷺ अपने रब के पास शफ़ाअत करेंगे कि लोगों के बीच फैसला कर दिया जाए, और यह शफ़ाअत हमारे नबी मुहम्मद ﷺ के लिए खास है, और यही मकामे महमूद है जिसका उनसे वादा किया गया है। ② दूसरी शफ़ाअत होगी जन्नत का दर्वाज़ा खोलवाने के लिए, और सब से पहले हमारे नबी मुहम्मद ﷺ जन्नत का दर्वाज़ा खोलवाएंगे, और सारी उम्मतों में सब से पहले उन्हीं की उम्मत जन्नत में जाएगी। ③ कुछ तौहीद परस्तों के बारे में शफ़ाअत जिनके जहन्नम में जाने का आदेश होगया होगा, कि उन्हें जहन्नम में न भेजा जाए। ④ तौहीद परस्तों में से अपने गुनाहों के कारण जो जहन्नम में डाले गए होंगे, उन्हें जहन्नम से निकालने की की शफ़ाअत। ⑤ कुछ जन्नतियों के दर्जे बुलन्द करने के लिए शफ़ाअत। आखिरी तीन हमारे नबी के लिए खास नहीं है, लेकिन वह दूसरों पर मुक़दम होंगे, और इस सफ़ में आप के बाद दूसरे नबी, फ़रिश्ते, नेक लोग और शहीद लोग होंगे। ⑥ कुछ लोगों को बिना हिसाब लिए जन्नत में दाखिल किए जाने की शफ़ाअत। ⑦ कुछ काफ़िरों के अज़ाब में कमी करने के लिए शफ़ाअत, और यह हमारे नबी के लिए खास होगा वह अपने चचा अबू तालिब के अज़ाब में कमी के लिए शफ़ाअत करेंगे। फिर अल्लाह तआला अपनी रहमत से बिना किसी की शफ़ाअत के जहन्नम से ऐसे लोगों को निकाल देगा, जिनकी मृत्यु तौहीद पर हुई थी, और उन्हें अपनी रहमत से जन्नत में दाखिल करेगा। ऐसे लोगों की संख्या केवल अल्लाह ही जानता है।

**19 क्या ज़िन्दा लोगों से सहायता मांगना या शफ़ाअत चाहना जायज़ है?** हाँ, ज़िन्दा लोगों से सहायता मांगना जायज़ है, बल्कि शरीअत ने एक दूसरे की मदद करने पर उभारा है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَلَا تَنْفَرُوا﴾ “नेकी और तक्वा के कामों में एक दूसरे का सहयोग करो।” और नबी ﷺ ने फ़रमाया : “अल्लाह तआला अपने बन्दे की मदद में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।” (मुस्लिम) और शफ़ाअत की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है, इसका अर्थ है किसी के लिए माध्यम बनना। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا﴾ “और जो व्यक्ति किसी सवाब और भले काम करने की सिफ़रिश करे उसे भी उसका कुछ हिस्सा मिलेगा” और नबी ﷺ ने फ़रमाया : “शफ़ाअत करो अब्र पाओगे।” (बुखारी) और इसके जायज़ होने के लिए कुछ शर्तें हैं : ① मदद या शफ़ाअत ज़िन्दा व्यक्ति से तलब की जाए; क्योंकि मुर्दा से उसका तलब करना दुआ (पुकार) कहलाता है और मुर्दा उसकी दुआ (पुकार) में से कुछ भी सुन नहीं सकता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया : ﴿إِنَّمَا تَدْعُهُمْ لَا يَسْمَعُونَ دُعَاءَكُمْ وَلَا يُؤْمِنُونَ مَا أَسْتَجَابُ لَكُمْ﴾ अर्थात् : “अगर तुम उन्हें पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं, और अगर (मान लिया कि) सुन भी ले तो फ़र्याद रसी नहीं दुआओं के मुहताज है, और उसका अमल उसके मौत से मुनक्कित अन्त (खत्म) हो गया है मगर दुआ वगैरा के माध्यम से जो उसको पहुँचे। नबी ﷺ ने फ़रमाया : ‘जब आदम की औलाद मर

जाता है तो उसका अमल मुनक्तिभू (खत्म) हो जाता है सिवाय तीन के: सदका जारिया, कह इत्म जिससे नफा उठाया जाए या नेक संतान जो उसके लिए दुआ करे।' (मुस्लिम) ② वह जो बात कह रहा हो समझ में आ रही हो। ③ जिस व्यक्ति से शफाअत तलब की जा रही है, वह हाजिर हो। ④ शफाअत ऐसी चीज़ के बारे में हो जो आदमी के बस में हो। ⑤ सांसारिक चीजों के बारे में शफाअत हो। ⑥ जायज़ काम के लिए शफाअत हो जिस में कोई हानी न हो।

**20 वसीले कितने प्रकार के होते हैं?** दो प्रकार के होते हैं : 1- **जायज़ वसीला** : और यह तीन प्रकार के होते हैं : ① अल्लाह के नामों और उसके गुणों द्वारा वसीला पकड़ना। ② वह का अपने नेक अमल द्वारा वसीला पकड़ना, जैसे गार वाले तीनों व्यक्तियों ने किया। ③ किसी उपस्थित जिन्दा नेक मुस्लिम व्यक्ति की दुआ द्वारा वसीला पकड़ना जिसकी दुआ के स्वीकार होने की आशा हो। 2- **हराम वसीला** : और यह दो प्रकार के होते हैं : ① अल्लाह तआला से नबी ﷺ या किसी वली के जाह-व-जलाल के माध्यम से सवाल करना, जैसे यह कहना कि ते अल्लाह! मैं तेरे नबी के जाह-व-जलाल के वसीले, या हृसैन के जाह-व-जलाल के वसीले से तुझ से सवाल करता हूँ। यह बात अपनी जगह दुरुस्त है कि नबी ﷺ, और नेक लोगों के जाह-व-जलाल अल्लाह तआला के नज़दीक महान हैं, लेकिन सहाबए किराम ﷺ ने जो कि हाँ भलाई के काम में आगे आगे रहते थे कहत-साली (अकाल) पढ़ जाने के अवसर पर नबी ﷺ के जाह-व-जलाल का वसीला नहीं पकड़ा जब्कि आप की कब्र उनके पास मौजूद थी। बल्कि उन्होंने आप ﷺ के चचा अब्बास ﷺ की दुआ से वसीला पकड़ा। ② नबी ﷺ की या किसी वली की कसम खाकर अल्लाह तआला से अपनी हाजित को मांगना। जैसे यह कहना है अल्लाह! मैं तेरे फलाँ वली के वसीले से, या तेरे फलाँ नबी के हक के वसीले से तुझ से सवाल करता हूँ। और यह हराम इसलिए है कि मख्लूक की मख्लूक पर कसम खाना हराम है, ते अल्लाह को किसी मख्लूक की कसम देना और अधिक वर्जित है। और दूसरी बात यह है कि मात्र अल्लाह की इताउत कर लेने से बन्दे का अल्लाह पर कोई हक वाजिब नहीं हो जाता।

**21 आखिरत के दिन पर ईमान लाने का क्या अर्थ है?** इस बात पर पुख़ता यकीन रखा जाए कि कियामत कायम होगी, और साथ ही मौत पर, मौत के बाद कब्र की परीक्षा (आज़माइश), कब्र के अज़ाब और उसकी नेमत, सूर में फूँक मारा जाना, लोगों का अपने रब के सामने खड़ा होना, नामए आमाल को फैलाया जाना, मीज़ान (तराजू) और पुल-सिरात का कायम होना, हीज़े कौसा और शफाअत, फिर उसके बाद जन्नत या जहन्नम की ओर जाने पर ईमान रखना।

**22 क्यामत की बड़ी निशानियाँ क्या क्या हैं?** नबी ने करमाया: "क्यामत उस समय तक कायम नहीं होगी जब तक कि उससे पहले तुम दस निशानियाँ न देख लो, और इन का चर्चा करते हुए करमाया: धुआ, दज्जाल, जानवर, पश्चिम से सूरज का निकलना, ईसा बिन मर्याम का नाज़िल होना, याजूज माजूज का निकलना, तीन जगहों पर ज़मीन का धंसना, पश्चिम, पूरब और जजीरतुलभरब में, और अन्तिम निशानी के रूप में यमन से आग निकलेगी जो लोगों के महशर में इकड़ा करेगी"। (मुस्लिम) इब्ने उमर की हडीस के अनुसार इनमें सब से पहली निशानी पश्चिम से सूरज का निकलना है। और इसके अलावा दूसरी बातें भी कही गई हैं।

**23 लोगों के लिए सब से बड़ा फिला कौनसा होगा?** नबी ﷺ ने करमाया: "आदम की पैदाइश से लेकर क्यामत कायम होने तक दज्जाल से बड़ा कोई फिला नहीं है"। (मुस्लिम) दज्जाल आदम की औलाद में से है, जो कि अन्तिम जमाने में निकलेगा, उसकी दोनों आँखों के बीच (फ़ر) लिखा होगा, जिसे हर मोमिन पढ़ लेगा, वह दाहिनी आँख का काना होगा, गोया कि अंगूर की तरह उभरी हुई हो, वह जब निकलेगा तो शुरू में सुधार का दावा करेगा, फिर नुक्खत और आलादा

लेने का दावा करेगा, लोगों के पास आएगा और उन्हें अपनी ओर बुलाएगा, लोग उसे झूठला देंगे, वह उनके पास से वापस होगा तो उनके माल भी उसके पीछे पीछे हो लेंगे, और वे खाली हाथ हो जाएंगे। फिर दूसरे लोगों के पास आएगा और उन्हें अपनी ओर बुलाएगा, वे उसकी बात मान लेंगे और उसकी पूष्टि करेंगे, वह आकाश को आदेश देगा तो बरसात होगी, ज़मीन को आदेश देगा तो अनाज निकालेंगी। वह लोगों के पास पानी और आग के साथ आएगा, उसकी आग ठन्डी होगी और उसका पानी गरम होगा। मोमिन के लिए मुनासिब यह कि हर नमाज़ के अन्त में उसके फिले से अल्लाह की पनाह मांगे। और यदि उसे पाले तो उस पर सूरतु-लू-कट्ट की शुरू की आयतें पढ़े। और उससे मुठ-भेड़ करने से बचे ताकि कहीं फ़िले में न पड़ जाए, नबी ﷺ का फ़रमान है: “जो दज्जाल के बारे में सुने वह उससे दूर रहे, इसलिए कि अल्लाह कि क़सम व्यक्ति उसके पास आएगा और वह अपने आप को मोमिन समझ रहा होगा, लेकिन उसके साथ जो शुब्बात होंगे उन के कारण उसकी पैरवी करने लगेगा”। (अबू दाऊद) वह संसार में 40 दिन तक रहेगा, पहला दिन एक वर्ष के बराबर होगा, दूसरा दिन एक महीने के बराबर, तीसरा दिन एक सप्ताह के बराबर और बाकी दिन साधारण दिनों के तरह होंगे। और मक्का और मदीना के सिवाय बाकी सारे शहर और देश में जाएगा, फिर इसा ﷺ आकाश से उतरेंगे और उसकी हत्या करेंगे।

**24 क्या जन्नत और जहन्नम मौजूद हैं?** हाँ दोनों के दोनों मौजूद हैं। अल्लाह ने इन्हें लोगों को पैदा करने से पहले पैदा किया, और यह दोनों न तो फ़ना होंगे न मिटेंगे, अल्लाह तआला ने अपने फ़ज्जल से कुछ लोगों को जन्नत के लिए पैदा किया है, और अपने न्याय और अद्ल से कुछ लोगों को जहन्नम के लिए पैदा किया है, और हर किसी के लिए वह चीज़ आसान कर दी गई है जिस के लिए वह पैदा किया गया है।

**25 तक़दीर पर ईमान लाने का क्या अर्थ है?** इस बात पर पुख्ता विश्वास करना कि हर भलाई और बुराई अल्लाह तआला के फ़ैसले और उसकी लिखी हुई तक़दीर के अनुसार होती है, और वह जो चाहता है करता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया : “यदि अल्लाह तआला आकाश वालों, और धरती वालों को अज़ाब दे, तो वह उन्हें अज़ाब देने में ज़ालिम नहीं होगा, और यदि उन पर रहम करे तो उसकी रहमत उनके कर्मों से बेहतर होगी, और यदि तूने अल्लाह के रास्ते में उद्दुद पहाड़ के बराबर सोना भी ख़र्च किया तो अल्लाह तआला उसे स्वीकार नहीं करेगा यहाँ तक कि तू तक़दीर पर ईमान ले आ और यह जान ले कि जो चीज़ें तुझे मिली हैं वे तुझ से दूर होने वाली नहीं थीं, और जो चीज़ें तुझ से दूर हो गई वे तुझे मिलने वाली नहीं थीं। और यदि इसके सिवा (दूसरे अकीदे) पर तुम्हारी मौत होई तो तू अवश्य जहन्नम में जाएगा”। (अह्मद और अबू दाऊद) और तक़दीर पर ईमान लाना 4 चीज़ों को शामिल है : ① इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला को सारी वस्तुओं की स्पष्ट जानकारी है। ② इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला ने उन्हें लौहे म़फ़ूज़ में लिख रखा है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने आकाश और धरती को पैदा करने के 50 हज़ार वर्ष पहले मख्लूकों की तक़दीर लिख दी है”। (मुस्लिम) ③ अल्लाह तआला की लागू होने वाली मशीयत (चाहत) पर ईमान लाना जिसे कोई चीज़ रोक नहीं सकती और उसकी शक्ति पर ईमान लाना जिसे कोई चीज़ बेवस नहीं कर सकती, वह जो चाहता है, होता है, और जो नहीं चाहता, नहीं होता। ④ इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला ही ख़ालिक (पैदा करने वाला) है और सारी चीज़ों को बुजूद में लाने वाला है, और उसके सिवाय सारी चीज़ें उसकी मख्लूक हैं।

**26- क्या मख्लूक के पास भी वास्तविक शक्ति, चाहत और इच्छा है?** हाँ, इन्सान के पास भी वास्तविक चाहत, इच्छा और मर्ज़ी है, लेकिन यह अल्लाह की चाहत के दायरे के अन्दर है।

अल्लाह तआला ने फरमाया: ﴿وَمَا نَشَاءُ وَنَأْلَمُ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ مَا شَاءَ وَنَأْلَمُ لَا حُكْمَ لِلْأَنْجِلِينَ﴾ “तुम अल्लाह तआला के बांहें बिना कुछ भी नहीं चाह सकते”। और नबी ﷺ ने फरमाया: “कर्म करो; इसलिए कि हम व्यक्ति पर वह कर्म आसान कर दिया गया है जिस के लिए वह पैदा किया गया है”। (बुखारी और मुस्लिम) और अल्लाह तआला ने हमें शुद्ध और अशुद्ध में फर्क करने के लिए बुद्धि, आँख और कान दिए हैं, तो क्या कोई ऐसा बुद्धिमान भी है जो चोरी करने के बाद कहे कि अल्लाह ने हम पर चोरी लिख दी है?! और यदि वह ऐसी बात कहेगा भी तो लोग उसके इस उज्ज़्वल को स्वीकार नहीं करेंगे। बल्कि उसे सज़ा देंगे और कहेंगे : अल्लाह तआला ने तुम पर सज़ा भी लिखी है, तो तकदीर को हुज्जत और बहाना बनाना जायज़ नहीं है वल्कि वास्तव में यह तकदीर को झुठलाना है। अल्लाह तआला का फरमान है :

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَنْشَرُوكُواْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا شَاءَ وَلَا كُوْلُّ أَنْجِلٍ وَلَا حَرَّمٌ مِّنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ كَذَبَ الْأَذِنَكَ ﴿١٢﴾  
“मुशिरक कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम और हमारे बुजुर्ग शिर्क नहीं करते, न किसी चीज़ को हराम बनाते, इसी तरह इनके पहले के लोग झुठलाए”।

**27 एह्सान क्या है?** नबी ﷺ ने जिब्रील ﷺ के प्रश्न का उत्तर देते हुए फरमाया: “तुम अल्लाह की इबादत इस तरह से करो गोया कि तुम उसे देख रहे हो, और यदि तुम नहीं देख रहे हो तो वह तुम्हें देख रहा है”। (बुखारी और मुस्लिम और यह लफ्ज़ मुस्लिम का है)। और दीन के तीनों मर्तबों में यह सब से ऊँचा मर्तबा है।

**28 तौहीद की कितनी किस्में हैं?** तीन किस्में हैं : ① **तौहीदुर्खबूविय**: अल्लाह तआला को उसके कर्मों में अकेला मानना, जैसे : पैदा करना, रोज़ी देना और जीवन देना इत्यादि। नबी ﷺ के आने से पहले भी काफिर तौहीद की इस किस्म का इक्कार करते थे। ② **तौहीदुल उलूहीय**: इबादतों के द्वारा अल्लाह तआला को अकेला मानना। जैसे : नमाज़, नज़र और नियाज़ और सद्के इत्यादि। रसूलों को इसी कारण भेजा गया कि मात्र अल्लाह तआला की इबादत की जाए। और इसी कारण किताबें भी उतारी गईं। ③ **तौहीदुल अस्मा वस्सिफात** : विना तहीफ़ ता'तील, तवर्इफ और तम्सील के अल्लाह तआला के लिए उसके अच्छे नामों और ऊँचे गुणों को जिस तरह स्वयं अल्लाह ने और उसके रसूल ने साबित किए हैं साबित करना।

**29 वली कौन है?** नेक और परहेज़गार मोमिन जो अल्लाह से डरता हो वही वली है। अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿إِنَّمَا يَخْفِي اللَّهُ عَلَيْهِ مَا لَا حُوْفَ عَلَيْهِ وَلَا هُمْ بِحَزْنِهِ يَتَّقُونَ﴾ “याद रखो अल्लाह के मित्रों पर न कोई डर है न वे दुखी होते हैं, ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और गुनाह से परहेज़ करते हैं”। और नबी ﷺ ने फरमाया: “मेरा वली अल्लाह है और नेक मोमिन हैं”। (बुखारी और मुस्लिम)

**30 सहाबए किराम ﷺ का हमारे ऊपर क्या हक है?** हमारे ऊपर वजिब है कि हम उनसे सुधरा रखें। उनके नामों के साथ ﷺ कहें, अपने दिलों और जुबानों को उनके बारे में साफ पर चुप रहें, वे गलतियों से मासूम नहीं हैं, लेकिन उन्होंने इन्जिहाद किया, तो उन में से जो हक मिलेगा। और उनकी गलतियाँ माफ हैं, और यदि उनसे गलतियाँ हुई भी तो उनकी नेकियाँ उनके अफ़ज़ल दस सहाबए किराम हैं : अबू बक्र, फिर उमर, फिर उसमान, फिर ज़ली, फिर तालिल, ज़ुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, साद बिन अबी वकास, सईद बिन जैद और अबू ज़ैद बिन

जराह, फिर बाकी मुहाजिरीन, फिर मुहाजिरीन और अन्सार में से जो बदर में शरीक हुए, फिर बकीया अन्सार, फिर बाकी सारे सहावए कराय। नबी ﷺ ने फرمाया: “तुम मेरे सहावए किराम को गलियाँ मत दो, कसम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है यदि तुम में से कोई झटक के बराबर भी सोना खर्च करे तो उनके खर्च किए हुए मुद या आधे मुद के बराबर भी नहीं पहुँच सकता”। (बुलारी और मुल्लण) और आप ने यह भी फرمाया : “जिस ने मेरे सहावा को गाली दी उस पर अल्लाह उस के फरिश्ते और सारे लोगों की लानत हो”। तब्रानी।

**31 क्या अल्लाह के रसूल की तारीफ में मुबालगा करना जायज़ है?** इसमें कोई शक नहीं है कि हमारे नवी मुहम्मद ﷺ मख्तूक में सबसे उत्तम और श्रेष्ठ हैं, लेकिन फिर भी उनकी तारीफ में सीमा को छलांगना जायज़ नहीं जैसा कि नमारा ने ईसा ﷺ की तारीफ में छलांगा था; क्योंकि नवी ﷺ ने हमें इस से रोका है, आप ﷺ ने कर्माया: “तुम मेरी तारीफ में हदें उस तरह पार न करना जैसाकि नमारा ने इन्हे मर्याद की तारीफ में किया, मैं अल्लाह का बन्दा हूँ; इसलिए मुझे अब्दुल्लाह और रम्जुल्लाह कहो”। (बुखारी)

**32 क्या अहले किताब (यहूदी और ईसाई) मोमिन हैं? नवी** की वेस्त के बाद इस्लाम धर्म के अतिरिक्त दूसरे धर्मों को मानने वाले चाहे वे यहूदी और ईसाई हों या कुछ और सब के सब काफिर हैं, अल्लाह तआला का फरमान है :

मर वार म सुनन क बाद मुझ पर इमान नहीं लाया जा सकता। अब तक इसे कुद्रसी  
**33 क्या काफिरों पर अन्याय करना जायज़ है?** अन्याय करना हराम है क्योंकि हडीसे कुद्रसी  
में अल्लाह तआला का कथन है : “मैं ने अपने आप पर अत्याचार हराम कर लिया है, और  
इसे तुम्हारे ऊपर भी हराम किया है इसलिए तुम अत्याचार न करो”। (मुस्लिम) काफिरों के साथ  
व्यवहार किए जाने के लिहाज से उन की दो किस्में हैं : ① **जिनके साथ मुआहदा (समझौता)**  
हो, और इनकी तीन किस्में हैं : 1- **ज़िम्मी** : यह वे लोग हैं जो मुस्लिम मुलुक में रहने के  
लिए जिज्या (टैक्स) दिया करते हैं, और इन्होंने यह मुआहदा किया हो कि इन पर इस्लामी  
आदेश लागू होगा। तो इन्हें हमेशा के लिए पनाह दी जाएगी। 2- **मुआहद** : जिन्होंने  
मुसलमानों के साथ उनके देश में बाकी रहने के लिए सुलह कर लिया हो। तो इन पर  
इस्लामी आदेश तो लागू नहीं होंगे, लेकिन इन्हें मुसलमानों से लड़ाई करने से बचना होगा।  
जैसा कि यहूद नवी <sup>अंशुली</sup> के ज़माने में थे। 3- **मुस्ता'मन** : जो किसी काम के लिए  
मुसलमानों के देश में आए हों, रहने की इच्छा न हो, जैसे एलची, व्यापारी, सैयाह, पर्यटक,  
पनाह चाहने वाले और इन जैसे लोग। तो इन्हें कठूल नहीं किया जासकता, और न ही इन  
से जिज्या लिया जाएगा, पनाह चाहने वाले को इस्लाम की दावत दी जाएगी यदि वह स्वीकार  
कर लिया तो अच्छा है, और यदि वह अपनी शान्ति-भवन को पहुँचना चाहता है तो उसे बातें

**पहुंचा दिया जाएगा। २ हर्बी काफिर :** जिनका मुसलमानों से न तो कोई मुआहदा हो, और न ही जिन्हें शान्ति प्रदान की गई हो, बल्कि वे मुसलमानों से लड़ रहे हों, या इस्लाम और मुसलमानों के विरोध में लड़ाई का एलान कर चुके हों, या इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों को मदद करते हों, तो इन से लड़ाई की जाएगी और इन्हें मारा जाएगा।

**34 बिद्रूअत का अर्थ क्या है?** इब्ने रजब कहते हैं : “बिद्रूअत हर उस चीज़ का नाम है जिसे धर्म के अन्दर बे-बुनियाद जन्म दिया गया हो, और यदि शरीअत में उसकी बुनियाद मौजूद है तो फिर वह बिद्रूअत नहीं है। चाहे उसे लुगत में बिद्रूअत कहा जाता हो”।

**35 क्या धर्म में अच्छी और बुरी बिद्रूअत भी पाई जाती है?** आयतों और हड्डीसों में बिद्रूअत की निंदा की गई है। नबी ﷺ का फरमान है : “जिसने कोई ऐसा कर्म किया जो हमारे आदेश के विरुद्ध हो तो वह अस्वीकृत है”। (बुखारी और मुस्लिम) और आप ﷺ ने फरमाया : “धर्म में हर नवी ईजाद की जाने वाली चीज़ बिद्रूअत है, और हर बिद्रूअत गुम्राही है”। (अबू दाऊद) और इमाम मालिक बिद्रूअत के बारे में कहते हैं कि “जिस ने धर्म में बिद्रूअत ईजाद की और उसे उसने अच्छा समझा, तो अवश्य उसने ऐसा सोचा कि मुहम्मद ﷺ ने रिसालत में ख़्यानत की; क्योंकि अल्लाह ﷺ का फरमान है : ﴿إِنَّمَا كُلَّتْ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَمْسَتْ عَلَيْكُمْ نُعْصَى﴾ “आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया, और तुम पर अपनी ने मतें पूरी कर दी”।

और कुछ हड्डीसें ऐसी आई हैं जिन्हें लुगवी मायने के लिहाज़ से बिद्रूअत की प्रशंसा की गई है, और वास्तव में यह हड्डीसें उन चीजों के बारे में हैं जिनकी बुनियाद शरीअत में मौजूद है, लेकिन बाद में वह भूला दी गई हों तो नबी ﷺ ने उन्हें फिर से ज़िन्दा करने पर ज़ोर दिया है, जैसा कि आप ﷺ ने फरमाया : “जिसने इस्लाम में किसी अच्छी सुन्नत को ज़िन्दा किया तो उसे उसका सवाब मिलेगा, और उसके बाद उसके आधार पर कर्म करने वालों का सवाब भी मिलेगा, और उनके सवाबों में कोई कर्मी न होगी”। (मुस्लिम) और इसी मायने में जमाअत के साथ तरावीह की नमाज़ पढ़ने के बारे में उमर ﷺ का फरमान है : “यह क्या ही अच्छी बात है”। क्योंकि ऐसा करना शरीअत द्वारा साबित था, और नबी ﷺ ने तीन रातों में जमाअत के साथ तरावीह पढ़ी भी थी, लेकिन इस डर से कि वह फर्ज़ न कर दी जाए आप ने जमाअत के साथ पढ़ना छोड़ दिया था, तो उमर ﷺ ने अपने दौर में लोगों को इस सुन्नत पर इकट्ठा किया।

**36 निफाक की कितनी किस्में हैं?** दो किस्में हैं : **१ निफाके एतिकादी :** इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति ज़ाहिर तो ईमान करे लेकिन कुफ़ को छुपाए हो, और यह चीज़ धर्म से बाहर निकाल देती है, और यदि इसी अवस्था में व्यक्ति की मृत्यु हो गई तो उसकी मृत्यु कुफ़ पर हुई, अल्लाह ने आला का फरमान है : ﴿إِنَّ الظُّفَّارِ إِلَّا سَفَّلَ مِنَ الْأَذْرَكِ﴾ “मुनाफिकीन तो अवश्य नरक की सब से निचली तह में जायेंगे”। और इनकी पहचान यह है कि यह अल्लाह और मोमिनों को थोका देते हैं, मोमिनों का मज़ाक उड़ाते हैं, उन पर काफिरों की सहायता करते हैं, और अपने नेक कर्मों के द्वारा सांसारिक लाभ चाहते हैं। **२ निफाके अमली :** ऐसा व्यक्ति धर्म से बाहर तो नहीं निकलता, लेकिन यदि तौबा न करे तो वड़े निफाक से जा मिलने का डर होता है। और ऐसे व्यक्ति की पहचान यह है कि जब बात करता है तो झूट बोलता है, बादा करता है तो पूरा नहीं करता, लड़ाई करता है तो गाली बकता है, और मुआहदा (प्रतिज्ञा) करता है तो थोका देता है, और जब उसके पास अमानत रखी जाती है तो उस में ख़्यानत करता है। तो गाईयो। अपने आप को इस तरह की चीजों से बचाओ और अपने नफ़्स का हिसाब करो।

**क्या मुसलमान पर निफाक से डरना वाजिब है?** हाँ, सहाबए किराम ﷺ भी कर्मों में निफाक से डरा करते थे। इब्ने मुलैका ﷺ कहते हैं : मेरी मुलाकात 30 सहाबए किराम से हुई वे सब

अपने ऊपर निफाक से डरते थे। और इब्राहीम तैमी ﷺ कहते हैं : मैं ने जब भी अपने कथन को अपने कर्मों के ऊपर नापा तो मुझे अपने झूठे होने का डर हुआ। हःसन बसरी ﷺ कहते हैं : निफाक से मोमिन ही डरता है, और मुनाफिक ही निडर रहता है। और उमर ﷺ ने हुजैफा ﷺ से पूछा : मैं तुझे अल्लाह का वास्ता देता हूँ क्या नवी ﷺ ने मुझे भी मुनाफिकों में शुमार किया है? तो हुजैफा ने कहा : नहीं, और आप के बाद मैं किसी की भी सफाई नहीं दूँगा।

**37 अल्लाह तआला के यहाँ सब से बड़ा पाप क्या है?** अल्लाह तआला के साथ साझी बनाना सब से बड़ा पाप है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿إِنَّ الْشَّرِكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ “अवश्य शिर्क सब से बड़ा पाप है”। और जब आप ﷺ से पूछा गया कि कौनसा पाप सब से बड़ा है? तो आप ने फ़रमाया : “तू अल्लाह के साथ दूसरे को साझी बनाए, जबकि उसने तुझे पैदा किया है”। (बुखारी और मुस्लिम)

**38 शिर्क की कितनी किस्में हैं?** दो किस्में हैं : ① शिर्के अक्बर : इतना बड़ा पाप है कि यह शिर्क करने वाले व्यक्ति को इस्लाम धर्म के दायरे से बाहर निकाल देता है। और ऐसे मुशिरक व्यक्ति की मृत्यु यदि शिर्क से बिना तौबा किए हो गई तो उसकी कभी भी माफी नहीं होगी। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَعْفُرُ مَا دُونَ ذَلِيلَ إِنَّمَّا يَشَاءُ وَيَعْفُرُ مَا دُونَ ذَلِيلَ إِنَّمَّا يَشَاءُ﴾ “निःसन्देह अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किए जाने को नहीं क्षमा करता, और इस के अतिरिक्त पाप जिसके चाहे क्षमा कर देता है।” और इसकी चार किस्में हैं : 1. दुआ में शिर्क करना। 2. नियत, इरादे और इच्छा में शिर्क करना। जैसे गैरुल्लाह के लिए नेक कर्म करना। 3. पैरवी में शिर्क करना। जैसे अल्लाह तआला ने जिन चीजों को हळाल किया है, उन्हें हळाम ठहराने में या जिन्हें हळाम किया है उन्हें हळाल ठहराने में आलिमों की बातें मानना। 4. महब्बत में शिर्क करना, अर्थात् अल्लाह तआला जैसी महब्बत दूसरे से करना।

② शिर्के अस़ार : यह पाप शिर्क करने वाले व्यक्ति को धर्म के दायरे से बाहर नहीं निकालता। और यह दो प्रकार के होते हैं : ① ज़ाहिर : चाहे उस का सम्बंध कथन से हो जैसे गैरुल्लाह की क़सम खाना, या यह कहना : जो अल्लाह चाहे और आप चाहें, या यह कहना : अल्लाह न होता और आप न होते। या उस का सम्बंध कर्म से हो जैसे मुसीबत यालने या दूर करने के कड़ा और छल्ला पहन्ना, या धागा बांधना, या नज़र से बचने के लिए तावीज लटकाना, या चरा, नाम, शब्द और जगह से बदफ़ाली लेना। ② और छुपे हुए : औश्र यह नियत, मक्सद और इरादे में शिर्क करना, जैसे रिया।

**39 शिर्के अक्बर और शिर्के अस़ार में क्या फ़र्क है?** दोनों में अन्तर यह है कि शिर्के अक्बर करने वाले व्यक्ति को संसार में धर्म के दायरे से बाहर माना जाएगा, और आखिरत में वह सदा के लिए जहन्नम में जलेगा। लेकिन शिर्के अस़ार करने वाले व्यक्ति को संसार में धर्म के दायरे से बाहर नहीं माना जाएगा, और न ही आखिरत में वह सदा के लिए जहन्नम में जलेगा। इसी तरह शिर्के अक्बर सारे कर्मों को नष्ट कर देता है, लेकिन शिर्के अस़ार मात्र उसी कर्म को नष्ट करता है जिसमें वह शामिल हो। लेकिन एक बात में मतभेद है कि क्या शिर्के अस़ार से माफी के लिए तौबा ज़रूरी है? या वह भी दूसरे बड़े गुनाहों की तरह अल्लाह की मशीयत तले है? बहरहाल दोनों सूरतों में मुआमला ख़तरनाक है।

**40 क्या छोटा शिर्क होने से पहले इससे बचाव का कोई रास्ता या हो जाने के बाद इसका कोई कफ़ारा है?** इससे बचाव का रास्ता यह है कि अल्लाह की खुशी प्राप्त करने के लिए कर्म करे, और यदि थोड़ा सा हो तो दुआ द्वारा इससे पनाह तलब करे, नवी ﷺ ने फ़रमाया : “लोगो! इस शिर्क से बचो जो चीटी की चाल से अधिक छिपा हुआ है, तो लोगों ने

**पूछा :** ऐ अल्लाह के रसुल! जब यह चीटी की चाल से भी अधिक छिपा है तो हम इसमें कैसे बचें? तो आप ﷺ ने फरमाया: यह दुआ किया करो नमूद़ بِكَ مِنْ أَنْ شُرُكَ بِكَ شُبِّيْلٌ اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ تُشْرِكَ بِكَ لَمَّا لَمْ يَعْلَمْ ॥ “ऐ अल्लाह! हम जान बूझ कर तेरे साथ शिर्क करने से तेरी पनाह ये आते हैं, और जो नहीं जानते हैं उससे तेरी माफी चाहते हैं”। (अहमद) और गैरुल्लाह की कसम खाने का कफ़ारा यह है कि ﷺ اَللَّهُمَّ اَلَا اَنْتَ اَنْتَ وَلَا مَوْلَانَا ने फरमाया: “जिस ने लात और उज्जा की कसम खाई तो वह ﷺ कहे जैसा कि नबी ﷺ ने फरमाया: “जिसे बदू-फ़ाली के कफ़ारे के बारे में नबी ﷺ का फरमान है : “जिसे बदू-फ़ाली ने अपनी ज़खरत पूरी करने से रोक दिया, तो उसने यकीनन् शिर्क किया”। लोगों ने पूछा : तो इसका कफ़ारा क्या है? आप ने फर्माया : यह दुआ पढ़े : اللَّهُمَّ لَا حَيْرَ لِإِلَّا طَيْرُكَ، وَلَا طَيْرٌ لِإِلَّا حَيْرُكَ، وَلَا إِلَهٌ غَيْرُكَ ॥ “ऐ अल्लाह! सारी भलाइयाँ तुझ ही से हैं, और तेरी फाल के अतिरिक्त कोई फाल नहीं, और तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं”। (अहमद)

**41 कुफ़ की किसी किसमें है?** दो किसमें हैं। ① बड़ा कुफ़ जो कि व्यक्ति को इस्लाम के दायरे से बाहर निकाल देता है। और इसकी पाँच किसमें हैं : 1- झूठलाने का कुफ़। 2- तस्दीक के साथ घमण्ड करने का कुफ़। 3- शक का कुफ़। 4- मुंह फेरने का कुफ़ 5- निफाक के द्वारा कुफ़ करना। ② छोटा कुफ़, और इसे कुफ़े ने मत भी कहते हैं। और यह पाप है लेकिन इससे व्यक्ति इस्लाम के दायरे से बाहर नहीं निकलता। जैसे किसी मुस्लिम व्यक्ति की हत्या करना।

**42 नज़र का क्या हुक्म है?** नबी ﷺ ने नज़र को नापसन्द करते हुए फरमाया : “इससे कोई भलाई नहीं आती”। (बुखारी) यह बात उस अवस्था की है जब कि नज़र मात्र अल्लाह के लिए मानी गई हो, यदि किसी कब्र या वली के लिए नज़र मानी जाए तो फिर नज़र मानना हराम है जो पूरी नहीं की जाएगी।

**43 काहिन या ज्योतिशी के पास जाने का क्या हुक्म है?** हराम है, यदि उनके पास लाभ की उम्मीद से गया और उनकी बातों को सच नहीं माना तो उसकी 40 दिन की नमाजें स्वीकार नहीं होंगी, नबी ﷺ का फरमान है : “जिसने ज्योतिशी के पास आकर उससे कुछ पूछा तो उसकी 40 रात की नमाजें नहीं स्वीकार होंगी”। (मुस्लिम) और यदि उसने उनके गैबी इत्म के दावे को सत्य मान लिया तो उसने मुहम्मद ﷺ के धर्म के साथ कुफ़ किया, नबी ﷺ का फरमान है : “जो व्यक्ति ज्योतिशी या काहिन के पास आया और उस की बात को सच मान लिया तो उसने मुहम्मद पर उतारे गए धर्म के साथ कुफ़ किया”। (अबू-दाऊद)

**44 नक्षत्रों (तारों) से बारिश तलब करना बड़ा शिर्क कब होगा और छोटा शिर्क कब होगा?** जिसकी यह आस्था हो की वर्षा बरसाने में अल्लाह तआला की चाहत के बिना नक्षत्रों की अपनी तासीर होती है, वही पानी बरसाते हैं तो यह बड़ा शिर्क है। पर जो यह आस्था रखे कि अल्लाह तआला की चाहत से नक्षत्रों का प्रभाव होता है, वर्षा बरसाने के लिए अल्लाह तआला ने उन्हें माध्यम बनाया है, जब वह नक्षत्र होता है तभी पानी पड़ता है तो यह छोटा शिर्क है। इसलिए कि उसने शरीअत की दलील के बिना उसे सबब बनाया। अलबत्ता मौसम और वर्षा के समय की जानकारी के लिए इसके द्वारा अनुमान लगाना जायज़ है।

**45 मुस्लिम हुक्मरान (शासक) के तई क्या वाजिब है?** खुशी और ग़मी हर अवस्था में उनकी बातों को सुनना और मानना वाजिब है, यदि वे अत्याचार भी करें तब भी उनके विरोध बगावत करना हराम है, उन्हें शरापना जायज़ है और न ही उनकी इताअत से मुंह मोड़ना बुराई का आदेश न दें उनकी इताअत को हम अल्लाह तआला की इताअत का हिस्सा समझते

है, और यदि उन्होंने बुराई का आदेश दिया तो उसमें उनकी इताअत नहीं की जाएगी वाकी इताअत की चीजों में भलाई के साथ उनकी इताअत की जाएगी। नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हाकिम की बात सुनो और उसकी इताअत करो, अगरचे तुम्हें मारा जाए और तुम्हारा माल छोन लिया जाए तो भी सुनो और इताअत करो”। (मुस्लिम)

**46 क्या अब्र और नस्य (करने या न करने के आदेशों) के बारे में अल्लाह की हिक्मत का प्रश्न करना जायज़ है?** हाँ जायज़ है, लेकिन इस शर्त के साथ कि हिक्मत की जानकारी पर ईमान लाना या कर्म करना निर्भर न हो। बल्कि यह जानकारी इस लिए हो कि मोमिन व्यक्ति हक पर और पुख्ता होजाए। लेकिन प्रश्न किए बिना स्वीकार कर लेना पूरी बन्दगी, अल्लाह और उसकी कामिल हिक्मत पर ईमान की दलील है। जैसा कि सहाब-ए-कराम ﷺ का हाल था।

**47 अल्लाह तआला के इस फ़रमान** ﴿مَا أَصَابَكُمْ مِّنْ حَسْنَةٍ وَمَا أَصَابَكُمْ مِّنْ سَيِّئَةٍ فَنَفِسُكُمْ۝ से मुराद ने 'मत तेरे अपने खुद की ओर से है' का क्या मतलब है? आयत में ﴿حَسْنَةٍ﴾ से मुराद ने 'मत तेरे अपने खुद की ओर से है' का क्या मतलब है? आयत में ﴿حَسْنَةٍ﴾ से मुराद बुराई है, और यह सारी चीजें अल्लाह तआला की ओर से मुक़दर और ﴿سَيِّئَةٍ﴾ से मुराद बुराई है, और यह सारी चीजें अल्लाह तआला की ओर की गई है इसलिए की इन्आमकर्ता वही है, है, पर ने 'मत की निस्बत अल्लाह तआला की ओर की गई है इसलिए की इन्आमकर्ता वही है, लेकिन बुराई को भी अल्लाह तआला ने ही ख़ास हिक्मत के कारण पैदा किया है, और बुराई को इस नज़रिया से देखा जाए तो वह अल्लाह तआला की ओर से एसान है, इसलिए कि वह कभी बुराई करता ही नहीं, बल्कि उस के सारे काम अच्छे हैं, जैसा कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हर प्रकार की भलाई तेरे दोनों हाथों में है, और बुराई की निस्बत तेरी तरफ नहीं की जासकती”। (मुस्लिम) बन्दों के कर्मों का पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है, और साथ ही साथ स्वयं बन्दे की अपनी कमाई भी है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿فَإِنَّمَا مَنْ أَعْطَنِي وَأَنْفَقَ وَصَدَقَ بِالْخُلُّسِ ۝ فَسَيِّسِرْهُ لِلْسُّرِىٰ﴾ “तो जो व्यक्ति देता रहा और डरता रहा, और अच्छी बातों की पुष्टि करता रहा, तो हम भी उसके लिए आसानी पैदा कर देंगे”。 वैसे ही है जैसे उसे जन्नती कहा जाए, और इस सम्बंध में अहले सुन्नत-वल्-जमाअत का मज़हब यह है कि जिनके बारे में नबी ﷺ ने जन्नती या जहन्नमी होने की खबर दी है उनके सिवाय किसी भी मुस्लिम को जन्नती या जहन्नमी न कहा जाए, क्योंकि हकीकत पौशीदा है, और किस स्थिथि में उस व्यक्ति की मौत हुई इसकी जानकारी हमें नहीं है, और अन्तिम कर्म का ही एतेबार होगा, और नियत की जानकारी मात्र अल्लाह तआला को है, लेकिन नेकी करने वाले के लिए सवाब की उम्मीद करते हैं, और पापी पर सजा से डरते हैं।

**49 क्या किसी ख़ास मुस्लिम व्यक्ति को काफिर कह सकते हैं?** किसी ख़ास मुस्लिम व्यक्ति पर कुफ़, शिर्क या निफाक का हुक्म लगाना जायज़ नहीं है, यदि उससे इस तरह का कोई कर्म ग़ाहिर न हो। और उसकी भेद को हम अल्लाह के हवाले कर देंगे।

**50 क्या काबा के अलावा दूसरी जगहों का तवाफ़ करना जायज़ है?** काबा के अलावा दूसरी किसी भी जगह का तवाफ़ करना जायज़ नहीं है, और न ही किसी भी जगह की बराबरी उससे करना जायज़ है चाहे उस जगह की फ़ज़ीलत कितनी भी अधिक क्यों न हो। और जिसने काबा के अलावा किसी जगह का उसकी ताज़ीम करते हुए तवाफ़ किया तो उसने अल्लाह की नाफरमानी की।

## दिलों के कर्म

अल्लाह तआला ने दिल को पैदाकरके उसे सारे अंगों का बादशाह बनाया, और अंगों को उसका लश्कर, यदि दिल भला हो तो सारे लश्कर भले रहते हैं, नबी ﷺ ने कर्माया : **إِنَّمَا يُحِبُّ الْجَسَدَ كُلُّهُ، وَإِذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ أَوْ هِيَ الْقُلُوبُ** “यकीनन् दिल में एक टूकड़ा है, यदि वह ठीक होजाए तो पूरा बदन ठीक रहता है, और यदि वह ख़राब होजाए तो पूरा जिस्म ख़राब होजाता है, और यह दिल है।” (बुखारी तथा मुस्लिम) तो दिल या तो ईमान और तक्वा की जगह है, या कुफ्र, निफाक और शिर्क की। नबी ﷺ का फर्मान है : “तक्वा यहां है, और आप ﷺ ने तीन बार अपने सीने की ओर इशारा किया।” (मुस्लिम)

\* आस्था, बचन तथा कर्म का नाम ईमान है, अर्थात् दिल से आस्था रखना, जुबान से इकार करना और दिल तथा अंगों द्वारा कर्म करना। चुनांचि दिल ईमान लाता है और तस्दीक करता है, जिसके नतीजे में जुबान कल्मए-शहादतैन की गवाही देता है, फिर दिल में जो मुहब्बत, डर और उम्मीद जगती है उसके नतीजे में जुबान जिक्र करने लगता है, कुर्अन की तिलावत करता है, और अल्लाह ﷺ की नजदीकी प्राप्त करने के लिए शरीर में मौजूद बाकी दूसरे अंग रुकुअ़, सज्दा और नेकी करने में व्यस्त होजाते हैं; चुनांचि शरीर दिल का गुलाम है, इसी लिए दिल में जो बात भी घर कर जाती है किसी न किसी तरह से उसका असर अंगों द्वारा प्रकट होजाता है।

\* दिल के आमाल से मुराद ऐसे कर्म हैं जिन की जगह दिल है, उन कर्मों का दिल से गहरा नाता है, और इनमें सब से महान कर्म अल्लाह तआला पर ईमान लाना है; क्योंकि ईमान की जगह दिल है, इसी प्रकार इकार करना और ऐसी तस्दीक करना जो शरीअत का पाबन्द बनाए दिल के महान कर्मों में से है, साथ ही साथ इन्सान के दिल में अल्लाह ﷺ के लिए पैदा होने वाले यह सारे कर्म भी हैं, जैसे मुहब्बत, डर, भय, उम्मीद, उस की ओर वापसी, उस पर भरोसा, सब्र, विश्वास और खुशूअ़ खुजुअ़ इत्यादि।

\* दिल के हर कर्म के मुकाबले में दिल की बीमारी भी है, जैसे खुलूस इसकी ज़िद दिखलावा है, यकीन के बरखिलाफ़ शंका है और मुहब्बत के बरअक्स नफरत इत्यादि, लिहाज़ा यदि हम अपने दिलों को सुधारने से चूक गए तो उस पर गुनाहों का तह लगते चले जाएंगे, जो उसे बर्बाद करदेंगे। जैसा कि नबी ﷺ का फर्मान है :

**إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا أَخْطَأَ حَطِينَةً نُكِتَ فِي قَلْبِهِ نُكْتَةٌ فَإِنْ هُوَ نَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ وَتَابَ صُبِّقَتْ فِيَنْ عَادَ زِيدَ فِيهَا وَإِنْ عَادَ زِيدَ فِيهَا حَتَّى تَعْلُو فِيهِ فَهُوَ الرَّانُ الَّذِي ذَكَرَ اللَّهُ: كَلَّا لِرَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ** “बन्दा जब पाप करता है तो उस के दिल पर एक काला नुक़ता पड़ जाता है, यदि तौबा इस्तिग़फार कर लेता है तो वह कालक मिटा दी जाती है, पर यदि वह फिर गुनाह पर गुनाह करता जाता है, तो वह कालक बढ़ती जाती है, यहां तक कि उस के पूरे दिल पर छा जाती है, और यही वह रैन है जिस का चर्चा अल्लाह तआला ने कुर्अन में किया है : كَلَّا لِرَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ और नबी ﷺ ने यह भी फर्माया कि : “फिले दिलों से इस प्रकार चिमटते चले जाएंगे जैसे उस में एक काला नुक़ता पड़ जाता है, तो जिस दिल में बुराई घर कर लेती है नुक़ता पड़ जाता है, यहां तक के दिल दो प्रकार के हो जाते हैं, एक सफेद पत्थर की तरह जिस पर आकाश और धर्ती के रहने समय तक फिले का असर न होगा, और दूसरा गवले

चटाई बुने में एक एक करके सीक पिरोई जाती है, तो जिस दिल में बुराई घर कर लेती है नुक़ता पड़ जाता है, यहां तक के दिल दो प्रकार के हो जाते हैं, एक सफेद पत्थर की तरह जिस पर आकाश और धर्ती के रहने समय तक फिले का असर न होगा, और दूसरा गवले

काले की तरह होजाता जैसे झुका हुआ कूजा हो जिसे अपनी नफ़सानी खाहिश के सिवा न तो भलाई की पहचान होती है और न ही बुराई की” मुस्लिम।

\* और अंगों से जुड़ी इबादतों के मुकाबले में, दिल से जुड़ी हुई इबादतों की जानकारी अधिक अहम है; क्योंकि यह बुनियाद हैं, और अंगों वाली इबादतें इनकी शाखें हैं, इन से दिली इबादतें पूरी होती हैं, और यह उन्हीं के फल स्वरूप हैं। चुनान्वि दिल ज्ञान और फ़िक्र कि जगह है, और इसीलिए अल्लाह के पास लोगों में से बेहतर वह है जिस के दिल में ईमान, विश्वास और इख़लास इत्यादि ने घर कर लिया हो। हसन बसरी ने कहा है : “अल्लाह की क़स्म अबू बक्र ने नमाज़ अथवा रोज़े के द्वारा सहबए कराम पर सबकृत नहीं प्राप्त किया बल्कि उस ईमान द्वारा किया जो उनके दिल में बस चुका था”।

### \* दिल के कर्मों का अंगों के कर्मों पर महानता के कई कारण हैं :

1- दिल की इबादतों में गड़बड़ी के कारण अंगों की इबादतें बर्बाद हो जाती है, जैसे दिखलावे के लिए कर्म करना। 2- दिल की इबादतें असल हैं, लिहाज़ा दिल के इरादे के बिना यदि मुंह से कोई शब्द निकल आए या शरीर द्वारा कोई अश्लिल हक्कत होजाए तो उस पर कोई पकड़ नहीं होती। 3- इनके द्वारा जन्नत में बुलन्द मुकाम प्राप्त होते हैं, जैसे जुह्य और तक्वा। 4- यह अंगों वाले कर्मों से अधिक कठिन हैं, इन्हें मुन्कदिर कहते हैं कि : “मैं 40 साल तक अपने दिल का इलाज किया फिर जाकर वह मेरा ताबेदार बना”। 5- इनके बड़े सुन्दर प्रभाव होते हैं, जैसे अल्लाह के लिए प्रेम करना। 6- इन पर बहुत अधिक सवाब मिलते हैं, अबुद्रदा कहते हैं कि : “कुछ समय ध्यान लगाना रात भर कियाम करने से उत्तम है”। 7- इनके द्वारा अंगे हरकत में आती हैं। 8- यह अंगों के कर्मों के महान होने का कारण बनते हैं या उन्हें घटान और बर्बाद करने का, जैसा कि खुशुअ के साथ नमाज़ पढ़ना। 9- यह कभी कभार अंगों के कर्मों के बदले का सबब बनते हैं, जैसे धन न होने के बावजूद भी सदके की नियत करना। 10- इन पर मिलने वाले सवाब की कोई सीमा नहीं है, जैसे सब्र के कारण मिलने वाले सवाब। 11- यदि अंग करना बन्द करदे तो भी इनका सवाब जारी रहता है। 12- अंगों द्वारा कर्म करने से पहले और कर्म के दौरान भी यह पाए जाते हैं।

अंगों के कर्म करने से पहले दिल कई एक अवस्था से गुज़रता है, ① किसी भी कर्म के लिए दिल में सोंच पैदा होती है। ② फिर उस के लिए जगह बनती है। ③ फिर वह उसे करने या छोड़ने के बारे में मंझधार में रहता है। ④ फिर करने का इरादा ग़ालिब होता है। ⑤ फिर उसे करने के लिए इरादे में पुख्तगी आती है। चुनान्वि पहले के तीनों अवस्था में न तो नेकी के कर्म पर उसे सवाब मिलता है और न ही कुकर्म पर गुनाह। अलवत्ता इरादे के कारण नेकी के इरादे पर उसे एक सवाब मिलता है, और बूराई के इरादे पर गुनाह नहीं मिलता। लेकिन इरादा यदि पुख्ता हो जाए तो नेकी के कर्म का पुख्ता इरादा करने पर उसे सवाब मिलता है, और इसी तरह पाप के करने का पुख्ता इरादा करने पर गुनाह मिलता अगणच पाप न कर पाये। क्योंकि शक्ति के साथ किसी कर्म के करने का इरादा करने से उस कर्म का होना लाज़िम आता है। अल्लाह ﷺ का कहा है : ﴿الَّذِينَ يُجْزَوُنَ أَنَّ تَبَعَّدَ الْفَحْشَةُ﴾ “जो लोग मुसलमानों में बे-हयाई फैलाने के आर्जू में रहते उनके लिए ﴿فِي الْأَذْيَاءِ مَا مَنْتُوا هُمْ عَذَابُ أَلِيمٍ﴾ ने कहा है : “यदि दो मुसलमान तलवार लेकर आमने सामने होगए तो कातिल और मकतूल दोनों जहन्नमी हैं”, सहाबी कहते हैं

: मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! यह तो भला क़ातिल है पर मक़तूल का क्या जुर्म है? तो आप  ने फर्माया : “वह भी अपने साथी की हत्या करना चाहता था”। बुखारी।

**यदि पुख्ता इरादा कर लेने के बाद भी पाप नहीं करता तो वास्तव में इसके 4 प्रकार हैं:**

**①** या तो उसे अल्लाह के डर से छोड़ा हो, फिर तो उसे सवाब मिलेगा। **②** या लोगों के डर से छोड़ा हो, तो ऐसा व्यक्ति पापी क़रार पाएगा; क्योंकि पाप न करना इबादत है, जिसे अल्लाह के लिए होना लाज़िम है। **③** निर्बस होने के कारण उसे न कर पाया हो, और उसे करने के लिए जो अस्वाब दरकार थे उनका भी प्रयोग न किया हो तो ऐसा व्यक्ति भी अपने पुख्ता इरादे के कारण पापी क़रार पाएगा। **④** पाप करने के लिए जो अस्वाब दरकार थे उनका प्रयोग तो किया हो लेकिन बेबसी के कारण उसकी इच्छा पूरी न हो पाई तो ऐसे व्यक्ति पर पाप करने वाले के बराबर पूरा पूरा गुनाह लिखवा जाएगा; जैसा कि पिछली हड्डीस द्वारा स्पष्ट है। और जब कभी भी बन्दे के अन्दर किसी बुराई के करने का इरादा हो तो उसकी उस पर पकड़ होगी, चाहे उस ने बुराई पहले किया हो या बाद में, चुनान्वि जिस व्यक्ति ने कभी ह्राम काम किया हो, और शक्ति होने के साथ ही दोबारा उसे करना चाहता हो, तो गोया कि वह अपने पाप पर मुसिर है; लिहाज़ वह अपनी इस नियत के कारण पापी क़रार पाएगा; अगणच वह इसे दोबारा न कर पाए।

### \* दिल के कुछ कर्म :

**\* नियत :** नियत का अर्थ है इरादा और इच्छा करना, नियत के बिना कोई कर्म स्वीकार नहीं होता, जैसा कि नबी  का फर्मान है : “कर्मों के सवाब का दारोमदार नियत पर है, और हर व्यक्ति को वही चीज़ प्राप्त होती है जिसकी वह इच्छा करता है”। इन्हे मुवारक  फर्माते हैं : “बहुत से छोटे कर्म नियत के कारण महान होजाते हैं, और बहुत से महान कर्म नियत के कारण तुच्छ होजाते हैं”। और फुजैल रहे ने फर्माया : “अल्लाह तआला तुझ से मात्र तुम्हारी नियत और इरादा चाहता है, चुनान्वि कर्म यदि अल्लाह तआला के लिए हो तो उस का नाम इख्लास है, और इख्लास यह कि किसी भी कर्म अल्लाह तआला के सिवाय किसी दूसरे की हिस्सेदारी न हो, और यदि गैरुल्लाह के लिए कर्म किया गया हो तो इसका नाम रिया, या निफाक आदि है।

**फ़ाइद़:** ज्ञानी लोगों के इलावा बाकी सारे लोग बर्बाद होने वाले हैं, और सारे के सारे ज्ञानी बर्बाद होने वाले हैं सिवाय कर्म करने वालों के, और सारे के सारे कर्म करने वाले हलाक होने वाले हैं सिवाय मुख्लिसों के। चुनान्वि जिस बन्दे के अन्दर कर्म करने का इच्छा हो उसके लिए सब से पहले नियत के बारे में ज्ञान लेने की आवश्यकता है, फिर सच्चाई और इख्लास की वास्तविकता को समझ कर नियत को कर्म द्वारा सुधारे, क्योंकि बिना नियत के कर्म करने से मात्र थकान हासिल होता है, और नियत के अन्दर यदि इख्लास न हो तो फिर वह रिया और दिखलावा है, और ईमान के बिना इख्लास भूस जैसा है।

**कर्म तीन प्रकार के होते हैं :** **① कुकर्म :** अच्छी नियत गुनाह के कामों को नेकी में नहीं बदल देती, बल्कि बूरी नियत के कारण गुनाह अधिक बढ़ जाता है। **② मुवाहात :** जायज़ और मुवाह कर्म जिसे कई प्रकार की नियत से किया जासकता है, जो उसे नेकी में भी बदल देती है। **③ सुकर्म :** नेकी के कामों के सहीह होने तथा उन पर सवाब मिलने का आधार

नियत है<sup>1</sup>, यदि नेक कर्म द्वारा दिखलावा मक्सूद हो फिर तो यह पाप, और छोटा शिर्क है, जो बड़ा शिर्क भी हो सकता है। और इसकी 3 स्थिथी हो सकती है : ① इबादत शुरू ही की हो दिखलावे के लिए तो यह शिर्क है और ऐसी इबादत बातिल है। ② इबादत अल्लाह के लिए शुरू की हो, फिर बीच में दिखलावे की नियत पैदा होजाए, तो यदि इबादत का अन्तिम हिस्सा पहले हिस्से पर निर्धारित न हो जैसे सदका, तो इसका पहला भाग सही है और अन्तिम भाग बर्बाद है, और यदि पहला भाग अन्तिम भाग से मिला हुआ हो जैसे नमाज़, तो इसकी दो हालत है : क : रिया को दूर करने का प्रयास करे, तो इबादत पर इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा। ख : रिया के साथ ही इबादत पूरी करे तो पूरी इबादत बातिल होजाएगी। ③ इबादत से फ़ारिग़ होने के बाद रिया की नियत पैदा है, तौ यह वास्तव में शैतानी वस्वर्सा है, जिसका इबादत और आबिद पर कोई असर नहीं होता। इनके इलावा भी रिया के चोर दरवाज़े हैं जिनकी जानकारी प्राप्त करना और उन से बचना ज़खरी है।

**अल्बत्ता यदि नेक कर्म द्वारा मक्सद संसार प्राप्त करना हो तो बन्दे की नियत के आधार पर उसे सवाब या गुनाह मिलेगा।** जिस की तीन हालतें हैं : ① नेकी का मक्सद मात्र दुनिया प्राप्त करना हो; जैसे कोई व्यक्ति नमाज़ में इमामत मात्र पैसा हासिल करने के लिए करता हो तो ऐसा व्यक्ति गुनहगार करार पाएगा। नबी ﷺ ने फ़र्माया : “जिस ने ऐसा इत्म करता हो तो ऐसा व्यक्ति गुनहगार करार पाएगा।” अबू दाऊद। ② नेकी का मक्सद कियामत के दिन उसे जन्मत की हवा तक नसीब न होगी। अबू दाऊद। ③ नेकी का मक्सद अल्लाह की खुशी हासिल करने के साथ-साथ दुनिया प्राप्त करना भी हो; जैसे कोई व्यक्ति हज्ज और व्यापार दोनों की नियत से हज्ज करे; तो वास्तव में ऐसे व्यक्ति में ईमान और इख्लास की कमी है; लिहाज़ा उसे उसके इख्लास के बराबर सवाब मिलेगा। ④ नेकी का मक्सद मात्र

<sup>1</sup> नबी ﷺ ने फ़र्माया : “जिस व्यक्ति ने नेकी का इरादा किया पर उसे करने सका तो अल्लाह तआला उस के लिए पूरी एक नेकी लिख देता है, और यदि इरादे के बाद उसने नेकी कर भी ली तो अल्लाह तआला उस के लिए दस नेकियों से लेकर सात सौ गुन्ने तक नेकियां लिख देता है और इस से भी कितने गुन्ने अधिक। और जिस व्यक्ति ने बूराई का इरादा किया पर उसे नहीं किया तो अल्लाह तआला उस के लिए पूरी एक नेकी लिख देता है, और यदि इरादे के बाद उस ने बूराई कर भी ली तो उस पर एक गुनाह लिखता है।” बुखारी तथा मुस्लिम। और आप ﷺ ने यह भी फ़र्माया कि : “इस उम्मत की मिसाल चार किसिम के लोगों की तरह है; एक वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ﷺ ने माल और इत्म से नवाज़ा, तो वह इत्म की गैरीबी में अमल करते हुए अपने माल को मुनासिब जगहों में खर्च करता है, और दूसरा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷺ ने इत्म से नवाज़ा पर उसे माल अत़ा न किया, तो वह तमन्ना करते हुए कहता है : यदि मेरे पास भी इस व्यक्ति जैसा धन इत्म से नवाज़ा पर उसे माल अत़ा न किया, तो वह अपने माल का मिलेगा। और तीसरा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷺ ने माल से नवाज़ा पर उसे इत्म अत़ा नहीं किया, तो वह अपने माल का एक अदा नहीं करता और उसे गलत जगहों में खर्च करता है, और चौथा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷺ ने न तो इत्म दिया न धन दिया, तो वह तमन्ना करते हुए कहता है : यदि मेरे पास भी धन होता तो मैं भी इसी की तरह बूराई की जगहों में खर्च करता। नबी ﷺ ने फ़र्माया : इन दोनों को बराबर गुनाह मिलेगा।” तिणम़नी। इस हृदीस से पता चला कि दूसरे और चौथे किसीम के लोगों को उनकी नियत का बदला मिला, जिस की तमन्ना करते हुए उन्होंने कहा था : “यदि मेरे पास भी धन होता तो मैं भी इसी की तरह कर्म करता।” चुनान्वि उन में से हर कोई अपनी नियत के बदले सवाब या गुनाह में अपने साथी का साझी होगया। इन्हे रजब रहे कहते हैं कि हृदीस के इस जुम्ले : “वह दोनों सवाब में बराबर होंगे” का अर्थ यह है कि वे नेकी के असली सवाब में बराबर होंगे, न कि इज़ाफ़ा की सवाब में, क्योंकि नियत करने वाले के बजाय मात्र कर्म करने वाले के सवाब में इज़ाफ़ा होगा। और यदि हर लिहाज़ से दोनों को बराबर माना जाए तो इस से लाभिम आएगा कि कर्म करने वाले की तरह नियत करने वाले को भी दस गुना सवाब मिले, जो कि दलीलों के खिलाफ़ है।

अल्लाह तूहँ की खुशी हासिल करना हो, पर तन्खाह भी लेता हो ताकि नेकी पर कायम रहे, ले इसे बिना किसी कमी के पूरा सवाब मिलेगा। नबी ﷺ का फर्मान है : “तुम जिस चीज पर उज्जत लेते हो उनमें सब से अधिक उज्जत लेने के लायक अल्लाह तआला की किताब है”। बुखारी।

**और यह जान रखें कि मुस्लिम लोगों के भी कई एक दरजे हैं :** ① कमतर दरजा उनका है जो सवाब की उम्मीद से या अज़ाब से बचने की खातिर नेकी करें। ② बिचला एं उनका है जो अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हुए और उसके आदेश का पालन करते हुए नेकी करें। ③ सब से बुलन्द दर्जा उनका है जो अल्लाह तूहँ से मुहब्बत, उस की बड़ाई, उसकी महानता और उस से डरते हुए नेकी करें। और सिद्धीको का दरजा है।

► **तौबा :** इन्सान पर हमेशा तौबा करते रहना वाजिब है। और इस से गलती का होजान कोई बड़ी बात नहीं, नबी ﷺ ने फर्माया : “आदम की हर औलाद पापी है, पर उनमें बेहतर हैं जो बहुत अधिक तौबा करते रहते हैं”। तिर्मीजी। और नबी ﷺ ने यह भी फर्माया : “यदि तुम पाप न करोगे तो अल्लाह तुम्हें मिटा देगा और ऐसी कौम ले आएगा जो गुनाह करेगी, फिर उससे माफ़ी मांगेगी तो अल्लाह उन्हें माफ़ कर देगा”। मुस्लिम। तौबा करने में दैरी करना, और गुनाह पर गुनाह करते जाना ग़लतत है। और शैतान की चाहत होती है कि इन्सान को सत्ता बड़े जालों में से किसी एक जाल में फ़ंसाए, यदि वह पहले में सफल नहीं हो पाता है तो उसे उसके लिए प्रयास करता है, ① उसका पहला जाल होता है उसे शिक्ष और कुफ़ में फ़ंसाना, ② और उसमें सफ़ल न हो पाया तो ③ एतिकादी बिदूअत में फ़ंसाना, और उसे नबी ﷺ और उसमें सफ़ल न हो पाया तो ④ एतिकादी बिदूअत से वंचित कर देना, ⑤ यदि यह भी सम्भव न हो सकता है सहाब-ए-किराम ﷺ की इक्विटदा से वंचित कर देना, ⑥ यदि यह भी सम्भव न हो सकता है उसे बड़े पाप में, ⑦ नहीं तो अधिक मात्रा में मुबाह कर्म करवाना, ⑧ और यदि इनमें भी सफल न होपाया तो अधिक नेकी वाले कर्म को छोड़कर कम नेकी वाले कर्म कराना, ⑨ नहीं तो अन्त में इन्सानों और जिन्नातों के शैतानों को उपर मुसल्लत कर देना।

**पाप दो प्रकार के होते हैं:** ① बड़े पाप : जिसके करने पर संसार में हाद लागू किया जाए, या आखिरत में सज़ा की धमकी दी गई हो, या उसके करने वाले पर ग़लत हो जाना नहीं हो, या उससे ईमान का इन्कार किया गया हो। ② छोटे पाप : जो इनके अलावा हो लेकिन कुछ कारण ऐसे जिन से छोटे पाप भी बड़े बन जाते हैं? उनमें अहम कारण है तुम्हें पर डटे रहना, या उन्हे बार बार करना, या उन्हे हकीर समझना, या उनके पाने पर करना, या उन्हें लोगों के सामने करना।

**और हर प्रकार के गुनाह से तौबा किया जा सकता है,** और पश्चिम से सूरज निकलने तक तौबा करने का समय बाकी है, या जाँकनी (प्राण निकलने की अवस्था) तक उसका समय

<sup>1</sup> अल्लह तआला का फर्मान है मूसा ﷺ के बारे में : ﴿لَئِنْ كُوْرَتْ لَهُ الْجَنَاحَ فَلَا يَكُونُ مُؤْمِنًا﴾ “लैसे जो जली इस्तीर्छ की जाए तो खूश होजाए”। मूसा ﷺ ने मात्र आदेश का पालन करते हुए जली जी बीमिक अल्लाह को मूल करने के लिए उन्होंने ऐसा किया। और इसी प्रकार मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने में भी कमतर दर्जा यह है कि उन जी कर्मावारी अल्लाह तआला का अनुकरण करते हुए जाए तो इहसान का बदला चुकाने के लिए जी जाए, क्योंकि उन्होंने ही बचपन में पाला थी, और युविय में जाने का समय था, उत्तम दर्जा यह है कि उन की कर्मावारी अल्लाह के आदेश की बड़ाई करते हुए और उस से महब्बत करते हुए जी जाए।

बाकी है। और तौबा करने वाला यदि अपने तौबा में सच्चा है तो उसके गुनाहों को नेकियों में बदल दिया जाता है, उसके पाप चाहे आकाश के किनारों तक क्यों न पहुँचे हों।

**और तौबा स्वीकार होने के लिए कुछ शर्तें हैं,** ① गुनाहों को छोड़ देना। ② पिछले गुनाहों पर पछतावा खाना। ③ भविष्य में न करने का पुख्ता इरादा करना। और यदि पाप का सम्बंध लोगों के हुकूक और अधिकार से हो तो उसे उन तक वापस लौटाना ज़रूरी है।

**तौबा करने वाले लोग चार प्रकार के होते हैं :** ① एक वह व्यक्ति जो अपनी अन्तिम जीवन तक तौबा पर कायम रहे, और दोबारा पाप करने के बारे में सोचे तक भी नहीं, सिवाय कुछ लग्ज़िशों के जिस से कि कोई भी व्यक्ति नहीं बच पाता, तो इस का नाम तौबा पर इस्तिकामत है, और ऐसे व्यक्ति को साबिक बिल-ख़ेरात अर्थात् नेकीयों में तरक्की करने वाला कहा गया है, और इस तौबा का नाम “नसूह” अर्थात् सच्चा और ख़ालिस तौबा है। और इस नफ्स को इत्मीनान वाली आत्मा का नाम दिया गया है। ② दूसरा व्यक्ति वह जो बड़ी नेकियों पर कायम है, लेकिन बिना इरादे के अन्जाने में उस से कुछ गलतियां हो जाती हैं, जिन पर अपने आप को कोसता भी है, और भविष्य में पाप की ओर ले जाने वाले उन असबाब से बचने का पुख्ता इरादा करता है। और इस नफ्स को लौवामा अर्थात् निन्दा करने वाली आत्मा का नाम दिया गया है। ③ तिसरा व्यक्ति वह जो कुछ समय तक अपने तौबा पर कायम रहता है, फिर उस पर ख़ाहिश ग़ालिब आजाती है और कुछ पाप कर बैठता है। लेकिन साथ ही नेकी करना नहीं छोड़ता, बल्कि ख़ाहिश और शक्ति के बावजूद दूसरे गुनाहों से बचता है, और जब कभी एक दो बार पाप कर बैठतो तो उस पर अपने आप को कोसता भी है, और उस से तौबा करना चाहता है, तो इस आत्मा से पूछ-ताछ होगी, बल्कि तौबा करने में देरी के कारण इसका अन्जाम बड़ा खतरनाक होसकता है, क्योंकि तौबा किए बिना भी इस की मौत हो सकती है, जबकि हिसाब के दिन एतिबार अन्तिम कर्मों का ही होगा। ④ चौथा व्यक्ति वह है जो कुछ समय तक अपने तौबा पर कायम रहने के बाद फिर से गुनाहों में लिप्त होजाता है, तौबे के बारे में सोचता तक भी नहीं है, और न ही अपने कर्तृत पर पछतावा खाता है, और यही वह आत्मा है जो बुराई का आदेश देती है। और ऐसे व्यक्ति पर बूरी मौत मरने का डर होता है।

**सच्चाई :** सच्चाई दिल के सारे कर्मों का जड़ है, 6 मआनी में इस का प्रयोग होता है :

- ① वात की सच्चाई। ② कस्दो इरादे की सच्चाई अर्थात् (इख्लास)। ③ पुख्ते इरादे की सच्चाई।
- ④ इरादा पूरा करने की सच्चाई। ⑤ कर्म की सच्चाई। इस प्रकार कि बाहिरी कर्म भिन्नी कर्म अनुसार हो। ⑥ पुर्ण रूप से धर्म को अपनाने की सच्चाई। और यह सच्चाई का सब से उच्च

रिवायत में आता है कि नबी ﷺ ने कर्माया : “अल्लाह तआला के पास रजिस्टर तीन प्रकार के होंगे, एक वह जिस की अल्लाह तआला कुछ भी पर्वा नहीं करेगा, दूसरा वह जिस में से अल्लाह तआला कुछ भी नहीं छोड़ेगा, तीसरा वह जिसे कि अल्लाह तआला बिल्कुल मुआफ नहीं करेगा, तो वह रजिस्टर जिसे कि अल्लाह तआला मुआफ नहीं करेगा शिर्क का रजिस्टर होगा, अल्लाह ﷺ का कर्मान है : ﴿إِنَّمَا مَنْ يُشْرِكُ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَمَ اللَّهَ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ أَنَارُوا﴾ “अवश्य जिस ने शिर्क किया अल्लाह के साथ तो अल्लाह ने उस पर जन्त को हराम कर दिया और उस का टिकाना जहन्नम है”。 और वह रजिस्टर जिस की अल्लाह तआला कुछ भी पर्वा नहीं करेगा, वह है बन्दे का अपने आप पर अन्याय करना जो उस के और उस के रब के बीच हो, तो यदि अल्लाह तआला चाहेगा तो उसे मुआफ कर देगा, और वह रजिस्टर जिस में से अल्लाह तआला कुछ भी नहीं छोड़ेगा, वह बन्दों का आपस में एक दूसरे पर अत्याचार करना, तो अल्लाह तआला उन से लाजिमी बढ़ावा दिलायगा। इस रिवायत को अहमद ने किया और इस में कम्ज़ोरी है।

तथा प्रसिद्ध स्थान है। जैसा कि डर, उम्मीद, बड़ाई, जुहू, रिजामन्दी, भरोसा, प्रेम और दिल के सारे कर्म में सच्चाई। तो जिस व्यक्ति में इन सारी चीजों में सच्चाई पाई जाती है, वह सिद्धीक़ है, इसलिए कि वह सच्चाई की अन्तिम सीमा तक पहुंचा हुवा है। और नबी ﷺ का फ़र्मान है : “तुम सच्चाई को लाजिम पकड़ लो, क्योंकि सच्चाई भलाई का रास्ता दिखाता है, और भलाई जन्त का रास्ता दिखाता है, और आदमी सदा सच्च बोलता रहता है, और सच्चाई के खोज में रहता है यहाँ तक कि अल्लाह तआला के पास सिद्धीक़ लिख दिया जाता है”। बुखारी और मुस्लिम।

और जिस व्यक्ति पर हक़ के बारे शंका होगया और उस ने नफ़सानी ख़ाहिश के बिना सच्चाई के साथ अल्लाह तआला की ओर से राहनुमाई चाही तो अधिकतर उसे राहनुमाई मिल जाती है। और यदि हक़ की राहनुमाई न मिल सके तो अल्लाह कहाँ वह माझूर माना जाता है।

सच्चाई का विपरित झूट है, और जूँही झूट दिल से जुबान की ओर बढ़ता है, उसे बर्बाद कर देता है, और इसी ओर अंगों की ओर बढ़ता है और उसे भी बर्बाद कर देता है जिस प्रकार कि जुबान की बातों को बर्बाद कर दिया था, फिर झूट का क़ब्ज़ा हो जाता है उस की बातों पर, उस के कर्मों पर और सारी अवस्था पर।

**► महब्बत :** अल्लाह उस के रसूल और मोमिनों की महब्बत द्वारा ईमान का मीठास प्राप्त होता है, नबी ﷺ ने फ़र्माया : “जिस व्यक्ति में तीन आदतें हों तो उस ने उन के द्वारा ईमान का मीठास पालिया : ① पहला यह कि अल्लाह और उस के रसूल उस के पास बाकी सारे लोगों से अधिक प्रिय हों, ② दूसरा यह कि वह लोगों से अल्लाह की ख़ातिर महब्बत करता हो, ③ तीसरा यह कि वह कुफ़ की ओर लौटना जब कि अल्लाह तआला ने उस से उस को बचा लिया है, इसी तरह ना पसन्द करता है जैसा कि आग में डाला जाना नापसन्द करता है”। बुखारी और मुस्लिम। चुनान्वि जब दिल में महब्बद का पौदा गाड़ दिया जाए, और इख्लास तथा नबी ﷺ की पैरवी द्वारा उस की सीचाई हो, तो अनेकों प्रकार के फल आते हैं, और अल्लाह की मर्ज़ी से यह फल सदा आते रहते हैं। **महब्बत की 4 किस्में हैं :** ① अल्लाह तआला के लिए महब्बत<sup>1</sup> और यह वाजिब है।

1 दोस्ती और दुश्मनी के लिहाज़ से लोगों की तीन किस्में हैं : ① जिन से खालिस दोस्ती की जाए, ऐसी दोस्ती जिसमें दुश्मनी शामिल न हो, और यह मात्र खालिस मोमिनों से होगी, जैसे अभिया और सिद्धीकीन से, और इनमें हमारे नबी मुहम्मद ﷺ बल्कि उनसे बराअत की जाएगी। और यह हर प्रकार के काफ़िर मुशिरक और मुनाफ़िक हैं। ② जिन से बिलकुल दोस्ती जायज़ नहीं, दोस्ती की जाएगी और अवगुणों के कारण बराअत। और यह पापी मुसलमान हैं, जिनसे इनके ईमान के कारण जाएगी, और इनके पाप के कारण वैर रखा जाएगा। **और काफ़िरों से बराअत** इस प्रकार होगी कि उनसे वैर रखा जाए, देश से हिजरत की जाए। **और मोमिनों से दोस्ती** इस प्रकार होगी कि यदि शक्ति हो तो भयभीत हुवा जाए, और उनके जान और धन से उनकी सहायता की जाए, उन पर आने वाली मुसीबतों पर दुखी हुवा जाए, और उनके जीवन की जाए। **और काफ़िरों से दोस्ती की दो किस्में हैं :** ① ऐसी दोस्ती जिसके कारण व्यक्ति इस्लाम के दायरे से निकल जाता है। जैसे उनके धर्म के लिए उन से महब्बत करना। ② ऐसी दोस्ती जो कि बड़े पाप, हराम और मकूह के दायरे में आती है। जैसे संसारिक बुनियाद पर उन से महब्बत करना। लेकिन जिन काफ़िरों से लड़ाई न हो उनसे अच्छा बर्ताव करने में कोई आपत्ति नहीं है। जैसे उनके कम्ज़ोरों के साथ नरवी बरतना, तथा कृपा का प्रदर्शन करते हुए, डरते हुए नहीं, उनके साथ नरम बत्ते करना। तो अल्लाह तआला ने इसका आदेश दिया है **“لَا يَنْهَاكُ عَنِ الْأَيْمَنِ لَمْ يَنْلُوكُمْ فِي الظِّنَنِ وَلَا يَخْرُجُوكُمْ مِّنْ دِيَرِكُمْ أَنْ تَرُوُهُمْ** ﴿١٣﴾

**अल्लाह तआला जैसी महब्बत :** अल्लाह तआला की महब्बत में दूसरों को साझी करना, जैसे कि मुशिरकों का अपने देवताओं से महब्बत करना, तो यही असल शिर्क है। ④ फित्री महब्बत : जैसे माँ बाप, और बच्चों से महब्बत, खाने इत्यादि से महब्बत। और यह जायज़ है।

**तवक्कुल :** मक्सद प्राप्त करने के लिए और मक्कुल दूर करने के लिए शरई अस्वाब को उपनाम हुए दिल को अल्लाह की ओर फेर कर उसी पर भरोसा करने का नाम तवक्कुल है। अस्वाब को न अपनाना अक्ल में कमी है और दिल को अल्लाह की ओर न फेरना यह भौगोलिक पर हमला है, किसी भी काम को करने से पहले तवक्कुल किया जाता है, जो कि विश्वास और यकीन का फलस्वरूप है। तवक्कुल की तीन किस्में हैं : ① **वाजिब :** जिन चीज़ों के करने की ताकत अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे को प्राप्त नहीं है, उनके बारे में मात्र अल्लाह पर भरोसा करना, जैसे : निरोग करना। ② **हराम :** इस की दो किस्में हैं। ① शिर्क अक्बर : सम्पूर्ण रूप से अस्वाब पर भरोसा करलेना कि उन्हीं के कारण हमें नफा या नुक्सान होता है। ② शिर्क अस्मार : जैसे रोज़ी के बारे में किसी व्यक्ति पर भरोसा करलेना, सम्पूर्ण रूप से उसके अस्वाब का अकीदा न रखता हो लेकिन उसे सबब से बढ़कर समझता हो। ③ **जायज़ :** खरीदने और बेचने जैसी चीज़ में जिसकी इन्सान ताकत रखता हो, एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के ऊपर भरोसा करना। लेकिन यहां पर यह कहना जायज़ न होगा कि मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया फिर आप पर, बल्कि यूँ कहे : मैं ने आप को वकील बनाया।

**शुक्र :** दिल में ईमान, जुबान पर तारीफ़ और अंगों द्वारा कर्म के रूप में बन्दे पर अल्लाह की नेमतों का असर प्रकट होने का नाम शुक्र है। जो कि स्वयं मक्सूद है, जबकि सब्र

मुकूर और एहसान करने, और न्याय वाला बर्ताव करने से अल्लाह तआला तुम्हें नहीं रोकता”। और उनसे दुश्मनी और बैर रखने का भी आदेश दिया है :

﴿إِنَّمَا الْأَذِنُ لِلَّهِ الْعَزِيزِ لَا تَنْجُذُوا عَدُوَّيْ وَعَذَّرُكُمْ أَوْلَاهُمْ تَلْقُونَ إِنَّهُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ لَا يَرْجِعُونَ﴾ “हे वे लोग जो ईमान लाये हो! मेरे और अपने दुश्मनों को अपना दोस्त न बनाओ कि तुम दोस्ती से उनकी ओर संदेश भेजो”。 तो उनसे कीना और बैर रखने के साथ यह उनके मामलों में उनके साथ न्याय किया जा सकता है। जैसा कि नबी ﷺ ने मदीना के यहूदियों के साथ किया। किया अस्वाब अपनाना तवक्कुल के खिलाफ़ है? इस के कई रूप हैं : ① ऐसे फाइदा की प्राप्ति के लिए प्रयास करना जो कि मैत्री नहीं है : और इस की तीन किस्में हैं : ① ऐसा सबब जो कि यकीनी है, जैसे बच्चा पाने के लिए निकाह करना, तो बच्चा पाने के लिए इस सबब को न अपनाना तवक्कुल नहीं बल्कि पागलपन है। ② जो कि यकीनी नहीं है, लेकिन आम तौर पर उन के बिना मक्सूद हासिल नहीं होता, जैसे बिना यात्रा के सामान के सिहरा का सफर करना, तो ऐसा करना तवक्कुल नहीं है, बल्कि सामान लेकर जाने का आदेश आया है, बल्कि नबी ﷺ ने हिज्रत के समय स्वयं रास्ते का सामान लिया और एक गाइड भी साथ में रख्खा। ③ ऐसे अस्वाब जो मक्सूद तक पहुंचा सकते हैं लेकिन उन पर भरोसा नहीं किया जासकता है, जैसे कोई अनेक रास्ते द्वारा जिविका प्राप्त करने के लिए प्रयास करे, तो यह तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, उमर ﷺ ने कहा : “तवक्कुल करने वाला वह है जो बीज को धर्ती में डालता है और अल्लाह पर भरोसा करता है”। ② जो चीज़ उसे मुरीदत करना : तो जिसे जिविका प्राप्त हो गया हो और वह उसे स्टोर कर रहा हो तो यह तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, खासकर जब कि वह बाल-बच्चे वाला हो, नबी ﷺ बनू नज़ीर की खजूर से बेचते थे और अपनी फैमिली के लिए सभी भर का खाना बचा के रखते थे। बुखारी और मुस्लिम। ③ सबब द्वारा ऐसी मुसीबत को दूर करना जो अभी आई नहीं है, और यह तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, जैसे जिरः पहनना या ऊँट को भागने के डर से रस्सी से बांधे रखना, पर भरोसा सबब पर नहीं बल्कि मुसब्बि (अल्लाह) पर करे, और उस के हर फैसले से राज़ी हो। ④ जो मुसीबत आ पड़ी है उसे दूर करने के लिए सबब अपनाना। और इस की तीन किस्में हैं : ① यकीनी हो, जैसा कि पानी पियास को बुझाता है, लिहाज़ जैसी न पीना तवक्कुल नहीं है। ② जो कि यकीनी न हो, जैसे पछना लगवाना, तो यह भी तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, जैसे नबी ﷺ ने स्वयं उपचार कराया और उस का आदेश भी दिया। ③ जो कि वहमी हो, जैसे निरोग अवस्था में रोगी न होने के लिए दगदाना, तो यह परिपूर्ण तवक्कुल के खिलाफ़ है।

दूस्रों के लिए वसीला होता है, और इसका भी सम्पर्क दिल, जुबान और अंगों से होता है, और शुक्र का अर्थ होता है कि नेमतों का प्रयोग अल्लाह तआला की इत्ताअत के लिए की जाए।

**سُبْر :** दुःख और तकलीफ पर गैरुल्लाह से शिकायत न करके अल्लाह पर भरोसा रखें हुए धैर्य करना। अल्लाह तआला का फर्मान है : ﴿إِنَّمَا يُوْفِي الصَّابِرُونَ أَخْرَهُمْ بِغْرِ حِسَابٍ﴾ “**سُبْر** करने वालों को ही उनका पूरा-पूरा अनगिनत बदला दिया जाता है”।

और नबी ﷺ ने फर्माया : **وَمَنْ يَصْبِرْ إِلَّا لَهُ أَعْطَى أَحَدٌ عَطَاءً خَيْرًا وَأَوْسَعَ مِنَ الصَّابِرِ** : जो सब्र के लिए प्रयास करता है अल्लाह तआला उसे सब्र अंता कर देता है, और किसी व्यक्ति को सब्र से अफज़ल और बढ़कर कोई चीज़ नहीं दी गई।

और उमर ﷺ का फर्मान है : “मुझ पर जो भी मुसीबत आई उस में अल्लाह तआला की ओर से चार नेमतें थीं; एक तो यह कि वह मेरे दीन में नहीं थी, दूसरी यह कि वह उस से बड़ी नहीं थी, तिसी यह कि उस पर राज़ी होने से मैं महसूम नहीं हुआ, और चौथी यह कि मुझे उस पर सवाब की उम्मीद है”।

और **सब्र** के कई एक दर्जे हैं : कम्तर दर्जा : यह है कि बन्दा दुःख तकलीफ को ना-पसन्द करे पर किसी से उसका शिकवा न करे। बीच का दर्जा : यह है कि अपनी तकदीर पर राज़ी होते हुए किसी से अपनी तकलीफ का शिकवा न करे। उत्तम दर्जा : यह है कि मुसीबत पर अल्लाह तआला की तारीफ करे। और यदि मज्लूम व्यक्ति ने अत्याचारी को श्रापा तो गोप्य उसने अपनी मदद चाही और अपना हक प्राप्त कर लिया और उसने सब्र नहीं किया।

**سُبْر की दो किसिमें हैं :** ① शरीरिक सब्र : हमें इसके बारे में यहां पर चर्चा नहीं करना है। ② नफ़सानी सब्र : दिल की ख़ाहिशात पर आत्मा द्वारा सब्र करे।<sup>1</sup>

**और इन्स्प्रिन को दुनिया में जो भी चीज़ लाहिक होती है उसकी दो किसिमें हैं :** ① या ही उसके इच्छा अनुसार हो तो इसमें भी अल्लाह का हक अदा करने के लिए सब्र की ज़रूरत है, ताकि उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और गुनाह के लिए उसका प्रयोग न करे। ② उसकी ख़ाहिश के खिलाफ़ हो, और इस की तीन किसिमें हैं : ① अल्लाह तआला की इत्ताअत पर सब्र करना, जो कि उनमें से फर्ज़ अदा करने वाजिब है और नफ़ल अदा करने के लिए मुस्तहब है। ② अल्लाह तआला की नाफर्मानी से दूर रहने के लिए सब्र करना, जो कि उनमें से हराम काम को छोड़ने के लिए वाजिब है, और मकूह को छोड़ने के लिए मुस्तहब है। ③ अल्लाह तआला की बनाई हूई तकदीर पर सब्र करना, और वाजिब है कि जुबान की शिकवा करने से रोके रखें, दिल को तकदीर पर एतिराज़ करने तथा नाराज़ होने से रोके, और इसी प्रकार जिन चीजों से अल्लाह नाराज़ होता है उन से अंगों को रोके, जैसे मातम करना, कपड़े फाड़ना, घेहरा पीटना इत्यादि। और इस बारे में मुस्तहब यह है कि अल्लाह की बनाई हुई तकदीर से बन्दा राज़ी हो जाए।

<sup>1</sup> यदि पेट और लिंग सम्बन्धित चीजों पर सब्र किया जाए तो इसे : “इफ़क़त” कहते हैं, और यदि मुख में सब्र किया जाए तो इसे : “शुजाअत” कहते हैं। यदि गुस्सा पी लिया जाए तो इसे : “हिल्म” कहते हैं, यदि किसी चीज़ को छुपाने के लिए सब्र किया जाए तो इसे : “कितमाने सिर” कहा जाता है। यदि जीवन की फलतू सुख छोड़ने के लिए हो तो इसे : “जुलू” कहते हैं। और यदि मामूली सुख चैन छोड़ने के लिए हो तो इसे : “किनाअत” कहते हैं।

**इन दोनों व्यक्तियों में से कौन सर्वश्रेष्ठ है :** शुक्र करने वाला मालदार, या सब्र करने वाला फ़कीर? यदि धनी व्यक्ति अपने माल को अल्लाह के रास्ते में खर्च करता है, या अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के लिए इकट्ठा करता है तो यह फ़कीर से उत्तम है, और यदि वह किंक खर्च मूबाह चीजों में करता है तो फिर फ़कीर उत्तम है।

**रिजामन्दी :** जो मिल जाए उसी को काफी समझना और उस पर खुश रहना। किसी भी काम के होने के बाद रिजामन्दी की बात आती है, और अल्लाह तआला के फैसले से राजी रहना यह सेवकों का उच्च मुकाम है, जो कि अल्लाह से महब्बत और उस पर भरोसा रखने का फल है। और यह बात भी स्पष्ट रहे कि अल्लाह तआला से दुःख और मोर्सीवत को नहीं की दबा करना उस की तकदीर पर रिजामन्दी के खिलाफ नहीं है।

**खुशूअँ :** आजिजी, इन्किसारी और नर्मता का नाम खुशूअँ है, हुजैफा  ने कहा कि निफाक वाले खुशूअँ से बचो। लोगों ने पूछा क्या मतलब? तो उन्होंने जवाब दिया, मतलब यह है कि : शरीर से आजिजी प्रकट हो जब कि दिल पर उस का कोई प्रभाव न हो। और हुजैफा  ने ही कहा कि : तुम अपने धर्म में से सब से पहले खुशूअँ को खो दोगे। और जिस इबादत के लिए खुशूअँ अनिवार्य है तो उस इबादत का सवाब खुशूअँ के आधार पर ही होगा, जैसे नमाज़ : नबी  ने नमाज़ी के बारे में कहा कि उसे नमाज़ के सवाब का आधा, एक चौथाई, पांचवा हिस्सा, ... दसवां हिस्सा प्राप्त होता है, बल्कि बिल्कुल खुशूअँ न पाए जाने के कारण वह पूरे सवाब से महसूम होजाता है।

जने के कारण वह पूरे सवाब से महसूम हो जाता है।

**रहमत की उम्मीद :** इस का विपरित ना-उम्मीदी है, और उम्मीद के सहारे नेकी करना डर के कारण करने से उत्तम है, क्योंकि उम्मीद द्वारा सेवक अल्लाह के बारा अच्छा गुमान रखता है। और अल्लाह तआला कहता है : “मैं अपने सेवक के गुमान अनुसार रहता हूँ”। मुस्लिम। और इस के दो दर्जे हैं : **उत्तम दर्जा** यह है कि बन्दा नेकी करे और सवाब की उम्मीद रखें। आइशा (رضي الله عنها) ने पुछा ऐ अल्लाह के रसूल! ﴿إِنَّمَا مَأْتَىٰ بُشْرَىٰ وَقُلُوبَ مُؤْمِنَاتٍ وَّلِلَّهِ الْفَوْزُ الْعَالِيُّ﴾ “और यही है जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं, और उनके दिल कपकपाते रहते हैं” यह डरने वाले वह हैं जो कि चोरी करते, बलात्कार करते, शराब पीत? तो आप (ﷺ) ने कर्माया : सिद्धीक की बेटी यह नहीं हैं, बल्कि वह लोग हैं जो कि नमाज पढ़ते हैं, रोजा रखते हैं, सदका करते हैं, और उन्हें डर होता है कि कहीं स्वीकार न हो। ﴿أَرَأَيْكُمْ بُشْرَىٰ فِي الْخَيْرَاتِ﴾ “और यही है जो जलदी जलदी भलाईयां प्राप्त कर रहे हैं”। तिर्मीजी। और **कम्तर दर्जा** : उस तौबा करने वाले पापी का है जो की रहमत के आस में है। अल्वत्ता ऐसा पापी जो कि पाप पर पाप किए जाता और तौबा के बारे में सोचता तक भी नहीं और साथ अल्लाह की रहमत के आस में पी है, तो यह वास्तव में तमन्ना करना है, न कि उम्मीद रखना। और यह चीज बहुती है, जबकि उम्मीद लगाए रहना प्रशंसा के काबिल है। चुनान्वि मोमिन भलाई करते हुए भी डरता

**डर :** किसी दुःख या तकलीफ के पहुंचने का सोच कर लाड़िक होने वाला गम, याद दुःख का पहुंचना निश्चत हो तो उसे ख़श्यत (डर) कहते हैं, जिसका विपरित शान्ति है, और यह उम्मीद के विपरित नहीं है, क्योन्कि डर, भय के कारण पैदा होता है, जबकि उम्मीद बाहत के कारण जगती है, और इबादत में महब्बत, डर और उम्मीद का सनाम ज़रूरी है, इन्हें कैथिम कहते हैं : अल्लाह की ओर लगने में दिल का उदाहरण बरा की तरह है, महब्बत उस

का सर है, और डर तथा उम्मीद उस के दोनों पर हैं, यदि दिल में भय अपना स्थान बना ले तो शहतों को जला कर रख देगा, और दुनिया के मोह को उस से दूर कर देगा।

**और वाजिबी डर वह है** जो फर्ज़ इबादतों के करने और हराम चीजों के छोड़ने पर आमादा करे। और **मुस्तहब डर वह है** जो मुस्तहब कामों के करने और मक्रूह कामों के छोड़ने पर आमादा करे, **और इस की कई एक किस्में हैं :** ① **वाजिब** : भित्री डर जिस का अल्लाह तआला के लिए होना वाजिब है, और किसी दूसरे इस प्रकार भय करना **बढ़ा शिर्क** है, जैसा कि मुश्किलों के मावृदों (उपास्यायों) से डरना कि वे उन्हें किसी प्रकार की हानि न पहुँचा दें। ② **हराम** : लोगों के डर से किसी वाजिब काम को छोड़ देना या हराम काम करना। ③ **जायज़** : फित्री डर जैसे भेड़िए इत्यादि से डरना।

► **जुहू** : अपने आत्मा की चाहत को तुच्छ इच्छा के बजाए भलाई की ओर फेरना जुहू कहलाता है। और दुनिया की मोह से अपने आप को दूर रखना दिल तथा शरीर के लिए आराम-दायक है, और इस की चाहत में खोजाना सोंच तथा फिक्र को बढ़ावा देता है, दुनिया की चाहत हर बूराई की जड़ है, और उसे तुच्छ जानना हर नेकी का सबब है, और दुनिया के बारे में जुहू यह है कि आप उसे अपने दिल से निकाल बाहर करें, न कि अंगों द्वारा दूरी प्रकट करें और दिल में उसी की महब्बत बसी हो, यह जाहिलों का जुहू है, नवी  ने फर्माया : “अच्छे व्यक्ति के लिए अच्छा माल क्या ही सुन्दर है”। अहमद। **फ़कीर व्यक्ति का माल के साथ पाँच अवस्था है :** ① माल को ना-पसन्द करते हुए और उस की परिशानियों में उलझने से बचते हुए उसे अपनाने से दूर भागे, और ऐसा व्यक्ति ज़ाहिद कहलाता है। ② माल प्राप्त होने पर खुश न होता हो, और नहीं उसे इतना ना-पसंद करता कि उस के कारण उसे तकलीफ हो ऐसा व्यक्ति राजी कहलाता है। ③ माल का होना न होने से अधिक बल्कि यदि मिल गया तो अपना ले, और उस पर खुश भी हो, और यदि पाने के परिश्रम कारण वह माल पाने की प्रयास न करता हो, वर्ना उस के भित्र माल पाने की चाहत मौजूद हो, और यदि परिश्रम द्वारा भी उसे पा सकता हो तो उस के लिए प्रयास करना न छोड़े। ④ निर्बस होने के और ऐसा व्यक्ति हरीस कहलाता है। ⑤ जिस माल को प्राप्त करने की प्रयास कर रहा हो उसे पाने के लिए मुज़्तर हो जैसे भूका और नंगा व्यक्ति, जिस के पास न तो खाना हो न क्याढ़ा। और ऐसा व्यक्ति मुज़्तर कहलाता है।

## एक गंभीर बात-चीत

नेहे की यह बात-चीत ऐसे दो व्यक्तियों के बीच हुई है जिन में से एक का नाम अब्दुल्लाह और दूसरे का नाम अब्दुन्बी है, अब्दुल्लाह की भेट जब पहली बार अब्दुन्बी से हुई तो इस बात से उसे कुछ अचंभा सा हुवा, और वह अपने दिल में सोचने लगा कि क्या ऐसा भी हो सकता है कि कोई अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत करे, चुनाँचे आश्चर्य करते हुए उसने अब्दुन्बी से यह पूछा कि : क्या आप अल्लाह के सिवाय किसी और की पूजा करते हैं?

**अब्दुन्बी :** कदापि नहीं, मैं तो खालिस मुसलमान हूँ, मात्र अल्लाह की इबादत करता हूँ।

**अब्दुल्लाह :** फिर आप का यह कैसा नाम है? यह तो ईसाइयों जैसा नाम है, जो अपने नाम अब्दुल मसीह रखते हैं, और उनके लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं; क्योंकि वे ईसा صلی اللہ علیہ و آله و سلم को अपना उपास्य मानते हैं, और उनकी पूजा करते हैं।

आपका यह नाम जो भी सुनेगा उसके दिमाग में यही बात आएगी कि आप नबी के बन्दे हैं, और मुसलमान का आस्था अपने नबी صلی اللہ علیہ و آله و سلم के बारे ऐसा कदापि नहीं है, बल्कि हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह यह अकीदा रखे कि नबी صلی اللہ علیہ و آله و سلم अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

**अब्दुन्बी :** लेकिन हमारे नबी صلی اللہ علیہ و آله و سلم सब से उत्तम व्यक्ति हैं, और सारे रसूलों के सरदार हैं, हम अपना यह नाम तबर्नक के लिए रखते हैं, और नबी की उस मर्यादे से जो अल्लाह के जरूर उन्हें प्राप्त है अल्लाह की नज़्दीकी चाहते हैं, यही कारण है कि हम नबी صلی اللہ علیہ و آله و سلم से उनके जरूर मर्यादे के कारण जो उनके रब के पास उन्हें प्राप्त है शफाअत चाहते हैं, और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, मेरा एक भाई है उसका नाम अब्दुल-हूसैन है, और मेरे पिता का नाम अब्दुर्रसूल है, इस तरह के नाम पुखों से चले आरहे हैं, और यह लोगों में प्रसिद्ध है, हमने अपने पुखों को इसी अकीदे और आस्थे पर पाया है, इसलिए आप को इस मामले में नज़ीरी से काम नहीं लेना चाहिए क्योंकि धर्म आसान है।

**अब्दुल्लाह :** यह तो पहले से भी अधिक भयानक और भयंकर ग़लती है कि आप ग़ैरुल्लाह से ऐसी चीज़ मांगे जिसे देने पर अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को शक्ति प्राप्त न हो, चाहे जिससे यह चीज़ मांगी गई हो वह नबी हों, या उनसे कम दर्जे का बुजुर्ग या बली, जैसे ईमान, या कोई और ही क्यों न हो। यह तौहीद और “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا شَرِيكَ لَهُ” के विरुद्ध है।

आप से कुछ प्रश्न करुंगा ताकि आप पर मामले का भयानकपन और इस तरह के नाम रखने के बारे परिणाम स्पष्ट होजाएं, इससे मेरा उद्देश्य मात्र सत्य की पैरवी और उसकी इतेबा’أَعُوذُ है, असत्य की स्फटता और उससे दूरी है, और भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना है, وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَنْهَا वे कोई और उद्देश्य नहीं।

आपके सामने अल्लाह तआला का यह फरमान पेश करता है :

﴿إِنَّمَا نَنْهَا عَنِ الْمُحْكَمِ مِنْ أَنَّهُمْ أَنفَقُوا مِمَّا مَلَكُوا وَمَا حَسَنُوا إِنَّمَا نَنْهَا عَنِ الْمُبَيِّنِ مِنْ أَنَّهُمْ أَنْفَقُوا مِمَّا لَمْ يَمْسِكُوا وَمَا حَسَنُوا إِنَّمَا نَنْهَا عَنِ الْمُبَيِّنِ فِي الْحُجَّةِ وَمَرْدُوهُ إِلَى أَنَّهُمْ أَنْفَقُوا مِمَّا لَمْ يَمْسِكُوا بِاللَّهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَعْصِمُونَ﴾

फिर यदि तुम किसी चीज़ में मतभेद कर बैठो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की ओर नीराजों यदि तुम अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो।

**अब्दुल्लाह :** अभी आप ने कहा है कि आप अल्लाह को एक मानते और इस बात की गवाही देते हैं कि उसके सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, तो क्या आप हम से यह स्पष्ट करेंगे कि उसका मतलब क्या है?

**अब्दुन्नबी :** तौहीद यह है कि आप इस बात पर ईमान रखें कि अल्लाह आकाश और धरती का सुष्ठा है, वही जीवित रखता है और मृत्यु देता है, वही पृथ्वी का मुदब्बिर और व्यवस्थापक है, और पूरी सृष्टि को वही जीविका प्रदान करता है।

**अब्दुल्लाह :** यदि यही तौहीद की तारीफ है तो इस तारीफ की रू से फ़िरअौन और अबू ज़हल इत्यादि सभी तौहीद परस्त होंगे; क्योंकि उनमें से कोई भी इन चीज़ों का जिन्हें आप ने अभी ज़िक्र किया है इन्कार नहीं करता था। फ़िरअौन जिसने अपने रब होने का दावा किया था, वह भी अल्लाह के अस्तित्व को मानता था, और यह भी स्वीकार करता था कि पृथ्वी का व्यवस्थापक अल्लाह ही है।

इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फ़रमान है : ﴿وَجَحِدُوا بِهَا وَاسْتَقْتَبَهَا أَنفُسُهُمْ طُلُّمَا وَأَعْلُمُو﴾ “उन्होंने इसका इन्कार किया हालांकि उनके दिल विश्वास कर चुके थे, मात्र उद्दंडता और घमंड के कारण।” इसका यह एतराफ़ उस समय खुल कर सामने आगया जब वह डूबने लगा था।

तौहीद यह नहीं है, बल्कि वास्तव में वह तौहीद जिसकी वजह से रसूल भेजे गए, किंतु उतारी गई और कुरैश से लड़ाई की गई वह इबादत और पूजा में अल्लाह को एक मानना है, इबादत एक ऐसा शब्द है जो अपने अर्थ में सारे ज़ाहिरी और बातिनी कथन और कर्म को इकट्ठा किए हुए है जिन्हें अल्लाह पसन्द करता है और जिन से खुश होता है। ﴿أَلْأَيْهُ لَمْ مَنْ مَنْ﴾ में ﴿مَنْ﴾ के माझे ऐसे उपास्य के हैं, जिसके सिवाय किसी और की इबादत ठीक नहीं।

**अब्दुल्लाह :** क्या आपको इसकी जानकारी है कि धरती पर रसूलों को क्यों भेजा गया, जिन में सब से पहले रसूल नूह ﷺ हैं?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, रसूलों को इसलिए भेजा गया ताकि वे शिर्क करने वालों को मात्र अल्लाह की इबादत करने और गैरुल्लाह (जिन्हें वे अल्लाह की इबादत में साझी बनाते थे उन) की इबादत छोड़ देने की ओर बुलाएं।

**अब्दुल्लाह :** अच्छा आप यह बता सकते हैं कि नूह ﷺ के समुदाय के शिर्क का कारण क्या था?

**अब्दुन्नबी :** मैं नहीं जानता कि इसका क्या कारण था।

**अब्दुल्लाह :** अल्लाह ने नूह ﷺ को उनके समुदाय की ओर इसलिए भेजा कि उनके समुदाय ने अपने बुजुर्ग और नेक व्यक्ति : वद, सुवा'अू, यगूस, यऊक और नस्त के बारे में गुलू और सीमा पार किया था।

**अब्दुन्नबी :** क्या आपकी मुराद यह है कि वद, सुवा'अू, यगूस, यऊक और नस्त उनके समुदाय के बुजुर्ग और नेक लोगों के नाम हैं, सरक्ष काफिरों के नाम नहीं?

**अब्दुल्लाह :** हाँ, यह उनके उपास्यों के नाम हैं जिनकी वह लोग इबादत करते थे, और उन्हीं की आज्ञाकारी अरब-बासी भी कर रहे थे, यह वास्तव में उनकी कौम के नेक और परहेजगार व्यक्तियों के नाम हैं, इसका प्रमाण उस हडीस में है जिसे इमाम बुखारी رضى اللہ عنہ ने इब्ने अब्बास رضى اللہ عنہ سे रिवायत किया है कि : यह नूह ﷺ के समुदाय के नेक व्यक्ति थे, जब यह मर गए तो शैतान ने इनकी कौम के दिलों में यह बात डाल दी कि तुम उनके मूर्ती बनाकर अपनी बैठकों में जिनमें तुम बैठते हो रख लो, और उन मूर्तीयों के भी वही नाम रख लो जो उन नेक व्यक्तियों के थे, तो उन्होंने ऐसा ही किया, पर उन्होंने ऐसा उनकी पूजा करने के लिए

नहीं किया था, बल्कि मात्र इसलिए किया था कि इससे उनकी याद ताज़ा रहेगी, फिर जब यह जोग मर गए और ज्ञान भुला दिया गया तो उन मूर्तियों की पूजा होने लगी।

**अद्बुद्धनबी** : यह तो अचंभे वाली बात है।

**अब्दुल्लाह :** क्या मैं इससे भी आश्चर्य-जनक बात न बताऊँ? आप यह भी जान लीजिए कि अंतिम नबी मुहम्मद ﷺ को अल्लाह ने एक ऐसी कौम की ओर रसूल बनाकर भेजा, जो इबादत करते थे, हज्ज करते थे, दान-दक्षिणा देते थे, लेकिन साथ-साथ अल्लाह की मख्तूकत को अपने और अल्लाह के बीच वसीला और वास्ता बनाते थे, और कहते थे कि हम उनके द्वारा नज़दीकी चाहते हैं, अल्लाह के यहाँ हम फ़रिश्तों की, इसा ﷺ की, और उनके अलावा दूसरे नेक व्यक्तियों की सिफारिश चाहते हैं, तो अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को नबी बनाकर भेजा, ताकि आप उनके लिए उनके पिता इब्राहीम ﷺ के धर्म को दोबारा से जीवित करें, और उन्हें यह बताएं कि इस तरह का तकर्ख और आस्था मात्र अल्लाह का हूँ कै है, इसमें से गैरुल्लाह के लिए कोई भी चीज़ जायज़ नहीं, अल्लाह ही अकेला पैदा करने वाला है, उसमें उसका कोई साझी नहीं, मान वही जीविका प्रदान करता है, उसमें भी उसके साथ कोई और शरीक नहीं।

मात्र वही जावका प्रदान करता है, उसमें मा उसके साथ काइ जाए यसका लाभ है, और सातों आकाश और धरती और जो भी इनमें हैं सब उसके बन्दे, सेवक और दास हैं, सारी चीजें उसके अधीन हैं और वही उनका उपायकर्ता है, यहाँ तक कि वे सारे उपास्य भी हिंसा करते हों वे भी यद्यु श्रीकारते थे कि वे उसी की उपाय के अधीन हैं।

**अद्वन्द्वी** : यह तो बड़ी महत्व की बात है, इसका कोई प्रमाण भी है?

**فَلَمَن يَرُؤُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنْ يَعْلَمُ أَكْثَرَ وَإِنْ يَخْرُجُ الْحَقَّ مِنَ الْعِيْتِ وَمَنْ يَخْرُجُ الْمِئَةَ مِنَ الْهَقَّ وَمَنْ يَدْرِي الْأَمْرَ فَيَقُولُونَ اللَّهُ فَلَمْ أَفْلَأْ نَفْرُونَ**

“आप कहिए कि कौन है जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी पहुँचाता है? या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा अधिकार रखता है? और कौन है जो जिन्दा को मरे हुए से निकालता है? और मरे हुए को जिन्दा से निकालता है? और कौन है जो सारे कामों की तदुबीर करता है? तो वे ज़्युर यही कहेंगे कि अल्लाह। तो उनसे कहिए फिर तुम क्यों नहीं डरते?” और यह भी कमाया:

فَلَمْ يَرِدْ أَرْضًا وَمَنْ يَهَا إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُونَ ۝ سَقُولُونَ يَهُوَ فَلْ أَفْلَأَ تَذَكَّرُونَ ۝ فَلَمَنْ يَرِدْ  
الْكَوْنَ أَكْثَرُ وَدَثُ الْمَكْرِشَ الْمُطْبَرِ ۝ سَقُولُونَ يَهُوَ فَلْ أَفْلَأَ تَذَكَّرُونَ ۝ فَلَمَنْ يَرِدْ  
شَرٌّ وَهُوَ بُحْرٌ لَا يَحْكُلُ عَيْنَهُ ۝ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُونَ ۝ سَقُولُونَ يَهُوَ فَلْ فَانِ تَسْحَرُونَ ۝

“پُریٰ اُتے سہی کیا ہے کہ بھارتی اور عسکری ساری چیزوں کیسکی ہیں، باتا جو یاد تُرمٰ جانتے ہو؟ تُرمٰ نے جواب دے گی کہ اُنلّاہ کی، کہ دیجیا کہ فیر تُرمٰ نسیہت کیوں نہیں لےتا؟ پُریٰ کہ سارے آکاڑوں کا اُر و بडے ارشا کا رب کون ہے؟ وہ لام جواب دے گی اُنلّاہ ہی ہے، کہ دیجیا کہ فیر تُرمٰ کیوں نہیں ڈرلتے؟ پُریٰ کہ ساری چیزوں کا احیکار کیس کے ہاتھ میں ہے؟ جو شرण دےتا اُر جسکے مुکابلے میں کوئی شرण نہیں دیتا یاد تُرمٰ جانتے ہو تو بھٹکا دے؟ یہی جواب ہے کہ — ”میری میری کیسے تُرمٰ سے جادو کر دیتے ہو؟“

मुश्यकीन हज्ज के तत्त्विया में यह कहते थे: اللهم لَا شرِيكَ لَكَ وَمَا كُنْتَ  
तَعْبُورًا وَلَا مُنْتَهٰ يَدٌ عَنْكَ إِنَّا نَسْأَلُكَ مُؤْمَنَةً  
के तू ही उसका मालिक है, और उन दोनों का भी जिसका वह मालिक है।

इस इकार ने कि अल्लाह संसार में फेर-बदल करने वाला है कुरैश के मुशिरकों को इस्लाम में प्रवेश न करा सका, बल्कि उनके खून और धन को मात्र इस चीज़ ने हलाल कर दिया कि वे अपने लिए फरिश्तों, नवियों और बलियों की सिफारिश चाहते थे।

इसलिए हर तरह की दुआ, नज़र और कुर्बानी मात्र अल्लाह के लिए करना और मात्र अल्लाह से सहायता चाहना, और प्रत्येक किस्म की इबादत को मात्र उसी के लिए ख़ालिस करना ज़रूरी है।

**अब्दुन्बी** : "अल्लाह के होने का इकार करना, और इस बात का इकार करना कि वही संसार में फेर-बदल करने वाला है", आपके गुमान के अनुसार यदि यह तौहीद नहीं है, तो फिर तौहीद है क्या?

**अब्दुल्लाह** : जिस तौहीद के कारण रसूलों को भेजा गया, और जिसका मुशिरकों ने इन्कार किया, वह तौहीद मात्र एक अल्लाह तआला की इबादत करना है; तो किसी भी तरह की इबादत चाहे वह दुआ हो, या नज़र हो, या ज़बू करना, फर्याद करना, और सहायता मांगना जिसका इकार आप **الْأَنْزَلْنَا** के द्वारा करते हैं; क्योंकि कुरैश के मुशिरकों के नज़दीक

वली हो, या पेड़ हो, या कब्र हो, या जिन्न हो, और उन्होंने **الله** का अर्थ पैदा करने वाला, सारी चीज़ें मात्र अल्लाह की हैं, जैसा कि पीछे गुज़र चुका। और नवी **بِرَبِّ**, उनके पास

करने के लिए आए थे न कि मात्र इसलिए कि जुबान से इस कल्पे को कह लें।

**अब्दुन्बी** : गोया कि आप यह कहना चाहते हैं कि कुरैश के मुशिरकों **الْأَنْزَلْنَا** के अधिक जानते थे?

**अब्दुल्लाह** : हाँ, यह दुख-दायक वास्तविकता है, और वडे अफसोस की बात है कि जाहिल काफिर करना है, और अल्लाह के सिवाय जिन जीजों की पूजा की जाती है उन सब का इन्कार

तुम **الْأَنْزَلْنَا** कहो, तो उन्होंने जवाब में कहा : **أَعْلَمُ لِمَنْ أَنْزَلْنَا إِنَّهُمْ لِأَنَّهَا وَجَدُوا**

क्या इसने इतने सारे मावूदों (उपास्यों) का एक ही मावूद (उपास्य) कर दिया, वास्तव में यह बहुत ही अजीब बात है।

जबकि वह यह ईमान भी रखते थे कि अल्लाह संसार में फेर-बदल करने वाला है, तो तअज्जुब जाहिल काफिरों को था। बल्कि वह समझता है कि इन हफ़ौं को मात्र जुबान से इनके अर्थ का दिल में विश्वास रखे बिना अदा कर लेना ही काफी है, और उनमें जो अपने आप को होश्यार रोज़ी नहीं देता, और न ही बन्दोबस्त करता है, तो इस्लाम के पेसे दावेदारों में कोई भलाई नहीं है जिन के मुकाबले में जाहिल काफिर **الْأَنْزَلْنَا** के अर्थ को अधिक बेहतर जानते हो।

**अब्दुन्बी** : लेकिन मैं अल्लाह के साथ शिक्षा नहीं करता, मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह ही पैदा करता वही रोज़ी देता वही अकेले लाभ और हानि पहुँचाता इनमें उसका कोई साझी नहीं है, और यह कि स्वयं मुहम्मद **بِرَبِّ** भी अपने लिए लाभ और हानि की शरण

नहीं रखते, और न ही अली ﷺ हूसैन ﷺ और अब्दुल कादिर ﷺ वगैरा, लेकिन मैं पापी हूं और इन नेक लोगों का अल्लाह के पास ऊँचा मकाम है और उन्हीं के द्वारा मैं अल्लाह के पास उनकी सिफारिश चाहता हूं।

**अब्दुल्लाह :** इसके जवाब में मैं आप से वही कहूँगा जो इस से पहले कह चुका हूं कि नबी ﷺ ने जिन लोगों से लड़ाई की वे भी इन सारी चीजों को मानते थे, और यह भी मानते थे कि उन की मूर्तियाँ संसार में कोई हेर फेर नहीं करती हैं, वे मात्र उनसे सिफारिश चाहते थे, जैसा कि हम कुरआनी प्रमाण द्वारा इस से पहले बता चुके हैं।

**अब्दुन्बी :** लेकिन वे आयतें तो उनके बारे में उतरी हैं जो मूर्तियों की पूजा करते थे, तो आप नवियों और नेक लोगों को मूर्तियों के जैसे कैसे बना सकते हैं?

**अब्दुल्लाह :** इस बात पर पहले इतिफाक होचुका है कि कुछ मूर्तियों के नाम नेक लोगों के नाम पर रखे गए थे, जैसा कि नूह ﷺ के ज़माने में हुवा, और काफिरों ने उनके द्वारा अल्लाह के नज़दीक मात्र सिफारिश ही चाही, क्योंकि अल्लाह के नज़दीक उनका ऊँचा मकाम है, इसके प्रमाण में अल्लाह तआला का यह फरमान है :

وَالْأَنْهَىٰ مِنْ دُونِهِ أُولَئِكَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقْرِبُونَا إِلَى اللَّهِ رَبِّنَا  
﴿وَالْأَنْهَىٰ مِنْ دُونِهِ أُولَئِكَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقْرِبُونَا إِلَى اللَّهِ رَبِّنَا﴾  
यह कैसे कि हम उन की इबादत मात्र इसलिए करते हैं कि यह हमें अल्लाह से करीब करदें।

आप का यह कहना कि तुम वलियों और नवियों को बुत कैसे कह रहे हो? तो हम इस बारे में आप को यह बता देना चाहते हैं कि जिन काफिरों के पास अल्लाह के नबी भेजे गए उनमें ऐसे भी लोग थे जो वलियों को पुकारते थे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया:

إِنَّكُمْ الظَّاهِرُوكُمْ يَتَعْرَفُونَ إِنَّ رَبَّهُمْ الْوَسِيلَةُ إِنَّ فِرْبَ وَرِحْمَةَ حَمْدَتَهُ وَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ حَذِيرًا  
“जिन्हें यह लोग पुकारते हैं स्वयं वे अपने ख की कुर्बत की तलाश में रहते हैं कि उनमें कोई अधिक करीब होजाए, वह स्वयं उसकी रहमत की आशा रखते हैं, और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं।”

और उनमें से कुछ ईसा ﷺ और उनकी माँ को पूकारते थे, अल्लाह तआला का फरमान है :  
وَإِنَّمَا يَعْبُدُونَ اللَّهَ يَعْبُدُونَ إِنَّمَا يَعْبُدُونَ اللَّهَ يَعْبُدُونَ إِنَّمَا يَعْبُدُونَ اللَّهَ يَعْبُدُونَ  
“और वह समय भी याद करने के काबिल है जबकि अल्लाह फरमाए गा कि ऐ ईसा बिन मर्याम क्या तुम ने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय मांबूद (उपास्य) बना लो?”

और इसी तरह उनमें से कुछ फरिश्तों को पुकारते थे, अल्लाह तआला का फरमान है :

وَإِنَّمَا يَعْبُدُونَ اللَّهَ يَعْبُدُونَ إِنَّمَا يَعْبُدُونَ اللَّهَ يَعْبُدُونَ  
“और जिस दिन अल्लाह तआला सभी को इकट्ठा करके फरिश्तों से पूछेगा कि क्या यह लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?”

इन आयतों पर ज़रा ध्यान दीजिए अल्लाह तआला ने उन्हें काफिर करार दिया जो मूर्तियों से मांगते थे, और इसी प्रकार बिना कोई फ़र्क किए उन्हें भी काफिर करार दिया जो नेक लोगों को पुकारा करते थे वह वे पुकारे जाने वाले अभविया हों, या फरिश्ते या औलिया। और नबी ﷺ ने इसी कारण उन से जिहाद किया और इस बारे उनमें फ़र्क नहीं किया।

**अब्दुन्बी :** लेकिन हमारे और काफिरों में तो फ़र्क है, काफिर उन्हीं से फ़ाइदा लाते हैं, जबकि मैं तो यह गवाही देता हूं कि फ़ाइदा पहुँचाने वाला, नुस्खान पहुँचाने वाला और इन्तज़ाम करने वाला मात्र अल्लाह तआला है, और हम यह चीज़े मात्र उसी से लाते हैं,

नेक लोगों को कुछ भी अधिकार प्राप्त नहीं है, हम तो उनसे मात्र यह चाहते हैं कि वे हमारे लिए अल्लाह से सिफारिश कर दें।

**अब्दुल्लाह :** आप की यह बात ठीक काफिरों की बात जैसी है, दोनों में कुछ भी फ़र्क नहीं है, इत्तील के लिए अल्लाह तआला का यह फरमान है :

﴿ وَيَعْبُدُوكَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَصْرُهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هُوَ لَهُ شَفِيعٌ نَّاجِدٌ أَكُفَّارٌ ﴾ और यह लोग अल्लाह के सिवाय ऐसी चीजों की इबादत करते हैं जो न उन्हें नुक्सान पहुंचा सके और न लाभ, और कहते हैं कि अल्लाह के पास यह हमारे सिफारिशी हैं।

**अब्दुन्नबी :** लेकिन मैं तो इनकी इबादत नहीं करता हूँ, मैं तो मात्र अल्लाह की इबादत करता हूँ, रहा उनसे फर्याद करना और उन्हें पुकारना तो यह इबादत तो नहीं है।

**अब्दुल्लाह :** मेरा आप से एक प्रश्न है, क्या आप इसे स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ने मात्र अपनी इबादत आप पर फर्ज की है? और यह उसका आप पर हक है जैसा कि उसने फरमाया:

﴿ وَمَا أَمْرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لِلَّهِ حَمْدًا ﴾ “उन्हें इसके सिवाय कोई आदेश नहीं दिया गया कि मात्र अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म को खालिस रखें इब्राहीम हनीफ के दीन पर।”

**अब्दुन्नबी :** हाँ, उसने इसे मुझ पर फर्ज किया है।

**अब्दुल्लाह :** अल्लाह ने आप पर इख्लास के साथ जो इबादत फर्ज की है उसे आप ज़रा स्पष्ट कर दें।

**अब्दुन्नबी :** मुझे आप की बात समझ में नहीं आई, फिर से स्पष्ट करें।

**अब्दुल्लाह :** मैं आप को बताता हूँ ध्यान दे कर सुनें, अल्लाह ﷺ का फरमान है :

﴿ أَذْعُوا رَبَّكُمْ تَضْرُبُهُمْ وَحْقَيْةً إِنَّهُ لَا يُجِيبُ الْمُعْتَدِلِينَ ﴾ “तुम लोग अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ा कर भी और चुपके चुपके भी, वह (अल्लाह तआला) अवश्य उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो सीमा पार कर जाएं।”

**तो क्या दुआ करना अल्लाह की इबादत है या नहीं?**

**अब्दुन्नबी :** क्यों नहीं, बल्कि यही इबादत का मर्ज है, जैसा कि हड्डीस में आया है :

**अब्दुल्लाह :** जब आप ने यह स्वीकार कर लिया कि दुआ अल्लाह की इबादत है, और किसी ही पुकारा, और उसी ज़खरत के लिए आप ने नबी, या फरिश्ता, या किसी नेक व्यक्ति को पुकारा जो अपनी कब्र में है, तो क्या आप ने इस इबादत में शिर्क नहीं किया?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, यह तो मुझ से शिर्क हुवा। आप की यह बात तो बहुत स्पष्ट है।

**अब्दुल्लाह :** मैं आप को एक दूसरा उदाहरण देता हूँ : जब आप को अल्लाह तआला के इस कौल : के बारे में जानकारी होगई, और आप ने उस के आदेश का पालन किया और उसी के लिए कुर्बानी की, तो क्या आप की यह ज़बह और कुर्बानी अल्लाह ﷺ की इबादत मानी जाएगी?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, यह तो इबादत है।

**अब्दुल्लाह :** तो यदि आपने अल्लाह के साथ किसी मख्लूक के लिए भी ज़बह किया चाहे वह मख्लूक नबी हो, या जिन, या कोई और, तो क्या आप ने इस इबादत में गैरुल्लाह को साझी नहीं बना लिया?

**मारे अबुल्लाह :** निःसन्देह यह तो शिर्क है।

**अबुल्लाह :** मैं ने मात्र दुआ और जबह का उदाहरण दिया है, इसलिए कि जुबानी इबादतों में दुआ और बदनी इबादतों में जबह सबसे महत्वपूर्ण है, और मात्र इन्हीं दो चीजों का नाम इबादत नहीं है बल्कि नज़र, करसम, पनाह मांगना और सहायता चाहना वगैरा भी इबादत हैं, और यह बताएं कि मुशिरकीन जिनके बारे में कुरूआन उत्तरा क्या वे फरिश्ते, नेक लोगों और लात वगैरा की इबादत करते थे?

**अबुल्लाह :** हाँ, वे तो उनकी इबादत किया करते थे।

**अबुल्लाह :** मुशिरकीन जो उनकी इबादत किया करते थे, यह इबादत तो दुआ, जबह, इस्तिआजा (पनाह मांगना), इस्तिआना (मदद चाहना), और इलिजा के द्वारा ही तो थी, नहीं तो वे तो यह स्वीकार कर रहे थे कि वे अल्लाह के दास हैं, उस के अधीन हैं, और वही सारी चीजों का बन्दोबस्त करने वाला है, लेकिन सिफारिश और जाह के लिए उन्होंने गैरुल्लाह को पुकारा, और यह चीज़ बिल्कुल स्पष्ट है।

**अबुल्लाह :** अच्छा अबुल्लाह साहब हमें यह बताएं कि क्या आप अल्लाह के रसूल की सिफारिश का इन्कार करते और उससे बराबरत करते हैं?

**अबुल्लाह :** नहीं भाई, बात ऐसी नहीं है, मैं न तो उसका इन्कार करता और न ही उस से शफाअत करता हूँ, बल्कि उन पर मेरे मां बाप कुर्बान हौं, वह तो महशर में सिफारिश करेंगे और उनकी सिफारिश स्वीकार होगी, और हम उन की सिफारिश की उम्मीद लगाए बैठे हैं, लेकिन शफाअत मात्र अल्लाह के लिए है, जैसा कि उसका फरमान है : ﴿كُلُّ دُعَىٰ مِنْ رَبِّهِ مُؤْمِنٌ﴾ "कह दीजिए कि शफाअत सभी अल्लाह के लिए है।"

**अबुल्लाह :** नहीं भाई, बात ऐसी नहीं है, जब अल्लाह इसकी अनुमति देगा, जैसा कि उसने नवी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की शफाअत उस समय होगी जब अल्लाह इसकी अनुमति के बिना उसके फरमाया : ﴿إِنَّمَا يَنْهَا إِنَّمَا يَنْهَا عَنِ الْحَسْرَةِ مَنْ يَتَوَلَّ مِنْ أَذْلَالِيَّةِ فَأُولَئِكَ هُنَّ الظَّالِمُونَ﴾ "कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके लाभने सिफारिश कर सके?"

**अबुल्लाह :** नहीं भाई, बात ऐसी नहीं है, जब तक कि अल्लाह उस व्यक्ति के किसी के लिए भी उस समय तक शफाअत नहीं की जाएगी जब तक कि अल्लाह उस व्यक्ति के बारे में शफाअत की अनुमति न दे दे, जैसा कि उसने फरमाया : ﴿وَلَا يَنْهَا عَنِ الْأَئْمَانِ إِنَّمَا يَنْهَا عَنِ الْحَسْرَةِ مَنْ يَتَوَلَّ مِنْ أَذْلَالِيَّةِ فَأُولَئِكَ هُنَّ الظَّالِمُونَ﴾

**अबुल्लाह :** नहीं भाई, बात ऐसी नहीं है, जब तक कि अल्लाह उसकी अनुमति न दे दीजाए, और अल्लाह मात्र तीहीद ही से खुश होगा, जैसा कि उसने इशोद फरमाया :

**अबुल्लाह :** नहीं भाई, बात ऐसी नहीं है, जब तक कि अल्लाह उससे उसे स्वीकार नहीं करेगा, और वह के सिवाय कोई और घर्म चाहेगा तो अल्लाह उससे उसे स्वीकार नहीं करेगा, और वह आखिरत में पाठा पाने वालों में से होगा।"

**अबुल्लाह :** नहीं भाई, बात ऐसी नहीं है, और मात्र उसकी अनुमति तो जब सारी की सारी शफाअत का हक मात्र अल्लाह ही को है, और मात्र उसकी अनुमति के बाद ही शफाअत की जाएगी, और नवी या कोई भी किसी के लिए शफाअत उस समय तक नहीं करेंगे जब तक कि उस के लिए शफाअत की अनुमति न दे दीजाए, और अल्लाह तभाला मात्र तीहीद परस्तों के लिए ही अनुमति देगा, तो जब वह बात स्पष्ट होगी कि सारी की सारी शफाअत मात्र अल्लाह तभाला के लिए है तो मैं उसी से तत्त्व करता हूँ, और वह दुआ कर रहा हूँ : ऐ अल्लाह! तू मुझे उनकी शफाअत से महस्त न करना, ऐ अल्लाह! तू अपने रसूल को मेरा सिफारिशी बनाना। और इस जैसी दूसरी दुआएँ।

**अब्दुन्बी** : हमारा इस बात पर इतिफाक है कि किसी व्यक्ति से ऐसी चीज़ मांगना जापन नहीं है जिसका वह मालिक न हो, और जबकि अल्लाह तआला ने नबी ﷺ को शफाअत अता किया है, तो आप उसके मालिक होगए, इसलिए मेरे लिए आप से शफाअत तलब करना जायज़ हो गया क्योंकि आप उसके मालिक हैं, और यह शिर्क न होगा।

**अब्दुल्लाह** : हाँ, आप की यह बात उस समय दुरुस्त होती जब अल्लाह ने इससे रोका न होता, लेकिन अल्लाह ﷺ ने फरमाया: ﴿مَلَكُ عَوْنَاحُ مُلَكَّعَةٍ﴾ "तो अल्लाह के साथ किसी को न पुछारो।" और शफाअत तलब करना दुआ है, और नबी ﷺ को जिसने शफाअत अता की वह अल्लाह है, और उसी अल्लाह ने तुम्हें गैरों से किसी भी तरह की चीज़ तलब करने से रोका है, और एक भी शफाअत करेंगे, बालिग होने से पहले जो बच्चे मर गए वे भी शफाअत करेंगे, औलिया भी इसलिए मैं इन सभों से शफाअत तलब करनगा? यदि आप का जवाब हाँ मैं हूँ, तो गोपा आप नें और यदि जवाब इन्कार मैं हूँ, तो आप का यह कहना कि : - अल्लाह ने उन्हें ﷺ शफाअत अद्दुन्बी : लेकिन मैं अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता; क्योंकि सालेहीन से इतिहास करना शिर्क नहीं है।

**अब्दुल्लाह** : क्या आप इसे स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ने शिर्क को हराम करार दिया है। इसे माफ नहीं करेगा, और इसकी हृष्टत जिना से भी बढ़कर है?

**अब्दुन्बी** : हाँ, मैं इसे मानता हूँ और यह अल्लाह के कलाम में स्पष्ट है।

**अब्दुल्लाह** : अभी आप ने अपने आप से उस शिर्क का इनकार किया है जिसे अल्लाह मैं है जिसे आप नहीं करते, और अपने आप से उसका इनकार करते हैं?

**अब्दुन्बी** : यह शिर्क मूर्तियों की पूजा है, उनकी ओर जाना, उन से मांगना और डरना है। अब्दुल्लाह : मूर्ति पूजा का अर्थ क्या है? क्या आप ऐसा गुमान रखते हैं कि कुरैश के काफिरों पुकारते हैं वे उनके कामों का इन्तजाम कर देते हैं? कुरैश के काफिरों के लिए यह अमारत की ओर दूजा करने वा जबाव करने के लिए यह अमारत की ओर दूजा करने हैं।

**अब्दुन्बी** : और मेरा भी अकीदा इस तरह का नहीं है, बिल्कुल मैं तो यह अमारत रखता हूँ कि जिसने लकड़ी, या पत्थर, या कब्र पर बनी इमारत की ओर दूजा करने वा जबाव करने के लिए गया, और यह कहा कि यह हमें अल्लाह से करीब कर देंगे, और इनकी बर्तावी है।

**अब्दुल्लाह** : आप ने बिल्कुल ठीक कहा लेकिन यहि सब कुछ जाप करो, उनकी जालियों और उन पर बनी इमारतों के पास करते हैं। और क्या आप ऐसा अमारत रखता है कि शिर्क मामूल मूर्तियों साथ खास है, और सालेहीन से दुजा करना और उन पर घोरेसा करना जिन्हें न लोगता है।

**अब्दुन्बी** : हाँ, मेरा मक्कसद यहीं है।

**अब्दुल्लाह :** फिर आप उन बहुत सारी आयतों के बारे में क्या कहेंगे जिन में अल्लाह ने नवियों, नेक लोगों और फरिश्तों का सहारा लेने को हराम ठहराया है, और ऐसा करने वालों को काफिर कहा है? जैसा कि स्पष्ट रूप से पहले मैंने इसका चर्चा किया है।

**अब्दुन्नबी :** लेकिन जो लोग फरिश्तों और नवियों को पुकारते हैं, उन्हें इस पुकारने के कारण काफिर नहीं कहा गया, बल्कि उन्हें फरिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ, और ईसा ﷺ को अल्लाह का बेटा कहने के कारण काफिर कहा गया है, और हम यह नहीं कहते हैं कि अब्दुल कादिर अल्लाह के बेटे हैं और न ही यह कहते हैं कि जैनब अल्लाह की बेटी हैं।

**अब्दुल्लाह :** अल्लाह की ओर संतान की निस्बत करना मुस्तकिल कुफ्र है, जैसा कि उसने फरमाया: ﴿ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۖ لَمْ يَكُنْ لَّهُ إِلَيْهِ إِذَا لَذَّهَبَ كُلُّ إِلَهٍ بِمَا خَلَقَ ۖ وَلَعَلَّا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ ۝﴾ “ऐ नबी ﷺ कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है, उसने न तो किसी को जन्म दिया है, और न ही किसी से जन्म लिया है”<sup>1</sup> तो जिसने इन आयतों का इन्कार किया चाहे वह अन्तिम आयत का इन्कार करे या न करे तो उसने कुफ्र किया। और अल्लाह तआला ने यह भी फरमाया: ﴿ مَا أَنْخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَيْلٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذَا لَذَّهَبَ كُلُّ إِلَهٍ بِمَا خَلَقَ ۖ وَلَعَلَّا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ ۝﴾ “न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया, और न उसके साथ और कोई मांबूद (उपास्य) है, नहीं तो हर मांबूद अपनी अपनी मख्लूक को लिए फिरता, और हर एक दूसरे पर चढ़ दौड़ता।”

हर मांबूद कुफ्र किया, तो फुकहा भी इन दोनों किस्मों में फर्क करते हैं। और इसकी दलील यह भी है कि जिन तो अल्लाह तआला ने दोनों कुफ्रों के बीच फर्क किया। और इसकी दलील यह भी है कि जिन लोगों ने लात जैसे नेक व्यक्ति से दुआ करके कुफ्र किया उन्होंने लात को अल्लाह का बेटा नहीं माना था, और जिन्होंने जिन्हों की इबादत के द्वारा कुफ्र किया उन्होंने भी जिन्हों को बेटा नहीं कहा था, और इसी तरह चारों मज्हब में मुर्तद के हुक्म में यह चर्चा करते हैं कि जिसने अल्लाह के लिए बेटा माना वह मुर्तद है, और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया उसने अल्लाह के लिए बेटा माना वह मुर्तद है, और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया उसने

कुफ्र किया, तो फुकहा भी इन दोनों किस्मों में फर्क करते हैं।

**अब्दुन्नबी :** लेकिन अल्लाह तआला फरमाता है: ﴿ أَتَأْتُكُمْ اللَّهُ لَا حَوْفٌ عَلَيْهِنَّ وَلَا هُمْ بِحَرَزٍ ۝﴾ “याद रखो! अल्लाह के दोस्तों पर न कोई डर है और न ही वह ग़मीन होते हैं।”

**अब्दुल्लाह :** हम भी यही कहते हैं और यही सत्य है, लेकिन उन की इबादत नहीं की जासकती, और हम मात्र अल्लाह के साथ उनकी इबादत करने और उन्हें साझी बनाने का इन्कार करते हैं, नहीं तो उन से महब्बत करना, उनकी पैरवी करना और उनकी करामतों को स्वीकारना सब पर वाजिब है, और उनकी करामतों का वही लोग इन्कार करते हैं जो विद्युती हैं, अल्लाह का दीन कभी बेशी से पवित्र है, वह ऐसी हिदायत है जो दो गुप्ताहियों के बीच है, और ऐसा हूक है जो दो बातिलों के बीच है।

**अब्दुन्नबी :** जिन लोगों के बारे में कुरुआन उत्तरा वे ﴿ أَلَا إِنَّمَا ۝ की गवाही नहीं देते थे, अल्लाह के रसूल को झुटलाते थे, दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार करते थे, कुरुआन को झुटलाते थे, और उसे जादू कहा करते थे, और हम यह गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, कुरुआन को सच्च मानते हैं, दोबारा ज़िन्दा किए जाने पर ईमान रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, तो फिर हमें आप उन जैसे कैसे ठहराते हैं?

1 अहं वह हस्ती है जिसका कोई साझी नहीं, और हर ज़रूरत के लिए जिस की ओर जाया जाए उसे समझ कहते हैं।

**अब्दुल्लाह** लेकिन उलमा के बीच इस बारे में कोई दो राय नहीं है कि यदि किसी व्यक्ति ने कुछ चीजों पर अल्लाह के रसूल की तस्दीक की और कुछ चीजों में उन्हें झुटलाया तो वह काफिर है, वह अब तक इस्लाम में प्रवेश नहीं किया, और इसी तरह यदि किसी ने कुरआन के कुछ छिपाए पर इमान रखा और कुछ का इन्कार किया तो वह भी काफिर है, जैसे किसी ने तीहीद को ने स्वीकारा लेकिन नमाज़ का इन्कार किया, या तीहीद और नमाज़ को तो स्वीकारा लेकिन ज़कात वाजिब होने का इन्कार किया, या इन सारी चीजों को तो स्वीकारा लेकिन रोज़ा ईद के जमाने में जब कुछ लोग हज्ज के लिए नहीं निकले तो उनके बारे में यह आयत उत्तरी :

وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حُجُّ الْبَيْتِ مِنْ أَسْطَاعَ إِلَهٌ سِبِّلًا وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ<sup>۱۷۳</sup> “अल्लाह तआला ने लोगों पर जो उस की ओर रास्ता पा सकते हों इस घर का हज्ज फर्ज कर दिया है, और जो कोई कुफ़ करे तो अल्लाह तआला (उससे बल्कि) सारी दुनिया से बे-परवाह है।”

और यदि दोबारा जिन्दा किए जाने का इन्कार करे तो इस बात पर इज्मा'अू (एकमत) है कि उसने कुफ़ किया, और इसीलिए अल्लाह तआला ने अपनी किताब में इसे स्पष्ट कर दिया है कि जिसने कुछ चीजों पर इमान रखा और कुछ चीजों का कुफ़ किया वह निःसन्देह काफिर है, अल्लाह तआला का आदेश है कि पूरे इस्लाम को अपनाया जाए, और जिसने कुछ चीजों को अपनाया और कुछ को छोड़ दिया तो उसने कुफ़ किया, तो क्या आप इस बात को मानते हैं कि जिसने कुछ को अपनाया और कुछ को छोड़ा उसने कुफ़ किया?

**अब्दुन्नबी** हाँ, हम इसे मानते हैं, और यह तो कुरआन में स्पष्ट है।

**अब्दुल्लाह** तो जब आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिसने किसी चीज़ में रसूल की तस्दीक की, और नमाज़ के वाजिब होने का इन्कार किया, या सारी चीजों को स्वीकार किया है, सारे मतों (मस्लिमों) का इस पर इत्तिफाक है, और कुर्झान ने इसे स्पष्ट भी कर दिया है जैसा कि ऊपर इसका चर्चा हो चुका, तो आप यह जान लीजिए कि नबी जो शरीअत लेकर कर है, तो भला यह कैसे हो सकता है कि इन्सान इन चीजों में से यदि किसी चीज़ का करे तो काफिर न हो?! सुब्कानल्लाह! यह कितनी बड़ी जिहालत और नादानी है।

लोगों से जिहाद किया, जबकि वे नबी ﷺ के ज़माने में इस्लाम ले आए थे, कल्मण  
**अब्दुन्नबी** : लेकिन वे मुसीलमा को नबी मानते थे, और अज़ान देते थे।

के बाद कोई नबी नहीं है।

**अब्दुल्लाह** : लेकिन आप लोग अलीؑ या अब्दुल कादिर जीलानीؑ या नव्वियो या फरिश्तो के रुत्खे को धरती और आकाश के जब्बार के रुत्खे के बराबर पहुंचा देते हैं, जबकि यदि किसी ने किसी व्यक्ति के रुत्खे को नबी के बराबर कर दिया तो वह काफिर होगया, उसकी जान और माल हलाल होगए, कल्मा और नमाज़ उसे फायदा नहीं देंगे, तो जो उन्हे अल्लाह तआला के रुत्खे तक पहुंचाए वह तो अवश्य काफिर होगया। और इसीलिए अस्तीؑ



ने उहे आग में जला दिया था जबकि वे इस्लाम का दावा करते थे, और वे अली ﷺ के साथियों में से थे, सहाबए किराम से उन्होंने शिक्षा लिया था, लेकिन उन्होंने अली ﷺ के बारे में वही अकीदा रखा जो आप लोग अब्दुल्ल कादिर वगैरा के बारे में रखते हैं, फिर सारे सहाबए किराम ﷺ ने उन के कल्प और उनके काफिर होने पर कैसे इतिफाक कर लिया? या आप यह समझते हैं कि सहाबए किराम ﷺ मुसलमानों को काफिर कहा करते थे?! या आप इस भ्रम में हैं कि सैयद अब्दुल्ल कादिर जीलानी और इन जैसे लोगों के बारे में ऐसा अकीदा रखना हानिकारक नहीं, और अली ﷺ के बारे में ऐसा अकीदा रखना कुफ्र है?

और यह बात भी कही जा सकती है कि पहले के लोग इसलिए काफिर ठहरे कि उन्होंने शिर्क के गति-साथ, रसूल ﷺ और कुरआन को झुठलाया, दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने वगैरा का इन्कार किया, तो फिर उस बात का क्या अर्थ है जिसे हर मस्लिम के उलमा ने अपनी किताबों में बांधा है:

(بَاب حَكَمْ) “मुर्तद के हुक्म का बयान”? मुर्तद वह मुस्लिम व्यक्ति है जो इस्लाम लाने के बाद फिर काफिर हो जाए, और उस बाब में बहुत सारी चीज़ों का चर्चा किया गया है जिन में से कौती भी एक को करना बन्दे को काफिर बना देता, और उसके खून और माल को हलाल कर देता है, यहाँ तक कि उन्होंने छोटी चीज़ों का भी चर्चा किया है, जैसा कि अल्लाह की नाराज़गी की कल को मुंह से निकालना, चाहे वह उसका अकीदा न रखता हो, या मज़ाक में उनका चर्चा करना, और इसी तरह से वे लोग भी हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने चर्चा करते हुए फरमाया:

﴿ قُلْ إِنَّ اللَّهَ وَمَا أَيْنَهُ وَرَسُولُهُ كُنْتُ تَسْتَهِزُونَ لَا تَقْنِذُ رَوَافِدَ كُثُرٍ مَعَ دِيَنِكُمْ ۚ ۱۵ ۚ ۱۵﴾ “कह दीजिए कि अल्लाह, उसकी निशानियां और उसके रसूल ही तुम्हारे हँसी मज़ाक के लिए रह गए हैं? अब तुम कलना न बनाओ इसलिए कि ईमान लाने के बाद अवश्य तुम काफिर होगए।”

यह लोग जिनके बारे में अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया कि यह ईमान के बाद काफिर होगए, यह अल्लाह के रसूल के साथ ग़ज्वए तबूक में थे, और उन्होंने एक ऐसी बात जिसके बारे में वे कहते रहे कि हँसी मज़ाक में वे कहे थे।

और यहाँ उसका भी चर्चा कर देना अच्छा होगा जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने बनू इस्माईल से बारे में किया है कि उन्होंने अपने इस्लाम, ज्ञान और तक्वा के होते हुए भी मूसा ﷺ से कहा : ﴿ أَجْعَلْ لِّي إِنَّهَا ۚ ۱۶ ۚ ۱۶﴾ “हमारे लिए भी एक ऐसा ही माँबूद (उपास्य) बना दीजिए।”

और कुछ सहाबए किराम ﷺ ने कहा : “हमारे लिए जाते अन्वात बना दीजिए” तो नबी ﷺ ने कसम खाकर कहा कि यह तो ठीक वही बात है जो बनू इस्माईल ने कही थी :

﴿ أَجْعَلْ لِّي إِنَّهَا كَمْ لِّي ۚ ۱۷ ۚ ۱۷﴾ “हमारे लिए भी एक माँबूद (उपास्य) ऐसा ही बना दीजिए, उनके यह माँबूद हैं।”

**अब्दुल्लाह :** लेकिन बनू इस्माईल और इसी तरह वह लोग जिन्होंने अल्लाह के रसूल ﷺ से अन्वात बनाने को कहा था इसके कारण काफिर नहीं हुए।

**अब्दुल्लाह :** इसका उत्तर यह है कि बनू इस्माईल और इस तरह जिन्होंने नबी ﷺ से जाते अन्वात बनाने का मुतालबा किया था उन्होंने ऐसा किया नहीं, और यदि ऐसा कर लिए होते तो काफिर हो जाते, और इसी तरह अल्लाह के रसूल ने जिन्हें जाते अन्वात बनाने से रोका, यदि वे आप की बात न मानते और जाते अन्वात बना लेते तो काफिर हो जाते।

**अब्दुल्लाह :** लेकिन मेरे पास एक प्रश्न है, और वह है उसामा बिन ज़ैद का किस्सा कि जब उन्होंने एक ﴿ أَلَا إِنَّمَا ۚ ۱۸ ۚ ۱۸﴾ कहने वाले व्यक्ति को कल्प कर दिया तो नबी ﷺ उन पर नाराज़ हुए।

और कहा कि : क्या उसके **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहने के बाद भी तुम ने उसे क़त्ल कर दिया? और इसी तरह आप **سُلْطَنُ** का यह फरमान : **أَمْرُتْ أَنْ أَقْاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** “**मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से जिहाद करूँ यहाँ तक कि वे **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहने लगें।**”

तो जो बात आप ने कही है और जो इन दोनों हड्डीसों में है, आप थोड़ी मेरी राहनुमाई करें कि दोनों को मैं इकट्ठा कैसे कर सकता हूँ?

**अब्दुल्लाह** इस बात की जानकारी सब को है कि अल्लाह के रसूल **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने यहूदियों से जिहाद किया और उन्हें कैदी बनाया हालांकि वे **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** का इकार करते थे, और सहाबए किराम **رض** ने बनू हनीफा से जिहाद किया और वे भी **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ** की गवाही दे रहे थे, और नमाज पढ़ रहे थे, यही हाल उनका भी था जिन्हें अली **رض** ने जलाया था, और आप स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिसने **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहने के बाद भी दोबारा जिन्दा किए जाने का इन्कार किया उसने कुफ्र किया और उसे क़त्ल करना जायज़ होगया। और यह भी स्वीकार करते हैं कि जिसने **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहने के बाद भी इस्लाम के किसी रुक्न का इन्कार किया तो उसने कुफ्र किया और उसे क़त्ल किया जाएगा। तो ज़रा सोचिए किसी फरई मस्तके का इन्कार करता है तो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** उसे लाभ नहीं पहुँचा सकता, तो भला जब किसी बुनियादी मस्तके का इन्कार करेगा तो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** उसे कैसे फ़ाइदा देगा?! और शायद आप ने इन हड्डीसों का मतलब नहीं समझा।

उसामा की हड्डीस का अर्थ यह है कि उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को क़त्ल कर दिया जिसने इस्लाम का दावा किया यह समझ कर कि वह अपनी जान और माल की रक्षा की खातिर ऐसा कर रहा है, जबकि इस्लामी आदेश अनुसार किसी भी व्यक्ति को जो इस्लाम का दावा कर रहा है उसे क़त्ल करना हराम है यहाँ तक कि उसके खिलाफ़ कोई चीज़ स्पष्ट होजाए जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान है :

**إِنَّمَا إِيمَانَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ بِمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَمَّا قَاتَلُوكُمُ الظَّالِمُونَ**

“ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह के रास्ते में जा रहे हो तो छान बीन कर लिया करो।”

तो आयत में यह प्रमाण है कि ऐसे लोगों से हाथ रोक लेना और उनकी छान बीन करना वाजिब है, और छान बीन करने के बाद यदि इस्लाम के खिलाफ़ किसी चीज़ का पता चले तो उसे अल्लाह तआला के कौल **فَيَسْتَرُ** की रौशनी में क़त्ल किया जाएगा, और यदि उसे क़त्ल करना जायज़ न होता तो छान बीन करने का कोई फ़ाइदा ही न होता।

उसे क़त्ल नहीं किया जाएगा, लेकिन जब उससे इस्लाम के विरुद्ध कोई चीज़ ज़ाहिर होजाए तो उसका खून झलाल होजाएगा। और इसकी दलील यह है कि जिस रसूल **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने यह बात कही : **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** यानी ‘उसामा! तुमने उसे ला इलाह इल्लल्लाह कहने के बाद **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** से लड़ाई करने का हुक्म दिया गया है यहाँ तक कि वह कह दें: ला इलाह इल्लल्लाह।’ उसी रसूल **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** का खवारिज के बारे में यह भी कहना है : “जहाँ भी तुम उन्हें पाओ उन्हें क़त्ल कर दो।”

जबकि यह खवारिज लोगों में सब से अधिक इबादत और तस्वीह करने वाले थे, यहाँ तक कि सहाबए किराम इन की इबादतों के सामने अपनी इबादत को हेच समझते थे, और इन्होंने सहाबए किराम से ही इल्लम सीखा था, लेकिन इसके बावजूद जब उनसे शरीअत की मुख्तालिफ़

जाहिर हूई तो उन्हें ﴿اَللّٰهُ اَكْبَرُ﴾ के कहने, अधिक इबादत करने और इस्लाम का दावा करने ने कोई फ़ाइदा नहीं पहुँचाया।

**अब्दुल्लाह :** क्यामत के दिन फ़र्याद के बारे में नबी करीम ﷺ से जो हडीस साबित है कि लोग आदम के पास आएंगे, फिर नूह के पास, फिर इब्राहीम, फिर मूसा, फिर ईसा ﷺ के पास और वे लोग माज़रत कर देंगे, तो अन्त में नबी ﷺ के पास आएंगे, तो इससे पता यह चला कि गैरुल्लाह से इस्तिग़ासा (फ़र्याद) करना शिर्क नहीं है।

**अब्दुल्लाह :** मस्तला आप पर गडमड होगया है, जिन्दा और मौजुद व्यक्ति से ऐसी चीज़ का फ़र्याद करना जिसकी वह शक्ति रखता हो हम इसका इन्कार नहीं करते यह तो कुर्�आन में साबित है : ﴿فَاسْتَغْفِرُهُ اللَّٰهُ مِنْ عَذَابِهِ، عَلَى الَّذِي مِنْ شَيْءِنِهِ﴾ “उसकी कौम वाले ने उससे फ़र्याद की उसके खिलाफ़ जो उसके दुश्मनों में से था।”

और जैसा कि इन्सान लड़ाई वर्गेरा में अपने साथियों से ऐसी चीज़े मांगता है जिसकी वह शक्ति रखते हैं, हमने उस फ़र्याद का इन्कार किया है जो तुम इबादत के तौर पर औलिया के कब्रों पर या उनकी गैर हाज़िरी में करते हो, और उनसे ऐसी चीज़े मांगते हो जिन्हें देने की शक्ति मात्र अल्लाह तआला ही को है, और लोग क्यामत के दिन नवियों से जो फ़र्याद करेंगे, इसलिए करेंगे ताकि जल्द हिसाब होने के लिए वे अल्लाह से दुआ करें, ताकि जन्नती मौकिफ़ की परेशानियों से छुटकारा पा लें, और यह तो दुनिया और आखिरत दोनों जगह जायज़ है कि आप किसी नेक व्यक्ति के पास आएं जो आप के साथ उठता बैठता हो, और उससे अपने लिए अल्लाह से दुआ करने की दर्खास्त करें, जैसा कि सहाबए किराम नबी ﷺ की जीवन में किया करते थे, लेकिन मौत के बाद उन्होंने हर्मिज़ (कदापि) ऐसा नहीं किया, उन्होंने आप के कब्र के पास जाकर आप से सवाल नहीं किया, बल्कि सलफ़ सालिहीन ने कब्र के पास अल्लाह से दुआ करने से भी रोका है।

**अब्दुल्लाह :** आप इब्राहीम ﷺ के किससे के बारे में क्या कहेंगे जब वह आग में डाले गए तो फ़ज़ा में जिब्रील ﷺ उनके पास आए, और पूछा क्या आप को मेरी कोई ज़रूरत है? तो इब्राहीम ﷺ ने कहा : हमें आप की ज़रूरत नहीं है। तो यदि किसी से फ़र्याद करना शिर्क होता तो जिब्रील ﷺ मदद के लिए अपने आप को कभी भी पेश न करते।

**अब्दुल्लाह :** यह सन्देह भी पहले वाले सन्देह की तरह ही है, और इस बारे में जिब्रील के जिस असर का आपने उदाहरण दिया वह सहीह नहीं है, और यदि उसे सहीह भी मान लिया जाए तो वास्तव में जिब्रील ﷺ ने उनके सामने एक ऐसी बात रखी थी जिस की उन्हें पूरी शक्ति थी, क्योंकि अल्लाह तआला का उनके बारे में फ़रमान है : ﴿عَلَمَهُ سَيِّدُ الْعُوْنَى﴾ “उसे

पूरी शक्ति वाले फ़रिश्ते ने सिखाया है।” तो यदि अल्लाह तआला उन्हें यह आदेश दे देता कि वह इब्राहीम ﷺ की आग और उसके आस पास की धरती और पर्वत को पूरब या पश्चिम में कहीं लेजाकर फेंक दें तो वह ऐसा करने पर बेबस नहीं थे, और इसका उदाहरण उस धनी व्यक्ति जैसे है जो किसी ग़रीब को उसकी ज़रूरत पूरी करने के लिए कर्ज़ देने की पेशकश करे, तो वह अपनी ग़रीबी पर सब करे और माल लेने से इन्कार करदे यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसे अपने फ़ज़्ल से रोज़ी अला करदे, जिसमें किसी का थोड़ा सा भी एहसान न हो। तो आप इस की बराबरी इबादत में फ़र्याद और शिर्क के साथ कैसे कर सकते हैं?!

और मेरे भाई आप इस चीज को अच्छी तरह समझ लीजिए कि पहले ज़माने के वे मुशिरकीन जिनका और नवी ख़ुशी को भेजा गया तीन कारणों से उनका शिर्क हमारे ज़माने के मुशिरकीन से कम्तर था :

**१** पहले के मुशिरकीन मात्र सुख के समय शिर्क किया करते थे, और दुःख के समय मात्र अल्लाह की इबादत किया करते थे, प्रमाण स्वरूप अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ هَذَا رَحْكُومٌ إِلَيْنَا دُعُوا أَنَّهُ مُحَلِّصٌ لِّمَنْ فَلَمْ يَأْتِهِمْ إِلَيْنَا إِنَّهُمْ كُفَّارٌ ۝ » “तो यह लोग जब नौकों पर चढ़ते हैं तो अल्लाह तआला ही को पुकारते हैं, उसी के लिए इबादत को खालिस करके, फिर वह जब उन्हें भूमी पर बचा लाता है तो उसी समय शिर्क करने लगते हैं। और दूसरी जगह, फरमाया : ﴿ قَدْ أَغْرَيْتَهُمْ مَوْعِدَهُمْ كَالْأُطْلَلِ دُعُوا أَنَّهُ مُحَلِّصٌ لِّمَنْ فَلَمْ يَأْتِهِمْ إِلَيْنَا إِنَّهُمْ كُفَّارٌ ۝ »

“और जब उन पर गौजे सायबानों की तरह छा जाती हैं, तो वह खुलूस के साथ आस्था रख कर अल्लाह ही को पुकारते हैं, फिर वह जब उन्हें खुशी की ओर बचा लाता है, तो कुछ उनमें से अपने बादे पर जमे रहते हैं, और हमारी आयतों का इन्कार मात्र वही करते हैं जो बादे तोड़ने वाले और नाशुके हों।”

तो मका के मुशिरकीन जिन से नवी ख़ुशी ने जिहाद किया, सुख के समय में अल्लाह को पुकारते थे, और उसके साथ दूसरों को भी शरीक करते थे, पर तभी मैं मात्र अल्लाह को पुकारते थे, और अपने सरदारों को भूल जाते थे, लेकिन हमारे ज़माने के मुशिरकीन सुख और दुःख दोनों समय में गैरुल्लाह को पुकारते हैं, और जब वह अधिक तभी मैं होते हैं तो या रसूलल्लाह और या हुसैन इत्यादि के द्वारा दुआएं करते हैं। लेकिन कौन है जो इस वास्तविकता को समझे?

**२** पहले के लोग अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को पुकारते थे जो अल्लाह के मुकर्रबीन में से होते, या तो नवी होते, या बली, या फरिशता, या पत्थर और पेड़ जो अल्लाह की नाफरमानी नहीं करते बल्कि उसकी फर्मावर्दारी ही करते, और हमारे ज़माने के लोग ऐसे लोगों को भी पुकारते हैं जो सबसे बड़े पापी होते।

और जो नेक लोगों को अल्लाह के साथ साझी करने का आस्था रखे, या ऐसी चीजों को साझी करने का आस्था रखे जो नाफरमानी न करती हों, तो उसका शिर्क अवश्य उनके शिर्क से कम दरतों का होगा जो अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को साझी करने का आस्था रखे स्पष्ट रूप से पापी हों।

**३** नवी ख़ुशी के ज़माने के सारे मुशिरकीन का शिर्क मात्र तीहीदे उलूहीयत (इबादत) में था, वे तीहीदे रुबूबीयत में शिर्क नहीं करते थे, बरयिलाफ़ हमारे ज़माने के मुशिरकीन के यह जिस तरह वह काप्नात में तर्कीअत (NATURE) को ही मारने और जिलाने का व्यवस्थापन समझते हैं। और शायद मैं अपनी बात को एक महत्वपूर्ण मस्तके का बच्चा करके जो ऊपर की बातों से आसानी के साथ समझा जासकता है खत्म करूँ, और वह यह है कि इस बात में कोई मतभेद नहीं है कि तीहीद का आस्था दिल में होना जरूरी है, और बन्दा ज़मान से उसे स्वीकार करै और अंगों के द्वारा उसके अनुसार अमल करे। और यदि इनमें से कोई भी एक बीज नहीं जाए तो इन्सान मुसलमान नहीं रह जाता, यदि उसने तीहीद को जान लिया लेकिन उसके अनुसार अमल नहीं किया तो वह फिरअौन और इसीस जैसे कर्म का नुम्बन और काफिर है। और इस बारे में अधिकतर लोग गलती करते हैं, वे सत्य को स्वीकार करते हैं लेकिन कहते हैं कि हम इसके अनुसार अमल करने की शक्ति नहीं रखते, या रखते हैं कि हमारे देश या नगर

में ऐसा करना जायज़ नहीं, और उनकी बुराई से बचने के लिए उनकी मुवाफकत ज़रूरी है। तो केवल बेचारे को पता नहीं कि अधिकतर कुफ्र के अगुवाओं को सत्य का ज्ञान था, लेकिन कोई न कोई उज़्ज़ पैदा करके उसे छोड़ा दियां, जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿أَشَرَّ وَأَبِيَّنَتْ أَلَّهُ ثَمَنَافِلًا فَصَدُّوْعَنْ سَيِّلَهُ إِنْهُمْ كَائِنُوا يَعْمَلُونَ﴾ “उन्होंने अल्लाह की आयतों को बहुत कम दाम पर बेच दिया, और उसके रास्ते से रोका, बहुत बुरा है जो यह कर रहे हैं।”  
और जिसने देखावे के लिए तौहीद के अनुसार अमल किया लेकिन वह उसे समझता नहीं और न ही उस को दिल से मानता है तो वह मुनाफिक है। और वह काफिर से भी बुरा है, इसलिए कि उसके बारे में अल्लाह तआला फरमाता है : ﴿إِنَّ الظَّفَقَيْنَ فِي الدَّرَكِ أَسْفَلُ مِنَ النَّارِ﴾ “मुनाफिक तो अवश्य जहन्नम के सब से नीचे के दर्जे में जाएंगे”

आप उन और जब लोगों की बातों पर ध्यान देंगे तो उस समय यह मस्तक स्पष्ट होजाएगा, आप उन में से कुछ को पाएंगे कि सत्य जानते हुए भी संसार में घाटे, मर्यादा तथा राज्य के कारण जिसके अनुसार अमल नहीं करते जैसे कि कारून, हामान और फिर औन ने किया। और कुछ को आप ऐसा भी पाएंगे कि मात्र दिखावे के लिए अमल करते हैं, अपने अकीदा (आस्था) के बारे में उन्हें कुछ भी जानकारी नहीं।

**जब आप के लिए ज़रूरी है कि आप कुर्दान की दो आयतों को ध्यान देकर समझें :**

﴿لَا تَعْنَذِرُوا فَدَكْرُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ﴾ “पहली आयत : वही है जिसका चर्चा ऊपर हो चुका है : ”  
पहली आयत : वही है जिसका चर्चा ऊपर हो चुका है : ”

“तुम बहाने न बनाओ, अवश्य तुम अपने ईमान के बाद काफिर हो गए।”  
आप ने जब यह जान लिया कि जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल के साथ मिलकर रुमियों से जिहाद किया, उनमें से कुछ एक कल्पा कहने के कारण काफिर करार पाए, जिसे उन्होंने हँसी मज़ाक में कहा था, तो इस के द्वारा आप पर यह बात स्पष्ट हो गई कि जो व्यक्ति मान मर्यादा और धन सम्पत्ति में कमी होने के डर से या किसी का लिहाज़ करते हुए कुफ्र का शब्द मुख से निकालता है, या उसके अनुसार कर्म करता है, तो उसका पाप उस व्यक्ति के पाप से बढ़कर है जो कोई शब्द हँसी मज़ाक में बोल देता, क्योंकि ऐसा व्यक्ति आम तौर से दिल में उन शब्दों पर आस्था नहीं रखता है जिसे वह लोगों को हँसाने के लिए कहता है। रहा वह व्यक्ति जो किसी डर या किसी चीज़ की लालच में कुफ्र के शब्द मुंह से निकालता है तो गोया कि उसने शैतान के बायदे : ﴿الشَّيْطَنُ بَعْدَكُمْ النَّفَرُ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ﴾ “शैतान तो गोया कि उसने शैतान के बायदे : ”

“तुम्हें गरीबी से डराता है, और बेहयाई का आदेश देता है।”  
“और यह को सत्य कर दिखाया। और उसके धमकावे : ”

शैतान है जो अपने दोस्तों से डराता है।”  
“और अल्लाह तुम से से डरा। और रहमान के बायदे : ”

अपनी माफी और मेहबूनी का बायदा करता है।”  
“तो तुम की तस्दीक नहीं की। और जब्बार की सज़ा : ”

उनसे न डरो मुझ से डरो यदि तुम मोमिन हो।”  
“तो आप स्वयं निर्णय करें ऐसा व्यक्ति रहमान के औलिया में से होने का हक्कदार से नहीं डरा। तो या शैतान के औलिया में से होने का?

“منْ سَكَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أَشَرَّهُ وَقَلْبُهُ مُظْبَنٌ بِالْأَيْمَنِ وَلِكِنْ دُوْسَرِي آयَةٍ يَهُدِي : ”  
“منْ شَرَّ بِالْكُفُرِ صَدَرَ فَعَلِيهِ عَصَبَتْ مِنْ أَلَّهِ وَلَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ”

“जो व्यक्ति अपने ईमान के बाद अल्लाह से कुफ्र करे, सिवाय उसके जिसे मज्�बूर किया जाए और उसका दिल ईमान से मुत्मइन (संतुष्ट) हो, मगर जो लोग दिल से कुफ्र करें तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उन्हीं के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।”

अल्लाह तआला ने उन्हें लाचार नहीं जाना, सिवाय उन लोगों के जिन्हें विवश कर दिया गया हो, और उनका दिल ईमान से संतुष्ट हो, रहे उनके अतिरिक्त लोग तो वे अपने ईमान के बाद काफ़िर होगए, चाहे उन्होंने उसे किसी डर या लालच से किया हो या किसी का लिहाज़ रखते हुए, या अपने देश, बाल बच्चे, खान्दान, या धन से मोह के कारण किया हो, या हँसी मज़ाक में किया हो, या कोई और उद्देश्य रहा हो, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे विवश कर दिया गया हो, लेकिन उसका दिल संतुष्ट हो इसलिए कि दिल के अकीदा पर किसी को विवश नहीं किया जासकता है। और इन आयत में:

﴿إِنَّهُمْ أَسْتَحْبُّ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْكُفَّارَ﴾

“यह इसलिए कि उन्होंने दनियावी जीवन से आखिरत से अधिक प्रेम किया, अवश्य अल्लाह तआला काफ़िर लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता”

अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अज़ाब उनके अकीदा, या धर्म से अज्ञानता के कारण नहीं, बल्कि इस कारण होगा कि उन्होंने सांसारिक चीज़ों को धार्मिक चीज़ों पर तर्ज़ीह (प्रधानता) दी।

अल्लाह आप को हिदायत दे, क्या इन सारे प्रमाणों को सुनने के बाद भी वह समय नहीं आये कि आप अपने पापों से तौबा करें, अल्लाह की ओर पलटें, और इन खुराफ़ात को छोड़ दें, क्योंकि जैसा कि आपने सुना मामला अधिक खतरनाक है, और इसका परिणाम बहुत ही भयंकर है।

**अब्दुल्लाह :** मैं अल्लाह की माफ़ी चाहता हूँ, उसकी ओर पलटता हूँ, और यह गवाही दे रहा हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई भी इबादत के लायक नहीं है, और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह के सिवाय मैं जितनी चीज़ों की इबादत करता था उन सभी का इन्कार कर रहा हूँ, और अल्लाह से दुआ कर रहा हूँ कि वह मेरे पिछले पाप को माफ करदे, मेरे साथ नरमी, क्षमा और रहमत का मामला करे, और अपने से मिलने तक मुझे तौहीद और सत्य अकीदा पर सावित रखे। और उससे यह दुआ करता हूँ कि इस नसीहत पर आप के सवाब और पुण्य दे; क्योंकि धर्म नसीहत का नाम है, और आप ने मेरे नाम का जो इन्कार किया उस पर भी आप को सवाब मिले, और अब मैंने अपना नाम अब्दुल्लाह से बदल कर अब्दुर्रहमान रख लिया। और मेरे अन्दर की पोशीदा बुराई पर जो आपने इन्कार किया उस पर भी आप को सवाब दे; क्योंकि यह ऐसा भ्रष्ट अकीदा था कि यदि उस पर मेरी मौत होजाती तो मैं कभी सफल नहीं हो पाता।

लेकिन अन्त में मेरी आप से एक मांग है कि आप मुझे ऐसी बुराईयों से अवगत कर जिनके बारे में लोग गलतियों में पड़े हुए हैं।

**अब्दुल्लाह :** कोई बात नहीं। आप ध्यान से सुनिए।

\* किताब और सुन्नत के जिन प्रमाणों में इख्लाफ़ हुआ है उनमें फिल्ना और तावील के ख़ातिर इख्लाफ़ी चीज़ों की पैरवी से बचो, और वास्तव में उनकी जानकारी तो मात्र अल्लाह तआला ही को है। और उनके बारे में तुम्हारी भूमिका मज्बूत इलम वालों के भूमिका की तरह हो जो इन मुतशाबिह प्रमाणों के बारे में कहते हैं: ﴿كُلُّ مِنْ صِدْرِ رَبِّكُمْ هُمْ لَهُ عَلَىٰ سَبِيلٍ﴾ “हम ले उन सभी के बारे में यह सब हमारे रब की ओर से है”। और इख्लाफ़ी प्रमाणों के बारे में यह

का फरमान है : “जिनके बारे में शक हो उन्हें छोड़ कर वह कर्म करो जिनके बारे में शक न हो” । (अहमद और तिर्मिजी) और आप ﷺ ने फरमाया: “जो शक वाली चीज़ों से बचा उसने अपने धर्म और इज्ज़त की हिफाज़त की और जो शक वाली चीज़ों में पड़ा वह हराम में पड़ गया” । (बुखारी और पुस्लिम) और आप ﷺ ने यह भी फरमाया: “पाप वह है जो तुम्हारे सीने में खटके, और तू नापसन्द करे कि लोगों को इसकी जानकारी हो” । (मुस्लिम) और आप ﷺ ने यह भी फरमाया: “अपने दिल से पूछो, अपने नफ्स से पूछो - तीन बार आप ﷺ ने कहा- नेकी वह है जिस पर दिल संतुष्ट हो, और पाप वह है जो दिल में लगे और सीने में खटके, अगरचे लोग तम्हें फत्वा दें और फत्वा दें” ।

\* खाहीशत की पैरवी से बचो: क्योंकि अल्लाह तआला ने इससे डराते हुए फरमाया:

﴿أَرَيْتَ مِنْ أَنْهَذَ إِلَّهًا؟﴾ “क्या आप ने उसे भी देखा जो अपनी ख़ाहीशात को अपना देवता बनाये हुए है”।

\* लोगों की राय और बाप-दादा के आस्थाओं पर तअस्सुब करने से बचो; क्योंकि यह इन्सान और हक के बीच रुकावट है। बल्कि हक तो मोमिन का खोया हुआ सामान है, जहाँ भी पा ले वह उसका अधिक हङ्कदार है। अल्लाह तआला का फरमान है : **وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَتَيْتُكُم مَا كُلُّنَا عَلَيْهِ إِبَاهَنَا أَوْ كَاتَبَهُمْ لَأَعْقِلُوهُ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ** “और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह तआला की उत्तरी हुई किताब पर अमल करो तो जवाब देते हैं कि हम तो उस रास्ते का पालन करेंगे जिस पर हम ने अपने बुजुर्गों (बाप-दादा) को पाया अगर हमें उनके बजर्ग बेवकूफ और भटके हुए हों”।

\* काफिरों का रूप अपनाने से बचो, इसलिए कि यह हर मुसीबत की जड़ है, नवी ने फरमाया: “जिसने किसी कौम का रूप अपनाया वह उनमें से है”। (जबू-दाऊद)

\* **गैरुल्लाह पर भरोसा करने से बचो; क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है : دُونْ بِوَلْ عَلٰى** “गैरुल्लाह पर भरोसा करेगा अल्लाह उसके लिए काफी होगा”।

\* “और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करगा अल्लाह उसके लिए काम करना। अल्लाह तआला की ना-फरमानी के लिए किसी भी व्यक्ति की बात न मानो, नबी का स्वाक्षर है।” — नीता फरमानी में किसी मख्लुक की पैरवी जायज़ नहीं।

\* अल्लाह तआला के बारे में बुरा सोचने से बचो; क्योंकि हीसे कुदरी में अल्लाह तआला का स्मरण है : “ऐ जो ने ऐ जो द्वारा आप के पास होता है” । (बुखारी और मुस्लिम)

\* फरमान है : "मैं अपने बन्दों के गुमान के पास हाता हूँ।" (बुखारा और मुसीबत)  
 \* मुसीबत टालने या दूर करने के लिए कड़ा, छल्ला और धागा इत्यादि पहनने से बचो।  
 \* वी - तो जैसे कि उसके से बचो: क्योंकि यह शिक्ष है, जैसा कि नवी

\* बुरी नज़र से बचने के लिए तावीज़ लटकाने से बचो; क्योंकि यह शिक है, जस्ता कि ने फरमाया: "जिसने कोई चीज़ लटकाई वह उसके सिपुर्द कर दिया गया"। (अहमद और तिमाही)  
\* प्रेरणा - अपने दोस्तों के साथ जाने से बचने से बचो; क्योंकि यह शिक है।

\* पेड़, पत्थर, निशान और प्रासादों से तबरुक लेने से बचा; क्योंकि यह शिक्षा है।  
 \* किसी भी चीज़ से बदू-फाली लेने से बचा; क्योंकि यह शिक्षा है। नवीनी ने फरमाया:  
 “बदू-फाली लेने से बचा क्योंकि यह शिक्षा है।” (उपर्युक्त और अब आगे)

\* बद्र-फाली लेना शिर्क है, बद्र-फाली लेना शिर्क है”। (अहमद और अब्दुल गज़िया)

और गांधीजी और ज्योतिशियों का पुष्ट करने से वह अपने लोगों के लिए भलाई या बुराई की बातें करते हैं, इन बातों में उनकी प्रशंसनी दिखती है। व्यक्तिकि अल्लाह तआला के अलावा कोई भी गैब नहीं जानता।

\* बुध करना शिक्ष है; क्योंकि अल्लाह तआला के जरूरी सभी वस्तुएँ उसकी विद्या से प्राप्त होती हैं। बरसात बरसने की निस्वत नक्त्रों की ओर करने से बचो; क्योंकि यह शिक्ष है, बल्कि उसकी निस्वत अल्लाह तआला की ओर करो।

- \* गैरुल्लाह की कसम खाने से बचो, जिसकी कसम खाई जा रही हो वह व्यक्ति चाहे कितना ही महान क्यों न हो; क्योंकि यह शिर्क है। हड्डीस शरीफ में आया है : “जिसने गैरुल्लाह की कसम खाई उसने कुफ्र किया या शिर्क किया”। (अहमद और अबू दाऊद) जैसे कि नबी ﷺ की कसम खाना, या अमानत, या इज़ज़त, या जीवन इत्यादि की कसम खाना।
- \* ज़माने को, हवा को, या सूरज को, या ठंडी को, या गर्मी को गाली देने से बचो; क्योंकि यह वास्तव में अल्लाह तआला को गाली देना है जिसने उन्हें बनाया है।
- \* दुःखी होने पर अगर मगर कहने से बचो; क्योंकि यह शैतान के दर्वाज़े को खोलता है, और अल्लाह की बनाई हूई तक्दीर पर आपत्ति जताने के बराबर भी है, लेकिन यह कहा करो, अल्लाह ने इसे मुकद्दर किया और उसे जो मन्जूर था उसने किया।
- \* कब्रों को मस्जिद बनाने से बचो; क्योंकि उस मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती जिसमें कब्र हो, बुखारी और मुस्लिम में आइशा رضي الله عنها से रिवायत है, वह फ़रमाती हैं : अवश्य अल्लाह के रसूल ﷺ ने जाँकनी की अवस्था में फ़रमाया: “अल्लाह यहूदियों और ईसाइयों पर लानत करे जिन्होंने अपने नबियों की कब्रों को मस्जिद बनाली। आप ﷺ उनके कर्तृत से डरा रहे थे”। आइशा رضي الله عنها फ़रमाती हैं कि यदि इसका डर न होता तो आप ﷺ की कब्र भी उभारी जाती। और आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम से पहले जो लोग थे अपने नबियों और नेक लोगों की कब्रों को मस्जिद बना लेते थे, सो तुम कब्रों को मस्जिदें न बनाना, मैं तुम्हें इस से रोकता हूँ”। (अबू-अवाना)
- \* आप ﷺ से और नेक लोगों से वसीला पकड़ने के बारे में उन रिवायतों की पुष्टि करने से बचो जिनकी निस्बत झूठे लोग नबी ﷺ की ओर करते हैं; क्योंकि यह सारी रिवायतें गढ़ी हुई हैं, इन्हीं में से यह रिवायतें भी हैं : “मेरे जाह-व-जलाल के माध्यम से वसीला परीशानी में पड़ो तो कब्र वालों का सहारा लो”। और यह रिवायत : “जब तुम हर वली की कब्र के पास एक फ़रिश्ता नियुक्त कर देता है जो लोगों की हाजरें पूरी करता देगा”। इनके इलावा भी बहुत सी गढ़ी हुई झूटी रिवायतें हैं।
- \* मीलादुन्नबी ﷺ, इस्रा और मेराज और शबे-बरात इत्यादि के जश्न मनाने से बचो; क्योंकि यह सारी चीज़ें बाद की बनावटी हैं, जिनके करने की रसूलुल्लाह ﷺ से कोई दलील है, और न ही सहाब-ए-किराम ने किया है, जो कि हम से अधिक अल्लाह के रसूल से महब्बत करने वाले थे, और भलाई के कामों के लिए हम से ज्यादा हरीस थे, और यदि इन्हें करना भी भलाई का काम होता तो वे हम से पहले कर गुज़रे होते।

## ला-इलाहा इल्लल्लाह की गवाही

**प्रश्न ४** इस कलिमा के दो रूपन हैं, 1-अस्तीकृती : गैरुल्लाह की इबादत का इनकार करना। 2-स्तोकृती : वास्तविक इबादत को मात्र अल्लाह ﷺ के लिए सावित करना। अल्लाह ﷺ का फर्मान है:

﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنِّي بِرَبِّي مُسَاجِدُونَ إِلَّا أَنِّي فِطْرَةٌ لِّلَّهِ تَعَالَى هُنَّ عَنِ الْجِنَّاتِ مُغَافِلُونَ﴾

और जब इब्राहीम (ص) ने अपने पीता और अपनी कौम से कहा कि मैं इन बातों से अलग हूं जिनकी तुम इबादत करते हो। सिवाय उस ताकत के जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत भी देगा। चुनान्वि मात्र इबादत करना काफ़ी नहीं है बल्कि ज़खरी है कि इबादत अल्लाह ﷺ के लिए ख़ालिस हो, और तौहीद उस समय तक लाभ-दायक नहीं हो सकता जब तक कि मात्र एक अल्लाह ﷺ की इबादत करने के साथ साथ शिर्क और मुश्किलों से अलग न हुआ जाए। और असर में आता है कि ला-इलाहा इल्लल्लाह जन्नत की कुंजी है, लेकिन क्या हर ला-इलाहा इल्लल्लाह कहने वाला व्यक्ति इसका ह़क्कदार है कि उस के लिए जन्नत खोल दिया जाए? वह बिन मुनब्बिह से पूछा गया : क्या ला-इलाहा इल्लल्लाह जन्नत की कुंजी नहीं है? तो उन्होंने जब दिया क्यों नहीं, लेकिन हर चाबी के दांत होते हैं, यदि दांत वाली चाबी लेकर आओगे तो तुम्हारे लिए ताला खुलेगा, नहीं तो नहीं।

और नबी ﷺ ने अन्निन्त हड्डीसों में इस चाबी के दांत वयान किए हैं; आप ﷺ ने करमाया: “जिस व्यक्ति ने इर्ख्लास के साथ ला-इलाहा इल्लल्लाह कहा”, “दिल में विश्वास रखते हुए कहा”, “अपने दिल से ह़क़ जानते हुए कहा”, तो इन हड्डीसों में और इसी तरह की दूसरी हड्डीसों में जन्नत में जाने के लिए यह शर्त लगाई गई कि ला-इलाहा इल्लल्लाह कहने वाला व्यक्ति उसका अर्थ जानता हो, मरने तक उस पर सावित रहा हो, और उसके अनुसार अपना जीवन बिताया हो।

दीलों की रौशनी में उलमा ने ला-इलाहा इल्लल्लाह के कुछ शर्त वयान किए हैं, हर व्यक्ति में जिनका पाया जाना और उनके विरोधी चीज़ों से दूर रहना ज़खरी है, ताकि यह कल्मा जन्नत की कुंजी बने, अपने कहने वाले को लाभ दे, और यह शर्त ही इसके दांत हैं, जिनकी संख्या सात है:

**१ इल्म (ज्ञान)**: प्रत्येक शब्द का एक अलग अर्थ होता है, इसी लिए ला-इलाहा इल्लल्लाह का अर्थ इस तौर पर जानना ज़खरी है कि इन्सान से जहालत दूर होजाए, यह कल्मा गैरुल्लाह की इबादत को नकारता है, और इबादत को मात्र अल्लाह तआला के लिए सावित करता है, इसका अर्थ है : अल्लाह के सिवाय कोई भी सत्य मावृद (उपास्य) नहीं, अल्लाह तआला का फरमान है: ﴿إِلَّا مَنْ شَهَدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ “सिफारिश के लायक वे हैं) जो सच बात को स्वीकार करें और उन्हें जानकारी भी हो”। और नबी ﷺ ने फरमाया: “जिस की मौत इस ह़ालत में हुई कि वह जानता हो कि अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं तो वह जन्नत में दाखिल होगया”। (मुस्लिम)

**२ यकीन (विश्वास)**: आप को उसके अर्थ पर यकीन हो; क्योंकि शक, गुमान, दुविधा और शक की इसमें कोई गुन्जाइश नहीं है, बल्कि पुखता यकीन ज़खरी है। अल्लाह तआला ने मोमिनों की सिफ़त वयान करते हुए फरमाया: ﴿إِنَّ الْمُؤْمِنُونَ أُولَئِنَّ مَآمِنُوا بِمَا سُوْلِهُوا. ثُمَّ لَمْ يَرْتَأُبُوا﴾ “ईमान वाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लायें, फिर शक न करें, और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते रहें, (अपने ईमान के दावे में) यही सच्चे हैं”।

चुनांचि केवल जुबान से इकार करना काफी नहीं है, बल्कि दिल से विश्वास करना ज़रूरी है, यदि दिल में यकीन न हो तो यही निफाक है, नबी करीम ﷺ ने फरमाया: "कलमए शहादतैन के साथ जो व्यक्ति भी अल्लाह से मुलाकात करेगा, और उसे इस में शक न हो तो वह जन्मत में दाखिल होगा"।

**३ कबूल :** जब आप को इसके माने की जानकारी हो गई और उस पर यकीन भी हो गया,

तो ज़रूरी है कि आप पर उसका छाप भी दिखाई दे, और वह इस तरह से कि इसके मुतालबे दिल और जुबान से आप को कबूल हों, तो जिस ने तौहीद की दावत का इन्कार किया और उसे खीकार नहीं किया तो वह काफिर हो गया, चाहे उसका यह इन्कार घमण्ड, दुश्मनी और हसद के कारण ही क्यों न हो, और अल्लाह तआला ने उन काफिरों के बारे में जिन्होंने घमण्ड करते हुए इसका इन्कार कर दिया फरमाया: ﴿إِنَّا فِي الْمُلْكٍ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِنَّكُمْ لَا تَشْكُرُونَ﴾ "ये वे लोग हैं जिन्होंने घमण्ड करते हैं"।

**४ इन्कियाद :** तौहीद के लिए पूरी ताबेदारी हो, और यही वास्तव में हकीकी मज़बूती और ईमान की अमली नुमाइश है, जो कि अल्लाह तआला की शरीअत के अनुसार अमल करने और उसकी रोकी हुई चीजों से दूर रहने से पूरी होती है, जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया: ﴿وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ خَيْرٌ فَقَدْ أَسْتَكْبَرَ بِالْعُرْفَةِ الْوُنْقَى وَلِلَّهِ عِنْقَبَةُ الْأَمْرٍ﴾ "और जो व्यक्ति अपने आप को अल्लाह के ताबे करदे और वह ही परहेज़गार, तो यकीनन उसने मज़बूत कड़ा धाम लिया, सभी कर्म का नतीजा अल्लाह की ओर है"। और यही कामिल ताबेदारी है।

**५ सच्चाई :** ला-इलाहा इल्लाह कहने वाला व्यक्ति अपनी बात में सच्चा हो, यदि किसी ने मात्र जुबान से कहा हो और उसका दिल इन्कारी हो तो वह मुनाफिक है, और इसकी दलील मुनाफिकीन की मज़म्मत में अल्लाह तआला का यह फरमान है: ﴿بَقُولُوكَنْ وَالسَّيْمَهَ مَالِكَسْ قُلْمَعَنْ﴾ "यह लोग अपनी जुबानों से वह बाते कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है"।

**६ महब्बत :** मोमिन व्यक्ति इस कलमा से महब्बत करे, इसके मांग अनुसार अमल करना पसंद करे, और जो लोग इसके अनुसार अमल करते हैं उनसे महब्बत करे, बन्दे का अपने रब से महब्बत करने की निशानी यह है कि जो चीज़ें अल्लाह तआला को पसन्द हैं उन्हें का महत्व दे चाहे वे उसकी चाहत के खिलाफ ही क्यों न हों, और जो अल्लाह और उसके रसूल से दोस्ती रखते हैं उन से दोस्ती करे, और जो अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी करते हैं उन से दुश्मनी करे, और अल्लाह के रसूल की पैरवी करे, उनके नक्शे कदम को कबूल करे, और उनका मार्ग-दर्शन स्वीकार करे।

**७ इख्लास :** इस कलमा के इकार द्वारा उसकी चाहत मात्र अल्लाह तआला की खुशनूदी हो, अल्लाह तआला का फरमान है: ﴿أَلَا لَعَنَنَا الَّذِينَ لَمْ يُخَلِّصُنَا مِنَ الْكُفَّارِ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا الْمُنْكَرُ﴾ "उन्हें इसके शुद्ध कर रखें इब्राहीम हनीफ के दीन पर।" और नबी ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह तआला ने अल्लाह की खुशनूदी चाहता हो"।

## مُحَمَّدُ رَسُولُ اللَّهِ الْكَرِيمِ

कब्र में मैयत का इम्तिहान होगा और उससे तीन प्रश्न किए जाएंगे, यदि उसने उनका उत्तर दे दिया तो सफल होगया नहीं तो हलाक होगया, और उनमें से एक प्रश्न यह होगा ۱۰۷ منْ نَبِيٍّكَ تَرَا نَبِيٌّ كौन है? इस प्रश्न का उत्तर वही व्यक्ति दे सकेगा जिसे अल्लाह ने संसार में इसके शराएत पूरी करने की तौफीक दी होगी, मरते समय दीन पर साबित रखवा होगा, और कब्र में इल्हाम किया होगा, तो आखिरत में भी यह उसके लिए लाभदायक होगा, जिस दिन माल और संतान लाभ न देंगे। यह हैं इसकी चार शर्तें :

**१ जिन चीजों का आपने आदेश दिया है, उनमें आपकी इताअत करना :** क्योंकि अल्लाह तआला ने हमें आपकी फर्माबदारी का हुक्म दिया है, फरमाया: ﴿مَنْ يُطِعْ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾ “उस रसूल की जो फर्माबदारी करे उसी ने अल्लाह की फर्माबदारी की”। और फरमाया: ﴿فَلْ إِنْ كُنْتُمْ تُجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّعُونِي يُعِذِّبُكُمْ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ﴾ “कह दीजिए यदि तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी ताबेदारी करो स्वयं अल्लाह तुम से महब्बत करेगा”। और जन्नत में दाखिला आप ﷺ की इताअत पर निर्भर है, आप ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत का हर कोई जन्नत में जाएगा सिवाय उसके जिसने जाने से इन्कार कर दिया, लोगों ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत में जाने से कौन इन्कार करेगा? तो आप ﷺ ने फरमाया: जिसने मेरी इताअत की वह जन्नत में जाएगा, और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने (जन्नत में जाने से) इन्कार किया”। (बुखारी) और जिसे आप ﷺ से महब्बत है, वह ज़रूर आप की फर्माबदारी करेगा, इसलिए कि इताअत महब्बत का फल है, और यदि कोई आप ﷺ की ताबेदारी के बिना आप से महब्बत का दावा करता है तो वह अपने दावे में झूटा है।

**२ जिन चीजों की आपने खबर दी है उनमें आप की तस्वीक करना :** जिस व्यक्ति ने अपनी खाहिश या हवस की बुन्याद पर आप ﷺ से साबित चीजों को झुटलाया तो उसने अल्लाह और उसके रसूल को झुटलाया, क्योंकि आप ﷺ, ग़लती और झूट से मासूम हैं, अल्लाह तआला का फरमान है: ﴿وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْمَوْئِلِ﴾ “और न वह अपनी खाहिश से कोई बात कहते हैं”।

**३ जिन चीजों से आप ने रोका है उन से दूर रहना :** कबीर: गुनाह शिर्क और दूसरे बड़े और हलाक करने वाले गुनाहों से बचते हुए छोटे गुनाहों और मकरूह चीजों से बचना, चुनांचि अपने नबी ﷺ से मुस्लिम व्यक्ति की महब्बत जिस कदर अधिक होगी उसी के बराबर उसका ईमान भी अधिक होगा, और जब उसका ईमान ज्यादा होगा तो अल्लाह तआला नेकियों को उसके दिल में महबूब कर देगा, और कुफ, फिस्क और गुनाह के कामों से घृणा पैदा कर देगा।

**४ और अल्लाह की इबादत उसी तरह हो जिस तरह खुद अल्लाह तआला ने अपने नबी की जुबानी मशरू'अ (शरीयत सम्मत) की है :** क्योंकि इबादत में अस्ल प्रतिबंध है, इसलिए अल्लाह के रसूल से जो चीजें साबित हैं उनके बजाए अल्लाह की इबादत करना जायज़ नहीं है, आप ﷺ ने फरमाया: “जिस व्यक्ति ने कोई ऐसा काम किया जिसका हमने आदेश नहीं दिया है तो वह मर्दूद है”।

**फ़ाइदा :** यह जान लो कि नबी ﷺ की महब्बत वाजिब है, और मात्र महब्बत काफी नहीं है, बल्कि ज़रूरी है कि वह तुम्हारी सारी चीजों से अधिक महबूब हों यहाँ तक कि तुम्हारी जान से भी; क्योंकि जो इन्सान किसी चीज़ से महब्बत करता है तो वह उसे और उसकी मुवाफकत को तर्जीह देता है, और आप की महब्बत में सच्चा वह व्यक्ति है जिस से महब्बत

की निशानी ज़ाहिर हो, वह आपका तावेदार हो, कर्म में आपकी सुन्नत का पावन्द हो, आपके आज्ञा का पालन करता हो, प्रतिबन्धित चीज़ों से बचता हो, कठिनाई और आसानी में खूब्झी और ग़मी में आप के स्वभावों को अपनाता हो, इसलिए कि इताअत और तावेदारी महब्बत का फल है, और इसके बिना महब्बत सच्ची नहीं हो सकती।

**नबी ﷺ की महब्बत की बहुत दी निशानियाँ हैं**, उन निशानियों में से एक यह है कि अधिक से अधिक आपको याद किया जाए, आप पर दुखद भेजा जाए, क्योंकि हबीब अपने मह्वूब का अधिक चर्चा किया करता है। एक निशानी यह भी है कि आप से भेट करने का शौक हो, क्योंकि हबीब को अपने मह्वूब से मुलाकात की चाहत होती है। एक निशानी यह भी है कि जब आप का चर्चा हो तो आप की बड़ाई (ताज़ीम) और इज़्ज़त की जाए। इस्हाक़ رض कहते हैं : (आप صلی اللہ علیہ وسَلَّمَ के बाद सहाबए कराम رض जब भी आप का चर्चा करते तो उन पर रिक्कत तारी होजाती, उनके रैंगटे खड़े होजाते, और वे रोने लगते)। एक निशानी यह भी है कि आप से कीना रखने वालों से बुग़ज़ किया जाए, आप के दुश्मनों से दुश्मनी की जाए, और बिद्अतियों और मुनाफ़िकों से जो आप की सुन्नत की मुख़ालफ़त करते हैं उन से दूर रहा जाए। एक निशानी यह भी है कि आप صلی اللہ علیہ وسَلَّمَ ने जिन लोगों से महब्बत की है उन से महब्बत की जाए वह चाहे अह्ले बैत हों, या आप की नेक पल्नियाँ हों, या मुहाजिर और अन्सार सहाबए कराम हों, और जो इन से दुश्मनी करे उस से दुश्मनी की जाए, इन्हें गाली देने वालों से बुग़ज़ रखवा जाए। और एक निशानी यह भी है कि आप के सुन्दर अख्लाक की पैरवी की जाए, क्योंकि आप सारे लोगों से सुन्दर स्वभाव के मालिक थे, यहाँ तक कि आइशा رض ने कहा कि : आप कुर्�आन के अमली नमूना थे। वही काम करते थे जिसका कुर्�आन ने आप को आदेश दिया था।

**नबी ﷺ के गुण :** आप सब से बहादुर थे, खास कर लड़ाई के मैदान में, आप करम नवाज़ थे, सब से बड़े दानी थे, खासकर रमज़ान के महीने में, लोगों के सब से बड़े खैर-ख़ाह थे, रहम दिल थे, अपने लिए किसी से बदला नहीं लेते थे, लेकिन अल्लाह तआला के बारे में थोड़ी सी भी मुरीवत नहीं बरतते (सब से ज्यादा सख़ल) थे, सन्जीदा मिज़ाज बा-वकार थे, कन्या से भी अधिक शरम करने वाले थे, अपने घर वालों के लिए सब से बेहतर थे, लोगों के लिए दयालु और मेहर्बान थे, --- और भी आप के बहुत से गुण थे। ऐ अल्लाह तू हमारे नबी, उनके आल, उनकी पल्नियों, उनके साथियों और कियामत के दिन तक उनकी पैरवी करने वालों पर रहमतें और सलामतियाँ नाज़िल कर।

## त्रहारत

भेदभाव इस्लाम का दूसरा रुक्न है, जो त्रहारत के बिना स्वीकार नहीं होती, और त्रहारत पानी व मिठी से हासिल होती है।

**त्रहारत की किरणें :** ① ताहिर (पवित्र) : जो कि स्वयं पाक हो और पाक करने वाला हो, यह पवित्र पानी नापाकी को दूर करता है, और गन्दगी को मिटा देता है।

② नजिस (अपवित्र) : थोड़ा पानी जिसमें नापाकी गिर गई हो, और यदि अधिक मात्रा में हो तो नापाकी पड़ने के कारण उसके औसाफ़ में से मज़ा या रंग या बूँद बदल गई हो।

**बोट :** पानी यदि अधिक मात्रा में हो तो नापाकी पड़ने से जब तक उसके तीनों औसाफ़ (मज़ा, रंग और बूँद) में से कोई वस्फ़ न बदल जाए नापाक नहीं होता है, लेकिन यदि पानी बोट मात्रा में हो तो मात्र नापाकी पड़ने से ही नापाक होजाता है, और पानी को अधिक उस समय माना जाएगा जब वह लगभग 210 लीटर से ज्यादा हो।

**सून्न :** सोना और चाँदी के बर्तन के सिवाय हर पवित्र बर्तन को प्रयोग में लाना जायज़ है, और यदि सोना और चाँदी के बर्तन में पानी रख कर त्रहारत हासिल की गई तो त्रहारत तो होजाएगी लेकिन साथ में उन्हें प्रयोग करने का गुनाह भी होगा, और काफ़िरों के पाक कपड़ों और बर्तनों को प्रयोग में लाना मुबाह (जायज़) है।

**मुर्द का चमड़ा :** बिल्कुल अपवित्र है, और मुर्दे दो तरह के होते हैं : ① जिनका खाना हराम हो। ② जिन्हें खाया जाता हो लेकिन वह ज़बह न किए गए हों, तो जिन जानवरों को खाया जाता हो और उन्हें ज़बह न किया गया हो उनके चमड़ों को दबाग़त देने के बाद उन्हें गीती चीज़ों के बजाए सूखी चीज़ों में प्रयोग करना जायज़ है।

**इस्तिन्ज़ा :** पेशाब और पाखाने के रास्ते से निकलने वाली गन्दगी को दूर करना, यदि पानी से दूर किया जाए तो इसे इस्तिन्ज़ा कहते हैं, और यदि पत्थर और टिशु-पेपर इत्यादि से दूर किया जाए तो इसे इस्तिज्मार कहते हैं, अल्बत्ता इस्तिज्मार के लिए शर्त यह है कि वह पाक हो, मुबाह हो, सफाई करने वाला हो, और उसे खाया न जाता हो, और तीन या उस से अधिक पत्थरों द्वारा हो। इस्तिन्ज़ा या इस्तिज्मार हर निकलने वाली गन्दगी को दूर करने के लिए ज़रूरी है।

**कज़ाए हाज़त करने वाले व्यक्ति** पर समय से अधिक अपवित्रता की स्थिथी में रहना हराम है, इसी तरह पानी के घाट, आम रास्ते, साए के नीचे, फ़्ल्डार पेड़ के नीचे और ख़ाली जगहों में और फ़ज़ा में काबा की ओर चेहरा करके हाज़त पूरी करना हराम है।

**और यह मकरुह है** कि शौचालय में ऐसी चीज़ लेकर प्रवेश करे जिसमें अल्लाह का ज़िक्र हो, और इसी तरह हाज़त पूरी करते समय बात करना, सूराख इत्यादि में पेशाब करना, दाहने वाय से शरम-गाह छूना, और शौचालय के अन्दर काबा की ओर चेहरा करके हाज़त पूरी करना मकरुह है। और जरूरत के समय यह चीजें जायज़ हैं।

**और कज़ाए हाज़त करने वाले व्यक्ति के लिए** यह मुस्तहब है कि पानी या पत्थर ताक (अद्वितीय) ले, और यह भी मुस्तहब है कि पहले सफाई करे फिर पानी इस्तेमाल करे।

**मिस्त्याक :** पीलू इत्यादि की नरम लकड़ी से मिस्त्याक करना मुस्तहब है, जो कि नमाज़ से पहले, कुरुआन पढ़ने और वुजू करते समय कुल्ली से पहले, सो कर उठने के बाद, मस्जिद या घर में प्रवेश करते समय, और मुंह का मज़ा बदल जाने के समय सुन्नते मुअक्कदा है।

उपरात, सलात, ज़कात, सियाम और हज़ज़ सम्बन्धित जो अहकाम ज़िक्र किए गए हैं यह इन्तिहाद की बुन्याद पर हैं, जिन्हें जमआ करने वाले ने अपने दृष्टि की रैख़ी में राजिह समझा है, इस से इख्लाफ़ भी किया जा सकता है, बहर हाल मुस्लिम व्यक्ति के लिए धर्म सम्बन्धित मसाइल में बहर उल्लंघन दीन जैसे अबू हनीफ़, मालिक, शाफ़ी और अहमद की इतिहास करनी चाहिए।

मिस्वाक करने और तहारत के समय दाएं और से शुरू करना मुस्तहब है, और यह भी मुस्तहब है कि गन्दगी को दूर करने के लिए बाएं हाथ का प्रयोग किया जाए।

**वुजू :** वुजू के अकान : ① चेहरे को धुलना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना इस में शामिल है, ② दोनों हाथों को उँगलियों के किनारे से लेकर दोनों केहनियों तक धुलना। ③ दोनों कानों समेत पूरे सर का मसह करना। ④ दोनों पैरों को टख्नों समेत धुलना। ⑤ तर्तीब के साथ वुजू करना। ⑥ मुवालात अर्थात लगातार वुजू करना, इस तरह कि एक अंग को धोने के बाद दूसरे अंग को धोने में इतनी देर न की जाए कि पहला अंग सुख जाए। वुजू के वाजिबात : वुजू से पहले विस्मिल्लाह कहना, रात की नींद से सोकर उठने वालों के लिए पानी में हाथ डालने से पहले तीन बार उसे धो लेना।

**वुजू की मुन्नतें :** मिस्वाक करना। शुरू में दोनों हथेलियों को धुलना, चेहरा धुलने से पहले कुल्ली करना और नाक में पानी खींचना, जो व्यक्ति रोज़े से न हो उसके लिए कुल्ली करते और नाक में पानी खींचते समय मुबालगा करना, घनी दाढ़ीयों का खिलाल करना, उँगलियों का खिलाल करना, दाईं ओर से शुरू करना, अंगों को दुसरी और तीसरी बार धुलना, बाएं हाथ से नाक में पानी खींचना और बाएं हाथ से झाड़ना, अंगों को रगड़ना, वुजू पूरा करना, और मुन्नत से जो दुआ सावित है उसे पढ़ना।

**वुजू के अन्दर मकरुह चीजें :** ठंडे या गरम पानी से वुजू करना, एक अंग को तीन बार से अधिक धोना, अंगों से पानी छिड़कना, आँख का अन्दरूनी हिस्सा धुलना, अल्वत्ता वुजू के बाद तीलिया इस्तेमाल करना जायज़ है।

**नोट :** कुल्ली करने में पानी को मुँह के अन्दर धुमाना ज़खरी है। और नाक में पानी डालते समय पानी को सांस के द्वारा खींचना ज़खरी है, मात्र हाथ से डालना काफ़ी नहीं है, इसी तरह झाड़ते समय सांस के द्वारा झाड़ना ज़खरी है।

**वुजू का तरीक़ा :** वजू का तरीक़ा यह है कि : दिल से नियत करे, फिर "विस्मिल्लाह" कहे, और अपने दोनों हाथों को कलाई तक तीन बार धोए, फिर तीन बार कुल्ली करे, और एक दुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए, फिर पूरे चेहरे को (सर के बाल उगने की जगह से लेकर दोनों दाढ़ों और दुड़ी के निचले हिस्से तक लम्बाई में, और एक कान की जड़ से लेकर दूसरे कान की जड़ तक चौड़ाई में) तीन बार धोए, और दाढ़ी घनी हो तो उसका खिलाल करे, और यदि हल्की हो तो धोना ज़खरी है, फिर दोनों हाथों को दोनों केहनियों तक तीन बार धोए, फिर सर का दोनों कानों समेत इस तरह मसह करे कि दोनों हाथों को सर के अगले हिस्से से गुज़ारते हुए गुदी तक लेजाए, फिर उन्हें सर के अगले हिस्से तक वापस ले आए, शहादत की दोनों उँगलियों को कान में डाल ले और अंगूठे से जाहिरी हिस्से का मसह करे, फिर दोनों पैरों को टख्नों समेत तीन बार धोए। फिर दुआ पढ़े।

**नोट :** दाढ़ी यदि हल्की हो तो उस के नीचे का चमड़ा धुलना ज़खरी है, और यदि घनी हो तो मात्र ज़ाहिरी हिस्से को धोले।

**मोज़ौं पर मसह करना :** मोज़े चाहे चमड़े के हों या धागा इत्यादि के, यदि वे ऊन के हैं तो उन्हें जौरद कहा जाता है, और मात्र छोटी नापाकी से तहारत के लिए ही इन पर मसह करना दुरुस्त है। जिस के लिए कुछ शर्तें हैं : ① मुकम्मल तहारत के बाद मोज़े पहने हों। ② पानी से तहारत हासिल की हो। ③ मोज़ा टख्ने के ऊपर तक हो। ④ दोनों मोज़े मुवाह (जायज़) हों। ⑤ और वह पाक चीज़ से बनाए गए हों।

**इमामा (पण्डि)** : कुछ शर्तों के साथ इमामा पर मसह करना जायज़ है : ① इमामा बांधने वाला व्यक्ति नर हो। ② आम तौर पर सर का जितना हिस्सा ढका जाता है उसे ढके हुए हो। ③ मसह छोटी नापाकी से तहारत के लिए कर रहा हो। ④ पानी से तहारत हासिल किया हो।

**दुपट्टा** : कुछ शर्तों के साथ दुपट्टे पर मसह करना जायज़ है : ① दुपट्टा औरत के सर पर हो। ② हल्क के नीचे से उसे धुमाया गया हो। ③ मसह छोटी नापाकी से तहारत के लिए हो। ④ पानी से तहारत हासिल की हो। ⑤ आम तौर पर सर का जितना हिस्सा ढका जाता है उसे ढके हुए हो।

**मसह की मुद्दत (अवधि)** : मुकीम के लिए एक दिन और एक रात, और मुसाफिर (यात्री) के लिए यदि उसकी यात्रा में नमाज़ कस्त करना जायज़ हो (अर्थात् 85 किमी का सफर हो) तो तीन दिन और तीन रात।

**मसह की शुरूआत** : पहनने के बाद पहली नापाकी के समय से यह मुद्दत शुरू होगी। मुकीम के लिए अगले 24 घंटे तक के लिए, और मुसाफिर के लिए 72 घंटे तक के लिए।

**फाइदा** : जिसने यात्रा के दौरान मसह किया फिर मुकीम हो गया, या इकामत (अवस्थान) के दौरान मसह किया फिर मुसाफिर होगया, या उसे मसह की शुरूआत के बारे में शक होगया तो वह मुकीम की तरह मसह करेगा।

**प्लास्टर** : हड्डियों के उपचार के लिए जो प्लास्टर बांधे जाते हैं उन पर मसह करने की कुछ शर्तें हैं : ① प्लास्टर की उसे ज़खरत हो। ② ज़खरत से अधिक जगह पर प्लास्टर न लगा हो। ③ मसह करने और बाकी अंगों को धुलने में मुवालात हो। प्लास्टर या पट्टी ज़खरत से अधिक हिस्से पर लगी है तो उसे हटा देना ज़रूरी है, लेकिन यदि नुकसान का डर हो तो मसह करना काफी होगा।

**मोज़ों पर मसह करने की मिक्दार** : पैर की ऊँगलियों से लेकर पिंडली तक मसह किया जाएगा। सारी ऊँगलियाँ खुली हों, और दाएं हाथ की ऊँगलियों से दाएं पैर का और बाएं हाथ की ऊँगलियों से बाएं पैर का मसह किया जाएगा।

**फाइदे** : अफज़ल यह है कि दोनों पैरों का मसह एक साथ किया जाए। मोज़े के नीचे या पीछे मसह करना सुन्नत के खिलाफ़ है, और मात्र उसी (निचले या पिछले हिस्से) पर मसह करना काफी नहीं है। मसह करने के बजाए पैरों को धुलना और एक बार से अधिक मसह करना मकूह है। इमामा और दुपट्टा के अधिक हिस्से पर मसह करना वाजिब है।

**पुजू तोड़ने वाली चीज़ें** : ① पेशाब और पाखाने के रास्ते किसी चीज़ का निकलना चाहे वह पाक हो जैसे हवा और मनी या नापाक हो जैसे पेशाब और मज़ी। ② नींद और बेहोशी के कारण अकल का न होना, थोड़ी सी ऊँघ के अतिरिक्त जो बैठे बैठे अथवा खड़े खड़े आजाए, क्योंकि इस से बुजू नहीं टूटता। ③ पेशाब और पाखाने का अपने रास्ते के इलावः से निकलना। ④ पेशाब और पाखाने के सिवाय शरीर से किसी दूसरी नापाकी का अधिक पात्रा में निकलना, जैसे अधिक मात्रा में खून निकलना। ⑤ ऊँट का गोश्त खाना। ⑥ बिना कपड़े वाग़ेऱ के हाथ से शरमगाह (इन्द्रिय) छूना। ⑦ मर्द और औरत का शहवत के साथ बिना कपड़े के एक दूसरे को छूना। ⑧ इस्लाम से फिर जाना। और जिसे पाक होने का विश्वास हो और नापाकी के बारे में शक हो, अथवा नापाकी के बारे में विश्वास हो और नापाकी के बारे में शक हो तो वह विश्वास के अनुसार अमल करे, यही चीज़ बेहतर है।

**पुरुषों जग्ज़त** : 6 चीजों के कारण गुस्सा वाजिब होता है : ① सोने या जगने के अवस्था में मनी का निकलना पर पर जगने के अवस्था में लज्ज़त के साथ निकलना शर्त है। ② पुरुष

के लिंग का हशफ़ा (खतने में कटा हुआ हिस्सा) स्त्री के इंद्रिय में घुसना, चाहे मनी निकले या न निकले, ③ काफिर का इस्लाम लाना। ④ हैज़ (माहवारी) के खून ⑤ और निफास (बच्चा जनने के बाद आने वाला खून) के खून से पाक होना। ⑥ मुस्लिम की मौत।

**गुल्ल के फटीज़ :** नहाने की नीयत से पूरे बदन पर पानी बहाना और मुंह और नाक में पानी डालना काफी है। और 9 चीजों के द्वारा गुस्त कामिल होता है : ① जनाबत से स्नान की नीयत करे। ② बिस्मिल्लाह कहे। ③ अपने दोनों हाथों को बर्तन में डालने से पहले तीन बार धोए। ④ संभोग के बाद की शरमगाह पर लगी गंदगी को धोए। ⑤ वुजू करे। ⑥ अपने सर पर तीन लप पानी डाले, और उन से बालों की जड़ों को भिगोए और बालों का खिलाल करे। ⑦ और पूरे शरीर पर पानी बहाए। ⑧ अपने दोनों हाथों से पूरे शरीर को मले। ⑨ और दाहिनी तरफ से शुरू करे।

**और किसी भी व्यक्ति को जब छोटी नापाकी होजाए तो उस के लिए तीन चीजें हराम होजाती हैं :** ① किसी आड़ के बिना मुसहफ को छुना। ② वुजू से रोकने वाले किसी उज्ज के बिना फर्ज या नफ़ल नमाज़ पढ़ना। ③ काबा का तवाफ़ करना।

**और यदि बड़ी नापाकी हो तो उपर्युक्त चीजों के साथ नीचे दर्ज की हूई चीजें भी हराम हो जाती हैं :** ④ कुर्अन पढ़ना। ⑤ और वुजू किए बिना मस्जिद में रुकना।  
और वुजू किए बिना नापाकी के अवस्था में सोना मकूह है। और इसी तरह गुस्त करने में अधिक पानी बहाना भी मकूह है।

**तयम्मुम :** **तयम्मुम की शर्तें :** ① पानी का न मिलना। ② तयम्मुम मुबाह और पाक मिट्टी द्वारा हो जिसके गर्द हों, और जो जला हुआ न हो।

**तयम्मुम के अर्कान :** पुरे चेहरे का मसह करना, और दोनों कलाईयों तक दोनों हाथों का मसह करना, सिलसिलावार करना और बिना देरी किए करना।

**तयम्मुम तोड़ देने वाली चीज़ें :** ① हर वह चीज़ जो कि वुजू को तोड़ने वाली हो। ② यदि तयम्मुम पानी न मिलने के कारण किया हो तो पानी का मिल जाना। ③ तयम्मुम को मुबाह करने वाली चीज़ का ख़त्म होजाना। जैसे रोग के कारण तयम्मुम करने वाले का निरोग होजाना।  
**तयम्मुम की सुन्नतें :** ① बड़ी नापाकी से तयम्मुम करते समय तर्तीब और मुवालात कायम रखना। ② अन्तिम समय तक के लिए देरी करना। ③ तयम्मुम के बाद वुजू की दुआएं पढ़ना।

**तयम्मुम में मकूह चीज़ :** एक बार से अधिक मिट्टी पर मारना।  
**तयम्मुम करने का तरीका :** नीयत करे फिर बिस्मिल्लाह कहे, और मिट्टी पर अपने दोनों हाथों से एक बार मारे, फिर हथेली के भीतरी हिस्से को अपने चेहरे और दाढ़ी पर केरे, फिर अपने दोनों हथेलियों का मसह करे, दाईं के बाहरी हिस्से पर बाईं के भित्री हिस्से को केरे, फिर बाईं के बाहरी हिस्से पर दाईं के भीतरी हिस्से को केरे।

**नापाकी को दूर करना :** नापाकी दो तरह की होती है : ① ऐनी नापाकी : जिसे पाक करना सम्भव नहीं जैसे सूवर; उसे जितना भी नहलाया जाए वह पाक नहीं हो सकता। ② हुक्मी नापाकी : कपड़े और धर्ती इत्यादि जो कि असल में पाक हैं इन पर नापाकी का लग जाना।

आयान (सजीव तथा निर्जीव वस्तु) तीन तरह के होते हैं	हुक्म
नापाक	जैसे कुत्ता, सूवर, और इनकी शरीर से निकलने वाली चीजें। और वे सभी परिन्दे और पशु जिनके गोश्त न खाए जाते हों और वे बिल्ली से बड़े हों। और इस तरह के मवेशी के पेशाब, गोबर, थूक, पसीना, मनी, दूध, रीट और कै सभी नापाक हैं।
जान्वर :	1) आदमी, इसका मनी, पसीना, थूक, दूध, रीट, बल्म, और स्त्री के शरमगाह की तरी, और इसी तरह इसके सभी अंग और सभी निकलने वाली चीजें सिवाय पेशाब पाखाना, मज़ी, वदी और खून के पाक हैं। 2) हर वह जानवर जिसका गोश्त खाया जाता है, उसका पेशाब, गोबर, मनी, दूध, पसीना, थूक, रीट, कै, मज़ी और वदी पाक है। 3) जिससे बच पाना कठिन हो, जैसे गधा, बिल्ली और चूहा, तो इनके मात्र थूक और पसीना पाक हैं।
मुर्दे	सभी मुर्दे नापाक हैं सिवाए आदमी की मैयत के, और मछली, टिण्ठी, और उन जानवरों के जिन की शरीर से खून न बहता हो, जैसे : बिछू, चीऊँटी, और मच्छर।
बे-जान चीज़ें	तो यह पाक हैं, जैसे धरती, पथर, पहाड़ इत्यादि। पर पिछली बेजान चीज़ें इस में शामिल नहीं हैं।

**फाएँदे :** ★ खून और पीप नापाक हैं, लेकिन नमाज़ इत्यादि के अवस्था में पाक जानवर का थोड़ा सा खून और पीप माफ़ है। ★ दो चीज़ों के खून पाक हैं : मछली का खून, और जबह किए हुए जानवर के गोश्त और नलियों में बाकी रह जाने वाला खून। ★ ज़िन्दा जानवर से काटा हुवा गोश्त, और खून और गोश्त का लोथड़ा नापाक है। ★ गन्दगी दूर करने के लिए नियत शर्त नहीं है, तो यदि वह वर्षा से धुल जाए तो पाक हो जाएगा। ★ गन्दगी के छू लेने से या उस पर चलने से वुजू नहीं टूटता, हाँ शरीर और कपड़े में जिस जगह गन्दगी लगी है उस जगह को धुलना ज़रूरी है। ★ गन्दगी की पाकी के लिए कुछ शर्तें हैं : ① उसे पाक पानी से धुला जाए। ② यदि वह निचोड़ा जा सकता हो तो पानी के बाहर उसे निचोड़ा जाए। ③ यदि गन्दगी मात्र धुलने से ख़त्म न होती हो तो उसे खुर्चा जाए। ④ यदि कुत्ते की नापाकी हो तो सात बार धुला जाए और एक बार मिट्टी लगाकर।

**नोट :** ★ धरती पर की नापाकी यदि बहने वाली हो तो उस पर मात्र पानी बहा देना काफ़ी होगा यहाँ तक कि गन्दगी दूर हो जाए, और उसकी बदबू और रंग मिट जाए। और यदि पाखाना इत्यादि हो तो उसे और उसकी निशानी को दूर करना ज़रूरी है। ★ यदि पानी के बिना गन्दगी दूर न हो सकती हो तो पानी द्वारा उसे दूर करना ज़रूरी है। ★ यदि नापाकी की जगह की जानकारी न हो तो उसे धुला जाएगा यहाँ तक कि उसके धुल जाने का विश्वास होजाए। ★ जिस व्यक्ति ने नफ़ल नमाज़ पढ़ने के लिए वुजू किया हो तो वह उससे फर्ज़ नमाज़ पढ़ सकता है। ★ सोने वाले व्यक्ति पर या जिसकी हवा निकल गई हो उस पर इस्तिन्जा करना वाजिब नहीं है; क्योंकि हवा पाक है, हाँ, यदि वह नमाज़ पढ़ना चाहता है तो उस पर वुजू करना फर्ज़ है।

## हैज़ और इस्तिहाज़ा के मस्तानुल

मसाइल	हुक्म
हैज़ आने की उम्र (आयु)	हैज़ आने कि कम से कम उम्र 9 वर्ष है, और अधिक की कोई सीमा नहीं है। और यदि 9 वर्ष से पहले खून आए तो वह इस्तिहाज़ा है। <sup>1</sup>
कम से कम हैज़ आने की मुदत (अवधि)	एक दिन और एक रात (24 घंटे) है, यदि इससे कम हो तो वह इस्तिहाज़ा है।
हैज़ आने की सर्वाधिक अवधि	15 दिन हैं, यदि 15 दिन से अधिक खून आए तो वह इस्तिहाज़ा है।
दो हैज़ के बीच पाकी की मुदत	13 दिन हैं, यदि 13 दिन पूरे होने से पहले खून आजाए तो वह इस्तिहाज़ा है।
अधिकतर औरतों के खून आने की मुदत	6 दिन या 7 दिन हैं।
अधिकतर औरतों के पाक रहने की मुदत	23 दिन या 24 दिन हैं।
क्या हमल (गर्भ) के बीच आने वाला खून हैज़ का खून है?	हामिला औरत को आने वाला खून, या <sup>2</sup> मट्यालापन या <sup>3</sup> पीलापन इस्तिहाज़ा का खून है।
औरत को पाकी की जानकारी कब होती है?	औरतें दो तरह की होती हैं : ① यदि वह सफेद लैसदार <sup>4</sup> चीज़ देखती हो तो उसके देखने के बाद। ② और यदि वह उसे नहीं देखती है तो शरमगाह का खून, मट्यालापन और पीलापन से सूख जाने के बाद वह पाक होती है।
पाकी की अवस्था में औरत की शरमगाह से निकलने वाली तरी का क्या हुक्म है?	यदि यह पतला या सफेद लैसदार हो तो पाक है, और यदि यह खून हो या उसमें मट्यालापन या पीलापन हो तो यह नापाक है और इन सब से दूर दूर जाता है, और यदि यह निकलता रहे तो इस्तिहाज़ा है।
मट्यालापन या पीलापन का क्या हुक्म है?	यदि हैज़ के खून के साथ मिला हूवा हो चाहे पहले हो या बाद में तो यह हैज़ है, और यदि मिला न हो तो इस्तिहाज़ा है।
हैज़ के दिन पूरे होने से पहले पाक होने का क्या हुक्म है?	यदि खून आना बन्द होजाए और औरत पवित्रता देखते तो वह पाक मानी जाएगी, चाहे उसके दिन पूरे न होए हों।
हैज़ का समय से पहले आजाने या देर से आने का क्या हुक्म है?	यदि उसमें हैज़ की निशानियां पाई जाती हों तो यह हैज़ का खून है, इस शर्त के साथ कि दो हैज़ों के बीच 13 दिन का अर्सा हो। नहीं तो इसे इस्तिहाज़ा माना जाएगा।
हैज़ की मुदत में कभी या बेशी होजाए तो इसका क्या हुक्म है?	15 दिन तक उसे हैज़ माना जाएगा।
औरत को महीने भर या उससे भी अधिक खून आए तो इसका क्या हुक्म है?	इसकी 3 स्थिथियां हैं : ① जिसे खून आने के दिन और तारीख की जानकारी हो, तो उसका खून एक ही तरह का हो। तो वह समय और दिन का एतिवार करेगी। ② जिसे तारीख की जानकारी हो लेकिन दिनों की जानकारी न हो, तो वह तारीख के दिनाव में 6 या 7 दिन तक हैज़ शुमार करेगी। ③ जिसे दिनों के बारे में जानकारी हो लेकिन तारीख की जानकारी न हो, तो वह हर हिज्री महीने के शुरू के दिनों में से जितने दिन उसे आते थे हैज़ का दिन शुमार करेगी।

1 हैज़: विना किसी वीमारी या बच्चे की पैदाइश के तन्त्रस्ती के साथ हर महीने औरत से आने वाले खून का नाम है। इस्तिहाज़ा : यह वीमारी का खून है जो बच्चे-दानी के नीचे की रग से निकलता है, हैज़ और इस्तिहाज़ा में एक या हो। ① हैज़ का खून लाल सियाही मापल होता है, और इस्तिहाज़ा का खून गहरा लाल होता है, योग्य कि वह नमीना का रंग हो। ② हैज़ का खून गाढ़ा होता है, कभी-कभार उसके टुकड़े भी होते हैं, और इस्तिहाज़ा का खून पतला होता है, वह घाव से बह रहा हो। ③ अधिकतर हैज़ के खून में बदबू होती है, लेकिन इस्तिहाज़ा का खून आम खून की तरह होता है। और हुक्म के लिङ्गाज़ से हैज़ के कारण यह सारी चीज़ें हराम होती हैं : सुलबत करना, इस अवस्था में ताल लेना, नमाज़ पढ़ना, गोज़ा रखना, तवाफ़ करना, कुर्अन पढ़ना, या उसे खूना और मस्तिष्क में बैठना इत्यादि।

2 कुद्र: यह बहता हुवा गदले रंग का खून है जोकि औरत की शरमगाह से निकलता है।

3 सुफ़्र: यह बहता हुवा पीला मापल खून है जोकि औरत की शरमगाह से निकलता है।

4 कस्तुल वैजामः : यह बहती सफेद चीज़ है जो कि पवित्रता के समय औरत की शरमगाह से निकलती है, और वह कस्ता पवित्र है लेकिन इस से चुम्ब दूर जाता है।

## निफास के मस्ताएँ

### मसाइल

**बच्चा जनने के बाद खून का न आना।**  
स्त्री का बच्चा जन्म होने की निशानी देखना।  
**जन्म के समय निकलने वाले खून का हुक्म।**  
**निफास के दिन का शुमार कब से होगा?**

**निफास की कम से कम मुद्दत (अवधि) क्या है?**

**निफास की अधिक से अधिक मुद्दत क्या है?**

**जिसने 2 या 2 से अधिक बच्चे जन्म दिए हैं?**

**इस्काते हुमल (गर्भ-पात) के बाद आने वाला खून?**

**40 दिन से पहले पाक होजाए तेकिन दोबारा 40 दिन के अन्दर खून आना शुरू होजाए?**

### हुक्म

ऐसी औरत पर निफास वाली औरत का हुक्म लागू नहीं होगा। उस पर स्नान करना भी वाजिब न होगा, और न ही उसका रोजा टूटेगा। यदि उसे जन्म से काफी समय पहले दर्द के साथ खून और पानी आए तो ऐसे खून को निफास नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा। इसे निफास का खून माना जाएगा, वाहे बच्चा आधा जन्मा हो, या जन्मा ही न हो, और उस पर इस बीच आने वाली नमाज़ की कज़ा नहीं है। मां के पेट से पूरे तौर पर बच्चे के निकल जाने के बाद से निफास के दिन का शुमार होगा।

**कम से कम की कोई मुद्दत नहीं है, इसी लिए यदि बच्चा जन्म होने के बाद से ही उसे खून न आए तो औरत पर स्नान करके नमाज़ पढ़ना वाजिब होगा, और वह 40 दिन पूरा होने का इन्तिज़ार नहीं करेगी।**

**अधिक से अधिक मुद्दत 40 दिन है, यदि 40 दिन से अधिक तक खून आए तो उसे निफास नहीं माना जाएगा, बल्कि उस औरत पर स्नान करके नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ होगा, हाँ यदि वह समय उसके हैज़ आने का हो तो उसे हैज़ का खून माना जाएगा।**

**पहले बच्चे के जन्म के बाद से दिन शुमार किया जाएगा।**

**यदि 80 दिन या उससे कम का गर्भ हो तो उसके बाद आने वाला खून, इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा, और 90 दिन के बाद गर्भ-पात हुवा हो तो उसके बाद आने वाला खून, निफास का खून माना जाएगा। और यदि 80 और 90 दिन के बीच का गर्भ हो तो उसका ढांचा देखा जाएगा, यदि इन्सानी ढांचा तैयार होगया हो तो आने वाले खून को निफास का खून माना जाएगा, नहीं तो इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा।**

**40 दिन के भीतर की पाकी को पाकी मानेगी और इस बीच स्नान करके नमाज़ पढ़ेगी, और यदि फिर दोबारा खून आजाए तो नमाज़ छोड़ देगी, यहाँ तक कि 40 दिन बीत जाए।**

**नोट :** \* हैज़ और निफास वाली स्त्री पर वह सारी चीजें हराम होंगी जो बड़ी नापाकी वालों पर हराम होती हैं। \* इस्तिहाज़ा वाली औरत पर नमाज़ पढ़ना वाजिब है। और वह हर नमाज़ के लिए वुजू किया करेगी। \* यदि कोई औरत सूरज डूबने से पहले हैज़ या निफास के खून से पाक होजाए तो उसे उस दिन की जुह और अस्त्र की नमाज़ पढ़नी होगी। और यदि फ़ज्ज़ होने से पहले पाक होजाए तो उसे उस रात की मग्निब और इशा की नमाज़ पढ़नी होगी। \* नमाज़ का समय होजाने के बाद यदि किसी औरत को हैज़ आए तो उस पर उस नमाज़ की कज़ा नहीं है।

\* हैज़ या निफास से पाकी के लिए स्नान करते समय बालों के जूँड़ों को खोलना लाज़िम है, लेकिन जनाबत के गुस्से के लिए खोलना वाजिब नहीं है।

\* इस्तिहाज़ा वाली औरत से सुहबत करना **मकरुह** है, लेकिन ज़स्तरत के समय जायज़ है।

\* हैज़ का स्नान कर लेने के बाद इस्तिहाज़ा वाली औरत का हर नमाज़ के लिए वुजू करना वाजिब है, यहाँ तक कि खून आना रुक जाए।

\* हज्ज और उम्रः के अर्कान पूरे करने के लिए, या रमज़ान के रोज़े पूरे करने के लिए औरत कोई ऐसी दवा प्रयोग कर सकती है जिस से कुछ समय के लिए हैज़ का खून न आए, लेकिन शर्त यह है कि उसे प्रयोग करने में कोई हानि न हो।

## इस्लाम में औरतों का मुकाम

ईमान और कर्म के आधार पर औरत और मर्द दोनों के दोनों अल्लाह तआला के पास सवाब और फ़ज़ीलत में बराबर हैं। नबी ﷺ का फ़र्मान है : **“अबश्य औरतें मर्दों जैसी हैं”** । अबूदूआज़द । औरतें अपने हक के लिए मांग कर सकती हैं, क्योंकि शरीअत में औरतों और मर्दों को एक साथ ही खिताब किया गया है, हाँ कुछ चीज़ों में दोनों में फर्क है जो कि बहुत धोड़े हैं, और यह फर्क भी इन के जिसमानी ढाँचे और शक्ति का एतिवार करते हुए किया गया है, अल्लाह ﷺ का फ़र्मान है : **﴿أَلَا يَعْلَمُ مِنْ حَلَقٍ وَهُوَ الْأَطِيفُ الْخَيْرُ﴾** । “क्या वही न जाने जिस ने पैदा किया? फिर वह बारीक देखने और जानने वाला भी है” चुनान्वि औरतों का अलग मजाल है और मर्दों का मजाल अलग है।

बल्कि घर में रहते हुए भी औरतों को मर्दों के बराबर सवाब दिया गया है, अस्मा बिन्ति यज़ीद से रिवायत है कि वह नबी ﷺ के पास आई, उस समय नबी ﷺ सहाबा ﷺ के साथ थे, उन्होंने कहा मेरे मां-बाप आप पर कुर्बान हों, मैं औरतों की ओर से सफ़ीर हूँ और मेरी जान भी आप पर कुर्बान हो, पुरब और पश्चिम में रहने वाली कोई भी ऐसी औरत नहीं है जो मेरे इस निकलने के बारे में सुनी हो या सुने मगर उस का विचार मेरी ही तरह का होगा, अल्लाह ने आप को मर्दों और औरतों की ओर हक के साथ भेजा है, सो हम ने आप पर और आप के माँबूद पर जिस ने आप को भेजा है ईमान लाया, पर हम औरतें धिरी हुई हैं, आप मर्दों के घरों में बैठी हुई हैं, आप की खाहीशे पूरी करती हैं, आप के बच्चों का गम उठाती हैं, और आप सारे मर्द जुम्झा, जमाअत, बीमारों की इयादत, हज्ज पर हज्ज करके बल्कि इस से भी बढ़कर यह कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद द्वारा हम पर फ़ज़ीलत दिए गए हैं, जब्कि आप मर्द हज़ारत जब हज्ज, उम्रा या जिहाद के लिए जाते हैं, तो हम ही आप के माल की हिफ़ाज़त करते हैं, आप के कपड़े सिलते हैं, आप के बच्चों को पालते हैं, तो ऐसा अल्लाह के रसूल! क्या हम अज्ञो-सवाब में आप के साझी नहीं हो सकते? रावी कहते हैं कि नबी ﷺ ने सहाबए कराम की ओर अपना चिह्न किया और उन से पूछा : “क्या तुमने अल्लाह के रसूल में इस से उत्तम प्रश्न किसी औरत से कभी सुना है?” तो उन्होंने जवाब दिया एवं अल्लाह के रसूल हमें ऐसा नहीं लगता था कि कोई औरत भी इस तरह का प्रश्न कर सकती है। फिर नबी ﷺ ने उस ख़ातून की ओर अपना चेहरा किया और फ़र्माया : “ऐ ख़ातून! लौट जा, और अपने पीछे वालियों को बता दे कि तुम्हारा अपने पति के साथ उत्तम बताव करना, उनकी खाहिशें पूरी कर देना, और उन की बातें मान लेना इन सभों के बराबर हैं। रावी कहते हैं कि वह ख़ातून खूशी के मारे तक्बीर और तहलील करते हुए वापस लौट वैहकी। और इसी तरह कुछ औरतों ने आकर नबी ﷺ से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल में हज़ारत तो अल्लाह के रास्ते में जिहाद द्वारा फ़ज़ीलत में हम से काभी आगे बढ़ गए तो क्या हमारे लिए कोई ऐसा कर्म नहीं है जिस के द्वारा हम मुजाहिदों जैसा सवाब प्राप्त कर सकें? तो अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़र्माया : “अपने घर के काम काज द्वारा तुम्हें मुजाहिदों जैसा सवाब प्राप्त होता है”। वैहकी। बल्कि किसी करीबी औरत पर इहसान का शरीअत में बहुत महत्व है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “जिस ने अपनी दो बेटियों, या दो बहनों, या दो करीबी औरतों पर खर्च किया यहाँ तक कि अल्लाह ने उन के लिए बन्दोबस्त कर दिया या उन्हें मालदार कर दिया, और इस खर्च द्वारा उस ने सवाब की उम्मीद रख्खी हो तो यह दोनों उन के लिए जहन्नम से पर्दा होंगी”। अहमद और तब्रानी।

## औरतों से संबन्धित कुछ आदेश

\* किसी गैर महरम<sup>1</sup> मर्द का किसी अजनबी औरत के साथ तन्हाई में मिलना हराम है। नबी ﷺ ने फर्माया : “महरम के बिना कोई मर्द किसी अजनबी और के साथ अकेला न हो। बुखारी और मुस्लिम।

\* औरत के लिए मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मुबाह है, पर यदि फितने का डर है तो मक्रूह है। आइशा रजियल्लाहु अन्हा फर्माती हैं : “औरतों ने जो कुछ कर रखवा है, यदि नबी ﷺ ने इसे देखा होता तो मस्जिद आने से रोक देता, जिस प्रकार बनू इस्माईल की औरतें रोक दी गई थीं”। बुखारी और मुस्लिम। और जिस प्रकार मर्दों को मस्जिद में नमाज़ पढ़ने पर अधिक सवाब मिलता है। एक खातून नबी ﷺ के पास आई और कहने लगी ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप के साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हूं। तो आप ﷺ ने फर्माया : “मैंने जान लिया कि तुम मेरे साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हो, पर तेरा अपने घर के भित्री रूम में नमाज़ पढ़ना बाहर के रूम में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और बाहर के रूम में नमाज़ पढ़ना घर की चहार दीवारी में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और घर की चहार दीवारी में नमाज़ पढ़ना अपने मुहल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और अपने मुहल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है”। अहमद। और आप ﷺ ने फर्माया : “औरतों की बेहतर मस्जिद उनका घर है”।

\* यदि साथ में सफर करने वाला महरम न हो तो औरतों पर हज्ज या उम्रा वाजिब नहीं है। और महरम के बिना उन के लिए यात्रा करना भी जायज़ नहीं है; नबी ﷺ का फर्मान है : “महरम के बिना कोई औरत तीन रात से अधिक का सफर न करे”। बुखारी और मुस्लिम।

\* औरतों के लिए कब्र की ज़ियारत करना और जनाज़ा के साथ चलना हराम है, नबी ﷺ का फर्मान है : “कब्र की ज़ियारत करने वालियों पर अल्लाह ने लानत भेजी है”। और उम्मे अ़तीया रिवायत करती हैं कि : “हमें जनाज़ा के पीछे चलने से रोक दिया गया। पर सख्ती नहीं की गई”। बुखारी और मुस्लिम।

\* औरत के लिए काले के सिवाय किसी भी कलर का बाल डाई करना जायज़ है, इस शर्त के साथ कि उस में निकाह का पैग़ाम देने वाले के लिए धोका न हो।

\* औरतों को मीरास में से हिस्सा देना वाजिब है, और उन्से मीरास रोक लेना हराम है, नबी ﷺ से मर्वी है कि आप ने फर्माया : “जिस ने अपने वारिस का मीरास रोक लिया, अल्लाह कियामत के दिन जन्नत में उस का मीरास रोक लेगा”। इब्ने माजा।

\* पती पर भलाई के साथ पत्नि के खाने पीने, पहन्ने और घर का खर्च उठाना वाजिब है। अल्लाह ﷺ का फर्मान है : “हैसियत वाले को अपनी हैसियत से खर्च करना चाहिए और जिस पर उस की रोज़ी की तंगी की गई हो उसे चाहिए कि जो कुछ अल्लाह ने उसे दे रखवा है उसी में से अपनी हैसियत अनुसार दे” पर यदि वह पति वाली न हो तो उस के बाप या भाई या बेटे पर उस का खर्च उठाना वाजिब है। पर यदि उस का कोई करीबी मर्द न आतेदार न हो सारे लोगों पर उस का खर्च उठाना मुस्तहब है; नबी ﷺ का फर्मान है : “बेवा

<sup>1</sup> औरत के लिए महरम वह व्यक्ति है जिस से जीवन में कभी भी शारी करना जायज़ नहीं है, जैसे : वाप, दादा पदांदा बैगैरह, बेटे, लोटे, एलोटे, शीर्ह, शाई, भत्तीजे, भान्जे, चच्चा, मामू, समूर, सौतेले बेटे, रिकाई वाप, बेटा और भाई, दामाद और मां का शौहर।

औरतों और गरीब लोगों पर खर्च करने वाले का सवाब अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है, या उस व्यक्ति के सवाब की तरह जो रात में कियाम करता है और दिन में रोज़ा रखता है”। बुखारी और मुस्लिम।

\* औरत अपने छोटे बच्चे के पालण-पोषण करने का हकदार जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से शादी नहीं कर लेती। और जब तक बच्चा मां के पास है उस के पिता पर खर्च उठाना लाज़िम होगा।

\* औरत से सलाम करने में पहल करना मुसतहब नहीं है खासकर यदि वह जवान हो, या बुराई का डर हो।

\* प्रत्येक सप्ताह बग़ल का बाल उखाड़ना, नाभी के नीचे का बाल मुंडना, और नाखून काटना मुसतहब है, और चालीस दिन से अधिक तक छोड़े रखना मक्रूह है।

\* चेहरे और भौं के बाल को उखाड़ना हराम है। नबी ﷺ का फर्मान है : “अल्लाह ने लानत भेजी भौं बनाने वाली और बनुवाने वालियों पर”। अबू-दाऊद।

\* **सोग मनाना** : औरत पर शौहर के अलावा किसी दूसरे के लिए 3 दिन से अधिक सोग मनाना हराम है, नबी ﷺ का फर्मान है : “किसी औरत के लिए जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखती हो यह जायज़ नहीं कि पति कि सिवाय किसी दूसरे मैयत पर 3 दिन से अधिक सोग मनाए”। चुनान्वि शौहर पर 4 महीने 10 दिन सोग मनाना वाजिब है। सोग के दिनों में श्रंगार करना, खुशबू जैसे ज़ाफरान लगाना, ज़ेवर पहनना, चाहे अंगूठी ही क्यों न हो, डिज़ाइन वाले रंगीन लाल, पीले कपड़े पहनना, मैंहदी लगाना, मेक-अप करना, काला सुर्मा लगाना, या खुशबूदार तेल लगाना हराम है। सोग के दिनों में नाखून काटना, बाल उखाड़ना, और नहाना जायज़ है। ऐसी औरत पर किसी खास रंग का जैसे काला कपड़ा पहनना वाजिब नहीं है। इहत के दिनों में इसका उसी घर में रहना वाजिब है, जिस में शौहर की मृत्यु के समय थी। बिना ज़रूरत के उस के लिए जगह बदलना हराम है। और इसी प्रकार बिना ज़रूरत के दिन में घर से बाहर भी न निकले।

\* बिना ज़रूरत औरत के लिए अपने सर का बाल मुंडवाना हराम है, काटना जायज़ है पर उस में मर्दों की नक़्काली न हो, क्योंकि हँदीस में नबी ﷺ ने उन औरतों पर लानत भेजी है जो मर्दों का रूप धारती हैं। तिर्मिज़ी। और इसी प्रकार इस कटिंग में काफिर औरतों की भी नक़्काली न हो; क्योंकि हँदीस में है : जिसने दूसरी कौम का रूप धारा तो उस की निनी उसी में होगी। अबू-दाऊद।

\* औरत का घर से निकलते समय अपनी शरीर को ऐसी चादर से ढकना अनिवार्य है जिसमें निम्न शर्तें पाई जाती हों। ① पूरे शरीर को ढापे हो। ② उसमें नक़शो-निगार न हो। ③ इतनी मोटी हो कि शरीर न दिखे। ④ तंग न हो। ⑤ उसमें खुशबू न लगी हो। ⑥ जिस के पहनने में शोहरत न हो। और ऐसा कपड़ा जिसमें इन्सान या जानवर का पिकवर हो उसे जला या उसे लटकाना या उसे दीवार इत्यादि का पर्दा बनाना या उसे बेचना जायज़ नहीं है।

\* दूसरों के सामने औरतों की शरीर का प्रदा तीन प्रकार का है : ① उस का शौहर ज़म के पूरे जिस्म को देख सकता है। ② औरतें और उस के महरम के लिए उस के जिस्म का मात्र उतना ही हिस्सा देखना जायज़ है जो साधारण तौर पर खुला रहता है। जैसे : चेहरा,

बाल, गर्दन, हाथ, बाजू और पैर इत्यादि। ③ अजनबी मर्दों के लिए उस के जिस्म के किसी भी हिस्से का देखना सिवाय ज़रूरत के जायज़ नहीं है, जैसे निकाह के खितबे या इलाज इत्यादि के लिए। इस लिए कि औरत का असल फ़ितना उस के चेहरे में है, और फ़तिमा बिन्त मुन्ज़िर फ़र्माती हैं : “हम मर्दों से अपने चेहरे को छुपाया करती थीं”। हाकिम। और आइशा फ़र्माती हैं : “हम अल्लाह के रसूल के साथ इहराम की हालत में थीं जब हमारे सामने से काफ़ले वाले गुज़रा करते थे, वह जब हमारे बराबरी में होते तो हम औरतें अपने हुप्पे अपने सर से अपने चेहरे पर डाल लिया करती थीं, और जब वे आगे निकल जाते तो अपने चेहरे खोल लिया करती थीं”। अबू-दाऊद।

\* **इदृत** : कई प्रकार की होती है। ① हामिला के लिए त़लाक़ और शौहर की वफ़ात की इदृत है बच्चा जन्म देना। ② जिस के शौहर की वफ़ात हो गई हो उस की इदृत 4 महीने तक है। ③ जिस औरत को हैज़ आता हो उसकी त़लाक़ की इदृत तीन हैज़ है जो कि 10 दिन है। ④ जिसे हैज़ न आता हो उसकी इदृत 3 तीसरे हैज़ से पाक होने के साथ पूरी होजाती है। ⑤ जिसे हैज़ न आता हो उसकी इदृत 3 महीने है। रजई त़लाक़ की इदृत गुज़ारने वाली औरत पर शौहर के घर ही में रह कर इदृत महीने है। रजई त़लाक़ की इदृत गुज़ारने वाली औरत पर शौहर के लिए उसके किसी भी अंग को देखना और अकेले पूरी करना वाजिब है, इस बीच शौहर के लिए उसके किसी भी अंग को देखना और अकेले में उसके साथ रहना जायज़ है, हो सकता है अल्लाह तआला उन दोनों के बीच सुलह करादे। शौहर के यह कहने से कि मैं ने तुझे वापस लौटाया, या सुहबत करने से बीवी निकाह में लौट आती है, रजई त़लाक़ हो तो लौटाने के लिए बीवी की रिज़ामन्दी ज़रूरी नहीं है।

\* औरत स्वयं अपनी शादी नहीं कर सकती है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “जिस औरत ने भी वली की मर्जी के बिना शादी की तो उस का निकाह बातिल है”। अबू-दाऊद।

\* औरतों पर अपने बालों के साथ दूसरे बालों को जोड़ना, या जिस पर गोदाई गोदना हराम है, बल्कि यह बड़े गुनाहों में से है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “अल्लाह की लानत है बालों को जोड़ने और जोड़वाने वाली पर, और गोदने और गोदवाने वाली पर”। बुख़ारी और मुस्लिम।

\* औरतों पर अपने शौहर से बिना किसी सबब के त़लाक़ मांगना हराम है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “जिस किसी औरत ने भी बिना किसी कारण के अपने पति से त़लाक़ मांगा तो उस पर जन्नत की खुशबू हराम है”। अबू-दाऊद।

\* औरतों पर भलाई के साथ अपने पति की बात मानना वाजिब है, और खास कर बिछौना पर जाने के लिए। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “पति ने अपनी पत्नी को यदि बिस्तर पर बुलाया और वह आने से इन्कार कर दी, फिर पति ने गुस्से में रात गुज़ारी तो सवेरे तक फरिश्ते पत्नी पर लानत भेजते रहते हैं”। बुख़ारी और मुस्लिम।

\* औरतों पर यदि रास्ते में अजनबी मर्दों से मिलने की जानकारी हो तो उन पर खुशबू लगाना भी हराम है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “यदि औरत खुशबू लगाकर लोगों के बीच उसे सुंधाने के लिए गई तो वह इस प्रकार की है, अर्थात् वेश्या है”। अबू-दाऊद।

**अज्ञान और इकामत :** हज़र (मुकीम होने की हालत) में अज्ञान देना और इकामत कहना मर्दों पर फ़र्ज़े किया है, पर यात्री और अकेले नमाज़ी के लिए सुन्नत है, और औरतों के लिए मकरूह है, और समय से पहले अज्ञान देना जायज़ नहीं है, मात्र फ़ज़्र की पहली अज्ञान आधी रात के बाद दे सकते हैं।

**नमाज़ की शर्तें :** 9 हैं : 1. इस्लाम, 2. अक्तल, 3. तर्झज़ (पहचान), 4. शक्ति हो तो पाकी हासिल करना, 5. नमाज़ का समय होना, जुह का समय सूरज ढलने के बाद से हर चीज़ का साया उसके बराबर होने तक रहता है, फिर अस्त्र का समय शुरू होजाता है, और इसका इख्तियारी समय हर चीज़ का साया उसके दुगना होने तक रहता है, फिर सूरज डूबने तक ज़स्तरत का समय बाकी रहता है, फिर मग्निव का समय शुरू होजाता है आसमान की लाली गायब होने तक, फिर इशा का समय शुरू होजाता है, और इस का इख्तियारी समय आधी रात तक होता है, फिर फ़ज़्र उदय होने तक ज़स्तरत का समय बाकी रहता है। और इसके बाद से फ़ज़्र का समय सूरज निकलने तक रहता है। 6. शरमगाह को छुपाना<sup>1</sup> 7. शक्ति भर शरीर, कपड़े और जा-ए-नमाज़ से नापाकी दूर करना। 8. शक्ति भर का'बा की ओर चेहरा करना। 9. दिल से नियत करना।

**नमाज़ के अर्कान :** 14 हैं : 1. तक़त हो तो फ़र्ज़ नमाज़ों में खड़ा होना। 2. तक्बीरतुल्ल इहाम कहना। 3. सुरतुल्ल फ़ातिहा पढ़ना। 4. हर रक़अत में रुकुअूँ करना। 5. रुकुअूँ से उठना। 6. रुकुअूँ के बाद खड़े होकर एतिदाल करना। 7. सात अंगों पर सज्दा करना। 8. दोनों सज्दों के बीच बैठना। 9. अन्तिम तशह्वुद पढ़ना। 10. अन्तिम तशह्वुद के लिए बैठना। 11. अन्तिम तशह्वुद में नवी धूम्रपात्र पर दस्त भेजना। 12. पहला सलाम। 13. इन सभी अर्कान को इत्मीनान से करना। 14. और इन्हें सिलसिलावार करना।

**नमाज़ के वाजिबात :** 8 हैं : 1. तक्बीरतुल्ल इहाम के सिवाय बाकी सभी तक्बीरें। 2. इमाम और अकेले नमाज़ी का "समिअल्लाहु लिमन् हमिदह" कहना। 3. रुकुअूँ से उठने के बाद "रब्बना व लकल् हम्द" कहना। 4. रुकुअूँ में एक बार "सुब्हान रब्बियल् अज़ीम" कहना। 5. सज्दा में एक बार "सुब्हान रब्बियल् आ'ला" कहना। 6. दोनों सज्दों के बीच "रब्बिग़फ़र्ली" कहना। 7. पहला तशह्वुद। 8. पहले तशह्वुद के लिए बैठना। इन वाजिबात को यदि जान बूझ कर छोड़ दिया हो तो नमाज़ बातिल हो जाएगी। और यदि भूल से छुट गए हों तो सज्द-ए-सह्व करना होगा।

**नमाज़ की सुन्नतें :** नमाज़ में पढ़े और किए जाने वाले बाकी कर्म हैं, जिन्हें जान बूझ कर भी छोड़ देने से नमाज़ बातिल नहीं होती। पढ़ी जाने वाली सुन्नतों का चर्चा नीचे किया जारहा है : दुआ-ए-सना, अऊजु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ना। आमीन कहना, और इसे जहाँ नमाज़ों में ऊँची आवाज़ से कहना। सुरतु-ल-फ़ातिहा के बाद दूसरी सुरतें मिलाना, जहाँ नमाज़ों में इमाम का ऊँची आवाज़ से पढ़ना, मुक्तदी ऊँची आवाज़ से नहीं पढ़ सकता, पर

<sup>1</sup> इन्सान की शरमगाह और वह चीज़ जिस से उसे हऱ्या आए। सात साल के बच्चे पर दोनों शरमगाह का पर्दा है, और 10 के हो जाने पर नाफ़ से घुटने के बीच का पर्दा वाजिब है। और बालिग़ा आज़ाद औरत पर मुक्तम्ल पर्दा है सिवाय उसके बेटे, दोनों हथेली और दोनों पैर के, इन्हें नमाज़ में ढाँपना मकरूह, परन्तु अजनबी मर्दों की मौजूदगी में इन्हें ढाँपना ज़रूरी है। अतः यदि नमाज़ या तवाफ़ में उस के बाज़ खुले हों तो उस की नमाज़ बातिल है, जो कि कबूल नहीं होगी। और नमाज़ के अलावा भी दोनों शरमगाहों का पर्दा सखती के साथ ज़रूरी है। तन्हाई और अन्देरे में भी बिना ज़रूरत उन्हें खोलना मकरूह है।

अकेले पढ़ने वाले व्यक्ति को इखितयार है। “रब्बना व लक-लू-हम्दू” के बाद “हम्दन् कसीरन् इबन् मुबारकन् फीहि मिलअ-सू-समावाति व मिलअ-लू-अर्जि ...” अन्तिम तक पढ़ना। और रुकूअू और सज्दे में एक बार से अधिक तस्बीह पढ़ना, इसी तरह “रब्बिग्फर्लि” एक बार से अधिक पढ़ना, और सलाम से पहले दुआएं पढ़ना। और की जाने वाली सुन्नतें यह हैं : तक्बीरतु-लू-इहाम के समय, रुकूअू करते समय, रुकूअू से उठते समय और पहले तशह्हुद से छड़ा होने के समय रफउ-लू-यदैन करना, और कियाम के समय दाएं हाथ को बाएं हाथ पर लेख कर छाती पर बांधना, दोनों पैरों के बीच दूरी रखना, सज्दे की जगह पर देखना, सज्दा करते समय धरती पर पहले दोनों घुटनों को फिर दोनों हाथों को, फिर पेशानी और नाक को रखना, और दोनों बाजूओं को पहलू से, और पेट को अपने दोनों जांघों से, और जांघों को दोनों पिन्डिलियों से दूर रखना, और दोनों घुटनों के बीच दूरी रखना, दोनों पैरों को खड़ा रखना, उँगिलियों को काबे की ओर किए रखना, और दोनों हाथों को मोढ़े की बराबरी में रखना, उँगिलियां समेटे रखना, पैरों के बल, दोनों हाथों से दोनों घुटनों पर सहारा लेते हुए छड़ा होना। दोनों सज्दों के बीच और पहले तशह्हुद में बायां पैर बिछाकर उस पर बैठना और दायां पैर खड़ा रखना, और अन्तिम तशह्हुद में बाएं पैर को दाएं पैर के नीचे से निकालना और ज़मीन पर बैठना। और दोनों सज्दों के बीच और इसी प्रकार तशह्हुद में दोनों हाथों को फैलाकर दोनों जांघों पर रखना, उँगिलियां मिलाए रखना। पर दाएं हाथ के किनारे वाली दोनों उँगिलियों को समेटे रखें, और अंगूठे से बीच वाली उँगली के साथ गोल धेरा बनाए और शहादत की उँगली से अल्लाह की वट्दानियत का इशारा करता रहे, और सलाम फेरते समय दाएं और बाएं ओर धूमे, पहले दाईं ओर से शुरू करे।

**सज्द-ए-सह्व :** यदि किसी मशरूअू ज़िक्र को भूल कर दूसरी जगह पढ़ दिया जैसे सज्दे में कूरआन पढ़ने लगा तो ऐसी स्थिथि में सज्द-ए-सह्व करना मस्नून है, और यदि किसी सुन्नत को छोड़ दिया तो सज्द-ए-सह्व करना मुबाह है, और यदि रुकूअू या सज्दा, या कियाम, या क’दा अधिक कर दिया या नमाज़ पूरी होने से पहले सलाम फेर दिया, या ऐसी गलती कर बैठा जिस से मतलब बदल जाए, या वाजिब छोड़ दिया, या नमाज़ के बीच ही उसे अधिक पढ़ लेने का शक हुवा तो उस पर सज्द-ए-सह्व करना वाजिब है, और जान बूझ कर वाजिब सज्द-ए-सह्व छोड़ देने से नमाज़ बातिल हो जाती है। और यदि चाहे तो सलाम से पहले या तो सलाम के बाद सज्द-ए-सह्व करे, और यदि सज्द-ए-सह्व करना भूल गया और समय भी अधिक हो गया तो फिर करने की ज़रूरत नहीं।

**नमाज़ का तरीका :** जब नमाज़ के लिए खड़ा हो तो किल्ले की ओर चेहरा करे, और “अल्लाहु अक्बर” कहे, यदि इमाम हो तो मुक्तदी को सुनाने के लिए ऊँची आवाज़ में तक्बीर कहें, तक्बीर कहते समय अपने दोनों हाथों को दोनों कंधों तक उठाए, फिर दाईं हथेली से बाईं हथेली पकड़े और उसे अपने सीने पर बांध ले, और नज़र सज्दे की जगह पर गड़ाए रहे, पस्त आवाज़ में कोई एक दुआ-ए-सना पढ़े, जैसे : “सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक व तबारकस्मुक व तआला जहुक व लाइलाह गैरुक” फिर अऊजु बिल्लाह पढ़े, फिर बिस्मिल्लाह पढ़े, फिर सूरतु-लू-फ़तिहा पढ़े, जही नमाज़ों में इमाम के सक्तों में पढ़ना मुस्तहब है, फिर कोई और सूरत मिलाए, सवेरे की नमाज़ में तिवाले मुफ़स्सल पढ़ना, मग्निब में किसारे मुफ़स्सल और वाकी नमाज़ों में अवसाते मुफ़स्सल पढ़ना मुस्तहब है। तिवाले मुफ़स्सल सूरते “काफ़” से लेकर सूरते “अम्म” तक है, और अवसाते मुफ़स्सल “सूरतुज्जुहा” तक है, और “अन्नास” तक किसारे मुफ़स्सल है। फ़ज्ज की नमाज़ में और मग्निब और इशा की पहली दोनों रक़अतों में इमाम ऊँची

आवाज में किराअत करे, और बाकी नमाजों में आवाज पस्त रखे। फिर “अल्लाहु अक्बर” कहे, तबीरतुल-इहराम में रफउ-लू-यदैन करने की तरह रफउ-लू-यदैन करे, और रुकुअ् में जाए, दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर रखवे, उँगियों को फैलाए रहे, पीठ को फैलाए और उसी की बराबरी में सर रखे, फिर 3 बार “सुझान रब्बिय-लू-अज़ीम” कहे, फिर “समिअल्लाहु लिमन् हमिदह” कहते हुए सर उठाए, तबीरतुल-इहराम में रफउ-लू-यदैन करने की तरह रफउ-लू-यदैन करे, जब सीधा खड़ा होजाए तो “रब्बना व लक-लू-हम्दु हम्दन् कसीरन् तैयेबन् मुबारकन् फीहि मिल्लम्-स-समावाति व मिल्लम्-लू-अर्जि व मिल्लम् माबैनहुमा व मिल्लम् मामुबारकन् शैइ-म्-बा'द” पढ़े। फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए सज्दे में जाए, और अपने शिअत मिन शैइ-म्-बा'द” पढ़े। फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए सर उठाए, और दोनों हाथों को कंधों दोनों बाजूओं को पहलू से, और पेट को दोनों रानों से हटाए रखवे, और दोनों हाथों को काबे की बराबरी में रखवे, दोनों पैरों के किनारों को धरती से लगाए रखवे, उँगियों को काबे की बैठे, और दायां पैर खड़ा रखवे, और उँगियों को काबे की ओर मोड़ ले, या दोनों पैरों को बैठे, और दायां पैर खड़ा रखवे, और उँगियों को काबे की ओर मोड़ ले, और एड़ी पर बैठे, और 3 बार “रब्बिगिर्लो” गाड़ ले और उँगियां काबा की ओर मोड़ ले, और एड़ी पर बैठे, और 3 बार “वहम्नी, वज्ञुर्नी, वर्फअनी, वर्जुकनी, वन्सुर्नी, कहे, और चाहे तो यह दुआएं भी मिलाए, “वहम्नी, वज्ञुर्नी, वर्फअनी, वर्जुकनी, वन्सुर्नी, वह्दिनी, व आफिनी, वअफु अन्नी”, फिर पहले सज्दे की तरह दूसरा सज्दा करे, फिर “अल्लाहु वह्दिनी, व आफिनी, वअफु अन्नी”, फिर पहले सज्दे की तरह दूसरा सज्दा करे, फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए सर उठाए, और दोनों पंजों पर सहारा लेते हुए खड़ा होजाए, और पहला अक्बर” कहते हुए सर उठाए, और दोनों पंजों पर तशह्वुद के लिए बैठे जिस तरह रकअत की तरह दूसरी रकअत पढ़े, दूसरी रकअत पढ़ कर तशह्वुद के लिए बैठे जिस तरह दोनों सज्दों के बीच में बैठा था, और अपने बाएं हाथ को बाएं जांघ पर रखवे, और दाएं को दाएं जांघ पर, किनारे की दोनों उँगियों को मोड़ले, और अंगूठे और बीच वाली उँगली का गोल घेरा बनाले, और शहादत की उँगली से इशारा करता रहे, और तहीयात पढ़े : “अत्तहियातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तैइबातु अस्सलामु अलैक ऐयुहन्नबियु व रह्मतुल्लाहि व बरकातुहु अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन्, अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहु व रसूलुहु”। फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए तीसरी रकअत के लिए उठे, और रफउ-लू-यदैन करे, और चौथी रकअत के लिए उठते हुए रफउ-लू-यदैन न करे, पहली रकअत ही की तरह तीसरी और चौथी रकअत भी पढ़े, लेकिन इन्हें दूसरी सूरतें न मिलाए, और न ही आवाज़ उँची करे, फिर अन्तिम तशह्वुद के लिए तवरुक करके बैठे, बायां पैर बिछाकर उसे दाएं पैर के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को गाड़े रखवे, और धरती पर बैठे, मात्र अन्तिम तशह्वुद में तवरुक करना सुन्नत है, फिर तहीयात पढ़े, फिर सलात पढ़े : “अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिं-व्य-अला आलि मुहम्मद्, कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्क हमीदुम्मजीद्, अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिं-व्य-अला आलि मुहम्मद्, कमा बारकत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्क हमीदुम्मजीद्,” और “अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बिक मिन् अज़ाबिल्कब्रि व अज़ाबिन्नारि व फिलति-लू-मह्या वल्ममाति व शर्रि-लू-मसीहिद्दज्जालि” और दूसरी दुआएं भी पढ़ना सुन्नत है, फिर दोनों ओर सलाम करे, दाएं ओर चेहरे को करते हुए “अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाह” कहे और इसी तरह बाएं ओर करते हुए भी। और सलाम के बाद यह दुआएं पढ़े।<sup>1</sup>

<sup>1</sup> तीन बार “अस्तिगिरुल्लाह” कहे, फिर पढ़े : “अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु व मिनकम्मलामु तबारकत वा तज़्ज़ज़लानि व-त-इस्म लाइलाह इल्लल्लाह व्य्वहू ला शरीक लहू लहू-न्य-मुल्कु व लहू-त्त-हम्दु व हुब अला कुल्ल शैइन कर्म, ला हैन व ला कुल्ल

**रोगी की नमाज़ :** यदि रोगी को खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से बीमारी बढ़ जाने का डर हो, वह खड़े होकर नमाज़ पढ़ने की शक्ति न रखता हो, तो बैठ कर नमाज़ पढ़े, यदि इस की शक्ति न रखता हो पहलू के बल नमाज़ पढ़े, और यदि यह भी सम्भव न हो तो पीठ के लेट कर नमाज़ पढ़े।

और यदि रुकु'अू और सज्दा करने की शक्ति न हो तो इशारा से रुकु'अू और सज्दा करे, और ज़रूरी है कि छूटी हूई नमाजों की कज़ा करे। और यदि बीमारी के कारण नमाजों को अपने अपने समय पर पढ़ने की शक्ति न रखता हो तो जुह और अस्त्र की नमाज़ इकट्ठा कर के जुह या अस्त्र के वक्त में और इसी तरह मग्निब और इशा की नमाज़ इकट्ठा कर के मग्निब या इशा के समय में पढ़ सकता है।

**मुसाफिर की नमाज़ :** यदि मुसाफिर की यात्रा की दूरी लगभग 80 किमी से अधिक हो, और उस का सफर मुबाह हो तो उस के लिए अफ़ज़्ल यह है कि 4 रक'अत वाली नमाजों को कम कर के 2 रक'अत पढ़े, वैसे 4 रक'अत भी पढ़ना जायज़ है। और यदि वह यात्रा के बीच किसी जगह 4 दिन (20 नमाज़) से अधिक ठहरना चाहता हो तो वहाँ पहुँच कर कम कर किए बिना नमाजों पूरी पढ़े। और यदि उस ने मुकीम की इमामत में नमाज़ पढ़ी, या जाएकियाम (निवासस्थान) की भूली हूई नमाज़ उसे यात्रा के बीच याद आई या इस के बराबरिलाफ तो इन सभी अवस्था में उसे नमाज़ पूरी पढ़नी होगी।

**जुम्मा की नमाज़ :** जुम्मा की नमाज़ जुह की नमाज़ से अफ़ज़्ल है, जो कि जुह के अलावा मुस्तकिल एक नमाज़ है, न कि जुह की कम नमाज़ है, इसलिए इसे 4 रक'अत पढ़ना जायज़ नहीं, और न ही जुह की नियत से पढ़ने से यह नमाज़ होती है, इसी तरह इसे अस्त्र की नमाज़ के साथ इकट्ठा करके पढ़ना भी जायज़ नहीं है, चाहे इकट्ठा करने का सबब मौजूद ही क्यों न हो।

**वित्र की नमाज़ :** वित्र की नमाज़ सुन्नत है, जिसका समय इशा से लेकर फ़जर उदय होने तक रहता है, इस की कम से कम संख्या 1 रक'अत है, और अधिक 11 रक'अत है, प्रत्येक 2 रक'अत के बाद सलाम फेरना अफ़ज़्ल है, 2 सलाम के साथ 3 रक'अत पढ़ना यह अद्दना (न्यूनतम) कमाल है, इनमें पहली रक'अत में सुरतुल आ'ला, दूसरी में सुरतुल काफिरून, और तीसरी में सुरतुल इख्लास पढ़ना मस्नुन है। रुकुअू के बाद हाथ उठाकर कुनूत पढ़ना मुस्तहब है, औश्र ऊची आवाज़ में दुआ करे चाहे अकेले ही क्यों नमाज़ न पढ़ रहा हो।

**जनाज़ः की नमाज़ :** मुस्लिम मैयत को नहलाना, उसे कफ़न देना, उस पर जनाज़ः की नमाज़ पढ़ना, उसे कंधा देना, और उसे दफ़न करना फ़र्ज़े किफायः है, पर जंग में शहीद होने वाले मैयत को नहलाया नहीं जाएगा, और न ही उसे दूसरे कपड़ों में कफ़न दिया जाएगा, बल्कि उसे खून में ही लत-पत दफ़न कर दिया जाएगा, हाँ उसकी नमाज़ः जनाज़ः पढ़ना जायज़ है। मर्द को 3 सफेद चादरों का कफ़न दिया जाएगा, और औरतों को 5 सफेद चादरों का, एक तहवंद होगा, दूसरा दुपट्टा, तीसरी कमीज़ होगी और बाकी दो चादरों में उसे लपेटा जाएगा।

इल्ला बिल्लाह, लाइलाह इल्लल्लाहु व ला ना'अबुदू इल्ला इच्चाहु लहु-नू-नैमतु व लहु-लू-फ़ज्जु व लहु-सु-सनाउ-लू-हसनु लाइलाह इल्लल्लाहु मुहिम्सीन लहुदीन व लौ करिह-लू-काफिरून, अल्लाहुम्म ला मानिअ लैमा आ'अतैत व ला मु'अतिअ लिमा मन'अत व ला यन्फ़उ ज-लू-जदि मिनक-लू-जद्द" फ़ज्र और मग्निब की नमाज़ के बाद इन दुआओं के साथ साथ 10 बार "लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु लहु-लू-मुल्कु व लहु-लू-हम्दु युह्यी व युमीतु व हुव अला कुल्ल शैइन् कदीर" कहे, फिर 33 बार सुब्हानल्लह, 33 बार अलहम्दु लिल्लाह, 33 बार अल्लाहु अक्बर और एक बार "लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु लहु-लू-मुल्कु व लहु-लू-हम्दु व हुव अला कुल्ल शैइन् कदीर" कहे। फिर आयतु-लू-कुर्सी पढ़े, फ़ज्र और मग्निब के बाद इन तीनों सूरतों की तीन तीन बार दोहराए।

**नमाज़े जनाज़:** के लिए इमाम का मर्द के सीने के सामने और औरत के शरीर के बीच हिस्से में खड़ा होना सुन्नत है, जनाज़े की नमाज़ में 4 तक्बीर कहे, प्रत्येक तक्बीर के साथ रफ्त-ल-यदैन करे, पहली तक्बीर के बाद अऊजु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ कर पत्त आवाज में सूरतु-ल-फातिहा पढ़े, फिर दूसी तक्बीर कहे और दस्त पढ़े, फिर तीसी तक्बीर कहे और मैयत के लिए दुआएं करे, फिर चौथी तक्बीर के बाद थोड़ी देर रुके और सलाम फेरे। कब्र को एक वित्ता से ऊँची करना, उसे गच करना, उसे चूमना, धूई देना, उस पर लिखना बैठना या चलना सब कुछ हराम है। इसी तरह कब्रों पर चिराग करना, उसका तवाफ करना, उस पर मस्जिद बनाना, या मस्जिद में दफ़न करना हराम है। और कब्रों पर बने कुब्बों को ढा देना वाजिब है।

\* शब्दों द्वारा ताज़ियत करना मना नहीं है, बल्कि इस तरह के शब्दों द्वारा ताज़ियत करना जायज़ है : “आ’अूज़मल्लाहु अज्जक व अह्सन अज़ाअक व ग़फ़र लिमैयितिक”। और काफिर की ताज़ियत में कहे : “आ’अूज़मल्लाहु अज्जक व अह्सन अज़ाअक”।

\* जिसे यह जानकारी हो कि मरने के बाद उसके घर वाले उस पर नौहा करेंगे उस के लिए वाजिब है कि नौहा न करने की वसीयत करे, नहीं तो उनके रोने धोने के कारण उसे अज़ाब दिया जाएगा।

\* इमाम शाफ़ी फ़रमाते हैं : ताज़ियत के लिए बैठना मकरूह है, चुनान्चि मैयत के घर वालों का ताज़ियत के लिए आने वालों की खातिर किसी जगह बैठने के बजाए अपनी अपनी ज़खरतों के लिए चले जाना उत्तम है, चाहे वे मर्द हों या औरतें हों।

\* मैयत के घर वालों के लिए खाना बनाना सुन्नत है, और मैयत के घर वालों के यहाँ खाना खाना मकूह है, और यह भी मकूह है कि उनके पास इकट्ठा होने वालों के लिए खाना बनाया जाए।

\* यात्रा किए बिना मुस्लिम व्यक्ति की कब्र की ज़ियारत मस्नून है, काफिर की कब्र की ज़ियारत मुवाह है, और काफिर को भी मुस्लिम की कब्र की ज़ियारत से नहीं रोका जाएगा।

\* कब्रिस्तान में आने वालों के लिए यह कहना सुन्नत है : “अस्सलामु अलैकुम दर कौमिम्मोमिनीन, - या कहे : अह्लदियारि मिनल्मोमिनीन - व इन्ना इन शा-अल्लाहु बिकुम त लाहिकून, यर्हमुल्लाहुल् मुस्तक्दिमीन मिन्ना वल् मुस्ता’ख़ीरीन, नस्अलुल्लाहु लना व लकुमुल्लाफ़िय; अल्लाहुम्म ला तहिमा अज्जहुम, व ला तप्रितन्ना बा’दहुम, वग़िर लना व लहुम”। मुमिनों की जमाअत तुम पर शान्ति हो, और इन्शाअल्लाह अवश्य हम भी तुम से मिलने वाले हैं, अल्लाह हमारे पहले और पिछलों पर रहम करे, अल्लाह तआला से हम अपने लिए और तुम्हारे लिए माफ़ी चाहते हैं, ऐ अल्लाह उनके अज्ज से हमें महूम न करना, और उनके बाद हमें परीक्षा में न डालना, और हमें और उन्हें क्षमा कर दे।

**ईदैन की नमाज़ :** ईदैन की नमाज़ फ़र्ज़े किफायः है, और इसे अदा करने का समय चाश्त की नमाज़ का समय है, यदि इसकी जानकारी सूरज ढलने के बाद हुई हो तो दूसे दिन सवेरे इस की क़ज़ा करेंगे, और इसकी भी अदा करने की शर्तें जुम्मा की तरह हैं सिवाए दोनों खुत्बों के, ईदगाह में ईद की नमाज़ से पहले या बाद में नफ़ल पढ़ना मकरूह है। ईद की नमाज़ पढ़ने का तरीका यह है कि दो रक्अत नमाज़ पढ़ी जाए, इमाम पहली रक्अत में तक्बीरतुल्हाम के बाद अऊजुबिल्लाह पढ़ने से पहले 6 अधिक तक्बीरें कहे, और दूसरी रक्अत में सूरतुल्फ़ातिहा पढ़ने से पहले 5 अधिक तक्बीरें कहे, हर तक्बीर के साथ रफ़ज़ यदैन करे फिर अऊजुबिल्लाह पढ़े, फिर ऊँची आवाज़ में सूरतुल्फ़ातिहा पढ़े, पहली रक्अत में

सूरतुल्फातिहा के बाद सब्बिहिस्म रविकल्ला'ला और दूस्री रक'अत में सूरतुल्याशियः पढ़े। सलाम फर्ते के बाद जुम्मा की तरह दो खुत्बा दे, लेकिन इन दोनों खुत्बों के बीच अधिकतर तब्बीर कहना मस्नून है, ईद की नमाज़ नफ़्ल नमाज़ की तरह पढ़ना भी सहीह है; इसलिए कि अधिक तब्बीरें कहना और उनके बीच ज़िक्र करना सुन्नत है।

**कुमूफ़ की नमाज़ :** सूरज या चाँद गहन की नमाज़ पढ़ना सुन्नत है, इसका समय गहन लगने से लेकर समाप्त होने तक रहता है, यदि गहन ख़त्म होजाए तो इसकी क़ज़ा नहीं की जाएगी। यह नमाज़ 2 रक'अत पढ़ी जाएगी, इमाम पहली रक'अत में ऊँची स्वर में सूरतुल्फातिहा और दूस्री लम्बी सूरत पढ़े, फिर लम्बा रुकु'अू करे, फिर समिअल्लाह कहते हुए खड़ा होजाए, रब्बना व लकलू हम्द पढ़ने के बाद सज्दा न करे बल्कि फिर सूरतुल्फातिहा और दूसरी लम्बी सूरत पढ़े, फिर लम्बा रुकु'अू करे, फिर रुकु'अू से उठे, फिर दो लम्बे सज्दे करे, फिर दूसरी रक'अत पहली रक'अत की तरह पढ़े, फिर तशह्वुद पढ़े और सलाम करे, और यदि मुक्तदी पहले रुकु'अू के बाद आकर मिला हो तो उसकी वह रक'अत नहीं होगी।

**इस्तिस्का की नमाज़ :** जब अकाल पड़ जाए, और वर्षा न बरसे तो उस समय वर्षा के लिए इस्तिस्का की नमाज़ पढ़ना सुन्नत है, इस नमाज़ को पढ़ने का समय, इसका तरीका और इसके अट्काम ईद की नमाज़ की तरह है, फ़र्क इतना है कि नमाज़ के बाद मात्र एक खुत्बा है, जिसमें स्तिथि बदल जाने के लिए नेक फ़ाल लेते हुए चादर पलटना सुन्नत है।

\* **नफ़्ल नमाज़ें :** यह साधित है कि नबी ﷺ हर दिन फ़र्ज़ नमाज़ के अन्तिरिक्त ۱۲ रक'अत नफ़्ल नमाज़ें पढ़ा करते थे। जो इस प्रकार थी : फ़ज्ज से पहले ۲ रक'अत, जुहर से पहले ۴ रक'अत, और बाद में ۲ रक'अत, मध्यिव के बाद ۲ रक'अत, और इशा के बाद ۲ रक'अत।

\* **निष्ठिद्व समय :** कुछ ऐसे समय हैं जिन में नमाज़ पढ़ना या सज्दा इत्यादि करना मना है : ① फ़ज्ज से सूरज निकलने तक और उसे निकल कर एक नेज़ा बराबर ऊँचा होने तक। ② जब सूरज बीच आकाश में आजाए यहाँ तक कि वह ढल जाए। ③ अम्र की नमाज़ के बाद से सूरज ढूबने तक। पर ऐसे समय में सबब वाली नमाज़ें पढ़ना जायज़ है। जैसे तहीयतुल मस्जिद, तवाफ़ की ۲ रक'अत, फ़ज्ज की ۲ सुन्नत, जनाज़ा की नमाज़, बुजू की ۲ रक'अत, और सज्दए तिलावत एवं शुक्र।

\* **मस्जिदों के अट्काम :** ज़खरत के हिसाब से मस्जिदें बनाना वाजिब है, अल्लाह तआला के यहाँ मस्जिदें सब से महबूब जगहें हैं, इनमें गाना, ताली बजाना, ढोल बजाना, हराम कविता पढ़ना, मर्दों का औरतों के साथ गडमड होना, सुहवत करना, खरीदना और बेचना हराम है और ऐसे व्यक्ति (खरीदने-बेचने वोल) के बारे में यह कहना जायज़ है : अल्लाह तुम्हारे सीदे में कायदा कहना जायज़ है, अल्लाह तुम्हारी वह चीज़ न लौटाए। इसमें ऐसे बच्चों को शिक्षा देना जो इतिकाफ़ करने वाले व्यक्ति के लिए और दूसरों के लिए भी सोना, मेहमान और रोगी व्यक्ति के लिए रात विताना मुबाह है। इन्हें शोर-शराबे, लडाई झगड़े, फूजूल बातें, बूरी बात करने और बिना ज़खरत रास्ता बनाने से बचाना मस्नून है। और इनमें सासारिक फूजूल बातें करना मक़ब्ला है, इनके कारपेट, झूमर या लाइट इत्यादि को शादी विवाह या ताजियत को मजिस्स में प्रदान नहीं किया जा सकता।

## ज़कात

**ज़कात के माल :** चार तरह के मालों में ज़कात फ़र्ज़ है : ① चरने वाले चौपायों और पशुओं में। ② ज़मीन की उपज में। ③ नगदी में (सोना चाँदी और करेन्सी नोट में)। ④ व्यापारिक सामान में।

**ज़कात घण्टिक होने की शर्तें :** जब तक 5 शर्तें न पाई जाएं ज़कात फ़र्ज़ नहीं होगी :  
 ① इस्लाम। ② आज़ादी। ③ (माल का) निसाब को पहुँचना। ④ पूरी तरह से माल का मालिक होना। ⑤ एक साल बीतना सिवाए ज़मीन की उपज के।

**चौपायों और पशुओं की ज़कात :** मवेशियों और पशुओं की तीन किस्में हैं 1- ऊँट। 2- गाय-बैल। 3- और बकरी।

इनमें ज़कात फ़र्ज़ होने की दो शर्तें हैं : 1- वह पूरे साल या साल के अधिकतर दिनों में चर कर अपना पेट भरते हों। 2- वह दूध और नस्ल की बढ़ोतरी के लिए हों, निजी काम (जैसे खेती-बाड़ी अथवा बोझ ढोने) के लिए न हों। यदि वे व्यापार के लिए हैं तो व्यापारिक सामान की तरह उनकी ज़कात निकाली जाएगी।

**ऊँट की ज़कात इस प्रकार है :**

संख्या	ज़कात कोई ज़कात नहीं	1 - 4	5 - 9	10 - 14	15 - 19	20 - 24	25 - 35	36 - 45	46 - 60	61 - 75	76 - 90	91 - 120
जब ऊँट 120 से अधिक हो जाएं तो हर 50 पर 1 हिक्का, और हर 40 पर 1 बिन्ते लबून देने होंगे।	1 बकरी	2 बकरियां	3 बकरियां	4 बकरियां	1 बिन्ते मखाज़	1 बिन्ते लबून	1 हिक्का	1 जज्रआ	2 हिक्का	2 जज्रआ	2 जज्रआ	
बिन्ते मखाज़ : एक साला ऊँटनी को कहते हैं। बिन्ते लबून : दो साला ऊँटनी को।	कोई ज़कात नहीं											
हिक्का : तीन साला ऊँटनी को। और जज्रआ : चार साला ऊँटनी को कहते हैं।												

**गाय की ज़कात इस प्रकार है :**

संख्या	1-29	30 - 39	40 - 59
ज़कात	कोई ज़कात नहीं	1 तबी'अ् या तबी'आ	1 मुसिन्न या मुसिन्ना
जब गायें 60 या उस से अधिक होजाएं तो हर 30 पर 1 तबी'अ्, और हर 40 पर 1 मुसिन्ना देने होंगे।			
तबी'अ् : एक साला बछड़ा को कहते हैं। तबी'आ : एक साला बछिया को। मुसिन्न : दो साला बछड़ा को। मुसिन्ना : दो साला बछिया को कहते हैं।			

**बकरी की ज़कात इस तरह से है :**

संख्या	1 - 39	40 - 120	121 - 200	201 - 399
ज़कात	कोई ज़कात नहीं	1 बकरी	2 बकरियां	3 बकरियां
जब भेड़ और बकरी 400 या उस से अधिक होजाएं तो हर 100 पर एक बकरी है। और ज़कात में न अन्दू लिया जाए। न बूढ़ा जानवर लिया जाए, न ऐब वाला और न वह जो बच्चा पोस रही हो और न गाभिन और न कीमती ली जाएगी। जज्रअ् उस भेड़ के बच्चे को कहते हैं जो 6 महीने पूरे कर चुका हो। और सभी उस बकरी को कहते हैं जो एक साल पूरा कर चुकी हो।				

**जमीन की उपज में ज़कात :** ज़मीन से उपजने वाले सभी अनाजों और फलों में तीन शर्तों का साथ ज़कात वाजिब है : ① पहली शर्त यह है कि वह मापी और तौली जा सकती हो, और जमा करके रखी जा सकती हो, जैसे अनाज में से गेहूँ और जौ इत्यादि, और फल में ज़ंगूर और खजूर इत्यादि। रही ज़मीन से उपजने वाली वह चीज़ें जो मापी न जाती हों और न जमा करके रखी जा सकती हों, जैसे साग और सब्ज़ी और इस तरह की दूसरी चीज़ें जो इसमें ज़कात नहीं हैं। ② दूसरी शर्त यह है कि वह निसाब को पहुँच रही हों, अर्थात् 553 किलो ग्राम हों या इस से अधिक। ③ तीसरी शर्त यह है कि वह ज़कात के फ़र्ज़ होने के समय उस की मिलकियत हो। ज़कात फलों में वाजिब उस समय होती है जब वह पक कर रल या पीले होगए हों, और अनाजों में उस समय जब दाने सख्त होगए हों।

और ज़मीन की उन उपज में जिनकी सिंचाई बिना मेहनत और परेशानी उठाए हुई हो, वर्षा और नहर के पानी इत्यादि द्वारा तो उस में (10%) दसवां हिस्सा ज़कात है, रही वह ज़मीनें जो मेहनत और परेशानी से सैराब की गई हों रहट, गधों या ऊँटों द्वारा तो उनमें (5%) बीसवां हिस्सा वाजिब है। रही वह जमीनें जिसकी सिंचाई में कुछ दिन मेहनत करनी पड़ी हो और कुछ दिन बिना मेहनत किए हुई हो तो उसी के हिसाब से अनाज की ज़कात निकालेंगे।

**कीमती धनदुआँ की ज़कात :** जो कि दो तरह की हैं : नगदी की ज़कात की दो किस्में हैं : ① सोना। यदि यह 85 ग्राम से कम हो तो इसमें ज़कात नहीं है। ② चाँदी। यदि यह 595 ग्राम से कम हो तो इसमें ज़कात नहीं है। और नगदी रूपये पैसों में भी उस समय तक ज़कात वाजिब नहीं है जब तक कि वह इन दोनों में से किसी एक की कीमत तक न पहुँच जाए। और इनकी ज़कात की मिक्दार (2.5%) चालीसवां हिस्सा है।

और जो ज़ेवर औरत के प्रयोग में हो उस में ज़कात नहीं है, पर जो किराए के लिए हो या उन्हें पूँजी के तौर पर सुरक्षित किया गया तो उन में ज़कात है।

औरतों के लिए सोने और चाँदी के वह सभी ज़ेवर जायज़ और मुबाह हैं जो आम तौर से पहने जाते हों। बर्तन में थोड़ी सी चाँदी का प्रयोग भी मुबाह है, और उसका थोड़ा सा प्रयोग अंगूठी या चश्मा इत्यादि के रूप मर्दों के लिए भी मुबाह है। पर बर्तन में सोना लगाना हराम है, पर कपड़े के बटन और दाँत की सिलाई के लिए इसका थोड़ा सा प्रयोग मर्दों के लिए जायज़ है इस शर्त के साथ कि इस में औरतों की मुशाबहत न हो।

और जिस व्यक्ति के पास माल घटता बढ़ता रहता हो, और प्रत्येक माल की ज़कात साल पूरे होने पर निकालना कठिन हो तो ऐसा व्यक्ति साल में एक दिन नियुक्त कर ले, और उस दिन जितने धन का मालिक हो 2.5 उसकी ज़कात निकाले, अगरचे कुछ माल पर साल न बीते हों, और जिसकी फिक्स तन्हाह हो या उसने घर वगैरः किराए पर दिए हों लेकिन इससे कुछ बचता न हो तो उसमें ज़कात नहीं है चाहे जितने ही अधिक क्यों न हों। और यदि कुछ बचता हो तो साल पूरे होजाने पर उस की ज़कात निकाले। नहीं तो साल में एक दिन खास करले और उस दिन अपने माल की ज़कात निकाले।

**कर्ज का हुक्म :** जिस व्यक्ति का किसी मालदार के जिसे कर्ज हो, या ऐसा माल हो जिसे छुड़ा लेना सम्भव हो, तो जब इन्हें अपने कब्जे में करले तो इन पर पिछले सभी सालों की ज़कात फ़र्ज होगी, चाहे जितने ही साल क्यों न बीत गए हों, और यदि अपने कब्जे में लेना उसके लिए सम्भव न हो, जैसे कर्ज किसी ऐसे व्यक्ति के जिसे हो जिसका दीवालिया हो गया

हो, तो जब तक वह उसे पा न ले, उस पर ज़कात नहीं, और जब पा ले तो मात्र उसी साल की ज़कात होगी, पिछले सालों की नहीं, चाहे जितने साल ही क्यों न बीत चुके हों।

**तिजारती सामान की ज़कात :** तिजारती सामान में ज़कात नहीं जब तक कि उसमें 4 शर्तें न पूरी हो जाएँ : ① पहली यह कि सामान उसके कब्जे में हो। ② दूसरी यह कि मिलकीयत व्यापार की नियत से हो। ③ तीसरी यह कि उस सामान का दाम निसाब के बराबर हो, अर्थात् 20 मिसकाल सोने या 200 दिर्हम चाँदी के बराबर हो। ④ चौथी यह कि उस पर पूरा एक साल बीत चुका हो। तिजारती सामान में जब यह चारों शर्तें पाई जाएँ तो उनकी कीमत में ज़कात निकाली जाएगी, और यदि उसके पास तिजारती सामान में सोना और चाँदी दोनों हों तो सामान की कीमत के साथ सोना और चाँदी दोनों की कीमतें जोड़ी जाएंगी, और निसाब पूरा करने में दोनों का लिहाज़ किया जाएगा। जब तिजारती सामान को स्वयं प्रयोग करने की नियत करले जैसे कपड़े हों या घर इत्यादि जिन्हें स्वयं प्रयोग करने की नियत करले तो उनमें ज़कात नहीं है, और यदि उसके बाद उनमें फिर व्यापार की नियत करले तो नियत के फिरने के दिन से साल पूरा करे फिर ज़कात दे।<sup>1</sup>

**सद्क़ए फित्र :** सद्क़ए फित्र हर मुसलमान व्यक्ति पर वाजिब है, बशर्तेकि वह ईद के दिन अपने और अपने बाल बच्चों के खाने पीने से अधिक माल का मालिक हो, सद्क़ए फित्र की मात्रा एक व्यक्ति की तरफ से चाहे वह मर्द हो या औरत 2.25 किलो है, जिसे उस खाने की चीजों में से दिया जाएगा जिसे आम तौर पर शहर में खाया जाता हो, और जिस व्यक्ति पर अपना सद्क़ए फित्र लाज़िम है उस पर हर उस व्यक्ति की ओर से भी सद्क़ए फित्र लाज़िम है जिसकी ईद के दिन उस पर जिम्मादारी है बशर्तेकि वह उतने माल का मालिक हो जिसे वह उसकी ओर से दे सके। और सद्क़ए फित्र का ईद के दिन नमाज़ से पहले निकालना मुस्लिम है, और ईद की नमाज़ से देर करना जायज़ नहीं है, और ईद से एक या दो दिन पाले निकालना भी जायज़ है, और कई लोगों का सद्क़ए फित्र एक व्यक्ति को देना जायज़ है, इसी तरह एक व्यक्ति का सद्क़ए फित्र भी कई एक लोगों को देना जायज़ है।

**ज़कात निकालने का समय :** ज़कात निकालने की यदि शक्ति हो तो उसके वाजिब होने के समय से निकालने में देरी करना जायज़ नहीं है, और छोटे बच्चे और पागल व्यक्ति की ओर से उस का बली ज़कात निकालेगा। लोगों को दिखा कर ज़कात निकालना और स्वयं उसे बांटना मस्नून है, ज़कात निकालने के लिए नियत शर्त है, आम सद्क़का की नियत से बांट गया माल ज़कात की ओर से काफ़ी नहीं है, चाहे पूरा ही माल सद्क़का में क्यों न बांट दिया हो, और उत्तम यह है कि देश के ही फ़कीरों में उस की तक़सीम हो। और किसी कारण बस देश से बाहर भेजना भी जायज़ है, धन यदि निसाब के बराबर हो तो अगले साल की ओर से भी ज़कात निकालना जायज़ है।

**ज़कात के हक्कदार :** ज़कात के हक्कदार 8 हैं : ① फुकरा ② मसाकीन ③ आमिलीन : इससे मुराद हुकुमत के वह कर्मचारी हैं जिनकी हुकुमत को ज़कात की वसूली और तक़सीम में ज़खरत पड़ती हो। ④ मुवल्लफ़तुल कुलूब : यह वह लोग हैं जो अपने कर्वीओं के मरण

<sup>1</sup> तिजारती सामान का निसाब 85 ग्राम सोने की कीमत है, या 595 ग्राम चाँदी की कीमत है। और उसका निकालने का समय इनमें से कम का एतिवार करेगा।

और अमीर हों, जिन्हें देने से उनकी बुराई से बचना, या उनकी ईमान की मज़बूती, या उन्नतमानों से उन्हें दूर करना मक्क्षुद हो, या ज़कात न देने वालों से ज़कात की वसूली में उन्हें सहायता की उम्मीद की जाती हो। **५ रिकाब :** इससे मुराद मुकातिबीन (ऐसे दास जो उन्हें मालिकों से तय किया हुवा माल देकर आज़ादी के लिए समझौता कर चुके हों) और उन्होंने कर आज़ाद किए जाने वाले गुलाम हैं। **६ ग़ारिमीन :** अर्थात् : कर्जदार (ऋणी)।

**७ की सबीलिल्लाह,** अल्लाह के रास्ते में **८ इब्नु-स्सवील,** हाजतमंद यात्री। ज़र्खरत के अनुसार इन सारे लोगों में ज़कात तक्सीम की जाएगी, पर कर्मचारी को उसके काम की उन्नति के बराबर दिया जाएगा चाहे वह धनी ही क्यों न हो। हाकिम ने यदि रिज़ामन्दी से या बबरदस्ती ज़कात ली तो वह काफ़ी है, ज़कात लेने में उस ने चाहे न्याय किया हो या अन्याय। यदि ज़कात का माल काफ़िर, दास, धनी, और जिसका ख़र्चा उस पर लाज़िम है, और बनू बाशिम को देता है तो काफ़ी नहीं होगा। इसी तरह अज्ञानता में यदि किसी ऐसे व्यक्ति को ज़कात दे जो कि उस का हक़्कदार नहीं फिर उसे जानकारी हो जाए तो यह भी काफ़ी नहीं है, पर यदि किसी को फ़कीर समझ कर दिया और वह धनी निकला तो यह काफ़ी होजाएगी।

**बफ़ल सद्दक़ा :** अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : “मृत्यु के बाद इन्सान को जो कर्म और नेकी पहुँचती है, यह वह शिक्षा है जिस की उसने तालीम दी और फैलाया, या नेक संतान है जिन्हें उसने छोड़ा, या मुस्हफ़ है जिसका उसने वारिस बनाया, या मस्जिद है जो उसने बनाई, या घर है जिसे उसने यात्रीयों के लिए बनाया, या नहर है जिसकी उसने खोदाई कराई, या सद्दक़ा है जिसे उसने अपने जीवन में स्वस्थ अवस्था में निकाला, तो मौत के बाद यह चीजें उसे पहुँचेंगी”। (इब्ने माज़ा)

## रोज़ा

रमजान के रोजे हर अकलुमंद और बालिग मुसलमान पर जो रोज़ा रखने की शक्ति रखता हो फर्ज़ है, जिसके लिए ऐसी औरत के जिसे माहवारी या निफास का खून आरहा हो। वच्चा यदि रोज़ा रख सकता है तो उसे भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया जाएगा ताकि उसे उसकी आदत पड़ सके। रमजान के आने की जानकारी के 2 तरीके हैं : ① रमजान का चाँद दिखाई देना। जिसके लिए एक भरोसेमंद मुस्लिम व्यक्ति की गवाही काफ़ी है जो कि शरीअत का मुकल्लफ़ हो। ② शाबान के महीने का पूरे 30 दिन का होजाना। यह बात स्पष्ट रहे कि हर दिन सुब्हे सादिक निकलने से लेकर सूरज इबने तक रोज़ा वाजिब रहता है, और फर्ज़ रोज़े के लिए फज्ज से पहले ही नियत करना ज़रूरी है।

**रोज़े को फ़ासिद कर देने वाली चीज़े :** ① पत्नि से सम्भोग करना : इससे रोज़े की क़ज़ा और कफ़ार : दोनों लाज़िम आता है। कफ़ार : एक गुलाम (दास) आज़ाद करना है, जिसके पास गुलाम न हो तो लगातार दो महीने रोज़े रख्बे, और जो रोज़े रखने की शक्ति न रखता हो वह 60 ग्रीबों को खाना खिलाए, और जो उसकी भी शक्ति न रखता हो तो उस पर कुछ नहीं। ② औरत को चुम्पा लेने, छूने, या बार बार देखने से मनी का निकलना, या ग़लत तरीके से वीर्य-पात करना। ③ जानबूझ कर खा पी लेना, यदि भूल कर खाया पिया हो तो रोज़ा सहीह है। ④ शरीर से खून निकालना : चाहे सिंगी के कारण हो, या किसी बीमारी की सहायता करने के लिए खून दान करने के कारण। परन्तु थोड़ा खून जो जांच के लिए निकाला गया हो, या ऐसा खून जो बिना इरादे के निकल आया हो जैसे नक्सीर इत्यादि तो इससे रोज़ा फ़ासिद नहीं होता। ⑤ जानबूझ कर उल्टी करना।

यदि गले में गर्द चला जाए, या कुल्ली करते और नाक में पानी खींचते हुए गले में पानी पहुंच जाए, या सोचने के कारण या सोते समय मनी निकल आए, या बिना इरादे के खून निकल आए या उल्टी होजाए तो इससे रोज़ा नहीं टूटता।

और जो व्यक्ति रात समझ कर खा-पी ले फिर दिन निकल आए तो उस पर रोज़े की क़ज़ा है और जिसे सुब्हे सादिक के होने में शक हो और खा-पी ले तो उसका रोज़ा फ़ासिद नहीं होगा। और यदि सूरज इबने में शक हो और खा-पी ले तो उस पर उस रोज़े की क़ज़ा लाज़िम होगी।

**मुफ्तटीज़ (रोज़ा न रखने वालों) के अह्काम :** बिना किसी उज्ज़ के रमजान के रोज़े न रखना हराम है, पर हैज़, और निफास वाली औरतों पर रोज़ा तोड़ना वाजिब है, और उस व्यक्ति पर जिसे किसी को बचाने के लिए रोज़ा तोड़ने की ज़रूरत हो। और मुबाह यात्रा की अवस्था में यदि रोज़ा रखना कष्ट-दायक हो तो ऐसे मुसाफ़िर के लिए रोज़ा तोड़ देना मस्तून है। और ऐसे मुकीम के लिए भी रोज़ा तोड़ना मुबाह है जिसने दिन में सफ़र किया हो। इसी तरह गर्भवती और दूध पिलाने वाली औरत को अपने या अपने शिशू के बारे में डर हो तो उस के लिए भी रोज़ा न रखना मुबाह है। और इन सभों पर मात्र छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा है, पर गर्भवती और दूध पिलाने वाली स्त्री ने यदि मात्र शिशू पर डर के कारण रोज़ा तोड़ हो तो वे हर दिन के बदले रोज़े की क़ज़ा के साथ साथ एक मिस्कीन को खाना भी खिलाएंगी। और जो बूढ़ापे या ऐसी बीमारी के कारण जिस से निरोग होने की आशा न हो रोज़ा न रखता हो वह हर दिन के बदले एक ग्रीब को खाना खिलाए, और इन पर रोज़ों की क़ज़ा नहीं है। और जो किसी उज्ज़ के कारण क़ज़ा में देरी करे यहाँ तक कि दुसरा रमजान आजाए तो उस पर मात्र क़ज़ा है, और यदि बिना किसी उज्ज़ के उसने क़ज़ा करने में कोताही की यहाँ तक कि

मृत्यु रमजान आगया तो कज़ा के साथ साथ हर दिन के बदले एक ग्रीब को खाना भी खेला। और यदि किसी उज्ज़ के कारण उसने कज़ा करने में देरी की यहाँ तक उसकी मृत्यु हो इह तो उस पर कुछ भी नहीं है, और यदि बिना उज्ज़ के न रखा तो उस की ओर से हर दिन के बदले एक ग्रीब को खाना खिलाया जाएगा, परन्तु यदि वह रोज़े नज़र के हों, या रमजान के छूटे हुए रोज़े हो जिनकी कज़ा में कोताही हुई हो तो उसकी ओर से उसके करीबी लोगों के लिए यह रोज़े रखना सुन्नत है। और हर नज़र पूरी करना उस की ओर से नेकी है।

और यदि किसी ने किसी उज्ज़ के कारण रोज़ा नहीं रखवा और अभी दिन में कुछ समय बाकी ही था कि उसका उज्ज़ खत्म होगया तो ऐसे व्यक्ति पर लाज़िम होगा कि दिन के बाकी समय में खाने, पीने, और सम्भोग करने से रुके रहे, और यदि दिन में काफिर इस्लाम ले आए, या हैज़ खाने, पीने, और सम्भोग करने से रुके रहे, और यदि दिन में काफिर इस्लाम ले आए, या यात्री वापस आजाए, या बच्चा बाली औरत हैज़ से पवित्र हो जाए, या रोगी निरोग होजाए, या यात्री वापस आजाए, या बच्चा बालिग होजाए, या पागल ठीक होजाए और यह रोज़े की हालत में न हों तो इन पर रोजों की कज़ा लाज़िम है चाहे वचे हुए समय को रोज़ा रख कर ही क्यों न बिताए हों। और रमजान में रोज़े के लिए दोनों दोनों मात्राएँ हो वह नफर्ली रोज़ा रमजान में नहीं रख सकता।

**जिस के लिए रोज़ा तोड़ दना मुबाह हा वह नफला रोज़ा रमजान का है इसका अर्थ है कि नफली रोज़े : सब से अफ़ज़ल एक दिन रोज़ा रखना और एक दिन इफतार करना है, फिर सोमवार और जुम्रात के दिन का रोज़ा है, फिर हर महीने 3 दिन का रोज़ा है, और इसमें अफ़ज़ल ऐयामे बीज़ अर्थात् चाँद के हिसाब से 13,14 और 15 तारीख़ का रोज़ा है। और मुहर्रम और शाबान महीने के अधिकतर दिनों का रोज़ा रखना, आशूरा (अर्थात् 10 मुहर्रम) रोज़ा, अरफ़ा का रोज़ा और शब्वाल के 6 रोज़े रखना मस्नून् है। पर मात्र रजब का रोज़ा रखना, या मात्र जुम्मा या सनीचर का रोज़ा रखना, या शक के दिन रोज़ा रखना जैसे 30 शाबान का रोज़ा जिस दिन चाँद निकलने के बारे में शक हो, तो यह सारे रोज़े मकूर हैं। और ईद और बकरीद के दिन और इसी तरह अव्यामे तशीक अर्थात् 11,12, और 13 जिल्हिज्जा को रोज़ा रखना ह्राम है, पर जो हज्जे तमन्त'अ या किरान के कुर्बानी के बदले रोज़ा रख रहा है तो उस के लिए अव्यामे तशीक में रोज़ा रखना मुबाह है।**

जाइरी बाटौँ :

- \* जिसे बड़ी नापाकी लगी हो, जैसे जुन्वी, और हैंज़ और निफास वाली औरत जब वे फ़ज़्र से पहले पाक हो जाएं तो उनके लिए फ़ज़्र की अज़ान के बाद नहाना और नहाने से पहले सहरी खा लेना जायज़ है, और इनका रोज़ा सहीह़ है।
  - \* रमज़ान में औरत के लिए नेकी के कामों में मुसलमानों के साथ साझी रहने के इगादे से ऐसी दवा लेना जिस से उसकी माहवारी कुछ दिनों के लिए रुक जाए जायज़ है, परन्तु शर्त यह है कि वह उसके लिए हानिकारक न हो।
  - \* रोज़ेदार के लिए थूक या खकार यदि मुंह के अन्दर हो तो उसे निगल जाना जायज़ है।
  - \* नवी ~~ईश्वरी~~ का फरमान है : “मेरी उम्मत के लोग बराबर भलाई में रहेंगे जब तक वह इफ्तार में जलदी करेंगे, और सहरी में देर करेंगे”। अहमद। और आप ~~ईश्वरी~~ ने यह भी फरमाया: “धर्म उस समय तक गालिब रहेगा जब तक लोग इफ्तार करने में जलदी करेंगे, क्योंकि यहूदी और नसरानी देरी करते हैं” (अबू दाऊद)
  - \* इफ्तार के समय दुआ करना मुस्तहब है, नवी ~~ईश्वरी~~ का फरमान है : “रोज़ा खोलने के समय रोज़ेदार की दुआ लीटाई नहीं जाती”। और इफ्तार के समय जो दुआएं साधित हैं उनमें

से एक दुआ यह है : “ज़हबज्ज़मउ वब्तल्लतिल् उर्खु व सबतल् अज्ञु इनशाअल्लाह” “पियास बुझ गई, रगें तर हो गई, और यदि अल्लाह ने चाहा तो सवाब साबित हो गया”।

\* सुन्नत यह है कि इफ्तार रोतब खजूर से हो, यदि रोतब खजूर न मिल सके तो सुखी खजूर ही काफी है, और यदि वह भी न मिले तो पानी से इफ्तार करे।

\* रोजेदार के लिए मुनासिब यह है कि रोज़े की हालत में सुरमा लगाने और आँख या कान में डरॉपस डालने से बचे, विरोध से निकलने के लिए इससे बचना बेहतर है। और यदि दवा डालना ज़रूरी हो तो ऐसा कर लेने में कोई आपत्ति नहीं, चाहे दवा का मज़ा उसकी हल्कतक पहुंच जाए फिर भी उसका रोज़ा सहीह होगा।

\* सहीह कौल की रु से रोज़े की अवस्था में किसी भी समय मिस्वाक करना सुन्नत है।

\* रोजेदार के लिए मुनासिब यह है कि वह गीबत, चुगलखोरी, और झूट जैसी बूरी आदतों से बचे और यदि कोई उसे गाली दे या बुरा भला कहे तो उससे कह दे कि मैं रोज़े से हूँ। और वह अपनी जुबान और दूसरे अंगों को बुराई से बचाकर ही अपने रोज़े की सुरक्षा कर सकता है। इस बारे में नबी ﷺ की हदीस है : “जिस ने झूटी बात कहना, और उसके बमोजिब कर्म करना न छोड़ तो अल्लाह तआला को उसके भ्रके और प्यासे रहने की कोई ज़रूरत नहीं है”।

\* जिसे खाने पर दावत दी गई हो और वह रोज़े से हो तो दावत देने वाले के लिए दुआ करे, और यदि रोज़े से न हो तो उस के साथ खाए।

\* शबे क़द्र साल भर की रातों में सब से महत्वपूर्ण रात है। जिसे रमज़ान की अन्तिम दस रातों में प्राप्त किया जा सकता है, 27 की रात में इसे प्राप्त करने की सम्भावना अधिक होती है। इस एक रात्री में कर्म करना एक हजार महीने में कर्म करने से बेहतर है, इस की कुछ निशानियां हैं : इसके सवेरे सूरज सफेद निकलता है जिस में अधिक चमक नहीं होती। कभी ऐसा भी होता कि मुस्लिम व्यक्ति को इसकी जानकारी नहीं हो पाती है, ताकि वह रमज़ान में अधिक इबादत करने की प्रयास करे, खासकर अन्तिम दस रातों में, और किसी भी रात को कियाम किए बिना बीतने न दे, और यदि जमाअत के साथ तरावीह पढ़ी हो तो मुक्कत तरावीह समाप्त होने से पहले न निकले ताकि उसके लिए पूरी रात का कियाम लिख दिया जाए।

\* नफ़ल रोज़े की नियत करने के बाद उसे पूरा करना वाजिब नहीं मस्नून है। और यदि जानबूझ कर भी उसे तोड़ दे तब भी कोई आपत्ति नहीं है, और इस की क़ज़ा भी नहीं है।

\* इबादत की खातिर अक़लमंद, मुसलमान व्यक्ति का मस्जिद को लाज़िम एकड़ लेना एतिकाफ कहलाता है। इस के लिए शर्त यह है कि मُ'अ्तकिफ (एतिकाफ करने वाला) बड़ी नाशकी से पाक हो, और मस्जिद से मात्र ज़रूरी हाज़रों के लिए ही बाहर निकले, जैसे खाने के लिए, शौचालय जाने के लिए, या वाजिबी स्नान के लिए आदि। बिना ज़रूरत के निकलने से, व बिवी से सम्भोग करने से एतिकाफ बातिल होजाता है। साल में किसी भी समय एतिकाफ करना मस्नून है, रमज़ान में एतिकाफ करने पर अधिक ज़ोर दिया गया है, खासकर अन्तिम दस दिनों में। एतिकाफ कम से कम एक घंटे का होना चाहिए। मुस्तहब यह कि 24 घंटे से कम का न हो। औरत अपने पति की अनुमति के बिना एतिकाफ न करे, मुतक्किम इबादत और ताज़ित व अपने आप को व्यस्त रखे। अधिक मुबाह चीज़े करने से बचे, इसी तरह बिना ज़रूरत की चीज़ों से दूर रहे।

## हज्ज तथा उम्रा

१ और उम्रा जीवन में एक बार फर्ज है, इनके फर्ज होने की शर्तें नीचे लिखी गई हैं :

१ इस्लाम। २ अक्ल (बुद्धि)। ३ बुलूगत। ४ आज़ादी। ५ का'बा तक पहुँचने की अस्तित्वात : इस्तित्वात का अर्थ यह है कि रास्ते का खर्च और सवारी उसके पास हो। जिसने इस फरीज़ा को अदा करने में कोताही की यहाँ तक की उसकी मौत होगई तो उनके माल से इतनी रक्म निकाल ली जाएगी जिस से हज्ज और उम्रा अदा हो सके। काफिर और पागल का हज्ज और उम्रा सहीह नहीं होगा, और बच्चे और गुलाम का हज्ज और उम्रा जलना सहीह है पर यह उनके लिए काफ़ी नहीं होगा अर्थात् बच्चे को बालिग होने और गुलाम को आज़ाद होने के बाद दोबारा हज्ज और उम्रा करना पड़ेगा, तभी उनसे इस फरीज़े की अदाएगी होगी, और जो व्यक्ति हज्ज करने की शक्ति न रखता हो उसका भी हज्ज करना सहीह है, और जो किसी दूसरे की ओर से हज्ज करे और स्वयं अपनी ओर से उसने हज्ज न किया हो तो उसका हज्ज दूसरे की ओर से न होगा बल्कि उस के फरीजे की अदाएगी होगी।

**इहराम :** इहराम बाँधने का इरादा करने वाले व्यक्ति के लिए मुस्तहब है कि वह नहाए, और खुशबूलगाए, और सिले हुए कपड़े उतार कर लुंगी और चादर पहन ले, जो सफेद और साफ़-सुधरे हों, यदि मात्र उम्रा की नियत हो तो “लब्बैक अल्लाहुम्म उम्रतन्” कहे, या मात्र हज्ज की नियत हो तो “लब्बैक अल्लाहुम्म हज्जन्” कहे, और यदि हज्ज और उम्रा दोनों की नियत हो तो “लब्बैक अल्लाहुम्म हज्जन् व उम्रतन्” कहे, और यदि उसे डर हो कि रास्ते में उसे रोक लिया जाएगा, तो यह कहकर शर्त लगाए “फ़इन हबसनी हाविसुन फ़महिल्ली हैसु हबस्तनी”। कि यदि मुझे कोई रोकावट पेश आगई तो जहाँ मुझे यह रोकावट आएगी वहाँ हलाल होजाउंगा। और उसे इसका अधिकार है कि हज्ज की तीनों किस्मों तमतु’अ, इफ्राद और किरान में से जो चाहे करे, पर सब से अफज़ल हज्जे तमतु’अ है, और उसका विवरण इस प्रकार है कि हज्ज के महीने में उम्रा का इहराम बांधे, और उम्रा करके इहराम खोल दे, और हलाल होजाए, फिर उसी साल के हज्ज का इहराम बांधे, और हज्जे इफ्राद यह है कि मात्र हज्ज का इहराम बांधे, और किरान यह है कि हज्ज और उम्रा दोनों का इहराम एक साथ बांधे, या उम्रा का इहराम बांधे फिर तवाफ़ करने से पहले उसमें हज्ज को भी शामिल करले, और जब वह अपनी सवारी पर सीधा बैठ जाए तो तल्बिया पूकारे और कहे : “लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल् हम्द वन्नेअमत लक वलमुल्क ला शरीका लक “हाजिर हूँ ऐ अल्लाह! मैं हाजिर हूँ, हाजिर हूँ तेरा कोई साझी नहीं, हाजिर हूँ तारीफ़, प्रशंसा और नेमत और बादशाहत तेरी ही है, तेरा कोई साझी नहीं।” और इसे बहुत ज्यादा और ऊँची आवाज़ से पढ़ना मुस्तहब है, पर औरतें आहिस्ता पढ़ें।

**इस्टाम की अवस्था में मम्बू’अ (निष्पिद्ध)** चीज़े : यह पूरे नौ हैं : १ बाल काटना। २ नाखुन काटना। ३ मर्द के लिए सिला हुवा कपड़ा पहनना, परन्तु उसके पास लुंगी न हो तो पाजामा पहन सकता है, और यदि जूते न हों तो मोज़े पहन सकता है पर उसे काट दे ताकि टखने से नीचे होजाए। और उसके कारण उसे कोई फिद्या नहीं देना होगा। ४ मर्द के लिए सर ढांपना, और चुंकि दोनों कान भी सर ही का हिस्सा हैं इसलिए उन्हें भी खुला रखना ज़रूरी है। ५ अपने जिस्म और कपड़े में खुशबूलगाए। ६ जंगल के ऐसे पशुओं का शिकार करना जिनका गोशत खाना जायज़ है। ७ निकाह करना (निकाह करना हराम है पर इसमें कोई फिद्या नहीं)। ८ सेक्स (खाहिश) के साथ बीवी के बदन को छूना और इसका फिद्या यह है कि उस पर एक बक्री की कुर्बानी लाजिम होगी, या 3 दिन का रोज़ा रखना या 6 मिस्कीन को खाना खिलाना। और उसका हज्ज सहीह होगा। ९ सम्भोग करना, यदि यह तहल्लुले अवल से पहले

ही (अचौत दस तारीख के चार कामों में से विसी भी दो काम को करने से पहले हो) तो उसका हज्ज फारिद ही जाएगा, परं इस फारिद हज्ज को पूरा करना उसके लिए लाजिब होगा, और आगे वाले साल उसकी कज्ञा उस पर लाजिम होगी, और एक ऊट जबह करके उसे मका के मरीबों में बांटना होगा, और यदि तहल्लुले अबल के बाव हो तो उसे एक ऊट जबह करना होगा, और तन्हैम से इहराम बांध कर फिर से गोहरिम होकर मका आकर तवाफ करना पड़ेगा, और यदि उसने उमा में सम्पोग किया है तो उसका उमा फारिद हो जाएगा, और उसे दम के रूप में बड़ी जबह करनी होगी, और उस उमे की कज्ञा करनी होगी। हज्ज और उमा को सम्पोग के अतिरिक्त कोई और चीज़ फारिद नहीं करती।

और औरत मर्द ही की तरह है सिवाय इसके कि उसका इहराम उसके घोरे में भी होगा, और वह सिला हुवा कपड़ा भी पहनेगी, पर वह बुक़'अ, निकाब और दस्ताने नहीं पहन सकती है।

**फिद्या :** फिद्ये दो प्रकार के हैं : ① एक वह है जिसमें उसे अधिकार प्राप्त है : यह बाल पुढ़ाने, या खुशबू लगाने, या नाखून काटने, या सिर ढांपने, या सिला हुवा कपड़ा पहनने का फिद्या है, इस स्थिती में उसे अधिकार प्राप्त है कि वह या तो 3 दिन का रोज़ा रखें, या 6 गरीबों को खाना खिलाए हर एक को आधा साँझ अर्थात् 1.5 किलो दे, या एक बक्री जब्ब करे। और शिवार का फिद्या उसी तरह का पशु है जिस तरह के पशु का उसने शिकार किया है। ② दूसरी सिलसिलावार है : और यह हज्जे तमतु'अ और किरान करने वाले का फिद्या है, उस पर (कुबोनी के तौर पर) एक बक्री लाजिम होती है, यदि बक्रि न मिल सके तो हज्जे के दिनों में वह 3 दिनों का रोज़ा रखेगा और 7 दिन के रोज़े हज्जे से लौटने के बाद रखेगा। और सम्भोग करने का फिद्या एक ऊंट है यदि न कर सके तो उसपर हज्जे तमतु'अ करने वाले की तरह रोज़े हैं। और जो भी फिद्या होगा वह हरम के फकीरों और गरीबों के लिए होगा, या जो खाना खिलाए जाएगे, वह मात्र हरम के फकीरों और गरीबों को खिलाए जाएगे।

और तस्लील करे, और काबा की ओर चेहरा करके दोनों हाथ उठाकर दु'आ करे, जब उतरे और ग्रीन (हरी) लाइट आने तक आम चाल चले, फिर वहाँ से दूसरी ग्रीन लाइट ले लड़ दौड़े, फिर आम चाल चले यहाँ तक कि मर्वः आजाए, और मर्वः पर भी वैसे ही ऐसे सफ़ा पर किया था, पर आयत न पढ़े, फिर मर्वः से उतरे और चलने की जगह में और दौड़ने की जगह में दौड़े, इस तरह वह सात फेरे पूरे करे, (सफ़ा से मर्वः जाना केता हुवा और मर्वः से सफ़ा आना दूसरा फेरा)। फिर अपने बाल कटवाए या मुंडवाए, जिन्हें अफ़ज़ल है, लेकिन हज्जे तमतु'अ् करने वाले व्यक्ति के लिए बाल कटाना अफ़ज़ल है वह बाकी बाल को हज्ज के बाद मुंडवाए। पर हज्जे किरान और इफ़्राद करने वाले सई करने वाद हलाल नहीं होंगे, बल्कि वह ईद के जमर-ए-कबा की रम्य करने के बाद हलाल होंगे। और औरत के अस्काम मर्द ही की तरह हैं, पर वह तवाफ़ और सई में रमल नहीं करेगी।

**इस्लाम का तरीक़ा :** और जब यौमत्तर्विया अर्थात् आठवीं जिल्हिज्जा आए तो जिसने अपना इहराम लिया हो वह मक्का में अपने डेरे से ही फिर से इहराम बांधे, और मिना में नौवीं की रात निकले के लिए मिना जाए, नौवीं तारीख को जब सूरज निकल आए तो चाश्त के समय अरफ़ा के लिए निकल पढ़े, और जब सूरज ढल जाए तो जुह और अस्न की नमाज़ एक साथ क़स्त करके हो, अरफ़ा के अन्दर कहीं भी ठहर सकता है सिवाय वादिए उरना के, और अरफ़ा में ज्यादा से बदा वह दुआ करे : "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحُنْدُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ"

लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन् लाइर। सूरज ढूबने तक बराबर दुआ करता रहे, तौबा करे, और अल्लाह से अपना नाता जोड़े, फिर सूरज ढूबने के बाद मुज्दलिफ़ा के लिए निकले, आराम और शान्ति के साथ चले, बराबर तत्त्विया पढ़ता रहे, और अल्लाह का ज़िक्र करता रहे, और जब मुज्दलिफ़ा पहुंच जाए तो मग्निब और इशा क़स्त करके दोनों एक साथ पढ़े, मुज्दलिफ़ा में रात बिताए, और फ़ज़्र की नमाज़ फ़ज़्र निकलते ही गुलस में पढ़े, और मुज्दलिफ़ा हीं में रह कर दु'आ करता रहे, यहाँ तक कि जब ढूब उजाला होजाए, तो सूरज निकलने से पहले ही मिना के लिए निकल पढ़े, और जब वादिए माहसिसर में पहुंचे तो यदि होसके तो उसे तेज़ी से पार करे, यहाँ तक कि मिना आकर सबसे पहले जम्रए अकबा की रम्य करे, सात छोटी छोटी कंकरियां अंगूठे और शहादत की उंगली के किनारे में रखकर (एक एक करके) मारे और हर कंकरी के साथ अल्लाहु अकबर कहे, औंश्र रम्य करते समय हाथ उठाए। स्पष्ट रहे कि मात्र वही कंकरी शुमार की जाएगी जो हैज़ में गिरेगी चाहे वह उठे हुए खम्बे को लगे या न लगे, और रम्य शुरू करने के साथ ही तत्त्विया पुकारना बद्द करदे, फिर अपने हद्दय के जानवर की कुर्बानी करे, फिर अपना सर मुंडवाए या सर के बाल कटवाए पर मुंडवाना अफ़ज़ल है, और रम्य और हल्क करने के साथ ही वे सारी चीजें उसके लिए हलाल हो जाएंगी जो इहराम के कारण हराम होगई थीं, सिवाय औरतों के, और इसे तहल्लुले अब्वल कहा जाता है, फिर हाजी मक्का आए और तवाफ़ इफ़ाज़ा करे, यह वह फ़ज़्र तवाफ़ है जिससे हज्ज पूरा होता है, फिर यदि वह हज्जे तमतु'अ् कर रहा है या यदि उसने किरा और इफ़्राद करने की सूरत में तवाफ़ कुदूम के साथ सई न की हो तो सफ़ा और मर्वः की सई करे, और इस तवाफ़ के साथ सारी चीजें उसके लिए हलाल हो जाएंगी यहाँ तक कि औरत अप्यामे तभीक (11,12 और 13) की रातें वाजिबी तौर पर मिना में बिताए, और इसके दिनों में सूरज ढलने के बाद जमरात को कंकरी मारे, हर जम्रे को सात कंकरियां मारे, आरम्भ जम्रए कर जला से करे, और खान-ए-काबा को सामने करके कंकरियां मारे, फिर आगे बढ़े और वहाँ सुकर अल्लाह से दुआ करे, फिर बीच वाले जम्रा के पास आए, और उसे भी उसी तरह कंकरियां

मारे, और रुक कर दुआ करे, फिर जम्मए अकबा को कंकरियां मारे और वहाँ से चल पड़े उसके पास दुआ करने के लिए न रुके, फिर दूसे दिन भी इसी तरह कंकरियां मारे, फिर यदि वह पहले ही दिन में मिना से जाना चाहे तो सूरज डूबने से पहले निकल जाए, और यदि बारहवीं तारीख का सूरज डूब जाए और वह मिना ही मैं है तो मिना में 13 की रात बीताना ज़रूरी होगा, और तेरहवीं को भी जमरात को कंकरियां मारे, यदि उसने निकलने का इरादा कर लिया हो लेकिन रास्ते में भीड़ के कारण मिना के सीमा से बाहर न निकल सका हो तो निकलने में कोई हरज नहीं, चाहे वह सूरज डूबने के बाद ही क्यों न निकले, हज्जे किरान करने वाले को भी वही सब कुछ करना पड़ेगा जो हज्जे इफाद करने वाला करता है, अलग से कोई काम उस पर नहीं है, सिवाय इसके कि मुफिद पर हृदय नहीं है और कारिन और मुतमति'अू पर हृदय का जानवर ज़बह करना है, और जब वापस घर जाना चाहे तो खान-ए-का'बा का तवाफ़ किए बिना न जाए, ताकि उसका अन्तिम काम का'बा का तवाफ़ हो, और यदि तवाफ़े विदा'अू के बाद किसी व्यापार निकल गया हो तो यदि वह करीब हो तो वापस लौट कर तवाफ़ करे, फिर वापस लौटे, और यदि दूर निकल गया हो तो उस पर दम लाजिम होगा, पर हैज़ और निफास वाली औरत पर तवाफ़े विदा'अू नहीं है, वह बिना तवाफ़े विदा'अू किए वापस जा सकती है।

**हज्ज के 4 रुक्ज हैं :** ① इह्राम (हज्ज में दाखिले की नियत करना) ② अर्फा में ठहरना।  
**और हज्ज के 7 वाजिबात हैं :** ① मीकत से इह्राम बांधना। ② अर्फा में सूरज डूबने तक ठहरना। ③ मुज्दलिफा में रात बिताना, यह बुजूब आधी रात के बाद तक है। ④ मिना में अच्यामे तशीक (11.12 और 13 जिल्हज्जा) की रातें बिताना। ⑤ जमताजवात को कंकरियां कारिन के कुबानी करना। ⑥ बाल मुंडवाना या कटवाना। ⑦ तवाफे विदा'अू करना। ⑧ और मुतमति'अू तथा

**उम्रा के 3 रुक्ज हैं :** ① इह्राम (उम्रा में दाखिले की नियत करना) ② उम्रा का तवाफ़ करना। ③ उम्रा की सई करना।

**और इसके 2 वाजिबात हैं :** ① मीकत से इह्राम बांधना। ② बाल कटवाना या मुंडवाना। जिसने किसी रुक्न को छोड़ दिया तो जब तक उसे अदा न करले उसका हज्ज पूरा नहीं होगा, और जिसने किसी वाजिब को छोड़ दिया तो दम द्वारा उसकी तलाफ़ी होजाएगी, और जिसने किसी सुन्नत को छोड़ दिया तो उस पर कोई तावान नहीं है।

**तवाफ़ सही होने की 13 शर्तें हैं :** 1- इस्लाम। 2- अकल। 3- खास नियत। 4- तवाफ़ का लिए पवित्रता शर्त नहीं है। 5- जिसे शक्ति हो उस के लिए शरमगाह को ढांपना। 6- पवित्र होना, बच्चों के ओर करके तवाफ़ करना, और जिन चकरों में मूल होगई उन्हें फिर से दोहराना। 7- चक्र पूरा करना। 8- का'बा को बाई की ओर न लौटना। 9- लगातार चक्र लगाना। 10- ताकत रखने वाले के लिए चलना। 11- लगातार चक्र लगाना। 12- मस्जिद-इराम के भीतर से तवाफ़ करे। 13- हजरे अस्वद से तवाफ़ शुरू करना।

**तवाफ़ की सुन्नतें :** हजरे अस्वद को छुना और उसे चूमना। छूते समय तक्बीर कहना, रुक्ने यमानी को छुना, दाएं कन्धे के नीचे से चादर निकालना, तवाफ़ के समय दुआ और जिक्र करना, का'बा से करीब होना, तवाफ़ के बाद मकामे इब्राहीम के पीछे 2 रक़अत नमाज़ पढ़ना।

**लाई की 9 शर्तें हैं :** ① इस्लाम। ② अकल। ③ नियत। ④ लगातार करना। ⑤ ताकत रखने वाले के लिए चलना। ⑥ सात चक्र पूरे करना। ⑦ पूरे सफा और मर्वा करना और सातवां चक्र मर्वा पर खत्म करना। ⑧ सही ह तवाफ़ के बाद सई करना। ⑨ पहला चक्र सफा से शुरू

**छोटी तुलाते :** छोटी और बड़ी नापाकी से पवित्र होना, शरमगाह का पर्दा करना, सई के लिए और दुआ करना, चलने की जगह पर चलना और दौड़ने की जगह पर दौड़ना, और मर्वा पर चढ़ना, तवाफ के तुरन्त बाद सई करना।

**उसी दिन रम्य करना अफज़ल है,** यदि अगले दिन तक के लिए लेट कर दिया, या उसी दिन की रम्य को अन्तिम दिन के लिए लेट कर दिया तो भी रम्य हो जाएगी।

**कुर्बानी :** कुर्बानी करना मुवक्कदा सुन्नत है, कुर्बानी करने वाले व्यक्ति पर ज़िल्हज्जा का महीना लाने से लेकर कुर्बानी करने तक बाल, नाखुन, या चमड़ा में से कुछ काटना ह्राम है।

**अकीका :** अकीका करना सुन्नत है, जन्म के सातवें दिन लड़के की ओर से दो बक्रियां ज़बह की जाएंगी और लड़की की ओर से एक। सातवें दिन बच्चे का बाल काटना और उसके बराबर बच्ची सदका करना मस्नून है। और उसी समय उसका नाम अब्दुल्लाह और अब्दुरह्मान है, अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों के नामों के शुरू में अब्द जोड़ कर नाम रखना जैसे : अब्दुन्बी, अब्दुर्सूल आदि ह्राम है। यदि कहीं समय अकीका और कुर्बानी पड़ जाए तो एक दूसरे की ओर से काफ़ी होगा।

**जज के कर्मों का खुलासा इस प्रकार है :**

इफाद	किरान	तमाज़ अ	इफान
तब्बैक हज्जन्	तब्बैक उम्रातू व हज्जन्	तब्बैक उम्रातू मूलपत्रान विहा इल् हन	इहराम और तवाफ़ की शुरूआत
तब्बैक हज्जन्	तब्बैक कुदूम करना	उम्रा का तवाफ़ करना	केर फिर केर
	हज्ज की सई करना	उम्रा की सई करना	
	इहराम की हालम में रहना	हालम की हालम बाल कटाना और पूरी तरह हलाल होजाना	
	जाना मिना जाना	मक्का से इहाम बांधना और मिना जाना	8 तारीख को जुह से पहले
		अर्फ़ा जाना और वहाँ जुह और अस की नमाज़ इकट्ठी करके जुह के समय में पढ़ना फिर दुआ के लिए फारिग़ होजाना	9 तारीख को सुरज निकलने के बाद
		मुज़दिलिफ़ा लैटना और वहाँ पहुंचते ही मशीब और इशा की नमाज़ पढ़ना, आधी रात तक वहाँ रुकना, और फ़ज्ज के बाद तक रुकना मस्नून है	सुरज इब्ने के बाद
		मिना जाकर जम्रए अकबा को कंकरियां मारना	कुर्बानी के दिन 10 तारीख को फ़ज्ज के बाद से इशाक से पहले तक
		- कुर्बानी करना	- कुर्बानी करना
		बाल कटवाना या मंडवाना, फिर तवाफ़ इफाज़ा करना, रम्य, हल्क और तवाफ़ में से किसी दो को करने से पहला तहल्लुल इस्लिल होजाता है और तीनों को करने से दूसरा तहल्लुल	सुरज डलने के बाद पहले छोटे जम्रात को फिर बीच वाले को 11, 12 के दिन, तथा 13 का दिन लेट करने वाले के लिए
		-	फिर जम्रए अकबा को कंकरियां मारना
		-	तवाफ़ विदायू करना जो कि हैज़ अथवा निफास वाली और तवाफ़ पर वाजिब नहीं है
			वापसी के समय

\* **फ़ाइदा :** मस्जिदे नबवी में प्रवेश करने वाला व्यक्ति पहले 2 रकअत तहीयतुल मस्जिद पढ़े फिर आप **कुदूम** की मुबारक कब्र के पास आए, आप के चेहरए मुबारक की ओर अपना चेहरा करे पीट का'बा की ओर हो, और दिल आप की अज़मत से भरा हुवा हो गोया कि वह आप **कुदूम** को देख रहा हो : फिर इन शब्दों में सलाम कहे : “अस्सलामु अलैक या तु आप **कुदूम** को देख रहा हो” यदि अधिक बढ़ाए तो बेहतर है। फिर दाईं ओर एक हाथ जितना बढ़े, और कहें : “अस्सलामु अलैक या अबा बक्रिस्सदीक” “अस्सलामु अलैक या उमरल फ़ारूक, अल्लाहुम्ज़िहिमा अन नबीएहिमा व अनिल् इस्लामि खैरन्” फिर का'बा की ओर चेहरा कर लें और हुज्जा उस की बाई ओर हो और दुआ करे।

## विभिन्न लाभदायक वार्ते

**\* लूलाह :** अनेक चीजों के द्वारा गुनाह मिटाए जाते हैं, जैसे सच्ची तौवा, बहिंश की तत्त्वबद्ध, नेक काम, परेशानियों द्वारा परीक्षा, सदका, दूसरे व्यक्ति की दुआ, फिर भी यदि कुछ पाप जाहन्नम की आग में पापी को सज़ा दी जाएगी यहाँ तक कि वह गुनाहों से पवित्र होजाए, फिर पर मौत हुई हो तो जहन्नम उसका दाइमी ठिकाना होगा। **इन्हान पर गुनाहों के प्रभाव कई एक** स्थप में पड़ते हैं : दिल पर उस का प्रभाव यह होता है कि वह दिल में बेचैनी और अंधेरापन का कारण बनता है, वह उसे रुसवा करता, रोगी बना देता, और अल्लाह तज़्अला से दूर कर देता है। दीन पर भी इस का प्रभाव पड़ता है और इन चीजों के साथ साथ उसे इत्ताअत से महरूम कर देता, और नवी, फरिश्ते और मोमिनों की दुआ से उसे वंचित कर देता है। जीविका भी प्रभावित होती है, व्यक्ति को वह रोज़ी से महरूम कर देता, उस से नेमत का खातिमा कर देता, और धन दौलत की बर्कत को मिटा देता है। व्यक्तिगत प्रभाव यह पड़ता है कि व्यक्ति की उम्र की बर्कत को मिटा देता, कठोर जीवन का वारिस बनाता, और मामले को कठिन बना देता है। कर्मों को स्वीकार होने से रोक देता, सूसाइटी की अम्न व शान्ति को ख़त्म कर देता, महंगाई लाता है, हाकिमों और शत्रुओं को मुसल्लित कर देता है, और आसमान से वर्षा को रोक देता है इत्यादि।

**\* ग़म :** दिल की राहत और खुशी और उस से ग़र्मों का दूर होना हर व्यक्ति की चाहत होती है, और इसी द्वारा उसे उत्तम जीवन प्राप्त होता है, इसे हासिल करने के लिए कई एक धार्मिक, फित्री और व्यवहारिक कारण हैं, जो मात्र मोमिनों के लिए एकत्रित हो सकते हैं, इनमें से कुछ का चर्चा किया जारहा है : ① अल्लाह तज़्अला पर ईमान लाना। ② उसके आदेशों को बजा लाना, और **निषिद्ध वस्तुओं** से बचना। ③ बचन, कर्म और नेकी द्वारा मख्लूक पर एहसान करना। ④ काम काज करते रहना या धार्मिक अथवा सांसारिक ज्ञान की प्राप्ति में व्यस्त रहना। ⑤ भविष्य या अतीत के बारे में चिन्ता न करना, बल्कि अपने रोज़ाना के कामों में व्यस्त रहना। ⑥ अधिक मात्रा में अल्लाह का ज़िक्र करना। ⑦ अल्लाह की ज़ाहिरी और बातिनी नेमतों का चर्चा करना। ⑧ अपने से कम्तर व्यक्ति की ओर देखना, सांसारिक जीवन में जो हम से बेहतर है उन पर ध्यान न देना। ⑨ ग़म के अस्वाव को दूर करने के लिए प्रयास करना, और खुशी के अस्वाव को प्राप्त करना। ⑩ ग़म दूर करने के लिए नवी بُشِّرَى, जो दुआएं करते थे उनके द्वारा अल्लाह की पनाह चाहना। **\* फ़ाइदा :** इब्राहीम अलख्वास कहते हैं : ५ चीजें दिल के लिए इलाज हैं : ध्यान देकर कुर्�आन पढ़ना, पेट का ख़ाली होना, कियामुल्लैल करना (तहज्जुद की नमाज़ पढ़ना), रात के अन्तिम पहर में रोना गिड़गिड़ाना, और नेक लोगों के साथ बैठना। **\* जब कोई व्यक्ति** किसी परीशानी का शिकार हो और अपने दु : ख को हल्का करना चाहता हो तो उसे बड़ा समझ कर उसके सवाब के बारे में सोचे, और उससे भी बड़ी परीशानी में पड़ने का गुमान करे।

**\* निकाह :** ऐसा व्यक्ति जिस की ख़्वाहिश नार्मल हो जिस से उसे ज़िना का डर न हो तो उसके लिए शादी करना मस्नून है, और जिसके भीतर ख़्वाहिश ही न हो उसके लिए शादी करना मुबाह है। पर जिसे ज़िना में पड़ जाने का डर हो तो उसके हक में शादी करना बाजिब है, जिसे बाजिबी हज्ज पर भी तर्ज़ीह दी जाएगी। औरतों को देखना हराम है, इसी तरह शहवत भरी नज़र से बड़ी उम्र की औरत और अम्रद को भी देखना हराम है।



**शैहर की शर्तें :** ① शैहर और बीवी की ताईन। अतः यदि किसी के पास एक से अधिक हों तो उसका यह कहना सही है नहीं होगा कि मैंने तुम्हारा निकाह अपनी एक बेटी से कर लिया। ② अकल्मन्द बालिग शैहर की रिजामन्दी, और इसी तरह आजाद बालिग लड़की की लिया जायेगी। ③ वली का होना, अतः औरत का स्वयं अपनी शादी कर लेना सही है नहीं है। और वह वली के अलावा किसी दूसरे मर्द को उसकी शादी कराने का इख्तियार है। हाँ उस सूरत में वह वली किसी कुपच मर्द से शादी करने में बाधा डाले (तो जायज़ है)। वली की तर्तीब इस तरह है : बाप, फिर दादा, फिर उससे ऊपर की पीढ़ी, फिर बेटा, फिर पोता, फिर उससे नीचे की पीढ़ी, फिर सगा भाई फिर अल्लाती भाई, फिर सगा भतीजा ... इत्यादि। ④ शहादत, दो लड़के, अकल्मन्द और बालिग मर्द की गवाही ज़खरी है। ⑤ शैहर और बीवी के निकाह में किसी शायक कारण का न पाया जाना। जैसे दूध, या नसब या शादी का रिश्ता जो इस निकाह के नाम होने के कारण हों।

**निकाह हराम ठहराने वाली चीजें :** ① जिन के कारण हमेशा के लिए निकाह करना हराम होता। और ये कई प्रकार के हैं : ① नसब के कारण हराम होने वाली औरतें : मां, दादी और उनके ऊपर की पीढ़ी। बेटी, पोती और इनके नीचे की पीढ़ी। और सारी बहनें उनकी बेटियां, बेटियां और नवासियां। और सारी भतीजियां, उनकी बेटियां, पोतियां और नवासियां और उन से नीचे की पीढ़ी। और फूफी और मौसी और उन की ऊपर की पीढ़ी। ② दुध के कारण हराम होने वी औरतें। जो औरतें नसब के कारण हराम होती है वह सारी दूध पीने के कारण भी हराम ठहरती हैं, यहाँ तक की शादी के रिश्ते में भी इसका एतिबार होता है। ③ शादी के रिश्ते के कारण हराम होने वाली औरतें : सास, बीवी की दादी और नानी .... और बीवी की बेटी और उस से नीचे की पीढ़ी। ② जिन के कारण एक सीमित सीमा तक निकाह करना हराम होता है। और ये दो प्रकार के हैं : ① निकाह में एक ही समय में दो को इकट्ठा करना, जैसे एक ही समय में दो बहनों से निकाह करना। या उसकी फूफी अथवा मौसी से निकाह करना। ② किसी खत्म होजाने वाली आरिजी चीज़ के कारण, जैसे किसी की बीवी से शादी करना।

\* **फ़ाइदा :** मां बाप को यह हक्क हासिल नहीं है कि लड़के को किसी ऐसी लड़की के साथ शादी के लिए मज्बूर करें जिसे वह चाहता न हो। इस मामले में लड़के पर उनकी फर्माबदारी भी ज़खरी नहीं है, और न ही इस के कारण वह नाफरमान माना जाएगा।

\* **तळाक़ :** हैज़, या निफास या ऐसी पाकी की अवस्था में जिसमें बीवी से संभोग किया हो तळाक देना हराम है, पर दे देने की सूरत में तळाक हो जाएगी। बिना कारण के तळाक देना मकरूह है। और कारण बस मुबाह है। और जिसे निकाह के कारण हानि पहुँच रहा हो उस के लिए मस्तून है। तळाक के मामले में वालिदैन की फर्माबदारी वाजिब नहीं है। और जो व्यक्ति तळाक देना चाहता हो उस पर एक से अधिक तळाक देना हराम है, और यह भी वाजिब है कि ऐसी पाकी में तळाक दे जिसमें उसने संभोग न किया हो। एक तळाक देकर छोड़ दे यहाँ तक कि इद्दत पूरी होजाए। जिस औरत की तळाक रज़इ हो (अर्थात् जिस तळाक के बाद लौटाना सम्भव ही) उस पर इद्दत पूरी होने से पहले शैहर के घर से निकलना या शैहर का घर से निकालना हराम है। मात्र नियत करने से तळाक नहीं होती बल्कि उसे शब्दों द्वारा बोलना वाजिब है।

\* **क़सम :** कसम पर कफ़ारा वाजिब होने के लिए 4 शर्तें हैं : ① कसम का इरादा किया हो, यदि बिना इरादे के कसम खाई हो तो वह कसम नहीं है। बल्कि उसे लग्वे यमीन कहते हैं : जैसे बात करते समय (कसम से, अल्लाह कसम आदि) कहना। ② कसम भविष्य के किसी

ऐसी चीज़ के बारे में खाई गई हो जिस का होना संभव हो। अतः यदि अतीत के बारे में अज्ञानता में कसम खाई हो, या स्वयं को सही समझ कर खाई हो, या जानबूझकर झूटी कसम खाई हो (इसे यमीने गमूस कहते हैं जो कि बड़ा पाप है।) या भविष्य के बारे में स्वयं को सही समझ कर कसम खाई हो परन्तु मामला उलटा हो जाए तो इन सभों का शुमार कसम में नहीं होता। ③ अपनी मर्जी से कसम खाई हो, कसम खाने के लिए उसे मज्हबूर न किया गया हो।

④ कसम में हानिस होजाए, अर्थात् जिस चीज़ के न करने की कसम खाई थी उसे कर ले, या करने की कसम खाई थी परन्तु उसे न करे। और जिस व्यक्ति ने कसम खाई हो और साथ ही साथ इन-शाअल्लाह भी कहा हो तो 2 शर्तों की बिना पर उस पर कफ़ारा वाजिब नहीं होता : ① कसम के साथ ही इन-शाअल्लाह कहा हो। ② इन-शाअल्लाह द्वारा कसम की तालीक मक्कुद हो, जैसे कहे : अल्लाह की कसम इन-शाअल्लाह।

जिस व्यक्ति ने किसी चीज़ की कसम ली हो लेकिन भलाई उस के विपरीत में हो तो सुन्नत यह है कि कसम का कफ़ारा दे और भलाई वाला कर्म करे।

**कसम का कफ़ारा :** कसम का कफ़ारा है 10 ग्रीब को खाना खिलाना, हर ग्रीब को आधा सा'अू अर्थात् 1.5 किलो अनाज देना। या 10 ग्रीब को कपड़ा पहनाना। या एक गर्दन आजाद करना। यदि इनमें से किसी की भी शक्ति न हो तो लगातार 3 दिन के रोज़े रखना। और जिसने खाना खिलाने या कपड़ा पहनाने की ताक़त रखने के बावजूद रोज़े रखे हों तो उसका जिम्मा बरी नहीं होगा। हानिस होने से पहले या बाद में कफ़ारा देना जायज़ है। और जिसने किसी एक चीज़ पर एक बार से अधिक कसम खाई हो तो उनकी ओर से मात्र एक कफ़ारा देना काफ़ी है। यदि मामला अलग अलग हो तो उनका कफ़ारा भी अलग अलग होगा।

\* **नज़र :** नज़र की किस्में : ① मुल्क नज़र : जैसे यह कहे : यदि मैं निरोग हो गया तो अल्लाह के लिए नजर दूँगा। फिर चुप होजाए और किसी ख़ास चीज़ की नज़र न माने तो निरोग होजाने पर कसम का कफ़ारा देना होगा। ② गुस्सा और लिजाज की नज़र : नज़र को मशूर करना किसी चीज़ से रोकने या उसके करने पर, जैसे यह कहना : यदि मैं ने तुझ से बात की तो मेरे ऊपर पूरे साल का रोज़ा है। इसका हुक्म यह है कि : उसे उस काम के करने, या बोलने पर कसम का कफ़ारा देने का इख्तियार है। ③ मुबाह नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए कपड़ा पहनना है। इसका हुक्म यह है कि उसे कपड़ा पहनने या कसम का कफ़ारा देने का इख्तियार है। ④ मकर्ख नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए अपनी बीवी को तलाक़ देना है। इसका हुक्म यह है कि इस काम को न करे और कसम का कफ़ारा दे दे, यदि कर दे तो कफ़ारा नहीं है। ⑤ गुनाह वाली नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए चोरी कना है। इसका हुक्म यह है कि ऐसे काम को करना हराम है, इसलिए कसम का कफ़ारा दे। यदि कर दिया तो पापी है और उस पर कफ़ारः नहीं है। ⑥ नेकी करने की नज़र : जैसे अल्लाह की नज़दीकी प्राप्त करने के मक्सद से यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए यह नमाज़ पढ़ना है। यदि किसी चीज़ के साथ उसे मशरूत किया हो जैसे रोगी का निरोग होना, तो यदि शर्त प्राप्त होजाए तो उस कर्म को करना वाजिब है, और यदि किसी चीज़ के साथ मशरूत न किया हो तो हर अवस्था में उसे करना वाजिब है।

\* **दिज़ाअत :** दूध पिलाने के सबब वह सारे रिश्ते हराम हो जाते हैं जो नसब के कारण होते हैं। पर 3 शर्तों के साथ : ① बच्चा जन्म होने के कारण दूध आरहा हो, न कि किसी दूसरी वजह से। ② बच्चे ने पैदाइश से 2 साल के भित्र दूध पिया हो। ③ विश्वासनिय स्लप से उस ने 5 रज़अत या उस से अधिक दूध पिया हो। रज़अत का अर्थ यह कि बच्चा

जिसके मुंह में लगाकर दूध पिए और अपने से छोड़ दे। रिजाअत के कारण खर्चा देना या बोलात सांबित नहीं होती।

\* **वसीयत** : जिस पर दूसरे का ऐसा हक् हो जिसका कोई प्रमाण न हो तो मृत्यु के पश्चात उसकी अदायगी की वसीयत करना वाजिब है। और जिस के पास अधिक धन हो उस पर उसका हिस्सा धन सद्का करने की वसीयत करना मुस्तहब है। चुनांचि ग्रीब नातेदार के लिए लोयत करे जो कि वारिस न हो। नहीं तो आम ग्रीब, आलिम और नेक व्यक्ति के लिए लोयत करे। और फ़कीर व्यक्ति का जिसके वारिस मौजूद हों वसीयत करना मक्रूह है, हाँ यदि उन्हीं हों तो फिर मुबाह है। और किसी अजनबी व्यक्ति के लिए एक तिहाई से अधिक की लोयत करना हाराम है। इसी तरह वारिस की खातिर थोड़े से धन की भी वसीयत करना हाराम है। यदि मौत के बाद बाकी वरसा अनुमति दे दें तो वसीयत नाफिज़ की जा सकती है। वसीयत करने वाले व्यक्ति द्वारा इन शब्दों के कहने से वसीयत बातिल होजाती है : मैं ने अपनी वसीयत लौटाई, या उसे बातिल कर दिया। या उसे बदल दिया या इसी तरह के दूसरे शब्द।

**वसीयत के आरम्भ में ये लिखना मुस्तहब है :** बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम हाज़ा मा औसा बिही कूलानुन् अन्नहु यशहु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लह, व अन्न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुह, व अन्नल् जन्नत हक्क, व अन्नन्नार हक्क, व अन्नस्साअत आतियल्लारैब फीहा, व अन्नल्लाह यबअ्सु मन् फिल्कुबूर, व ऊसी मन् तरक्तु मिन् अह्ली अँय्यतकूल्लाह व युस्लिहू ज़त बैनिहिम, व युतीउल्लाह व रसूलहू इन् कानू मुअँमिनीन्, व ऊसीहिम बिमा औसा बिही इ़ाहीमु बनीहि व याअ़कूब : ﴿يَبْنِي إِنَّ اللَّهَ أَصْطَفَنِ لَكُمُ الَّذِينَ فَلَأَنْتُمْ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ﴾

\* नवी ﷺ पर दख्ल भेजते समय, एक के बजाए दख्ल और सलाम दोनों भेजना मुस्तहब है, केवल नवी के अलावा पर दख्ल नहीं भेजा जाएगा, इसलिए अबू बक्र सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या अलैहिस्सलाम नहीं कहा जाएगा, और ऐसा करना मकरह तन्जीही है, पर नवियों के साथ में उन पर दख्ल भेजना जायज़ है, जैसा कि इन शब्दों में दख्ल भेजना : अल्लाहुम्म सल्लिल अ़ला मुहम्मद् व अ़ला आलि मुहम्मद् व अस्हाबिही, व अ़ज्ञाजिही व जुर्रीयतिह। और सहाबा, ताबिइन, उन के बाद आने वाले आलिमों, आविदों और सारे नेक लोगों के लिए रज़ियल्लाहु अन्हु, या रहिमहुल्लाह कहना मुस्तहब है। चुनांचि अबू हनीफा, मालिक, शाफ़ी और अह्मद रज़ियल्लाहु अन्हुम्, या रहिमहुमुल्लाह कहा जाएगा।

\* **ज़बह** : जानवर का गोश्त खाने के लिए उन्हें ज़बह करना वाजिब है। जानवर में इन 3 शर्तों का पाया जाना ज़रूरी है : ① जिसका गोश्त खाना मुबाह हो। ② जो इन्सान के बस में हो। ③ खुश्की में रहने वाला जानवर हो। और ज़बह की 4 शर्तें हैं : ① जबह करने वाला अ़क़लमन्द हो। ② छूरी तेज़ हो, जो कि हड्डी और दांत की न हो, क्योंकि इन दोनों से ज़बह करना जायज़ नहीं है। ③ गला, और दोनों में से किसी एक रग का कटना। ④ ज़बह के लिए हाथ हिलते समय बिस्मिल्लाह कहना। यदि बिस्मिल्लाह कहना भूल जाए तो कोई आपत्ति की बात नहीं है। बिस्मिल्लाह के साथ अल्लाहु अक्बर भी कहना मस्नून है।

\* **शिकार** : जिस जानवर का शिकार किया जाना हो उसके लिए 3 शर्तें हैं : ① उसका गोश्त खाना हलाल हो। ② बिदकना उसकी फित्र हो। ③ और जो बस में न आए। और 4 शर्तों के साथ शिकार करना जायज़ है : ① शिकारी व्यक्ति में ज़बह करने की अहलियत हो। ② शिकार करने का आला ऐसा हो जिससे ज़बह करना जायज़ हो। और वह तेज़ धारदार बर्छा या तीर या इस तरह का कोई दूसरा आला हो। और यदि शिकारी जानवर जैसे बाज़ या कुत्ता बाग़ शिकार कर रहा हो तो उस जानवर का शिक्षित होना ज़रूरी है। ③ शिकार करने के

इरादे से तीर बगैरा फेंकी गई हो। यदि बिना इरादे के शिकार होजाए तो उसे खाना हलाल महीने है। ④ तीर बगैरा फेंकते हुए या शिकारी जानवर दौड़ाते हुए बिस्मिल्लाह कहना वाजिब है। इसमें भूल माफ़ नहीं है; इसलिए बिस्मिल्लाह किए बिना जिस जानवर का शिकार किया गया हो उसका गोश्त खाना हराम है।

\* **खाना** : इससे मुराद हर खाई और पी जाने वाली चीज़ है। यदि इनमें 3 शर्तें पाई जाती हों तो इनका खाना हलाल है : ① खाना पाक हो। ② खाना में कोई नुकसान न हो। ③ और वह गन्दा न हो।

हर नापाक खाना जैसे खून और मुर्दार हराम है, और जिसमें हानि हो जैसे ज़हर, और गन्नी चीजें जैसे : गोबर, मूत, ढील, पिस्सू, और भूमि स्थल के जानवरों में से गधा, और फ़ाइ खाने वाले जानवर जैसे शेर, चीता, भेड़ीया, तेंदुवा, कुत्ता, सूवर, बन्दर, बिल्ली, और लौमड़ी सिवाय बिज्जू के, और पंजा द्वारा आक्रमण करने वाले पक्षी जैसे उकाब (गरुड़), बाज़, सक़, बाशिक, शाहीन, चील, उल्लू, और गन्दगी खाने वाले पक्षी जैसे गिध, रखम, सारस, और हर वह पक्षी जिसे अरब वासी नापसंद करते हों जैसे चमाद़, चूहा, बिर्ना, मक्खी, परिंगा, हुद्दुहुद़, साही और सांप यह सब के सब हराम हैं। और प्रत्येक प्रकार के कीड़े मकूड़, चूहा, गुब्रेला, छिपकिली। और हर वह चीज़ जिसे मारने का शरीअत ने आदेश दिया है जैसे बिचू या उसे मारने से रोका है जैसे चिंवटी। या जो दो जानवरों से जन्म लिए हों जिसमें एक का खाना हलाल है और दूसरे का खाना हराम है जैसे सिम्म अर्थात् भेड़िया से बिज्जू का जन्म लेने वाला बच्चा तो यह भी हराम है। पर यदि दो ऐसे जानवरों से जन्म लिया हो जिनमें खाना मुबाह है जैसे नील-गाय और घोड़े से जन्म लेने वाला खच्चर तो यह हराम नहीं है। और इनके अतिरिक्त जो पशु हैं वह हलाल हैं जैसे भेड़, बक्रा, ऊँट, गाय और घोड़ा, और जंगली जानवर जैसे ज़राफ़ा, खर्गोश, वबर (बिल्ली से छोटी ढील का एक जानवर), यर्बूझ (चूहा समान एक जानवर जिस की अगली टांगें छोटी, पिछली बड़ी, और पोछ लम्बी होती है), गोह और हिरन। और पक्षी यों में शुतुर मुर्ग, मुर्गा मुर्गी, मोर, तोता, कबूतर, गौरैया, बतख, मुर्गाबी और समुन्दर की सम्पूर्ण पक्षियां। और समुन्दरी जानवर सिवाय में डक, शर्प और घड़ियाल के। और जिस खेती या फल पर नापाक पानी पटाया गया हो, या खाद डाला गया हो, तो उस की उपज को खाना जायज़ है यदि उस में गन्दगी या उस की बदबू का प्रभाव न हो। और कोइला, मिट्टी या गारा को खाना मकरूह है, इसी प्रकार बिना पकाए कच्ची पियाज़ और लहसुन खाना मकरूह है, और यदि भूक के कारण मज्बूर होगया तो जान बचाने के लिए कुछ भी खा सकता है।

\* काफिरों के तेहवारों में जाना या उन पर उन्हें मुबारकबादी देना, और सलाम करने में पहल करना हराम है। और यदि वे हमें सलाम करें तो जवाब में “व अलैकुम” कहना वाजिब है। उनकी और इसी तरह बिद्अतियों की स्वागत के लिए खड़ा होना हराम है। उनसे मुसाफ़हा करना मकरूह है, परन्तु उनकी ताज़ियत करना, या बीमारपुर्सी करना धार्मिक मसलहत की ख़ातिर जायज़ है।

## ਗੁਰੂ ਝਾਡ-ਫੂਕ

**परीक्षा की किसीमें :** भलाई द्वारा परीक्षा, जैसे धन की बढ़ौतरी। बुराई द्वारा परीक्षा, जैसे डर, भय, भूक, धन दौलत की कमी, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿وَبِنُوكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فَتَنَّهُ﴾ “हम परीक्षा के लिए तुम में से प्रत्येक को बुराई तथा भलाई में डालते हैं”। और बीमारी और मौत का शुमार भी इसी में होता है, जिसका बड़ा कारण हसद के कारण लगने वाली नज़र और जादू है। नवी ﷺ का फरमान है : “अल्लाह की कज़ा और कद्र के बाद मेरी उम्मत के अधिक्तर लोगों की मौत नज़र लगने के कारण होगी”। (तयालसी)

**ज्ञान और ज्ञान से बचाव :** बचाव इलाज से बेहतर है, इसलिए बचाव के कारणों को अपनाना जरूरी है, कुछ महत्वपूर्ण कारणों का चर्चा नीचे किया जा रहा है : \* तौहीद द्वारा नफस को शक्ति पहुँचाना, यह ईमान रखते हुए कि संसार में हर फेर करने वाला मात्र अल्लाह तआला है, और अधिक नेकी के काम करना। \* अल्लाह तआला के बारे में उत्तम धारणा रखना, और उसी पर भरोसा करना, किसी बदलाव के कारण बीमारी या बुरी नज़र का वहम न करना, क्योंकि वहम खय एक रोग है।<sup>1</sup> \* जिस व्यक्ति के बारे में जादूगर होना या बुरी नज़र वाला होना मशहूर हो

डाक्टर्स और विशेषज्ञ लिखते हैं कि सेक्स सम्बन्धित बिमारियां वहस के कारण होती हैं। वास्तव में बीमारी नहीं होती।

उससे दूर रहना बचाव के तौर पर न कि उससे डर कर। \* किसी अच्छी भली चीज़ को देख कर अल्लाह का ज़िक्र करना और बर्कत की दुआ करना। नबी ﷺ का फरमान है : "जब तुम में से किसी को अपनी नफ़्स या धन, या अपने भाई की कोई चीज़ पसन्द आजाए, तो वह बर्कत की दुआ करे, क्योंकि नज़र सत्य है"। बर्कत की दुआ यह है : "बारकल्लाह" (अल्लाह तआला बर्कत अत़ा करे)। इस जगह "तबारकल्लाह" कहना सहीह नहीं है। \* बचाव के कारणों में से यह भी है कि सवेरे मदीनतुन्नबी ﷺ की सात अज्ञा ख़जूरें खाए। \* अल्लाह तआला की ओर लौटना, उस पर भरोसा करना, उसके बारे में अच्छी धारणा रखना, नज़र और जादू से उसकी पनाह में आना, और सवेरे शाम अज्ञकार और मुअौविज़ात की पाबन्दी करना।<sup>1</sup> अल्लाह तआला के इरादे से 2 चीज़ों के कारण इन अज्ञकार के प्रभाव में कमी बेशी होती है : ① इस बात पर ईमान रखना कि यह अज्ञकार हक़ और सत्य हैं, और अल्लाह तआला के इरादे से लाभ-दायक हैं। ② जुबान से कहे, कान धरे रहे, और दिल को हाजिर रखें; क्योंकि यह दुआ है और गफिल लापर्वाह दिल की दुआ स्वीकार नहीं होती। जैसा कि नबी ﷺ से प्रमाणित है।

**अज्ञकार और मुअौविज़ात के समय :** सवेरे के अज्ञकार फज़ की नमाज़ के बाद कहे जाएंगे, और शाम के अज्ञकार अस्स की नमाज़ के बाद, और यदि भूल जाए तो जिस समय बाद आजाए ज़िक्र कर ले।

**नज़र इत्यादि लगाने की निशानी :** मेडीकल और शरई रुक्या के बीच कोई विरोध नहीं है, चुनांचि कुर्ऊन जिस्मानी और रुहानी रोगों के लिए शिफा है, और जब इन्सान जिस्मानी बीमारी से निरोग हो, तो उसकी शारीरिक बदलाव आम तौर पर रियाही दर्द के रूप में होता है, चेहरे का पीला पड़ जाना, अधिक मात्रा में पेशाब या पसीना आना, ख़ाहिश कम हो जाना, किनारों में गर्मी ठंडी या चुभन होना, दिल धड़कना, कंधों और पीठ के नीचे दर्द का घृमना, रात में नींद न आना, डर या गुस्सा के कारण गैर फित्री तनाव पैदा होना, बहुत डिक्कार आना, लम्बी सांस लेना, तन्हाई पसंद करना, सुस्ती होना, सोने की चाहत करना, और दूसरी स्वास्थ से जुड़ी परेशानियां जो किसी बीमारी के कारण न हों। और बीमारी की शक्ति और कमज़ोरी के लिहाज़ से यह सारी निशानियां या इन में से कुछ पाई जाती हैं।

मुस्लिम व्यक्ति का मज्जूत दिल और ईमान वाला होना ज़रूरी है, वह वसवसों से अपने आप को दूर रखें, मात्र इस तरह की किसी बदलाव के कारण स्वयं को रोगी होने के भ्रम में न डाले, क्योंकि भ्रम का इलाज करना सब से कठिन है, और कभी कभार ऐसा भी होता है कि कुछ लोगों के अन्दर इस तरह के बदलाव पाए जाते हैं लेकिन वह निरोग होते हैं, और कभी इस तरह के बदलाव का कारण जिस्मानी रोग होता है, और कभी इसका कारण ईमान की कमज़ोरी होती है, जैसे सोने की तंगी, गुमी, सुस्ती, तो ऐसे व्यक्ति पर वाजिब है कि अल्लाह तआला से अपना सम्पर्क जोड़े।

**यदि बीमारी नज़र लगाने के कारण हो तो अल्लाह के कृपा से इन दो में से किसी एक के द्वारा इलाज सम्भव है :**<sup>2</sup> ① यदि बुरी नज़र वाले व्यक्ति की जानकारी हो जाए तो उसे स्नान करने का आदेश दो और इस पानी से या जिस पानी को उसने पिया है उस बचे हुए पानी से स्नान करो।

<sup>1</sup> देखिए सवेरे-सांझ की दुआए।

<sup>2</sup> नज़र लगना। जिन की ओर से पहुंचने वाली तकलीफ है जो अल्लाह तआला की अनुभवित से नज़र लगने वाले को पूछती है। जब कि शैतान के होते समय उसे देख कर कोई खुश होता है, और नज़र से बचाने वाला कोई सबव भी नहीं होता, और नमाज़ और ज़िक्र इत्यादि। और इस की वलील नबी ﷺ की हृदीस है : "नज़र लगना बुक़ है"। बुक़हरी। और बुस्ती रियास में है : "नज़र के अन्दर शैतान और इन्सान या इसद मौजूद होता है"। अहमद। और स्वयं तकलीफ नहीं पूछती वह ज़रूर ऐन (नज़र) इस लिए कहा गया है कि इस के द्वारा सिक्कत अब्द की जाती है, बर्मनी अब्द की भी नज़र लग जाती है।

जै देख  
ब तुम  
बक्त  
आला  
मेरे यह  
ओर  
उसकी  
आला  
न पर  
ह हैं।  
फ़िल  
एगे,  
याद  
है,  
नानी  
ताना,  
कार  
सरी  
प्रौढ़  
दूर  
अंकि  
दर  
की  
का  
करो  
—  
है,  
भ्रे  
कृत  
है

उसे पीओ। **२** और यदि उस व्यक्ति की जानकारी न हो सके तो शिफ़ा के लिए ज्ञाया, दुआ और पछना का सहारा लो।

**३** यदि बीमारी जादू<sup>२</sup> होने के कारण हो तो अल्लाह की कृपा से इनमें से किसी एक के द्वारा उसका अज सम्भव है : **१** जादू के स्थान की उसे जानकारी होजाए, तो मुअौवज़तैन (सूरतु-ल-फ़लक और सूरतु-न-नास) पढ़ते हुए उसके बंधन को खोल दे, फिर उसे जला दे। **२** कुरुआनी आयतों के द्वारा दम करके खासकर मुअौवज़तैन, सूरतुल बक्रः और दूआएं पढ़ कर।

**४** नुशः करे, और यह दो प्रकार के हैं, **१** यदि जादू का खात्मा जादू द्वारा किया जाए, और इसे छटकारे के लिए जादूगर का सहारा लिया जाए तो यह तरीका ह्राम है। **२** दूसरा नुशः जायज़ है, और इसका तरीका यह है कि बैर की 7 पत्ती ले, उसे पीस दे, फिर उस पर तीन बार सूरतु-ल-काफिरून, सुरतु-ल-इख्लास, सूरतु-ल-फ़लक और सूरतु-न-नास पढ़े, फिर ज्ञे पानी में डाल दे, फिर उसे पीए और उससे स्नान करे, अल्लाह की मर्जी से शिफ़ा मिलने के इस अमल को बार बार करता रहे।

**५** जादू को निकाल फेंके, यदि जादू पेट में है तो इस्हाल वाली चीजों के द्वारा उसे निकाले, और यदि पेट के अलावा किसी दूसरे स्थान पर है तो पछना<sup>३</sup> द्वारा उसे निकाल बाहर करे।

**६** रुक्या अर्थात् शारई झाड़-फूँक : इसकी शरतें : **१** रुक्या कुरुआनी आयतों और शरई दुआओं के द्वारा किया जाए। **२** रुक्या अरबी भाषा में किया जाए, दूसरी भाषा में दुआ करना जायज़ है। **३** यह आस्था और अकीदा रखा जाए कि स्वयं रुक्या का प्रभाव नहीं होता, बल्कि अल्लाह तआला शिफ़ा देता है।

और उसके अधिक प्रभाव की खातिर शिफ़ा की नियत से और इन्सान एवं जिन्नात की हिदायत की नियत<sup>४</sup> से कुरुआन पढ़ना चाहिए; क्योंकि कुरुआन हिदायत एवं शिफ़ा के लिए नज़िल हुआ है। और जिन्न को कतल करने की नियत से कुरुआन न पढ़े, हाँ यदि इसके बिना उसका निकलना असम्भव हो तो ऐसा कर सकता है।

**७** रुक्की अर्थात् रुक्या करने वाले व्यक्ति के लिए शर्तें : **१** मुस्लिम हो, नेक और मृतकी हो, और जिस क़दर वह नेक होगा उतना ही अधिक उसके रुक्या का प्रभाव होगा। **२** रुक्या करते समय सच्चाई के साथ अल्लाह तआला की ओर ध्यान लगाए रहे, इस तरह कि दिल जुबान के मुवाफ़िक हो, और उत्तम यह है कि इन्सान स्वयं अपने को रुक्या करे, क्योंकि दूसरे व्यक्ति का दिल आम तौर पर व्यस्त होता है, और इसलिए भी कि उसकी हाज़त और परेशानी का अन्दाज़ : उसकी तरह दूसरा व्यक्ति नहीं लगा सकता, और अल्लाह तआला ने परेशान हाल व्यक्ति की दुआ स्वीकार करने का वचन दिया है।

<sup>१</sup> जिस की नज़र लगी हो उस की बची हुई कोई भी चीज़ जैसे पानी या खाने का बकाया, या हुई हुई चीज़ का बकाया ते और उसे पानी में डाल कर उस से बीमार व्यक्ति को नहलाएं और कुछ को पिलाएं।

<sup>२</sup> गंठ लगाने, फुँकने या भनभनाने का अमल है जिससे मस्हूर के शरीर, दिल या अकल पर अमर पड़ता है, और यह तक है, चुनान्चि कुछ जादू जान ले लेता है, कुछ बीमार कर देता है, कुछ पति को पत्नि से सम्भोग करने से रोक देता है, कुछ दोनों के बीच जुदाई करा देता है, और इस में से कुछ शिर्क और कुछ होता तो कुछ की जिन्नी कबीर गुनाह में होता।

<sup>३</sup> नबी ﷺ ने फ़र्माया : “सब से उत्तम इलाज पठना लगाना है”। और इस द्वारा अल्लाह तआला ने लिंग की जिन्नी विमारीयों से शिफ़ा दिया, और इसी प्रकार नज़र और जादू के कारण होने वाले केन्द्र से भी शिफ़ा कम़ज़ा।

<sup>४</sup> दीन की ओर दावत, भलाई के कर्म करने और दुराई से रुक्ने की नियत से कुर्बान पढ़ना, और इस नियत से कुर्बान पढ़ने का असर बहुत ज्यादा है, अधिकतर बहुत जल्द जिन्न इस से प्रभावित होजाता है और अपनी बराई दोनों से रोक लेता है, इस के बर खिलाफ यदि कतल की नियत से पढ़ा जाए तो सर्कजी पर उत्तर आता है, और दोनों और पठने वाले दोनों को हानी पहुंचाता है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “अल्लाह तआला नम्र है और नमी को यसन्व करता है, और नमी पर वह चीज़ें अता करता है जो कि कठोरता के कारण नहीं देता”। मुस्लिम।

**मर्क्ष अर्थात् जिस व्यक्ति को रुक्या किया जा रहा है उस के लिए शर्तें :** ① मुस्तहब है कि वह नेक और मोमिन हो, और जिस कुदर वह नेक होगा उसी कुदर उसे लाभ होगा। अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿وَنُزِّلَ مِنَ الْقُرْءَانَ مَا هُوَ شَفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا﴾ “यह कुरआन जो हम उतार रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफा और रहमत है, हाँ अत्याचारियों को सिवाय हानि के और कोई फायदा नहीं होता”। ② शिफा के लिए सच्चे दिल के साथ अल्लाह की ओर ध्यान लगाए रहे। ③ शिफ के लिए जल्दी न करे, क्योंकि रुक्या दुआ है, और यदि उसने जल्दी मचाई तो सम्भव है कि स्वीकार न हो, नबी का फरमान है : “तुम में से किसी की दुआ उस समय तक स्वीकार होती है जब तक वह जल्दी न मचाए, यह न कहे मैंने दुआ की परन्तु वह स्वीकार नहीं हुई”। (बुखारी एवं मुस्लिम)

**रुक्या के तरीके :** ① हल्की थुक्थुकाहट के साथ रुक्या करना। ② बिना थुक्थुकाहट के रुक्या करना। ③ ऊँगली पर थुक लगाना, फिर उसमें मिट्टी मिलाना, और दर्द की जगह को उस से छूना। ④ दर्द की जगह पर हाथ फेरे और रुक्या करे।

**कुछ आयतें और हडीसें जिन से रोगी को रुक्या किया जाए :** सूरत-ल-फातिहा :

۱۰۰ اللَّهُ أَكْبَرُ إِلَّا هُوَ الْحَقُّ الْيَوْمُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نُوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْهُ إِلَّا بِأَنْدَنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفُهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسَعْ كُرْسِيُهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا يَنْعُودُهُ حَفَظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

۱۰۱ أَمَّنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلُّ أَمَّنَ بِاللَّهِ وَمَلَكِهِ وَكُنْهِهِ وَرَسُولِهِ لَا تَفَرُّ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رَسُولِهِ وَكَالُوا سَمِعَنَا وَلَطَعَنَا عُفْرَاتِكَ رَبِّنَا وَإِنَّكَ الْمَصِيرُ ﴿۱۰۵﴾ لَا يُكْلِفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وَسَعَهَا لَهَا مَا كَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا أَكْبَتْ رَبِّنَا لَا تُؤَاخِذنَا إِنْ سَيِّئَنَا أَوْ أَخْطَأَنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْنَا عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلَنَا وَلَا تَحْمِلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَأَعْفُ عَنَّا وَأَغْفِرْ لَنَا وَأَرْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿۱۰۶﴾ فَسَيَكْفِيَكُمْ اللَّهُ وَهُوَ أَعْلَمُ الْمَكِيمَ ۳  
۱۰۷ يَقُولُونَ أَجِبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَأَمِنُوا بِهِ يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجْزِمُ مِنْ عِذَابِ أَلِيمٍ ۴ وَنُزِّلَ مِنَ الْقُرْءَانِ مَا هُوَ شَفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۱

**¹ आयतु-ल-कुर्सी :** “अल्लाह तआला ही सत्य माबूद है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं जो ज़िंदा और सबका थामने वाला है, जिसे न ऊँध आए न नीद। उसकी मिलकियत में ज़मीन और आस्मान की तमाम चीजें हैं। कौन है जो उसकी इजाजत के बरैर उसके सामने सिफारिश कर सके, वह जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है, और वह उसके इन्हें से किसी चीज़ का इहाता (धेरा) नहीं कर सकते मगर जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी की वुसूअत (परिधि) ने ज़मीन व आस्मान को धेर रखा है। और अल्लाह तआला उनके हिफाज़त से न थकता और न उकताता है। वह तो बहुत बुलंद और बहुत बड़ा है।” {सूरह अलबकरा: २५५}

**² मुर्तु-ल-ब्रकः की आखिरी दोनों आयतें :** “रसूल ईमान लाया उस चीज पर जो उसकी तरफ अल्लाह तआला की ओर से उतरी और मुमिन भी ईमान लाए। यह सब अल्लाह तआला और उसके फरिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए, उसके रसूलों में से किसी में हम तफ़्रीक नहीं करते। उन्होंने कह दिया कि हमने सुना और इताज़त (अनुकरण) की। हम तेरी बख़्शिश (क्षमा) तलब करते हैं ऐ हमारे रब! और हमें तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह तआला किसी जान को उसकी ताकत से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता। जो नेकी वह करे वह उसके लिए और जो बुराई वह करे वह उस पर है। ऐ हमारे रब! अगर हम भूल गए हूँ या ग़लती की हो तो हमें न पकड़ना। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हमसे पहले लोगों पर डाला था। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जिसकी हमें ताकत न हो, और हमसे दरगुज़र फरमा, और हमें बर्खा दे, और हम पर रहम कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफिरों की कैम पर ग़ल्बा प्रदान कर।” {सूरह अलबकरा: २८५-२८६}

**³ “अल्लाह तआला उनसे अनुकरीब किफायत करेगा,** और वह ख़ब सुनने वाला और जानने वाला है।” {सूरह अलबकरा: १३३}  
**⁴ “ऐ हमारी कैम!** अल्लाह के बुलाने वाले का कहा मानो, उस पर ईमान लाऊ तो अल्लाह तुम्हारे गुनाह बस्ता देगा और तुम्हे दर्दनाक अज़ाब से पनाह देगा।” {सूरह अलअहकाकः: ३१}

۱) **وَلَذَا مَرَضَتْ فَهُوَ يَشْفِيْنَ** ۲) **أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ لَهُ مِنْ فَضْلٍ**  
 ۳) **قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشَفَاءٌ** ۴) **وَيَشْفِي صُدُورَ قَوْمٍ نَّفِرُوا**  
 ۵) **فَإِنَّجِعَ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِنْ فُطُورٍ** ۶) **لَوْأَنَزَلْنَا هَذَا الْقُرْءَانَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَشِعاً مَصْدَعَهُ مِنْ خَشْبِ الْجَنَانِ**  
 ۷) **وَلَدِيْكَادَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِبِرْ لَعُونَكَ بِأَنْصَرَهُ لَمَّا سَمِعُوا الْذِكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَخَوْفٌ**  
 ۸) **وَأَوْجَحَنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنَّ الَّقِ عَصَاكَ فَإِذَا هِيَ تَلَقَّفُ مَا يَأْفِكُونَ** ۹) **فَوْقَ الْحَقِّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ**  
 ۱۰) **يَمِينِكَ تَلَقَّفَ مَا صَنَعُوا إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سَحْرٌ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حِثَّ أَنِّي**  
 ۱۱) **ثُمَّ أَنَزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَىٰ الْمُؤْمِنِينَ**  
 ۱۲) **فَأَنَزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيْكَدَهُ بِجُنُودِ لَمْ تَرُوهَا**  
 ۱۳) **فَأَنَزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَىٰ الْمُؤْمِنِينَ وَأَرْمَاهُمْ كَلْمَةَ النَّقْوَىٰ**  
 ۱۴) **لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا يَأْتُونَكَ تَحْتَ الْأَشْجَرَةِ فَعِلْمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنَزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثْبَمْهُمْ فَتَحَافِرُ بِهَا**  
 ۱۵) **هُوَ الَّذِي أَنَزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِرَدَادِهِ وَإِيمَانِهِمْ مَعَ إِيمَانِهِمْ**

“यह कुरआन जो हम उतार रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफा और रहमत है, हाँ अत्याचारियों को सिवाय हानि के और कोई फ़ायदा नहीं होता।” [सूरतु बनी इस्माईल: ८२]

“या यह लोगों से हसद करते हैं उस पर जो अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया है।” [सूरतु निसा: ५४]

“और जब मैं बीमार पड़ जाऊँ तो मुझे शिफा अंता फरमाता है।” [सूरतु शशुअरा: ८०]

“और मुसलमानों के कलीजे ठड़े करेगा।” [सूरतु तौबा: १४]

“आप कह दीजिए कि यह तो ईमान वालों के लिए हिदायत व शिफा है।” [सूरतु फूसिलत: ४४]

“अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तू देखता कि अल्लाह के डर से वह पस्त होकर टुकड़े टुकड़े हो जाता।” [सूरह अल्हथ्र: २९]

“दोवारा (नज़े़े डाल कर) देख ले क्या कोई शिगाफ़ (चीर) भी नज़र आ रहा है?” [सूरह अल्मुल्क: ३]

“और करीब है कि काफिर अपनी तेज़ निगाहों से आपको फुसला दें, जब कभी कुरआन सुनते हैं और कह देते हैं यह तो नस्तर दीवाना है।” [सूरह अल्कलम: ५९]

“और हमने मूसा (صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) को हुक्म दिया कि अपनी लाठी डाल दीजिए! सो लाठी का डालना था कि उसने उसके सारे बने बनाए खेल को निगलना शुरू किया। पस हक़ ज़ाहिर हो गया और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा। पस वह लोग इस मौके पर हार गए और ख़ूब ज़्लील होकर फ़िरे।” [सूरह अल्आराफ़: ९९-१०६]

“कहने लगे कि ऐ मूसा! या तो तू पहले डाल या हम पहले डालने वाले बन जायें। जवाब दिया कि नहीं तुम ही पहले डालो। अब तो मूसा (صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) को यह ख़्याल गुज़रने लगा कि उनकी रसिस्याँ और लकड़ियाँ उनके जादू के ज़ोर से दीड़ भाग रही हैं। उस मूसा (صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) ने अपने दिल ही दिल में डर महसूस किया। हमने फरमाया: कुछ डर न कर, यकीनन तू ही ग़ालिब और बहर (बढ़ कर) रहेगा। और तेरे दायें हाथ में जो कुछ है उसे डाल दे कि उनकी तमाम कारीगरी को निगल जाए, उन्होंने जो कुछ बनाया है यह सिर्फ़ जादूगरों के कर्तव्य है, और जादूगर कहीं से भी आए कामियाब नहीं होता।” [सूरतु ताहः: ६४-६६]

“फिर अल्लाह ने अपनी तरफ से तस्कीन (शांति) अपने नवी पर और मुमिनों पर उतारी।” [सूरतु तौबा: २६]

“पस अल्लाह तआला ने अपनी तरफ से तस्कीन (शांति) उस पर नाज़िल फ़रमा कर उन लश्करों से उसकी मदद की जिन्हें उपने देखा ही नहीं।” [सूरतु तौबा: ४०]

“सो अल्लाह तआला ने अपने रसूल पर और मुमिनों पर अपनी तरफ से तस्कीन (शांति) नाज़िल फ़रमाई, और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तक्बे (संयम) की बात पर जमाए रखा।” [सूरह अलफ़ल: २६]

“यकीनन अल्लाह तआला मुमिनों से खुश हो गया जबकि वह दरख़त (वृक्ष) तले तज़ासे बैअल तर रहे थे, उनके दिलों में जो उसे उसने मालूम कर लिया और उन पर सुकून व इत्मीनान नाज़िल फ़रमाया और उन्हें करीब की फ़तह इनायत फ़रमाई।” [सूरह अलफ़ل: १८]

“वही है जिसने मुसलमानों के दिलों में सुकून डाल दिया, ताकि अपने ईमान के साथ ही साथ और भी ईमान में बढ़ जावे।” [सूरह अलफ़ل: १८]

सूरतु-ल-काफिर्लन सूरतु-ल-इख्लास सूरतु-ल-फलक सूरतु-न-नास और यह आयतें  
और यह हदीसे :

أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يُشْفِيكَ  
رَبَّ الْأَرْضِ-لَوْ-أَجْنَمِ، إِنْ-يَشِيفَكَ” 7 बार।

أَعِينْكَ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَا مَةٍ  
“ओईजुक  
विकलिमातिल्लाहिनाम्मः मिन कुल्ले शैतानिन व हाम्मः व मिन कुल्ले ऐनिन् लाम्मः” 3 बार।  
اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ أَذْهِبِ الْبَأْسَ وَأَشْفِ أَنْتَ الشَّافِ لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُعَادُ سَقَاءً  
“अल्लाहुम्म रब्बन्नासि अज्हिबिल्लास वशिफ अन्तश्शफी ला शिफाअ इल्ला शिफाउक शिफाअन्  
ला युगादरु सकमा” 3 बार।

“अल्लाहुम्म अज्हिब अन्हु हर्रहा व बर्दहा व वसवहा” 1 बार।  
“हस्बियल्लाहु लाइलाह इल्ला हुव  
अलैहि तवक्कलतु व हुव रब्बुल अर्शिलअजीम” 7 बार।

بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَاعِيْدِيْكَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ نَفِيْسٍ أَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ، اللَّهُ يُشْفِيكَ بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيْكَ  
“बिस्मिल्लाहि अर्कोक मिन कुल्लि दाइन युअजीक व मिन शरि कुल्लि नफिसन् औ ऐनिन्  
हासिदिन, अल्लाहु यश्फीक बिस्मिल्लाहि अर्कोक” 3 बार।

दुःख दर्द की जगह तुम अपने हाथ को रख्खो और 3 बार “बिस्मिल्लाहु”। कहो और  
7 बार यह दुआ पढ़ो : “أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأَحَادِرُ  
व कुद्रतिहि मिन शरि मा अजिदु व उहाजिरु”।

### नोट :

① आइन् (बूरी नज़र वाले) के बारे में प्रसिद्ध खुराफ़ात की पुष्टि करना जायज़ नहीं है। जैसा कि उस का पेशाब पीना या यह कहना कि यदि उसे जानकारी होजाए तो इसका प्रभाव नहीं होगा।

② किसी व्यक्ति को बूरी नज़र से बचाने के लिए चमड़े की तावीज़ पहनाना, या उसे कंगन या डोरे वगैरः का हार पहनाना जायज़ नहीं है। नबी ﷺ का फरमान है : “जिस ने कोई चीज़ लटकाई तो वह उस के हवाले कर दिया जाता है”। (तिर्मज़ी) और यदि कुरआनी तावीज़ हो तो इसके बारे में मतभेद है, परन्तु इससे दूर रहना ही बेहतर है।

③ बूरी नज़र से बचाने के लिए माशाअल्लाह, तबारकल्लाह लिखने, या तल्वार, या छूटी, या आँख वगैरः का फोटो बनाने, या गाड़ी में कुरआन रखने, या घरों में कुरआनी आयतों का कुत्बा लटकाने का कोई फ़ाइदा नहीं है, इस से बुरी नज़र टाली नहीं जा सकती बल्कि ऐसा करना हराम तावीज़ के चपेट में भी आ सकता है।

④ रोगी पर वाजिब है कि रुक्या स्वीकार होने पर विश्वास रखें, और शिफा के लिए जट्ठी न मचाए, यदि उस से यह बात कही गई होती कि निरोग होने के लिए जीवन भर दवा खाना है तो उसे उकताहट न होती, जब्कि कुछ ही दिनों के रुक्या से वह उकता जाता है, हालांकि हर हफ़्र की तिलावत के बदले उसे एक नेकी मिलती है, और नेकी भी दस गुना इजाफा के साथ, लिहाज़ा वह दुआ करे, अल्लाह से माफ़ी मांगे, और अधिक सद्क़ा करे; क्योंकि इन चीज़ों से भी शिफ़ प्राप्त की जाती है।

⑤ इज्तिमाई रूप में पढ़ना सुन्नत के खिलाफ़ है, इसके बारे में आई हुई रिवायत ज़ईफ़ है, और इसी तरह रुक्या की खातिर मात्र कैसेट द्वारा तिलावत सनना भी सही है, क्योंकि इसमें नियत नहीं हो पाती है; जब्कि राकी के लिए नियत शर्त है। और निरोग होने तक बारबार रुक्या करना

है, परन्तु परेशानी होती हो तो कम मात्रा में करे ताकि उकताहट न हो। और यह बात भी जिसमें रहे कि किसी आयत या दुआ को बिना प्रमाण के खास संख्या में पढ़ना जायज़ नहीं है। कुछ निशानियां ऐसी होती हैं जिन से रुक्या की खातिर राकी का कुरआन के बजाए जादू सहारा लेने की पुष्टि होती है; लिहाज़ा ऐसे व्यक्ति की जाहिरी दीनदारी से धोके में न लगा, वह रुक्या को कुरआन द्वारा आरम्भ तो करता है लेकिन बीच में ही पटरी बदल लेता वह लोगों को धोके में रखने के लिए मस्जिद भी जाया करता है, उनके सामने अधिकतर इसकी भी करता है, मगर यह मात्र दिखलावा होता है; लिहाज़ा ऐसे लोगों से होश्यार रहना।

**इदूरों और नज़रबाज़ों की निशानियां :** ★ रोगी से उसका नाम या उसकी माँ का नाम ज्ञान; क्योंकि नाम की जानकारी का प्रभाव इलाज पर नहीं पड़ता है। ★ रोगी का कपड़ा जाना, जैसे उसकी बनियान या कुर्ता आदि। ★ कभी वह रोगी से किसी खास प्रकार का नम्बर जिन के लिए ज़बह करने की मांग करता है। और कभी कभार उसी जानवर के खून या रोगी के शरीर पर लगाता है। ★ ऐसे तलासिम लिखना या पढ़ना जो समझ में न आएं और न ही उनका कोई अर्थ हो। ★ रोगी को ऐसी तावीज़ देना जिसमें खानों के अन्दर हर्फ़ और नम्बर लिखवे गए हों, जिसे हिजाब कहा जाता है। ★ रोगी को कुछ समय के लिए और रूप में अकेले रहने का आदेश देना, और इसे हज़्बा बोलते हैं। ★ रोगी को कुछ समय के लिए पानी छूने से रोक देना। ★ दफ़न करने के लिए रोगी को कोई चीज़ देना, या बालकर धूई लेने के लिए काग़ज़ देना। ★ रोगी की कुछ ऐसी निजी बातें बताना जिसके बारे में रोगी के सिवा कोई दूसरा न जानता हो, या उसके कुछ कहने से पहले उसके नाम गाँव और बीमारी के बारे में बताना। ★ मात्र रोगी के आने, या उस से टेलीफोन द्वारा बात करने, या उस की चिट्ठी पढ़ने से रोगी की हालत का अन्दाज़ः लगाना।

7 अहले सुन्नत का मज़हब यह है कि जिन्नात इन्सान पर सवार हो जाते हैं, जैसा कि उसका चर्चा कुर्अन की इस आयत में है :

﴿إِنَّكُلُونَ أَرْبَوَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَجَبَّلُهُ السَّيِّطَنُ مِنَ الْمَسِّ﴾ “सूद खाने वाले लोग उसी तरह खड़े होंगे जिस तरह शैतान का छूया हुवा मद्होश व्यक्ति खड़ा होता है।” इस आयत के बारे में मुफ़सिसीरीन का इज्मा’अू है कि आयत में मस्स से मुराद शैतानी दीवानापन है जो इन्सान पर शैतान के सवार होने के कारण तारी होता है।

**जदू :** जादू मौजूद है, और कुरआन और हडीस द्वारा इसका प्रभाव साबित है, यह हराम है, और बड़े गुनाहों में इसका शुमार है, नबी ﷺ का फ़रमान है : “ सात हलाक कर देने वाले गुनाहों से बचो, लोगों ने पूछा : यह गुनाह कौन से हैं? तो आप ने फ़रमाया : “अल्लाह के माथ शिर्क करना, और जादू … ”। बुख़री और मुस्लिम। और अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَلَقَدْ عَلِمُوا لِمَنِ اشْرَهَ مَالَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقِهِ﴾ और वे अवश्य यह जानते हैं कि उसे अपनाने वाले का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं। और इस की दो किसमें हैं : गांठ लगा कर और फूंक कर जादूगर का मस्हूर (जिसे जादू किया गया हो) को तकलीफ़ पहुंचाने के लिए शैतान को प्रयोग करना। ऐसी दवाएं जो मस्हूर के शरीर, अकल, इरादे और मैलान को प्रभावित करे, और इसे सर्फ़ और अत्फ़ कहाजाता है, चुनान्चि इस के कारण मस्हूर को ऐसा लगने लगता कि यह चीज़ पलट गई, या हिल रही है, या चल रही है इत्यादि। तो पहली किसम शिर्क है इसलिए कि शैतान उस समय तक जादूकर की नहीं मानता जब तक कि वह शिर्क न करे, और दूसरी किसम हलाकत में डालने वाला बड़ा गुनाह है, और यह सारी चीज़ें अल्लाह तआला की अनुमती से होती है।

## दुआ

सारी मख्लूक अल्लाह की और उन नेमतों और कृपाओं का मुहताज है जो अल्लाह के पास हैं, और अल्लाह सब से बेनियाज़ है, वह किसी का भी मुहताज़ नहीं, उसने अपने बन्दों पर दुआ वाजिब किया है। उसका फ़रमान है : “मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूंगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत से (अर्थात् मुझे पुकारने से) सर्कशी करेंगे वह जल्द ही अपमानित होकर जहन्नम में पहुंच जाएंगे”। और नबी ﷺ ने फ़रमाया : “जो व्यक्ति अल्लाह से नहीं मांगता है तो अल्लाह उससे नाराज़ हो जाता है”। इसके साथ यह भी जान लीजिए कि अल्लाह तआला अपने बन्दों के सवाल से खुश होता है, और आजिज़ी और मिन्नत करने वालों को पसन्द करता और उन्हें अपने क़रीब कर लेता है, सहाबए किराम इस वास्तविकता को अच्छी तरह जानते थे, इसी लिए वह अपने क़रीब कर लेता है। और ऐसा मात्र इस कारण था कि उनका सम्बन्ध अपने रब से था, वह हाथ नहीं फैलाते थे, और ऐसा मात्र इस कारण था कि उनका सम्बन्ध अपने रब से था, वह उसके क़रीबी थे, और वह उनका क़रीबी था, और जब वात ऐसी थी तो क्योंकर ऐसा न होता, अल्लाह तआला का फ़रमान है : “ऐ नबी! जब मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें, तो मैं करीब हूँ”। अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ की बहुत अहमियत है, दुआ अल्लाह के नज़दीक सर्वाधिक अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ की बहुत अहमियत है, दुआ ज़रूर सम्मानित है, दुआ कभी कभी क़ज़ा को भी फेर देती है, और मुसलमान की दुआ ज़रूर दुआ स्वीकार की जाती है, बशर्तेकि दुआ कबूल किए जाने के अस्वाब पाए जाएं और कोई चीज़ ज़रूर दी उसे कबूल होने से न रोके, और उसे तीन बातों में से कोई न कोई एक चीज़ ज़रूर दी जाती है, जैसा कि तिर्मिज़ी और अहमद की रिवायत है : “जो भी मुस्लिम व्यक्ति ऐसी दुआ करता है जिसमें गुनाह और रिश्ते तोड़ने की बात न हो तो अल्लाह तआला उसे तीन में से एक चीज़ अंता करता है : या तो उसकी मांगी हूँ चीज़ उसे दुनिया ही में दे दी जाती है। या आखिरत में ज़खीरा के तौर पर उसके लिए इकट्ठा कर देता है। या उसी की तरह कोई मुसीबत उस से टाल देता है” सहाबए किराम ने कहा : फिर तो हम अधिक से अधिक दुआ किया करें, तो नबी ﷺ ने फ़रमाया : “अल्लाह उस से भी अधिक देने वाला है”।

**दुआ की किस्में :** दुआ की दो किस्में हैं : ① दुआए इबादत, जैसे नमाज़, रोज़ा।  
**②** दुआए हाजत और तलब।

**आमाल की आपस में एक दूसरे पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) :** क्या कुरुआन पढ़ना अफ़्रिल (श्रेष्ठ) है या ज़िक्र व अज़्कार या दुआ? उत्तर : कर्मों में सब से उत्तम कर्म कुरुआन पढ़ाने की तिलावत है, फिर ज़िक्र व अज़्कार, फिर दुआ, यह एक इज़माली जवाब है, और कभी-कभार कम-तर चीज़ कुछ साधनों के कारण अपने से श्रेष्ठ से भी उत्तम होजाती है, जैसे अरफ़ा के दिन की दुआ कुरुआन की तिलावत से उत्तम है, और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद हडीसों में आए हुए ज़िक्र व अज़्कार करना कुरुआन की तिलावत से उत्तम है।

**दुआ स्वीकार होने के अस्वाब :** दुआ कबूल होने के दो साधन हैं :

**① ज़ाहिरी अस्वाब :** जैसे दुआ से पहले सद्का, वृजू और नमाज़ जैसी कोई नेक काम करना, या किला की तरफ चेहरा करके दुआ करना, या दोनों हाथों को उठाकर दुआ करना, या दुआ से पहले अल्लाह तआला की ऐसी तारीफ़ करना जिसका वह हक्कदार है, या उसके अस्मान हुस्ना व सिफाते उला (ऐसे नामों और गुणों) से दुआ करना जो दुआ की जाने वाली चीज़ के मुनासिब हों, जैसे जन्मत मांगने की दुआ हो तो गिर्गिड़ा कर उसकी राहत और कृपा के माध्यम से दुआ करे, और किसी अपराधी पर बद्र-दुआ हो तो उसके नामों में राहमत और रहीम के बजाए जब्बार, कस्तार, और अर्ज़ीज़ इत्यादि नामों से दुआ करे। इसी तरह दुआही साधनों में से यह भी है : दुआ के आरम्भ, बीच और अन्त में नबी पर दस्त भेजना।



दुआ को स्वीकारना, अल्लाह की नेमतों पर उसका शक्रिया अदा करना, फ़ज़ीलत के प्रमाणित दुआ के गनीमत जानना, जो कि बहुत हैं, जिन में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है।

\* **रात और दिन में :** रात में पिछले पहर की दुआ जिस समय अल्लाह तआला संसार वाले इकाश पर उतरता है। इसी तरह अज़ान और इकामत के बीच की दुआ, वुजू के बाद, सज्दे नमाज़ में सलाम से पहले और सलाम के बाद, कुर्अन ख़त्म करते समय, मुर्ग के बाँग के नम्बर, यात्रा के समय की दुआ, मज्लूम तथा परीशान हाल की दुआ, वालिदैन की अपनी बोलाद के लिए दुआ, मुस्लिम व्यक्ति का अपने भाई के लिए दिल की गहराई से की जाने वाली दुआ, और युद्ध में से लड़ते समय की दुआ। \* **सप्ताह में :** जुम्मा के दिन की दुआ, और अस कर औन्तिम पल में की जाने वले दुआ। \* **महीने में :** रमज़ान में सहरी और इफ्तार के नम्बर की दुआ, शबे कद्र की दुआ, अरफा के दिन की दुआ। \* **पवित्र स्थान पर की जाने वाली दुआ :** मस्जिदों में की जाने वाली दुआ, काबा, और ख़ासकर मुल्तज़म और मकामे इब्राहीम के पास की दुआ, सफ़ा और मर्वा पर, और हज्ज के दिनों में अरफात, मुज्दलिफा, और बिना की दुआ, और ज़म्ज़म पीते समय की दुआ .... इत्यादि।

② **अन्दरूनी (भीत्री) अस्त्वाब :** जैसे दुआ से पहले सच्चे दिल से सच्ची तौबा करना, किसी नाहक ली हूई चीज़ लौटा देना, खाने, पीने, पहनने, और रिहाइश इत्यादि में पवित्रता का ध्यान देना, और इनके लिए हलाल कमाई प्रयोग करना, अधिकतर नेकी और फर्माबदारी के नम्बर करना, हराम चीज़ों से बचना, और शक और शहवत वाली चीज़ों से दूर रहना। **और दुआ करते समय :** दिल हज़िर करके अल्लाह की ओर ध्यान देना, अल्लाह पर भरोसा करना, उससे आशा करना, और उसी की ओर पनाह पकड़ना, उसके सामने गिङ्गिङ्गाना, मैनत करना, अपने सारे काम उसी के हवाले करना, और दूसरों की ओर से ध्यान हटाकर उसी की तरफ ध्यान स्थिर करना, और दुआ कबूल होने का विश्वास रखना।

**दुआ के कबूल होने से रोकने वाली चीज़ें :** कभी-कभार इन्सान दुआ करता है परन्तु उसकी दुआ कबूल नहीं होती, या देरी से कबूल होती है, इसके भी बहुत से कारण हैं जिनमें से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है : \* **दुआ में अल्लाह के साथ किसी दूसरे को साझी करना :** \* **बिला वजह की तफ़सील करना, जैसे जहन्नम की गर्मी, उसकी तंगी, और उसके अन्दरों से पनाह मांगना, जब्कि मात्र जहन्नम से पनाह मांगना काफी है।** \* **मुसलमान का अपने ऊपर या नाहक किसी दूसरे को शाप देना।** \* **पाप और नातेदारी तोड़ने की दुआ करना।** \* **दुआ को चाहत पर छोड़ना, जैसे यूँ कहना : ऐ अल्लाह यदि तेरी चाहत हो तो मुझे पाफ़ कर। या इस तरह के शब्दों द्वारा दुआ करना।** \* **दुआ स्वीकार होने में जल्दी करना, जैसे यह कहना कि मैंने दुआ की लेकिन मेरी दुआ कबूल नहीं हूई।** \* **थक और उक्ता कर दुआ करना छोड़ देना।** \* **बिना मन के लापर्वाही के साथ दुआ करना।** \* **जल्दबाज़ी और अल्लाह के सामने बे-अद्वीती के साथ दुआ करना, नबी करीम ﷺ ने एक व्यक्ति को नमाज़ में दुआ करते सुना, उसने न तो अल्लाह का प्रशंसा किया और न ही नबी ﷺ पर दस्त भेजा, तो आप ﷺ ने फरमाया: उसने जल्दबाज़ी से काम लिया, फिर आप ﷺ ने उसे बुलाया और उससे फरमाया : “जब तुम मैं से कोई नमाज़ पढ़े तो पहले अल्लाह की तारीफ़ और सना करे, फिर नबी ﷺ पर दस्त भेजे, फिर जो चाहे दुआ करे”। (अबू दाऊद और तिमीत)** \* **किसी ऐसी चीज़ की दुआ करना जिसका फ़ैसला होचुका है : जैसे हमेशा दुनिया में रहने की दुआ करना।** \* **इसी तरह दुआ में काफियादार मुसज्ज़ इबारत का कष्ट करना : अल्लाह तआला का फरमान है : “तुम अपने रब से दुआ किया करो गिङ्गिङ्गाकर भी और चुपके चुपके**

भी वास्तवमें अल्लाह तआला ऐसे लोगों को नापसन्द करता है जो सीमा पार कर जाएं। और इने अब्बास رض ने फरमाया : “सजअू और काफिया बन्दी देखो तो उससे बचो, क्योंकि मैं अल्लाह के रसूल صلی اللہ علیہ وسالم और आपके साथियों صلی اللہ علیہ وسالم को उससे बचते हुए ही पाया है”। (बुखारी) \* और बहुत ऊँची और बहुत धीमी आवाज़ में दुआ करना। अल्लाह तआला का फरमान है :

**وَلَا تَجْهِيْرَ بِصَلَاتِكَ وَلَا تَعْفِفْتَ كَمَا** “न तो तू अपनी नमाज़ बहुत ऊँची आवाज़ से पढ़ और न ही एकदम धीमी”। आइशा رض फरमाती हैं कि यह आयत दुआ के बारे में उतरी है।

**मूस्तहब है कि आदमी इस तरीके के साथ दुआ करे :** ① पहले अल्लाह तआला की तारीफ करे। ② फिर नबी صلی اللہ علیہ وسالم पर दस्त भेजे। ③ फिर अपने पाप से तौबा करे, और उन्हें स्वीकार करे। ④ अल्लाह की नैमतों पर उसका शुक्रिया अदा करे। ⑤ फिर जामे'अू और नबी صلی اللہ علیہ وسالم से प्रमाणि दुआओं द्वारा दुआ करे। ⑥ नबी صلی اللہ علیہ وسالم पर दस्त भेज कर दुआ ख़त्म करे।

## कुछ अहम दुआएं

दुआ की मुनासबत	نबी <small>صلی اللہ علیہ وسالم</small> की दुआएँ :
सोने से पहले और बाद की दुआ	यह दुआ पढ़ कर सोएँ : <b>بِاٍسِنِكَ اللّٰهُمَّ امُوتُ وَأَحْيٰ</b> । <sup>۱</sup> “ <b>بِرِسْمِكَ اللّٰهُمَّ أَمُوتُو وَأَحْيٰ</b> ”। और जगने के बाद यह दुआ पढ़ें : <b>الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا وَإِلٰهُ النَّشْوَرُ</b> । <sup>۲</sup> <b>أَلْلَٰهُمَّ لِلِّلَّٰهِ أَهْيَانَا بَعْدَ مَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا وَإِلٰهُ النَّشْوَرُ</b> । <sup>۳</sup> <b>لِلِّلَّٰهِ أَهْيَانَا بَعْدَ مَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا وَإِلٰهُ النَّشْوَرُ</b> । <sup>۴</sup>
जो व्यक्ति नींद में घबरा जाए	أَغُرِّ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ الْقَائِمَاتِ مِنْ عَصْبِيَّهُ وَعَقَابِهِ، وَمِنْ شَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَرَاتِ السَّيَّاطِينِ، وَأَنْ يَخْضُرُونَ । <sup>۵</sup> <b>أَغُرِّ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ الْقَائِمَاتِ مِنْ عَصْبِيَّهُ وَعَقَابِهِ، وَمِنْ شَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَرَاتِ السَّيَّاطِينِ، وَأَنْ يَخْضُرُونَ । <sup>۶</sup></b> <b>أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ الْقَائِمَاتِ مِنْ عَصْبِيَّهُ وَعَقَابِهِ، وَمِنْ شَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَرَاتِ السَّيَّاطِينِ، وَأَنْ يَخْضُرُونَ । <sup>۷</sup></b> <b>أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ الْقَائِمَاتِ مِنْ عَصْبِيَّهُ وَعَقَابِهِ، وَمِنْ شَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَرَاتِ السَّيَّاطِينِ، وَأَنْ يَخْضُرُونَ । <sup>۸</sup></b>
जब सपना देखे	जब तुम में से कोई व्यक्ति अच्छा सपना देखे तो यह अल्लाह की ओर से है, इसलिए इस पर अल्लाह की तारीफ करे, और लोगों को इसे बताए, और यदि अप्रिय सपना देखे तो उस की बुराई से पनाह मांगे, और इसे किसी को न बताए; तो वह उसे हानि नहीं पहुंचा सकता।
घर से बाहर निकलते समय	<b>بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلٰى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ</b> । <sup>۹</sup> <b>بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلٰى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ</b> । <sup>۱۰</sup> <b>كُوْفَتَ إِلَلٰا بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ</b> । <sup>۱۱</sup> <b>اللّٰهُمَّ إِنِّي أَغُرِّ بِكَ أَنْ أَصْلُ أَوْ أَضْلُّ، أَوْ أَزْلُ أَوْ أَرْزَلُ، أَوْ أَظْلِمُ أَوْ أَظْلَمُ، أَوْ أَجْهَلُ أَوْ أَجْهَلُ عَلَيْكَ</b> । <sup>۱۲</sup> <b>“أَلْلَٰهُمَّ إِنِّي أَغُرِّ بِكَ أَنْ أَصْلُ أَوْ أَضْلُّ، أَوْ أَزْلُ أَوْ أَرْزَلُ، أَوْ أَظْلِمُ أَوْ أَظْلَمُ، أَوْ أَجْهَلُ أَوْ أَجْهَلُ عَلَيْكَ</b> । <sup>۱۳</sup> <b>“أَلْلَٰهُمَّ إِنِّي أَغُرِّ بِكَ أَنْ أَصْلُ أَوْ أَضْلُّ، أَوْ أَزْلُ أَوْ أَرْزَلُ، أَوْ أَظْلِمُ أَوْ أَظْلَمُ، أَوْ أَجْهَلُ أَوْ أَجْهَلُ عَلَيْكَ</b> । <sup>۱۴</sup> <b>“أَلْلَٰهُمَّ إِنِّي أَغُرِّ بِكَ أَنْ أَصْلُ أَوْ أَضْلُّ، أَوْ أَزْلُ أَوْ أَرْزَلُ، أَوْ أَظْلِمُ أَوْ أَظْلَمُ، أَوْ أَجْهَلُ أَوْ أَجْهَلُ عَلَيْكَ</b> । <sup>۱۵</sup>
मस्जिद में प्रवेश करते समय	मस्जिद में प्रवेश करते समय पहले अपना दायां पैर बढ़ाए और कहे : <b>بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُولِ اللّٰهِ الَّلَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ</b> । <sup>۱۶</sup> <b>بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُولِ اللّٰهِ الَّلَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ</b> । <sup>۱۷</sup> <b>أَلَّا رَسُولِلَّٰهِ أَهْيَانَا بَعْدَ مَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا وَإِلٰهُ النَّشْوَرُ</b> । <sup>۱۸</sup> <b>أَلَّا رَسُولِلَّٰهِ أَهْيَانَا بَعْدَ مَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا وَإِلٰهُ النَّشْوَرُ</b> । <sup>۱۹</sup>
मस्जिद से निकलते समय	मस्जिद से निकलते समय पहले अपना दायां पैर निकाले और कहे : <b>بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُولِ اللّٰهِ الَّلَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ فَضْلِكَ</b> । <sup>۲۰</sup> <b>بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُولِ اللّٰهِ الَّلَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ فَضْلِكَ</b> । <sup>۲۱</sup> <b>أَلَّا رَسُولِلَّٰهِ أَهْيَانَا بَعْدَ مَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا وَإِلٰهُ النَّشْوَرُ</b> । <sup>۲۲</sup> <b>أَلَّا رَسُولِلَّٰهِ أَهْيَانَا بَعْدَ مَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا وَإِلٰهُ النَّشْوَرُ</b> । <sup>۲۳</sup>

<sup>۱</sup> (ऐ अल्लाह मैं तेरी नाम के साथ मरता और जीता हूँ)

<sup>۲</sup> (सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस ने हमे मारने के बाद जीवित किया और उसी की ओर पलट कर जाना है)

<sup>۳</sup> (अल्लाह के परिपूर्ण कलिमात की पनाह में आता हूँ उस के क्रोध से, उस के बन्दों की बुराई से, और जीतन के बन्दों से और इस बात से ।)

<sup>۴</sup> (अल्लाह के नाम के साथ घर से बाहर निकलता हूँ, मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, उस की तीर्यक के बिना न तो कुछ करने की तीव्रता ।)

<sup>۵</sup> (ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह में आता हूँ इस बात से कि मैं गुप्त हो जाकं या मुझे गुप्त किया जाए, या मैं जितालत करने की तीव्रता ।)

<sup>۶</sup> (अल्लाह के नाम के साथ मैं प्रवेश करता हूँ, और सत्तामती हो अल्लाह के सूल पर, और अल्लाह मैं पाप चार कर दे, और इस



<p><b>ते विवाहित के लिए</b></p> <p><b>उस ने मुर्ग की बाँग या गधे की रीक सुनी</b></p>	<p>“بَارَكَ اللَّهُ لَكَ، وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَمِيعَ بَنِيكُمَا فِي خَيْرٍ” “बारकल्लाहू लक, व बारक अलैक, व जमअ़ बैनकूमा फी खैर्।”<sup>1</sup></p> <p>जब तुम गधे की रीक सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह चाहो क्योंकि उस ने शैतान देखा है, और जब मुर्ग की बाँग सुनो तो अल्लाह से उस का फ़ज़ल चाहो; क्योंकि उसने फ़रिश्ता देखा है। “जब रात में कुते की भूंक या गधे की रीक सुनो तो अल्लाह की पनाह चाहो ...”।</p>
<p><b>वे तुम से अल्लाह के लिए महब्बत करता हैं</b></p> <p><b>के जवाब में</b></p>	<p>अनस <sup>رض</sup> बयान करते हैं एक व्यक्ति नबी <sup>صل</sup> के पास था कि एक दूसरा व्यक्ति वहाँ से गुजरा तो उस ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल मैं अवश्य इस से मुहब्बत करता हूँ, तो नबी <sup>صل</sup> ने कहा : “क्या तुम ने उसे बताया है?”। उस ने कहा नहीं। आप ने फ़रमाया: “उसे बता दो”। तो उस के पीछे गया और कहा : “इन्नी उहिब्बुक फिल्लाह” मैं अल्लाह के लिए तुझ से मुहब्बत करता हूँ। तो उस ने जवाब दिया : “अहब्बकल्लाहुल्लज़ी अहब्बतनी लहू”। अल्लाह तुझ से मुहब्बत करे जिस के लिए तू ने मुझ से मुहब्बत की है।</p>
<p><b>किसी को जब छींक आए</b></p>	<p>“जब तुम में से किसी को छींक आए तो कहे : “अल्हम्दु लिल्लाह” (सारी प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए है)। और उस का भाई या साथी उसे कहे : “यर्हमुकल्लाह” (अल्लाह तुझ पर दया करे)। और “यर्हमुकल्लाह” के जवाब में छींकने वाला व्यक्ति कहे : “यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम्” अल्लाह तूझे हिदायत दे और तेरी हालत को बेहतर कर दे। और जब किसी काफिर व्यक्ति को छींक आए और वह “अल्हम्दु लिल्लाह” कहे, तो उस के जवाब : “यर्हमुकल्लाह” न कहो बल्कि : “यहदीकुमुल्लाहु” कहे।</p>
<p><b>परीशानी की घड़ी में</b></p>	<p>『لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ』 “लाइलाह इल्लल्लाहुल्लज़ीमुल्लीम्, लाइलाह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति व रब्बुर्अर्जिं, व रब्बुर्अर्शिल्करीम्”।<sup>3</sup></p> <p>रब्बुर्अर्शिल्करीम्, लाइलाह इल्लल्लाहु रब्बुर्अर्जिं, व रब्बुर्अर्शिल्करीम्”।<sup>4</sup></p> <p>『اللَّهُ اللَّهُ رَبِّيْ، لَا اُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا』 “अल्लाहु अल्लाहु रब्बी ला उश्श्रकू बिही शैआ”<sup>5</sup></p> <p>『يَا حَيُّ يَا قَيُومُ بِرْحَمْتَكَ أَسْتَغْفِيُّ』 “या हैयू या कैय्यम् विरह्मतिक अस्तगीसु”<sup>6</sup></p> <p>『سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ』 “सुब्हानल्लाहिल्लज़ीम्”<sup>6</sup></p>
<p><b>दुश्मन पर श्राप के जैन क्रियाएँ</b></p>	<p>“اللَّهُمَّ مُنْزَلُ الْكِتَابِ وَمُجْرِي السَّحَابِ سَرِيعُ الْحِسَابِ اهْزِمْ الْأَخْرَابَ، اللَّهُمَّ اهْرِمْهُمْ وَرَلِزْهُمْ”<sup>1</sup>, “مُعْنِيَّرसहावि मुन्जिलत्किताबि सरीअल्हिसाबि इहिजमिलअह्जाब्, अल्लाहुम्महिजम्हुम् व ज़लिजल्हुम्”।<sup>1</sup></p> <p>जो व्यक्ति रात में नींद से जगे और पढ़े : लाइलाह इल्लल्लाहु वहरू उल्लहू ला शरीक लहू, लहूल्लम्हु व लहूल्लहू व हुव अला कूल्लि शैइन् कदीर् सुब्हानल्लाहि, वल्हम्हु लिल्लाहि, व लाइलाह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर्, व ला हौल व ला कूवत इल्ला बिल्लाह”।<sup>8</sup></p> <p>फिर “अल्लाहुम्मागिर्फर्ला” कहे : “हे अल्लाह मुझे बरखा दे”। या द्रुआ करे तो उसकी द्रुआ कबूल कर ली जाती है। और यदि वुजू करके नमाज पढ़े तो उस की नमाज स्वीकार होती है।</p>

<sup>1</sup> (अल्लाह के नाम के साथ मैं बाहर निकलता हूँ, और सलामती हो अल्लाह के रसूल पर, ऐ अल्लाह मेरे पाप माफ कर दे, और मेरे लिए अपने फ़ज़ल के दरवाजे खोल दे)।

<sup>2</sup> (अल्लाह तेरे लिए बर्कत करे और तुझ पर बर्कत करे और तुम दोनों को भलाई के साथ इकट्ठा करे)।

<sup>3</sup> (अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, महान माफ करने वाला है, अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, महान अर्श का रव है, अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, आकाशों का, धरती का और करीम अर्श का रव है)।

<sup>4</sup> (अल्लाह अल्लाह मेरा रव है मैं उस के साथ किसी चीज़ को साझी नहीं बनाता)।

<sup>5</sup> (ऐ जिन्दा और सभी को धामने वाले! मैं तेरी रथ्मतों द्वारा कर्याद करता हूँ)।

<sup>6</sup> (महान अल्लाह प्रत्येक प्रकार के ऐव से पाक है)।

<sup>7</sup> (ऐ अल्लाह! बादल को चलाने वाले, किताब को उतारने वाले, जल्द हिसाब करने वाले, जमाअतों को पराजित कर, ऐ अल्लाह! तू उन्हें पराजित कर, और उन्हे हिला कर रख दे)।

<sup>8</sup> “अल्लाह के सिवाय कोई भी सच्चा इबादत के लायक नहीं, उसका कोई साझी नहीं, उसीके लिए राज है और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह सभी चीज़ों पर ताकत रखने वाला है, मैं अल्लाह की पाकी बधान करता हूँ, अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं, और अल्लाह सब से बड़ा है, नहीं है कुछ करने कि ताकत और किसी चीज़ से बचने की शक्ति मगर अल्लाह की तौफीक से”।

जब मुआमलः कठिन हो जाए	اللَّهُمَّ لَا سَهْلٌ إِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا وَأَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ إِذَا شِئْتَ سَهْلًا بما جَعَلَهُ سَهْلًا، وَأَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ إِذَا شِئْتَ سَهْلًا”。 <sup>1</sup>
कर्ज़ की अदाइगी के लिए	اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْهَمِّ وَالْحَزْنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسْلِ، وَالْجُنُونِ وَالْبُخْلِ، وَضَلَالِ الدِّينِ، وَغُلَبَةِ الرِّجَالِ “अल्लाहुम्म इन्नी अज़्जु बिक मिनलू हम्म वल् हजनि, वल्उज़ि वल् कसलि, वल् ज़बि वल् बर्खिल, व जलइदैनि, व गुलबतिरिजालि” <sup>2</sup>
शैचालय जाते समय	اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْحُبْثِ وَالْحَبَائِثِ “अल्लाहुम्म इन्नी अज़्जु बिक मिनल्खुबुसि वल् ख़बाइसि”। <sup>3</sup> और बाहर निकल कर कहे : “غُर्फ़انक” <sup>4</sup>
नमाज़ में वसवसा आए तो	“वह एक शैतान है जिसे ख़न्ज़ब कहा जाता, जब तुम्हें इसका इहसास हो तो इससे अल्लाह की पनाह चाहो, और अपनी बाई और 3 बार थूको”।
प्रातः	اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ دِقَّهُ وَجْلَهُ وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ وَعَلَانِيَتَهُ وَسِرَّهُ जिल्लाहू व औवलहू व आखिरहू, व अलानियतहू व सिरहू” <sup>5</sup> سُبْحَانَكَ رَبِّي وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضاكَ مِنْ سَخْطِكَ وَبِمُعَاافَاتِكَ مِنْ عَقوَيْكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ لَا أُحِصِّي شَنَاءَ عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْبَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ “अल्लाहुम्म इन्नी अज़्जु बिरिजाक मिन् सखतिक, व बिमुआफातिक मिन् उकूबतिक, व अज़्जु बिक मिन्, ला उह्सी सनाअन् अलैक अन्त कमा अस्नैत अला नफिसक” <sup>6</sup>
सज्दए तिलावत	اللَّهُمَّ سَجَدْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَلَكَ أَسْلَمْتُ سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ وَسَقَ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ قَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْحَالَقِينَ “अल्लाहुम्म लक सजदत् व बिक आमन्त् व लक अस्लम्, सजद वन्हिय लिल्लजी खलकहू व सौवरहू व शक समझू व बसरहू तबारकल्लाहू अहसनुल्खालिकीन्” <sup>7</sup>
दुआए सना	اللَّهُمَّ يَا عَدُّ بَنِي وَبَنِيَّ خَطَايَايِي كَمَا يَأْعَدُتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ تَقْنِي مِنْ حَظَّتِي اِي كَمَا يَيْنِيَ الطَّوْبُ अल्लाहुम्म वाइद् वैनी व वैन ख़तायाय कमा वाइत वैनलू मशिकि वल् मग्निवि, अल्लाहुम्म नकिनी मिन् ख़तायाय कमा युनक्स्सौवुल् अव्यनु मिनदनसि, अल्लाहुम्मसिल्ली बिल्माए वस्सलिं वल् बरद्”। <sup>8</sup>
नमाज़ के अन्त में	اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي طَلْمَا كَثِيرًا وَلَا يَغْفِرُ الدَّوْبُ إِلَّا أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عَنِّكَ وَإِنْهِي إِنْكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ “अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ्सी ज़लम्तु कसीरन् व ला यरिफ़रुण्णनूब इला अन्त फ़रिफ़िल्ली मरिफ़रतमिन् इन्दिक, वर्हम्नी इन्लक अनतल् ग़फूररहीम्”। <sup>10</sup>
नमाज़ के बाद	اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ “अल्लाहुम्म अइन्नी अला निकिक व श्रकिक व हूँ इवादतिक” <sup>1</sup> * اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْكُفَّرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ “अल्लाहुम्म इन्नी अज़्जु बिक मिनल्कृफि वल् फ़क्रि व अज़ाविल्कृत्रि” <sup>2</sup>

<sup>1</sup>

(ऐ अल्लाह! वही चीज़ आसान है जिसे तू सहज कर दे, और यदि तू चाहता है तो कठिन को आसान कर देता है)।  
<sup>2</sup> (ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ फिर और गम से, और आजिज़ हो जाने और सुस्ती से, और डरपोकन और बड़ीनी से, और कर्ज़ के चढ़ जाने और लोगों के ग़ालिब हो जाने से)।  
<sup>3</sup> ऐ अल्लाह मैं जिन्नों और जिन्नियों से तेरी पनाह में आता हूँ।  
<sup>4</sup> (तेरी माफी चाहता हूँ)।

<sup>5</sup> (ऐ अल्लाह मेरे थोटे बड़े, पहले पिछले, और खुले थूपे सारे पाप माफ कर दे)।

<sup>6</sup> (ऐ मेरे रव! तू पाक है और अपनी तारीफ के साथ है, ऐ अल्लाह मुझे माफ कर दे)।

<sup>7</sup> (ऐ अल्लाह! मैं तेरे गुस्से से तेरे राजी होने की पनाह चाहता हूँ, और तेरी सज्जा से तेरी माफी की पनाह चाहता हूँ, और मैं तुम से तेरी

<sup>8</sup> (ऐ अल्लाह मैं ने तेरे लिए सज्जा किया, तुझ पर ईमान लाया, तेरा फ़र्मावर्ह हुया, मेरे चेहरे मे उम हस्ती के लिए सज्जा किया तिन ने उसे पैदा किया, और उस की सूरत बनाई, और कान तथा आँख के मुराब्ब बनाए, बर्कत वाला है अल्लाह जो सब बनाने वाले से अच्छा है)।

<sup>9</sup> (ऐ अल्लाह! मेरे और मेरे पाप के बीच दूरी कर दे निस तरह तूने पूरब और पश्चिम के बीच दूरी की है, तो अल्लाह! मुझे मेरे पाप से नहीं सुधरा करदे जिस तरह सफेद कपड़ा मैत से साफ़ा सुधरा किया जाता है, ऐ अल्लाह! मुझे पनाह से, बरक से और जोरे से पूरा हो)।  
<sup>10</sup> (ऐ अल्लाह! मैं ने अपने ऊपर बहुत अधिक अलावाहर किया, और नाज़ तू ही है मैं मुनाहों को माफ़ करता है, तो तू मुझे अपने अच्छी से बद्ध दे, और मुझ पर दबा कर, अवज्ञ तू ही बद्धमने वाला दबातू है)।

(वे वार्ता आने जिक शक्ति और अच्छी इबादत पर मेरी सहायत कर)

(ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र, शुक्र और अज्ञाव से तेरी पनाह चाहता हूँ)।

(ऐ अल्लाह! कुफ्र, ग़राबा, आर कब्र  
(ऐ अल्लाह! नाभ-दायक वर्षा बना)।

३ ऐ अल्लाह! लाभ-दायक वधा बना। ४ अल्लाह के फ़िल और उस की दया से बारिश हुई। और जो चाहे दुआ करे; क्योंकि वधा के समय का दुआ करवता है।

(अल्लाह के फ़ज़्ल और उस का दया से बाहर नहीं आता है)

(ए अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ कि क्या आप इस की बूराई से और उस चाज़ की बूराई से जा इतना ज्ञान के साथ यह भेजी गई है, और तेरी पनाह में आता हूँ इस की बूराई से और उस चाज़ की बूराई से जा इतना ज्ञान के साथ यह भेजी गई है, और तेरी पनाह में आता हूँ इस की बूराई से और उस चाज़ की बूराई से जा इतना ज्ञान के साथ यह भेजी गई है)।

<sup>6</sup> बुराई से जिस के साथ यह भेजा गई है।

० (ऐ अल्लाह!

अल्लाह है)। वे अपना और वेरो कर्मों के खातमे को अल्लाह के हवाले करता है।

मैं तेरे धर्म, तेरी अमानत, और तर कमा के ख़त्तेम का जरूरी है। यह वार्द नहीं होती।

(मैं तुम्हें उस अल्लाह के हवाले करता हूँ जिस के हवाले का इसका नियम है जिसे दिया है जिस की नेआमत द्वारा नेकियां पूरी होती हैं)

१० | सम्पूर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस को नभू

10) दर हाल में अल्लाह ही के लिए सम्पूर्ण प्रशंसा ह।  
 11) (अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है, पाक है वह हस्ती जिसने इसे हमार काबू में किया हालांकि हम इसे काबू में लाने वाले न थे, और हम अपने रब की ओर लौटने वाले हैं, ऐ अल्लाह! हम अपनी इस यात्रा में तुझ से नेकी और तत्क्षणा का सवाल करते हैं, और उस कर्म का जिसे तू पसंद करे, ऐ अल्लाह! हमारी यह यात्रा हम पर आसान कर दे, और इस की दूरी हम से तह कर दे, ऐ अल्लाह! तु ही यात्रा में साथी और घर वालों को देख-रेख करने वाला है, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में

اللهم أسلمت نفسي إليك وفوضت أمري إليك وألجأ ظهري إليك رهبة ورغبة إليك لا ملجأ ولا منجا منك إلا  
إليك أمنت بكتابك الذي أزللت وبنبيك الذي أرسليت

“**أَلْهُمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَأَوْنَانَا فَكَمْ مَعْنَى لَا كَافِي لَهُ وَلَا مُؤْوِي**”<sup>2</sup> **“أَلْهُمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَأَوْنَانَا فَكَمْ مَعْنَى لَا كَافِي لَهُ وَلَا مُؤْوِي**”<sup>1</sup>

सकाना व कफाना व आवाना फ़क्मिम्मन् ला काफ़िय लहू व ला मु'अवाय” -  
 • اللَّهُمَّ قِنْيَ عَذَابِكَ يَوْمَ تَبَعُّثُ عِبَادَكَ “अल्लाहूम्म किनी अजाबक यौम तब्वासु इबादक” 3

**سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّيْ يَكَ وَصَعْتُ جَنْبِيْ وَبِكَ أَرْفَعُهُ إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَأَغْفِرْلَهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا حَفَظْتَ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ**

“सुझानकल्लाहम् रब्बा बिक वजअतु जन्बा व बिक अफउहू. इन् अम्सक्त नप्सा फाग्फर् लहा व इन् असंत्तहा फ़स्फ़ज्हा बिमा तहफ़ज्जु बिहीं इबादकस्सालिहीन्”<sup>4</sup>

اللَّهُمَّ اجْعِلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي لِسَانِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَمَنْ فَوْقِ نُورٍ، وَمَنْ حَتَّى نُورًا، وَعَنْ يَمْنِي نُورًا،  
وَعَنْ شَمَائِلِ نُورٍ، وَمِنْ أَمَامِي نُورًا، وَمِنْ خَلْفِي نُورًا، وَاجْعِلْ فِي نَفْسِي نُورًا، وَأَعْظَمْ لِي نُورًا، وَعَظِيمْ لِي نُورًا، وَاجْعِلْ لِي نُورًا،  
تَاجِعِمْ لِي نُورًا، اللَّهُمَّ أَعْطِنِي نُورًا، وَاحْجَعْنِي نُورًا، وَعَصِّبْنِي نُورًا، وَفَسَعَيْنِي نُورًا، وَفَتَشَيْنِي نُورًا

“अल्लाहुम्बज्ज़अल् फी क़ल्बी नूरन्, व फी लिसानी नूरन्, व फी सर्वे नूरन्, व मिन् फौकी नूरन्, व मिन् तह्ती नूरन्, व अन यमीनी नरन्, व अन शिमाली नरन्, व मिन् अमामी नरन्

ਵ ਮਿਨੁ ਖ਼ਲਕੀ ਨੂਰਨੁ, ਵ ਜ਼ਬਲੁ ਫੀ ਨਪਸੀ ਨੂਰਨੁ, ਵ ਆਅਜ਼ਿਮੁ ਲੀ ਨੂਰਨੁ, ਵ ਅੰਜ਼ਿਮ ਲੀ ਨੂਰਨੁ, ਵ ਜ਼ਬਲੁ ਲੀ ਨੂਰਨੁ, ਵ ਜ਼ਬਲੀ ਨੂਰਨੁ, ਅਲਲਾਹੁਮਾ ਆ'ਅਰਤਿਨੀ ਨੂਰਨੁ, ਵ ਜ਼ਬਲੁ ਫੀ ਅਸਥੀ ਨੂਰਨੁ, ਵ ਫੀ ਲਤਸੀ ਨੂਰਨੁ, ਵ ਫੀ ਦਮੀ ਨੂਰਨੁ, ਵ ਫੀ ਸ਼ਾ'ਅਰੀ ਨੂਰਨੁ, ਵ ਫੀ ਬਥਰੀ ਨੂਰਨੁ”<sup>5</sup>

जब तुम में से कोई किसी चीज़ का इरादा करे तो फर्ज के सिवाय 2 रक़अत नमाज़ पढ़े फिर यह दुआ पढ़े :  
**اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ، فَإِنَّكَ تَقْدِيرُ وَلَا أَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ، وَأَنْتَ عَلَامُ الْعِيُوبِ، اللَّهُمَّ إِنَّ كُنْتَ تَعْلَمُ هَذَا الْأَمْرَ (ثُمَّ تَسْمِيهِ بِعَيْنِهِ) خَبِيرًا لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أُمْرِي - او قال: عَاجِلُ أُمْرِي وَآجِلُهُ - فَاقْدِرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ، وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرًّا لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ اُمْرِي - او قال في عاجِلُ اُمْرِي وَآجِلُهُ - فَاصْرِفْهُ عَنِي وَاصْرِفْنِي عَنْهُ وَاقْدِرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ رَضِيَ بِهِ**

“अल्लाहुम्म इन्नी अस्तखीरोक बि-इत्मिक, व अस्तविद्रुक विकुद्रितिक, व अस्भलुक मिन् फज्जिक, फ़इनक तविद्रु व ला अविद्रू, व ता’अलमु व ला आ’अलमू, व अन्त अल्लामुल गुयूब, अल्लाहुम्म फ़इन् कुल ता’अलमु हाजलअम्र (अपने मुआमलः का चर्चा करे) खैरल्ली फ़ी दीनी व मआशी, व आकिबति अग्री, या कहा : आजिलि अग्री व आजिलिही फ़क्तुर्हु ली व यस्सिर्हु ली सुम्म बारिक ली फ़ाहि, व इन कुल ता’अलमु अन्न हाजलअम्र शर्हल्ली फ़ी दीनी व मआशी, व आकिबति अग्री, या कहा : फ़ी आजिलि अग्री व आजिलिही फ़स्तिफ़हु अन्नी वस्तिफ़नी अन्हु वक्तुर लियल खैर हैसु कान, सुम्म रज्जिनी विही”।<sup>6</sup>

<sup>1</sup> (ऐ अल्लाह मैं ने अपनी जान को तेरा वफादार बनाया, और अपना काम तेरे हँवाले किया, और अपना चेहरा तेरी ओर केर लिया, तुझ से डरते हुए और तेरी चाहत रखते हुए, न शरण है और न ही तुझ से भागने की जगह मगर तेरी ही ओर, मैं तेरी उतारी हुई किंत्र और भेजे हुए नवी पर ईमान लाया)।

<sup>2</sup> (सारी तारीफें उस हस्ती के लिए हैं जिसने हमें खिलाया और पिलाया, और हमारे लिए काफी हुआ, और हमें ठिकाना दिया, किनने ऐसे जिनके लिए कोई काफी नहीं और न ही कोई ठिकाना देने वाला)।

<sup>3</sup> (ऐ अल्लाह! जिस दिन तू अपने बन्दों को दोबारा जिन्दा करना मझे अपने सतत से चाहा):

<sup>4</sup> (ऐ अल्लाह मेरे रब! तू हर प्रकार के ऐब से पाक है, तेरे नाम के साथ मैं ने अपना पहलु को रखद्वा और तेरे ही नाम के साथ उठात हूँ यदि तूने मेरी जान निकाल ली तो उसे माफ करना और यदि वापस कर दी तो उन धीरों से उस की सुरक्षा करना जिन से अपने में कहे की सुरक्षा करता है)। अपने दोनों हाथों में थुक्कुकाते और कुल अक्जुन्ड विरचित फलाह, और कुल अक्जुन्ड विरचित्तासु पड़ते, और ही शीर पर हाथ फेरते। इसी तरह हर रात को सोने से पहले अलिफ लाम मीम सज्जा, और सरतल मल्क पह कर सोने दे।

<sup>5</sup> (से अल्लाह! मेरे द्वारा देया जाना जाव से बचाना)।

<sup>5</sup> (ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर (रीशनी) कर दे, मेरी जुबान में नूर कर दे, येरे कानों में नूर कर दे, मेरी आँखों में नूर कर दे, मेरे ऊपर नूर कर दे, मेरे नीचे नूर कर दे, मेरे दाएं और नूर कर दे, मेरे बाएं और नूर कर दे, मेरे आगे नूर कर दे, मेरे आगे नूर कर दे, मेरे तिर नूर कर दे, और मुझे नूर कर दे, ऐ अल्लाह! मुझे नूर अल्ला कर, मेरे पहों से नूर कर दे, मेरे गोपत में नूर कर दे, मेरे घर से —

<sup>6</sup> हे अल्लाह! मैं तेरे इस्लम की वर्कत से नुज़र से भलाई चाहता हूँ, और तेरी शक्ति का वास्तव देकर तेरी मदद चाहता हूँ, और तेरे खेफ़ज़्ज़ (कृपा) का सवाल करता हूँ, क्योंकि तू शक्तिमान है, मैं शक्तियाता नहीं, तू (अच्छा और बुरा) सब जानता है।

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، وَاغْفِهِ وَاعْفُ عَنْهُ، وَأكْرَمْ نُزُلَهُ وَوَسْعَ مُذْخَلَهُ، وَاغْبِلْهُ بِالنَّاءِ وَالْفَلْجِ وَالْمَرْدِ وَنَقْهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَيْتَ الشَّوْبَ الْأَبْيَضَ مِنَ الدَّسَّ، وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ وَرَوْجًا خَيْرًا مِنْ رَوْجِهِ، وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ، وَأَعِدْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ۔

अल्लाहुम्मगिर लहू वर्हम्ह, व आफिही व'अप्फ् अनहू, व अक्रिम नुज़लहू, व वस्त्र्स्त्र अ मुद्रखलहू, बैसलहू बिल्माए वस्मलिज वल्वरद, व नक्रिही मिनलखताया कमा नक्केतस्सौवलअव्यज् मिनदनसि, व अब्दिलहू दारनु खैरनु मिनु दारिही, व अल्लनु खैरनु मिनु अहिलही, व जौजनु खैरनु मिनु जौजिही, व अदिखलहलजन्नः, व अइज्ञु मिनु अजाविल्कद्रि व अजाविन्नार।<sup>1</sup>

जब भी किसी व्यक्ति ने गम और फिक्र लाहिक होने पर यह कहा :

اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ وَابْنُ أَمْتِكَ نَاصِيَ بِيَدِكَ مَاضٍ فِي حُكْمِكَ عَذْلٌ فِي قَضَاؤُكَ أَسْأَلُكَ يَكُلُّ أَسْمَهُ هُوَ لَكَ سَمَيْتَ بِهِ نَفْسَكَ أَوْ عَلَيْهِ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ أَوْ اسْتَأْتَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي وَتُورَ صَدْرِي وَجِلَاءَ حُرْبِي وَذَهَابَ هَمِّيٍّ إِلَّا أَذْهَبَ اللَّهُ هَمَّهُ وَحْزُنَهُ وَأَبْدَلَهُ مَكَانَهُ فَرَحًا۔

“अल्लाहुम्मा इन्नी अब्दुक्, वन्नु अब्दिक्, वन्नु अमतिक्, नासीयती वियदिक्, माजिनु फ़िय्या हुक्मुक्, अदलुनु किया कजाउक्, अस्अलुका विकुल्लास्मिनु हुवा लक्, सम्मैत विही नफ्सक्, औ अल्लम्हहू अहदनु मिनु खल्कक्, औ अन्जल्लहू फ़ी किताविक्, अविस्ताअसर्त विही फ़ी इल्लिमलैवि इन्दक्, अन् तज्अलल कुरुआना र्बीआ कल्वी, व नूरा सद्री, व जिलाआ हुज्जी, व ज़हाबा हम्मी”।<sup>2</sup>

और तू गैब (धुरी हूई बातों) को खूब जानने वाला है, हे अल्लाह् यदि तू जानता है कि यह काम (फिर जिस काम के लिए इस्मिन्दारः कर रहा है उसका नाम ले) मेरे लिए मेरे धर्म, मेरी जीविका, और मेरे परिणाम के लिहाज़ से, -या यूँ कहा कि : मेरी दुनिया और आधिरत के लिहाज़ से- बेहतर है तो इस काम को मेरे लिए मुकद्दर करदे, और इसे पाना मेरे लिए आसान कर दे, और मुझे इसमें चक्की है, और यदि तू जानता है कि यह काम मेरे लिए बुरा है, मेरे धर्म, मेरी जीविका, और मेरे परिणाम के लिहाज़ से, -या यूँ कहा कि : मेरी दुन्या और आधिरत के लिहाज़ से- तो इस काम को मुझ से फेर दे, और मुझे इससे बचाले, और भलाई जहाँ भी हो उसे मेरे लिए मुकद्दर करदे, और मुझे उस पर खुश करदे।

(ऐ अल्लाह! इसे बरक्षा दे, इस पर दया कर, इसे आफियत दे, इसे मुआफ कर दे, और इस की मेहमानी प्रतिष्ठा के साथ कर, और इस के जाने की जगह चौड़ी कर दे, और इसे पानी, बर्फ और ओलों के साथ धो दे, और इसे गुनाहों से इस प्रकार साफ कर दे जिस प्रकार तूने सफेद कपड़े को मैल से साफ किया, और इसे इस के घर के बदले उत्तम घर, घरवालों के बदले उत्तम घरवाले, और जीवी के बदले उत्तम जीवी अता कर, और इसे जननत में दाखिल कर, और इसे कब्र के अन्जाब और आग के अन्जाब से पनाह दे।

(ऐ अल्लाह! मैं तेरा बन्दा, तेरे बन्दे का बेटा और तेरी बान्धी का बेटा हूँ, तेरा आदेश मुझ पर लागू होता है, मेरे बारे में तेरा फैसला इसाफ बाला है, मैं तुझ से तेरे हर उस खास नाम ढारा सवाल करता हूँ जो तूने स्वयं अपना नाम रखवा है, या उसे अपनी किताब में भागिल किया है, या उसे अपनी मख्लुक में से किसी को सिखाया है, या अपने इलमुल-गैब में उसे छिपाने को बर्ताई दी है, कि तू मैंने को मेरे दिल की बहार, और मेरे सीने का प्रकाश, और मेरे गम को दूर करने वाला, और मेरे फिक्र को ले जाने वाला बना

## लाभ-दायक व्यापार

अल्लाह तआला ने हमें अपनी सारी सृष्टि पर फ़ज़ीलत दी है, बोलने जैसी नेमत को हमारे लिए ख़ास किया, जुबान को बोलने का माध्यम बनाया, जो एक ऐसा उपहार है जिसका प्रयोग भलाई और बुराई दोनों में हो सकता है, अतः जो इसका इस्तिमाल भलाई के लिए करेगा तो उसे इस संसार में नेक बख्ती प्रदान करेगी, और जन्नत में ऊँचे दरजे पर फाइज़ करदेगी और जो बुराईयों में इसे प्रयोग करेगा तो यह उसे दुनिया और आखिरत में तबाही और बरबादी के ख़ाहे में गिरा देगी। और कुरआन मजीद की तिलावत के बाद सर्व-थ्रेष्ठ चीज़ जिससे समय को लाभ-दायक काम में इस्तिमाल किया जा सकता है वह है अल्लाह तआला का ज़िक्र।

**ज़िक्र की फ़ज़ीलत :** ज़िक्र के विषय में बहुत सारी हड्डीसों चर्चित है, इन्हीं में से नबी ﷺ का यह इशार्द है : “क्या मैं तुम्हें तुम्हारे बेहतर कर्म की ख़बर न दूँ ... और आप ﷺ ने फरमाया : مَثُلُ الْذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ رَبَّهُ مَثُلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ जो व्यक्ति अपने रब का ज़िक्र करता है और जो ज़िक्र नहीं करता उसकी मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा व्यक्ति जैसी है”। बुखारी और हड्डीसे कुदसी में है कि अल्लाह तआला फ़र्माता है : اَنَّا عِنْدَ ظَنِ عَبْدِيْ بِيْ وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرَتُهُ मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक होता हूँ, और मैं अपने बन्दे के साथ होता हूँ जब वह मुझे याद करता है, यदि वह अपने दिल में मुझे याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ, और यदि वह मुझे किसी सभा में याद करता है तो मैं उसकी सभा से बेहतर सभा में उसे याद करता हूँ और यदि वह मेरी ओर एक बित्ता करीब होता है, तो मैं उस से एक हाथ करीब होता हूँ। (बुखारी) और आप ﷺ ने यह भी इशार्द फ़रमाया :

“سَبَقَ الْمُفَرِّدُونَ، قَالُوا: وَمَا الْمُفَرِّدُونَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: الَّذِاكِرُونَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالْمُذَكَّرُونَ لَا يَرْجَلُونَ لِسَانَكَ رَطْبًا مِنْ ذَكْرِ اللَّهِ۔”

“मुफर्रिदून आगे निकल गए, लोगों ने पूछा : हे अल्लाह के रसूल! मुफर्रिदून कौन लोग हैं? आप ने फरमाया : वह मर्द और वह औरतें जो बहुत अधिक अल्लाह का ज़िक्र करते हैं”। (मुस्लिम)

“तेरी जुबान अल्लाह के ज़िक्र से हमेशा तर रहे”। (तिर्मिज़ी इत्यादि)

**स्वाब की बढ़ौतरी :** जिस तरह कुरआन मजीद की तिलावत के सवाब में बढ़ौतरी होती है उसी तरह नेक कर्मों के सवाब में भी बढ़ौतरी होती है। और ऐसा दो चीज़ों के कारण होता है : ① दिल में मौजूद ईमान, इख्लास, महब्बत और उसके मातिहत चीज़ों के कारण। ② ज़िक्र के बारे में दिल के व्यस्त रहने और सोचने के कारण, केवल जुबान के द्वारा उच्चारण करके नहीं। और यही कर्म जब कामिल हो तो इसके द्वारा अल्लाह तआला गुनहों को सिरे से मिटा देता है, और उन पर अमल करने वाले को भरपूर सवाब देता है, और जितना यह कर्म होता है उसी हिसाब से उसके सवाब में भी कमी आती है।

**ज़िक्र के कुछ फ़ायदे :** शैखुल इस्लाम अल्लामा इब्ने तैमिया رحمۃ اللہ علیہ ने फ़रमाया : दिल के लिए ज़िक्र मछली के लिए पानी के समान है, तो जब मछली को पानी से निकाल दिया जाए तो उसका क्या हाल होगा?

\* ज़िक्र अल्लाह की मुहब्बत, उस से नज़दीकी, उसकी खुशी, उसके मुराक़बे, उससे डरने, और उसकी ओर पलटने का वारिस बनाता है, और उसकी इताउत पर सहायता करता है।

- \* ज़िक्र दिल से सोच फिक्र को दूर करता है, खूशी लाता है, दिल को ज़िन्दगी बख़्शता है, और उसे शक्ति और सफाई अता करता है।
- \* दिल में एक रिक्त स्थान होता है जिसे अल्लाह का ज़िक्र ही भरता है, और कठोरपन तथा सख़ती होती है जिसे ज़िक्र ही पिघलाता और नरम करता है।
- \* ज़िक्र दिल के लिए शिफा और दवा है, शक्ति और ऐसा स्वाद है जिस जैसी कोई स्वाद नहीं, और लापवाही इस की बीमारी है।
- \* ज़िक्र में कभी निफाक की निशानी है, और बढ़ौतरी ईमानी शक्ति और अल्लाह से सच्ची मुहब्बत की दलील है; क्योंकि जो जिस से मुहब्बत करता उसका अधिक चर्चा किया करता है।
- \* बन्दा जब खुश-हाली में अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो अल्लाह उसे तंगी में याद रखता है, खासकर मौत और उस की परीशानी के समय।
- \* ज़िक्र सबब है अल्लाह के अज़ाब से नजात का, शनि के उत्तरने, रहमत के ढांपने, और फरिश्तों की बख़िशाश का।
- \* ज़िक्र द्वारा जुबान ग़ीबत, चुग्ली, झूट और दूसरी मकरूह और हगम चीज़ों से सुरक्षित रहती है।
- \* ज़िक्र आसान इबादत है, सब से श्रेष्ठ और उत्तम है, और वह जन्मत का पौदा है।
- \* ज़िक्र ज़ाकिर के चेहरे को हैबत, मिठास और ताजगी का लियास पहनाता है, और यह संसार, कब्र और आखिरत में रीशनी है।
- \* ज़िक्र ज़ाकिर पर अल्लाह तआला की रहमत और फरिश्तों की दुआ को वाज़िब करता है, ज़िक्र करने वालों के द्वारा अल्लाह फरिश्तों पर फ़खर करता है।
- \* सबसे बेहतर कर्म करने वाले वे हैं जो उस कर्म में सब से अधिक ज़िक्र करने वाले हैं, चुनान्चि सब से बेहतर रोज़ेदार वह है जो रोज़े की अवस्था में सब से अधिक ज़िक्र करता है।
- \* ज़िक्र मुश्किल को सहज बनाता है, सकूत को आसान करता है, परीशानी को हल्का करता है, रोज़ी लाने का सबब बनता है, और शरीर को शक्ति प्रदान करता है।
- \* ज़िक्र शैतान को भगाता है, उसे रुस्वा और ज़ुलील करता है।

## सवेरे-सांझ की दुआएं

क्र.	विवर	संख्या और समय	प्रभाव और फ़ूज़ीलत
1	आयतुल कुर्सी ۱	सवेरे साँझ, सोने से पहले और फर्ज़ नमाज़ों के बाद	शैतान ऐसे व्यक्ति के करीब नहीं होता और यह जन्मत में जाने का सबब है।
2	सूरतुल बक्रः की अन्तिम दोनों आयतें ۲	साँझ को और सोने से पहले।	हर प्रकार की बूराई से सुरक्षित रखती है।
۳	سُورتُلُّ إِخْلَاسٍ، سُورتُلُّ فَلَكٍ وَ سُورتُلُّ نَاسٍ ۝	3 बार सवेरे और 3 बार साँझ को।	हर चीज़ से बचाती है।
4	بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاوَاتِ ۝ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ ”بِسِمِ اللَّا هِيَ أَكْبَرُ مَنْ يُشَرِّكُ بِهِ شَيْءٌ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝ هُوَ الْمُحْكَمُ الْمُبِينُ ۝ هُوَ الْمُبِينُ الْمُحْكَمُ ۝“ ۴	3 बार सवेरे और 3 बार साँझ को।	अचानक उसे कोई मुसीबत नहीं आएगी, और न ही कोई चीज़ उसे नुकसान पहुँचाए गी।
5	أَعُوذُ بِكُلِّمَاتِ اللَّهِ التَّامَاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ ”أَعُوذُ بِكِلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ“ ۵	3 बार साँझ को, और जब किसी जगह पड़ाव डाले।	उन जगहों को हर तरह भी बुराई से सुरक्षित कर देगी।
۶	حَسِيَّ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ تَوْكِيدُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ ”هَسِبِيَّ اللَّا هُوَ إِلَلَاهٌ إِلَّا هُوَ الْحَمْدُ لِلَّهِ إِلَّا هُوَ الْمُمْلَكُ ۝ ”أَنْجِيزُوا ۝“ ۶	7 बार सवेरे और दिनिया और आधिगत के गम से नजात का जरीआ है।	
۷	رَضِيَتْ بِاللَّهِ رِبِّاً، وَبِالْإِسْلَامِ دِيَنًا، وَبِمُحَمَّدٍ رَّبِّ الْمُلْكِ نَبِيًّا ۝ ”رَبِّنَعَ، وَبِكِلِمَاتِ اللَّهِ الْمُبِينَ، وَبِمُعِيدَةِ الْمُحْكَمِ ۝“ ۷	3 बार सवेरे और अल्लाह पर यह हक है कि वह उसे राजी कर दे।	
۸	اللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ أَمْسِيَنا وَبِكَ نَهَيْنَا وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ النَّشْرُ ۝ ”أَلْلَاهُ أَعُوْذُ بِكِلِمَاتِ اللَّهِ الْمُبِينَ وَبِكِلِمَاتِ اللَّهِ الْمُبِينَ ۝“ ۸	سवेरे साँझ	इसे करने पर उमारा गया है।

لَهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُومُ لَا تَأْخُذُهُ سَنَةٌ وَلَا يَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْهُ  
يَادِيهِ بَعْدَ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِ وَمَا حَلَفُوهُ وَلَا يُجْعَلُونَ يَتَسْعَ وَمَنْ عِلْمُهُ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ  
وَلَا يَنْعُودُهُ حَفَظُهُمَا وَهُوَ أَعْلَى الْعَظِيمِ

وَمِنَ الْأَوَّلِ يَا أَنْبِيلَ اللَّهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلُّ مَاءِنَ بِاللَّهِ وَمَلِكِكِيهِ وَكُلُّهُ وَرَسُولِهِ لَا نُفُوقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رَسُولِهِ  
كُلُّهُ لَا سَيِّدَ لَهُ شَيْءٌ وَلَا مُكَلِّفٌ لَهُ شَيْءٌ لَا يَكُلُّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وَسَعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا أَكْتَبَتْ  
لَا يَأْخُذُهَا إِلَّا مَا أَنْهَى أَوْ أَنْهَى إِلَيْهَا وَلَا تَحِيلُ عَلَيْهَا إِصْرًا كَمَا حَمَلَتْهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تَحِيلُنَا مَا لَا طَاقَةَ  
لَنَا بِهِ وَأَغْفُ عَنَا وَأَغْفِرْنَا وَأَرْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَأَنْصُرْنَا عَلَى النَّقْوَمِ الْكُفَّارِينَ  
وَلَا يَأْخُذُهَا إِلَّا مَا أَنْهَى أَوْ أَنْهَى إِلَيْهَا وَلَا تَحِيلُ عَلَيْهَا إِصْرًا كَمَا حَمَلَتْهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تَحِيلُنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَأَغْفُ عَنَا وَأَغْفِرْنَا وَأَرْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَأَنْصُرْنَا عَلَى النَّقْوَمِ الْكُفَّارِينَ

<sup>3</sup> धर्म अल्लाह के नाम से जिसके नाम के साथ धर्ती और आकाश में कोई वीज नुस्खा नहीं पहचान सकती और वह सुने कला बनने वाला है।

<sup>4</sup> अमान तभाला के परिपूर्ण कलाम की पनाह में आता हूँ उस बीज की बराई से जिन्हें उस ने पैदा किया है।

<sup>5</sup> से लिपा अल्लाह वरपी है, उसके सिवाय कोई सत्य इबादत के लायक नहीं, उसी पर मैंने भगवान् किया, और वह महान् जर्दी का था।

<sup>५</sup> अल्लाह पर राजी हैं उस के रब होने में, इस्लाम पर दीन होने में, और महम्मद रूपी पर नवी होने में।

<sup>७</sup> (हे अल्लाह! तेरे नाम के साथ हम ने सवेरा किया, और तेरे नाम के साथ साझा किया, और तेरे नाम के साथ हम लिया है, और तेरे नाम के साथ और तेरी ही ओर उठ कर जाना है)।

हम मरेंगे, और तेरा ही जारी रहेगा। (हे अल्लाह! तेरे नाम के साथ हम ने सांझ किया, और तेरे नाम के साथ सवेरा किया, और तेरे नाम के साथ हम लौट कर जाना है। तेरे नाम के साथ हम मरेंगे, और तेरी ही ओर लौट कर जाना है)।

<sup>1</sup> (हम ने इस्लामी नेचर, कल्मए इख्लास, अपने नबी मुहम्मद ﷺ के धर्म, और अपने बाप इब्राहीम हनीफ मुस्लिम की मिलत पर सवेरा किया, और वह मशिकों में से नहीं थे)।

<sup>2</sup> और शाम में “मा अस्वह बी” के बदले “मा अम्सा बी” कहे। (हे अल्लाह मुझ पर या तेरी मख्लूक में से किसी पर जिस नेमत ने भी सवेरा किया वह मात्र तेरी ओर से है, तू अकेला है तेरा कोई साझी नहीं, अतः तेरे ही लिए प्रशंसा और तेरे ही लिए शङ्क हैं)।

<sup>१</sup>(हे अल्लाह मैं ने इस हाल में सदेरा किया कि मैं तुझे गवाह बनाता हूँ, और तेरा अर्श उठाने वालों को, तेरे फरिश्तों को, तेरे नवियों को और तेरी सारी मख्लूक को गवाह बनाता हूँ कि तू ही सत्य उपास्य है, तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, और अवश्य मुहम्मद तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं)।

<sup>४</sup> (हे अल्लाह! आकाश और धरती को पैदा करने वाले, छुपी हुई और खुली हुई को जानने वाले, हर चीज़ के प्रभु और मालिक, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, मैं तेरी पनाह मांगता हूँ अपने नफ्स की बूराई से, और शैतान की बूराई से और उस के शिर्क से, और इस बात से कि मैं अपने नफ्स पर बूराई करूँ, या किसी मुस्लिम से बूराई करूँ)।

(ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ फिक्र और ग़म से, और तेरी पनाह चाहता हूँ आजिज़ होजाने और सुस्ती से, और तेरी पनाह चाहता हूँ डरपोकन और बख़ीली से, और तेरी पनाह चाहता हूँ कर्ज़ के चड़ जाने और लोगों के ग़ालिब हो जाने से)।

"اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي، وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ، وَوَعْدَكَ  
مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِمَا نَعْصَيْتُكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ لَكَ  
بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي؛ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبُ إِلَّا أَنْتَ".

<sup>1</sup> "अल्लाहुम्म अन्त रब्बी लाइलाह इल्ला अन्त ख़लकत्तनी व अना अब्दुक व अना अला  
आदिक व काभूदिक मस्तकभूतु, अज़्जु बिक मिन् शरि मा सनअतु अबूओ लक  
बिने अमलिक अलैय्य व अबूओ बिज़न्बी, फग्फिली फइन्नहू ला यग्फिरुज्जुनूब इल्ला  
अन्त" <sup>1</sup>

يَا حِيْ يَا قِيْوَمْ بِرْحَمْتَكَ أَسْتَغْيِثُ أَصْلَحْ لِي شَأْنِي كَمْ وَلَا تَكْلِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَة  
عَيْنٍ

<sup>2</sup> "या है्यु या कैयुमु बिरह्मतिक अस्तग़ीसु व ला तकिली इला नफ्सी तरफ़त ऐन"  
(ऐ अल्लाह जिन्दा रहने वाले और काएनात के निगरां, मैं तेरी ही दया के माथ्यम  
से फर्याद करता हूँ, मेरे सारे काम दुरुस्त करदे, एक पलक झपकने के बराबर मुझे  
मेरे हवाले न कर)।

اللَّهُمَّ عَافِي فِي بَدْنِي، اللَّهُمَّ عَافِي فِي سَمْعِي، اللَّهُمَّ عَافِي فِي بَصَرِي، اللَّهُمَّ إِنِّي  
أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ

<sup>3</sup> "अल्लाहुम्म आफिनी फी बदनी, अल्लाहुम्म फी सर्ह, अल्लाहुम्म आफिनी फी बसरी, और 3 बार  
अल्लाहुम्म इन्नी अज़्जु बिक मिन्तु कुफ्र वल फक्रि, अल्लाहुम्म इन्नी अज़्जु बिक मिन्  
अज़ाबिलू कब्रि, लाइलाह इल्ला अन्त" <sup>2</sup>

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدِنْيَايِي وَأَهْلِي وَمَالِي، اللَّهُمَّ اسْتَرْ عَوْرَاتِي وَآمِنْ  
رَوْعَاتِي، اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدِيِّ وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شَمَائِلِي وَمِنْ  
فُوقِي وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي

<sup>4</sup> "अल्लाहुम्म इन्नी अस्मलुकलू आफियत फी दीनी व दुन्याय व अह्ली व माली, सवेरे सांझ  
अल्लाहुम्मस्तुर औराती व आमिन् रौज़ाती, अल्लाहुम्महफ़ज़नी मिन् बैनि यदैय्य व मिन्  
ख़ल्फ़ी, व अन् यमीनी व अन् शिमाली व मिन् फौकी व अज़्जु बिअ़ज़मतिक अन्  
उम्ताल मिन् तह्ती" <sup>3</sup>

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ عَدْدُ خَلْقِهِ، وَرَضَا نَفْسَهِ، وَزَنَةُ عَرْشِهِ، وَمَدَادُ كَلْسَاهِ

<sup>5</sup> "سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ، أَدَدُ خَلْكِهِ، وَرَضَا نَفْسَهِ، وَزَنَةُ عَرْشِهِ، وَمَدَادُ كَلْسَاهِ  
مِنْدَادُ كَلْمَاتِهِ" <sup>4</sup>

<sup>1</sup> (हि अल्लाह! तू मेरा रव है, तेरे सिवाए कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं, तूने मुझे पैदा किया है और मैं तेरा बन्दा हूँ, और मैं  
अपनी ताकत भर तेरे प्रतिज्ञा और तेरे वादे पर जमा हूँ, और अपने किए हुए अमल की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ, मैं ज  
उपहारों को स्वीकार करता हूँ जो तूने मुझ पर की, और मैं अपने गुनाहों को भी स्वीकार करता हूँ, तो तू मुझे माफ़ करना चाहता है)

<sup>2</sup> (हि अल्लाह मुझे मेरी शरीर में चैन दे, मेरे कानों में चैन दे, ऐ अल्लाह मुझे मेरी आंखों में चैन दे, हे अल्लाह मैं कुफ्र और फ़क्र ने  
तेरी पनाह चाहता हूँ, और कब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ, तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं)।

<sup>3</sup> (हि अल्लाह मैं तुझ से अपने धर्म अपनी दुन्या, अपने घर वाले और अपने माल में चैन का सवाल करता हूँ, हे अल्लाह! मेरी  
पदी वाली वस्तुओं पर पर्दा डाल, और मेरी घबराहटों को शान्त रख, हे अल्लाह मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरी दृष्टि और मेरे  
और बाई और से, और मेरे ऊपर से मेरा सुरक्षा कर, और इस बात से तेरी महानता की पनाह चाहता हूँ कि अचानक उन्हें  
नीचे से हलाक किया जाऊँ)।

<sup>4</sup> (हम अल्लाह की पवित्रता उस की तारीफ के साथ करते हैं, उसकी म़ज़लूक (सुष्टि) की संख्या बराबर, और उसकी नमज़  
की खुशी के अनुसार, और उसके अर्श के वज़न के बराबर, और उसके शब्दों की लिखाई के बराबर)।

यह सैयदुल्ल  
इस्तिग्फ़ार  
कहलाता है।  
सवेरे सांझ

जिस ने इस पर  
विश्वास रखते हुए दिन  
में कहा और उसी दिन  
उस की मौत होगी, या  
रात में कहा और उसी  
रात उस की मौत होगी  
तो वह जनती है।

सवेरे सांझ

नवी <sup>بَنْوَى</sup>, ने फातिम़:  
को इसकी वसीयत की।

नवी ने इन शब्दों द्वारा  
दुआ किए हैं।

नवी <sup>بَنْوَى</sup>, सवेरे सांझ  
इन शब्दों द्वारा दुआ  
करना नहीं भूलते

फ़ज़ से जुह तक ज़िक्र  
के लिए बैठे रहने से  
बेहतर है।

## महान सवाब वाले कथन और कर्म

क्र० शेष कथन और कर्म

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ، لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قُدُّسٌ

**कहने का सवाब**

سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ

وَرَحْمَةُ

**कहने का सवाब**

(سُبْحَانَ اللَّهِ)

وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ

(الْعَظِيمِ)

**कहने का सवाब**

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا

بِاللَّهِ

**कहने का सवाब**

جِنْنَتِ کا سवाल

और جहन्नम से

पनाह

مَجْلِسِ کا کफ़کारा

وَ اَتُوبُ إِلَيْكُ

**कहने का सवाब**

سُرْتُلُ کا کھف کی کُछ آیات

याद करने का سवाब

نَبِيٌّ

پر دَرْد

**कहने का सवाब**

کُرْآن کی کُछ

سُرْتُلُ اور آیات

**पढ़ने का सवाब**

مُعْجِز़ن کا

**सवाब**

سُنْنَتُ الدُّخَانَةِ مُصَانِعِ الْعَلَامِ نے فَرَمَا�َا:

जो व्यक्ति एक दिन में 100 बार “लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दू ला शरीक लहू लहूल्लुल्लुक् व लहूल्लहू व हव अला कूलिल शैइनु कदीर”। -अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्ति रखने वाला है- कहेगा उसे दस गुलाम (दास) आजाद करने के बराबर सवाब मिलेगा, उसके लिए 100 नेकियां लिखवी जाएंगी, और उसके 100 पाप मिटा दिए जाएंगे, और यह ज़िक्र उसके लिए सांझ तक शैतान से बचने का साधन होगा, और कोई भी व्यक्ति उससे अधिक फ़ज़ीलत वाला कर्म लेकर नहीं आया, सिवाय उस व्यक्ति के जिसने उससे अधिक ज़िक्र किया।

जो “سُبْحَنَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ وَبِحِمْدَةِ الْعَظِيمِ”। -महान अल्लाह पाक है अपनी तारीफों और खुबियों के साथ- कहेगा उसके लिए जन्नत में एक खजूर का पौदा गाड़ा जाएगा।

जो व्यक्ति सबेरे सांझ 100 बार “سُبْحَنَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ وَبِحِمْدَةِ الْعَظِيمِ”। -अल्लाह हर प्रकार के ऐब से पाक है, अपनी तारीफों और खुबियों के साथ- कहेगा तो उसके पाप माफ कर दिए जाएंगे अगरचे वे समन्दर की झांग के बराबर हों, और कियामत के दिन कोई उससे अफ़ज़ल अमल लेकर नहीं आएगा, सिवाय उस व्यक्ति के जिसने उसी के बराबर या उससे अधिक कहा हो। “दो कल्मे हैं, जो ज़ुबान पर हल्के हैं, तराजू में भारी हैं, और रहमान को बहुत प्यारे हैं, “سُبْحَنَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَنَ اللَّهِ الْعَظِيمِ”। -अल्लाह पाक है अपनी तारीफों और खुबियों के साथ, अल्लाह पाक है बड़ाइयों वाला-

“लَا هَمَّلَ وَ لَا كُوْفَتَ إِلَلَهُ بِلَلَهُ”। - अल्लाह की सहायता के बिना न कुछ करने की शक्ति है और न ही किसी चीज़ से बचने के ताकत- जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।

“जो व्यक्ति तीन बार अल्लाह से जन्नत का सवाल करता है तो जन्नत कहती है : ऐ अल्लाह इसे जन्नत में दाखिल करदे, और जो व्यक्ति तीन बार जहन्नम से पनाह मांगता है तो जहन्नम कहता है : ऐ अल्लाह इसे जहन्नम में न डालना”।

जो व्यक्ति किसी ऐसी सभा में बैठे जिस में बेकार की बातें अधिक हो गई तो उस मज्लिस से उठने से पहले “سُبْحَانَكَلَلَاهُمْ وَبِحِمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنَّ اللَّهَ إِلَهُ إِلَهُ إِلَهُ أَنْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ، سَبَّبَ إِلَهَاتِكَ”। कह ले, “हे अल्लाह तू पाक है अपनी सारी तारीफों के साथ, नहीं है कोई सच्चा इबादत के लायक मगर तू ही, और मैं तुझी से माफी चाहता हूँ, और तेरी ही तरफ पलटता हूँ” तो उससे उस सभा में जो भी गलतियां हुई हैं माफ कर दी जाएंगी।

जिसने सुरत्ल कहफ की कुछ आयतें जिसने सुरत्ल कहफ से शुरू की 10 आयतें याद की वह दज्जाल से सुरक्षित रहेगा।

जो व्यक्ति मुझ पर एक बार दर्द भेजता है अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें उतारता है, और उसके दस गुनाह माफ़ फरमा देता है, और उसके दस दर्जे ऊँचा कर देता है, और एक रिवायत में है उसके लिए दस नेकियां लिख दी जाती हैं।

जिस व्यक्ति ने दिन और रात में 50 आयतें पढ़ी तो वह ग़ाफ़िलों में नहीं लिखा जाएगा, और जिस ने 100 आयत पढ़ी तो वह कानितीन में लिखा जाएगा, और जिस ने 200 आयत पढ़ी तो कियामत के दिन कुरआन उस से लड़ेगा नहीं, और जिस ने 500 पढ़ी तो उस के सवाबों का ख़ज़ाना लिख दिया जाएगा। “जो व्यक्ति सबेरे-सांझ दस बार ﴿ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَكْبَرُ ﴾ पढ़ेगा तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा”। “कुल हुवल्लाह अहद एक तिहाई कुरआन के बराबर है”।

“मुअज्जिन की आवाज़ को पेड़, ढेला, पत्थर, जिनात और इन्सान जो भी सुनते हैं वे (कियामत के दिन) उसके लिए गवाही देंगे”। “कियामत के दिन मुअज्जिन सब से लम्बी गर्दन वाले होंगे”।

- |    |   |   |
|----|---|---|
|    |   | जिस व्यक्ति ने अज्ञान सुन कर यह द्रुआ पढ़ी : "अल्लाहम् रब हाजिहिदा'अूवतिनाम्पते वस्तसलातिरु काइमति आति मूहम्मदनित्वसीतत वलु फ़जीलत वब्सह मकामम्मूस्तुनेलने अज्ञान के बाद की बजनह"। (ऐ अल्लाह इस कामिल द्रुआ और हमेशा काप्यम रहने वाली नमाज़ के बाबू। मूहम्मद को वसीतः (जन्मत के दर्जे में से एक दर्जे का नाम है जो मात्र नबी मूहम्मद के खास है) और फ़जीलत (वह ऊँचा मकाम जो नबी को ख़सुसियत के साथ सारी सुल्तें पर प्रवृत्त होगा) अता फ़र्मा, और आप को मकामे मूस्तुद पर फ़ाइज़ कर, जिसका तूने वादा किया है। तो कियामत के दिन उसके लिए मेरी शफाअत हलाल होजाएगी। |
| 11 | द्रुआ और उसका सवाब  | जिस व्यक्ति ने वुजू किया और अच्छे से वुजू किया तो उसके बदन से ग्रनाह निकल जाते हैं, वहाँ तक कि उसके नाखूनों के नीचे से भी।  |
| 12 | अच्छी तरह से वुजू करने का सवाब  | तब में से जो व्यक्ति भी कामिल वुजू करे, फिर यह द्रुआ पढ़े : "अशहद् अल्लाहलाह इल्लाह व अन्न मूहम्मदन् अब्दुल्लाहि व रसूलह"। (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मूहम्मद मूहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं)   |
| 13 | वुजू के बाद की द्रुआ।   | तो उसके लिए जन्मत के सभी दरवाजे खोल दिए जाएंगे वह जिससे चाहे प्रवेश करे।  |
| 14 | वुजू के बाद दो रक्अतें पढ़ना  | जो भी व्यक्ति वुजू करता है, और अच्छी तरह वुजू करता है, और दिल और घोरे से ध्यान लगाकर दो रक्अतें नमाज़ पढ़ता है तो उसके लिए जन्मत वाजिब होजाती है।   |
| 15 | मस्जिद की तरफ ज्यादा चलकर जाने का सवाब  | जो जमाअत वाली मस्जिद की तरफ़ जाए तो आते जाते जितने भी क़दम उठाता है, उनमें से एक के बदले एक ग्रनाह माफ़ कर दिया जाता है और दूसरे के बदले उसके लिए एक नेकी लिख दी जाती है।   |
| 16 | जुर्म की तैयारी और उस के लिए जल्दी जाना   | जो व्यक्ति जुर्म के दिन अपनी पत्ति को नहाने का सबब बने, और नहाए, और सवेरे चल कर मस्जिद जाए, सवारी पर न जाए, और इमाम से क़रीब बैठे, और ध्यान से खुश्बा सुने, और कोई गलत काम न करे, तो हर क़दम के बदले उसे एक साल के रोज़े और एक साल के कियाम का सवाब मिलेगा।   |
| 17 | 40 दिन तक इमाम के साथ तक्बीरे तहरीमा न सूटने का सवाब  | जो व्यक्ति भी जुर्म के दिन नहाए, शक्ति भर पाकी हासिल करे, अपने तेल में से तेल लगाए, या अपने घर का खुशबू लगाए, फिर मस्जिद के लिए निकले और दो लोगों के बीच फ़र्क न ढाले, फिर जितना लिखखा हो नमाज़ पढ़े, फिर जब इमाम खुश्बा दे तो वुप रहकर सुने, तो उस के इस जुर्मा और अगले जुर्मा के बीच का ग्रनाह माफ़ कर दिया जाए।  |
| 18 | फ़ज़ नमाज़ जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का सवाब   | जिस व्यक्ति ने अल्लाह तआता के लिए 40 दिन तक जमाअत से नमाज़ पढ़ी तो उसके लिए तरह से कि उस ने इमाम के साथ तक्बीरे तहरीमा पाई तो उसके लिए दो बीजों से आज़ादी लिख दी जाती है, एक जहन्म से आज़ादी और दूसरी निकाक से आज़ादी।  |
| 19 | इशा और फ़ज़ को जमाअत के साथ पढ़ने का सवाब।  | जिस व्यक्ति ने जमाअत के साथ इशा की नमाज़ पढ़ी तो उसने जैसे अच्छी रात कियाम किया (अल्लाह की इबादत में नमाज़ पढ़ता रहा) और जिसने फ़ज़ की नमाज़ जमाअत से पढ़ी तो उसने जैसे पूरी रात कियाम किया।  |
| 20 | नमाज में पहली सफ़ में हाजिर रहने की क़जीलत  | यदि लोग उस क़जीलत को जान ले जो अज्ञान देने और पहली सफ़ में तो फिर उसे पाने के लिए वह कुर्�आ-अन्दाज़ी के बिना कोई चारा न पाए तो अवश्य वह उस पर कुर्�आ-अन्दाज़ी करें।   |
| 21 | रातिबा सून्नतों की पावनी का सवाब।   | जो व्यक्ति फ़ज़ नमाज़ों के अलावः हर दिन 12 रक्अत नफ़ल नमाज़ पढ़ता है, तो उसके लिए जन्मत में एक घर बना दिया जाता है : 4 रक्अतें ज़हर से पहले और 2 रक्अतें उसके बाद 2 रक्अतें मध्याह्न के बाद, 2 रक्अतें इशा के बाद, और 2 रक्अतें फ़ज़ की नमाज़ से पहले।  |
| 22 | अधिक नफ़ल नमाज़ पढ़ने और हो, हर सन्दे के बदले वह तुम्हारा एक दर्जा ऊँचा कर देता है, और दूसरा एक | "अधिक सज्दे करना लाजिम करतो, क्योंकि तुम अल्लाह के लिए जो भी सज्दे करो  |

- उन्हें सुपाकर भाफ कर देता है। "व्यक्ति का लोगों की नज़र से हट कर अधिक नफ़्ल नमाज़ पढ़ना, पढ़ने का सवाब लोगों की नज़रों के सामने पढ़ी जाने वाली नमाज़ से 25 दर्जे उत्तम है।"
- 23 फज़ की दो रक़अत सुन्नत, फज़ की दो रक़अत सुन्नतें संसार और इसमें पाई जाने वाली चीज़ों से बेहतर है।  
और फज़ की फज़ीलत "जिस ने फज़ की नमाज़ पढ़ी तो वह अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में है।"
- 24 चाश्त की तुम मैं से हर व्यक्ति इस हालत में सवेरा करता है कि उसके हर जोड़ पर सदूक़ होता है, तो हर बार "सुब्जानल्लाह" कहना सदूक़ है, और हर बार "अल्हम्दुलिल्लाह" कहना सदूक़ है, और हर बार "लाइलाह इल्लल्लाह" कहना सदूक़ है, और हर बार "अल्लाह" अक्बर कहना सदूक़ है, नेकी का हुक्म देना सदूक़ है, और बुराई से रोकना सदूक़ है, और इन सारी चीज़ों के बदले चाश्त की 2 रक़अत नमाज़ काफ़ी हो जाती है।
- 25 अपने नमाज़ की जगह में फरिश्ते त्रुम्हारे उस व्यक्ति के हङ्क में दुआ करते रहते हैं जब तक कि वह अपनी बैठ कर ज़िक्र करने का नमाज़ पढ़ने की जगह पर बैठा रहे, बशर्तिकि उसका दुजू न टूटे, फरिश्ते दुआ में सवाब। कहते हैं : ऐ अल्लाह! उसे माफ़ करदे, ऐ अल्लाह! उस पर दया कर।
- 26 बाजमाअ़त फज़ की नमाज़ पढ़ने के बाद जिस ने बाजमाअ़त फज़ की नमाज़ पढ़ी फिर सूरज निकलने सूरज निकलने तक ज़िक्र करना फिर 2 तक बैठे ज़िक्र करता रहा, फिर 2 रक़अत नमाज़ पढ़ी तो रक़अत नमाज़ पढ़ना उस के लिए हज़ार और उम्रः का सवाब मिलेगा पूरा पूरा पूरा।
- 27 जो रात में क्याम करने के लिए जगे जो रात में जगा और अपनी बीवी को जगाया और दोनों ने एक साथ 2 रक़अत नमाज़ पढ़ी तो बहुत अधिक अल्लाह को याद करने वाले मर्दों और औरतों में लिख दिए जाते हैं।
- 28 जिस ने रात में नमाज़ पढ़ने की नियत की परन्तु नींद नहीं खुलि जिस व्यक्ति की भी रात में नमाज़ की आदत होती है, परन्तु उस पर नींद ग़ालिब आ जाए तो अल्लाह तआला उस के लिए नमाज़ का सवाब लिख देता है, और उस की ये नींद सदूक़ हो जाती है।
- 29 नींद नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, और उसी के लिए प्रशंसा नहीं, वही जिलाता है और वही मारता है, और वह जिन्दा है मरेगा नहीं, उसी के हाथ हर प्रकार की भलाई है, इस दुआ के पढ़ने से अल्लाह तआला पढ़ने वाले के लिए एक लाख नेकी लिख देता है, एक लाख गुनाह मिटा देता है, और एक लाख उस के दर्जे बुलन्द कर देता है।
- 30 "लाइलाह इल्लल्लाह वह्दू ला शरीक लहू, लहुल्मुकु व लहुल्हम्दु युह्यी व युमीत्र व हुव हैयन् ला यमूत्र वि यदिहिल खेरु व हुव अला कुल्लि शैइन् कदीर"। -अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्ति है, वही जिलाता है और वही मारता है, और वह जिन्दा है मरेगा नहीं, उसी के हाथ हर प्रकार की भलाई है, इस दुआ के पढ़ने से अल्लाह तआला पढ़ने वाले के लिए एक लाख नेकी लिख देता है, एक लाख गुनाह मिटा देता है, और एक लाख उस के दर्जे बुलन्द कर देता है।
- 31 कहने की फज़ीलत जो व्यक्ति हर नमाज़ के बाद 33 बार "सुक्नल्लाह" 33 बार "अल्हम्दुलिल्लाह" आयतुल कुर्सी पढ़ी तो उसे जन्नत आयतुल कुर्सी पढ़ने के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ी तो उसे जन्नत के लिए जाने से कोई चीज़ रोक नहीं सकेगी सिवाय मौत के।
- 32 तीमार-दारी करने का सवाब जो मुसलमान किसी मुसलमान रोगी की सवेरे के समय तीमार-दारी करता है तो साँझ तक 70 हज़ार फरिश्ते उसके लिए खेर की दुआ करते हैं, और यदि साँझ को मिलने जाता है तो सवेरे तक 70 हज़ार फरिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं, और जन्नत में उसके लिए चुने हुए फल होते हैं।
- 33 यह दुआ पिड़ित व्यक्ति को देख कर यह दुआ की : (अल्हम्दुलिल्लाहिल्लाजी आफ़ानी को देख कर मिम्मब्लाक बिही, व फज़्जलनी अला कसीरिम-मिम्मन् ख़लक तफज़ीला) अर्थातः "सारी यह दुआ तारीफ़े उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे उस मुसीबत से बचाए रखा जिस में तुझे मुब्लाक किया, और अपनी बहुत सी मख्लूक पर मुझे फज़ीलत बर्खी" तो उस पर वह मुसीबत नहीं आएगी।

34	दुःखी की ताजियत का सवाब	“जिस व्यक्ति ने किसी दुःखी की ताजियत की तो उसे उसी की तरह सवाब मिलेगा”। “जो मोमिन व्यक्ति भी किसी मुसीबत में अपने भाई की ताजियत करता है तो अल्लाह उसे करामत के जोड़ों में से पहनाएगा”।
35	जनाजे की नमाज़ पढ़ने और मैयत दफन करने तक साथ रहने का सवाब	“जो व्यक्ति किसी के जनाजे में मौजूद रहा यहाँ तक कि जनाजे की नमाज़ पढ़ ली गई तो उसके लिए एक कीरति सवाब है, और जो व्यक्ति मैयत दफन किए जाने तक मौजूद रहा, उसके लिए दो कीरति सवाब है, पूछा गया : कीरति क्या है? तो जवाब मिला : दो बड़े पहाड़ों की तरह”। इन्हे उमर खुलूँ कहते हैं : हम ने बहुत अधिक कीरति खो दिए।
36	अल्लाह के लिए मस्जिद बनाने की फजीलत	“जिस ने अल्लाह के लिए मस्जिद बनाई चाहे वह पक्षी के प्लोमले ही की तरह क्यों न हो, तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा”।
37	अल्लाह के रास्ते में खर्च करने का सवाब	“कोई ऐसा दिन नहीं है जिस में बन्दा सवेरा करता है मगर उस में दो फरिजे आजिल होता है, उनमें से एक कहता है : ऐ अल्लाह तू खर्च करने वाले को अच्छा बदला दे, और दूसरा कहता है : ऐ अल्लाह जिस ने हाथ रोक रखा है उसको बर्बाद कर दे”।
38	सद्का किसी माल को घटाता नहीं है, और माफ करने के कारण अल्लाह तआला इन्जन और प्रतिष्ठा को बढ़ाता है, और जो व्यक्ति अल्लाह के लिए झुकता है तो अल्लाह उसे उँचाई और बुलन्दी अता करता है। एक दिन लाख पर भारी होगया, लोगों ने पूछा : अल्लाह के रमून! ऐसा कैसे हुवा? आप खुलूँ ने फरमाया : एक व्यक्ति के पास दो दिन था जिसमें एक दिन मदुका कर दिया, और एक के पास बहुत अधिक धन था वह अपने धन के एक किनारे गया जिसमें एक लाख सद्का किया”। “जो मुस्लिम व्यक्ति भी कोई पौदा गाढ़ता है, या खोता करता है, जिसमें चरा, इन्सान या जानवर खा लेते हैं तो वह उस के लिए सद्का होजाता है”।	
39	बिना किसी फायदे के कर्ज़ देने जो मुसलमान व्यक्ति किसी मुसलमान को दो बार कर्ज़ दे तो वह की फजीलत	जिस व्यक्ति ने किसी कंगाल को मुहलत दी तो कर्ज़ की अदाइगी का समय जाने में पहले तक हर दिन के बदले सद्का मिलता है, और समय होजाने के बाद वही मुहलत दे तो हर दिन के बदले दोगुना सद्का मिलता है”।
40	तंगहाल पर सबर करना	जो व्यक्ति अल्लाह के रास्ते में एक दिन का रोज़ा रख्येगा तो अल्लाह तआला उस एक दिन के बदले उसके बेहरे को जहन्नम से 70 वर्ष (के फार्म जितनी) दूरी पर करदेगा।
41	अल्लाह के रास्ते में एक दिन रोज़ा रखने का सवाब	“हर महीने तीन दिन रोज़ा रखने की तरह है” और अरफा के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया? तो आप ने फरमाया : यिले और अगले वर्ष के गुनाहों का कफ़कारः होता है, और आशुरा (इस मुहर्रम) के रोज़े के बारे में पूछा गया? तो आप ने फरमाया : यिले वर्ष के गुनाहों का कफ़कार होता है।”
42	हर महीने में तीन दिन के रोज़े, अरफा का रोज़ा और आशुरा के रोज़े का सवाब	“जिस व्यक्ति ने रमज़ान के रोज़े रख्ये, उसके बाद शब्बात के 6 रोज़े रखे तो यह साल भर रोज़ा रखने जैसे है।”
43	शब्बात के 6 रोज़ों का सवाब	“अवश्य जिस व्यक्ति ने इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी यहाँ तक कि वह लौट जाए तो उस के लिए पूरी रात का कियाम शमार किया जाता है।
44	इमाम के साथ अन्त तक तरावीह पढ़ने का सवाब	रमज़ान में उम्रः करने का सवाब हज़ज़ के बराबर है, या मेरे साथ हज़ज़ करने के बराबर है। “और जिसने काबा का सात चार तवाफ़ किया और तवाफ़ की रक़अत नमाज़ पढ़ी तो उसे गर्दन आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलता है।”
45	रमज़ान में उम्रः करने का सवाब	“जिस व्यक्ति ने हज़ज़ किया, और उस ने हज़ज़ में गाली नहीं बक़े और न गुनाह के काम किए तो वह हज़ज़ से बापस होता उस दिन की तरह जिस दिन उसकी माँ ने उसे जन्म दिया था।” “और स्वीकार्य हज़ज़ का सवाब तो जन्मत ही है।”
46	मक़बूल हज़ज़ का सवाब	

		कोई भी ऐसा दिन नहीं जिस में नेकी करना अल्लाह को इन दस दिनों में नेकी करने से ज्यादा पसंदीदा हो, सहाबा ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना भी नहीं? तो आप <del>भूमि</del> ने फरमाया: अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना भी नहीं, मगर हाँ कोई व्यक्ति अपनी जान और माल ले कर निकला और कुछ भी लेकर वापस न आया।"	
47	ज़ुहिज्जा के पहले अशा में नेकी करने का सवाब	"सहाबए किराम ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! यह कुर्बानी क्या है? तो आप <del>भूमि</del> ने फरमाया: यह तुम्हारे पिता इब्राहीम की सुन्नत है, उन्होंने कहा : इस में हमें क्या सवाब मिलेगा? तो आप <del>भूमि</del> ने फरमाया: प्रत्येक बाल के बदले एक नेकी मिलेगी, उन्होंने पूछा : ऊन का क्या हुक्म है? तो आप <del>भूमि</del> ने फरमाया: प्रत्येक ऊनी बाल के बदले एक नेकी मिलेगी।"	
48	कुर्बानी	"आलिम का सवाब और उस की फज़ीलत	"आलिम की फज़ीलत आबिद पर उसी तरह है जिस तरह मेरी फज़ीलत तुम में से एक कम्तर व्यक्ति पर है।" फिर अल्लाह के रसूल <del>भूमि</del> ने फरमाया: "अवश्य अल्लाह, उस के फरिश्ते, आकाश वाले, धरती वाले, यहाँ तक कि चिंवटी अपनी बिल में और मछली भी लोगों को भलाई की शिक्षा देने वाले के लिए रक्मत की दुआ करते हैं।"
49	सच्चाई के साथ शहादत की मौत मांगने का सवाब	जिस व्यक्ति ने सच्चाई के साथ शहादत की मौत मांगी तो अल्लाह उसे शहीदों के मुकाम पर पहुँचा देगा, चाहे उस की मौत अपने बिछौने पर ही क्यों न हुई हो।	
50	अल्लाह के डर से रोने और पहरा देने का सवाब	दो तरह की आँखों को जहन्नम की आग नहीं छूएगी, उस आँख को जो अल्लाह के डर से रोई, और उस आँख को जिस ने रात अल्लाह के रास्ते में पहरादारी में गुज़ारी।	
51	कुछ काम न करने पर जन्नत में बिना हिसाब-किताब प्रवेश करना	नबी <del>भूमि</del> को सपना में सारी उम्मतें दिखाई गईं, आपने अपनी उम्मत को देखा कि उनमें से 70 हज़ार ऐसे लोग हैं जो बिना हिसाब-किताब के जन्नत में दाखिल किए जाएंगे, उन्हें कोई अज़ाब नहीं होगा, और यह वह लोग होंगे, जो न दागकर इलाज कराते हैं, न झाड़-फुंक कराते हैं, न बुरा-शगून लेते हैं, और मात्र अपने रब पर भरोसा रखते हैं।	
52	जिनके नाबालिग बच्चों की मृत्यु होगई हो	जिनके नाबालिग बच्चों की मृत्यु जवानी से पहले हो जाए, तो अल्लाह तआला इसको इन बच्चों पर अपनी रहमत की बर्कत से जन्नत में ले जाएगा।	
53	आँख खोने पर सब्र करने का सवाब	"अवश्य अल्लाह तआला ने फरमाया: जब मैं ने अपने बन्दे का परीक्षा उस की दोनों प्रिय चीजों (अर्थात् उस की दोनों आँखें) में लिया, और उस ने उस पर सब्र किया, तो उन्के बदले में मैं ने उसे जन्नत दी।"	
54	अल्लाह तआला से डरते हुए किसी चीज़ को छोड़ देना।	"अवश्य तुम किसी चीज़ को अल्लाह तआला से डरते हुए नहीं छोड़ोगे, मगर अल्लाह तआला तुम्हें उस से उत्तम चीज़ देगा।"	
55	शरमगाह और जुबान को सुरक्षित रखने का सवाब	जो व्यक्ति मुझे दोनों जबड़ों के बीच की चीज़ (जुबान) की और दोनों पैरों के बीच की चीज़ (शरमगाह) की हिफाज़त की गारन्टी दे दे, तो मैं उसे जन्नत की गारन्टी देता हूँ।	
56	घर में धूसते समय और खाते समय ज़िक्र करने का सवाब	"जब आदमी अपने घर में धूसता है, और धूसते समय और खाते समय अल्लाह का ज़िक्र करता है। तो शैतान कहता है : न तो तुम्हारे लिए सोना है और न ही खाना। और जब आदमी घर में धूसता है और धूसते समय अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता तो शैतान कहता है : तुम ने सोने का ठिकाना पा लिया, और जब खाने के समय ज़िक्र नहीं करता है तो शैतान कहता है : तुम ने सोने का ठिकाना भी पा लिया और खाना भी।"	
57	खाने पीने और नया कपड़ा पहनने के बाद अल्लाह का	जिस व्यक्ति ने खाना खाया फिर यह दुआ पढ़ी : "अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्त्वमनी हाज़ा व रज़कनीहि मिन् गैर हैलिम्मन्नी व ला कुलः"। "सभी तारीफें उस अल्लाह के हाज़ा व रज़कनीहि मिन् गैर हैलिम्मन्नी व ला कुलः"। जिसने मेरी हक्कत और ताकत के बिना मुझे खिलाया, और मुझे यह रोज़ी दी तो उस के पिछले पाप माफ कर दिए जाते हैं। और जब नया कपड़ा पहन ले तो कहे : "अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा व रज़कनीहि मिन् गैर हैलिम्मन्नी व ला कुलः"	
58	कपड़ा पहनने के बाद अल्लाह का		

- 59 शुक्र अव्याप्ति करना** “सभी तारीफे उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरी हक्कत और ताक़त के बिना मुझे यह करना कपड़ा पहनाया, और मुझे यह रोज़ी दी। तो उस के पिछले पाप माफ़ कर दिए जाते हैं। जो व्यक्ति यह चाहता फातिमा رضي الله عنه ने नौकर मांगा तो आप صلوات الله عليه وآله وسالم ने उन्हे और अली को कहा : तुम दोनों हो कि अल्लाह उसके ने मुझ से जो मांगा है क्या मैं इससे बेहतर चीज़ त्रूम्हें न बता दूँ? जब त्रूम अपने काम की कठिनाई को बिछौने पर जाओ तो 34 बार अल्लाहू अक्बर और 33 बार **سُبْحَانَ اللَّهِ** और 33 आसान कर दे बार अल्लाहू **تَلِيلَ اللَّهِ** कह लिया करो, यह तुम्हारे लिए नौकर से बेहतर है।
- 60 करन से पहले की** मम्भोग यदि तुम मैं से कोई अपनी पत्नि के पास हम-विस्तरी के लिए आए और यह दुआ पढ़े : “**بِسْمِ اللَّهِ الْعَظِيمِ الْجَنِينِ شَرِيكَتَنَ** व **الْجَنِينِ بِشَرِيكَتَنَ مَا رَجُوكَتَنَ**”। “हे अल्लाह! हमें शैतान से बचा, और इस सुहृत्व द्वारा जो औलाद हमें दे उसे भी शैतान से बचा, तो दुआ उनके बीच जो औलाद भी मुकद्दर होगी उसे शैतान धाटा नहीं पहुँचा सकेगा।
- 61 पत्नि के अपने पति को खुश रखने की** खुशी पत्नि के अपने पति को जो औरत इस हाल में मरी हो कि उसका पति उससे खुश हो तो वह जन्नत में जाएगी।
- 62 करने और नातादारी निभाने का सवाब** वालिदन के साथ नेकी करने और नातादारी निभाने का सवाब “अल्लाह की मर्जी वालिद की मर्जी में है”। “जिसे यह बात खुश करती है कि उस की रोज़ी बढ़ाई जाए, और उस की उम्र बढ़ाई जाए तो वह अपनी नातेदारी को निभाए।”
- 63 यतीम की किफालत** मैं और यतीम को देख-भाल करने वाला दोनों जन्नत में इस तरह होगे, और आप صلوات الله عليه وآله وسالم ने अपनी शहादत की उँगली और बीच वाली उँगली से इशारा किया। और उन दोनों उँगलियों को फैलाया।
- 64 हुस्ने अख्लाक का सवाब** मोमिन अपने हुस्ने अख्लाक (सु-स्वभाव) के कारण दिन भर रोज़ा रखने वाले और रात में कियाम करने के दर्जे को पालता है, कियामत के दिन मोमिन वदे के तराजू में हुस्ने अख्लाक से अधिक भारी कोई चीज़ नहीं होगी।
- 65 नरमी और शफ़क़त करने का सवाब** “अल्लाह अपने बन्दों में से रहम करने वालों पर रहम करता है, तुम धरती वालों पर रहम करो आकाश वाला तुम पर रहम करेगा।”
- 66 मुसलमानों के लिए भलाई चाहने का सवाब** “तुम मैं से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए भी वही चीज़ पसंद न करे जो अपने लिए पसंद करता है।”
- 67 लाज शरम रसूलों की सुन्नत हैं** लाज शरम “हया और शरम से मात्र भलाई ही आती है।” “हया ईमान का एक हिस्सा है।” “चार चीज़ें एक व्यक्ति नवी صلوات الله عليه وآله وسالم की सेवा में हाजिर हुवा, और उसने कहा : **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ** आप صلوات الله عليه وآله وسالم ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप صلوات الله عليه وآله وسالم ने फरमाया: इसके लिए 10 नेकियाँ हैं, फिर एक और व्यक्ति आया, और उसने कहा : **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ** आप صلوات الله عليه وآله وسالم ने उसके आरम्भ करना फरमाया: इसके लिए 20 नेकियाँ हैं, फिर एक और व्यक्ति आया, और उसने कहा : **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ** आप صلوات الله عليه وآله وسالم ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप صلوات الله عليه وآله وسالم ने फरमाया: इसके लिए 30 नेकियाँ हैं।
- 69 मूलाकात के समय मुसाफ़हा करने का सवाब** जो दो मुसलमान व्यक्ति आपस में मूलाकात करें, और मुसाफ़हा करें तो इससे पहले कि वह अलग-अलग हों बछ्शा दिए जाते हैं।
- 70 मुस्लिम व्यक्ति की इज़्जत का बचाव करने का सवाब** “जिस ने अपने मुस्लिम भाई की इज़्जत का बचाव किया अल्लाह तो अल्लाह तआला कियामत के दिन जहन्नम से उस के चेहरे का बचाव करेगा।”
- 71 नेक लोगों के साथ मुहब्बत करना और उनके साथ बैठना** नेक लोगों के साथ मुहब्बत “तुम उनके साथ होगे जिस से त्रूम ने मुहब्बत की।” अनस رضي الله عنه कहते हैं : सहाबए किराम किसी चीज़ से उस क़दर खुश नहीं हुए जिस कदर इस हार्दीस से खुश हुए।
- 72 अल्लाह की बड़ाई के लिए मुहब्बत करने वालों का सवाब** अल्लाह की बड़ाई के लिए “अल्लाह तआला ने फरमाया: मेरी बड़ाई के लिए मुहब्बत करने वालों के लिए नूर के मेंबर होंगे, हाल यह होगा कि उन पर नवी और शहीद भी रक्ष करेंगे।

अपने भाई के लिए “अपने भाई के लिए उस की गैर मौजूदगी में द्रुआ कबूल होती है, उस के सर के पास	
73 द्रुआ करने वाले का सवाब उस पर नियुक्त फरिश्ता आमीन कहता है, और कहता है तेरे लिए भी इसी के तरह हो।”	
74 मोमिन मर्दों और औरतों के “जिस ने मोमिन मर्दों और औरतों के लिए इस्तिग़फ़ार किया तो अल्लाह तआला इस्तिग़फ़ार करने का सवाब उस के लिए प्रत्येक मोमिन मर्द और औरत के बदले एक नेकी लिखता है।”	
75 कष्टदायक चीज़ को रास्ते “मैं ने एक आदमी को जन्नत की नेमतों से लाभ उठाते देखा एक गाछ को काटने से हटाने का सवाब के कारण जो बीच रास्ते में था और लोगों को तक्तीफ़ पहुंचा रहा था।	
झगड़ा लड़ाई और मज़ाक मैं उस व्यक्ति के लिए जन्नत के किनारे में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसने हक पर मैं भी झूट से बचने और होते हुए भी झगड़ा छोड़ दिया, और उस व्यक्ति के लिए भी जन्नत के बीच में एक अच्छे स्वभाव वालों का घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसने मज़ाक मैं भी झूट नहीं बोला, और उस व्यक्ति के लिए सवाब जन्नत के बालाई दरजे में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसके अख़लाक अच्छे हैं।	
77 गुस्सा पी जाने का सवाब जो व्यक्ति गुस्सा पी जाए और वह उसे कर गृज़रने की शक्ति रखता हो, तो कियामत के दिन अल्लाह तआला उसे सारी मख्लूक के सामने बुलाएगा, और बड़ी बड़ी आँख वाली हूरों में से जिसे चाहे चून लेने का अधिकार देगा।	
78 किसी की भलाई या बुराई की साक्ष्य देना “जिस के लिए तुम ने भलाई की साक्ष्य दी उस पर जन्नत वाजिब हो गई, और जिस के लिए तुम ने बुराई की साक्ष्य दी उस पर जहन्नम वाजिब हो गई, तुम धरती पर अल्लाह के गवाह हो।”	
79 मुसलमान के ऐब को ढकना “जो व्यक्ति किसी मुस्लिम से द्रुनिया की कठिनाइयों में से किसी एक कठिनाई को दूर करता है तो अल्लाह तआला उस से कियामत की कठिनाइयों में से एक कठिनाई दूर करेगा, और जो व्यक्ति किसी तंगहाल पर आसानी करता है तो अल्लाह द्रुनिया और आखिरत में उस पर आसानी करेगा, और जिस ने किसी व्यक्ति की बुराई को संसार में छापाया, तो अल्लाह तआला द्रुनिया में और कियामत के दिन उस पर पर्दा करेगा, और अल्लाह तआला बन्दे की सहायता में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।	
80 आखिरत को प्रधानता देना “जिस की फिक्र आखिरत की हो तो अल्लाह तआला उस के दिल में बेनियार्जा (निःस्पृहता) पैदा कर देता है, और उस की विखरी हुई चीज़ों को इकट्ठी कर देता है, और द्रुनिया उस के पास जलील हो कर आती है।”	
वे अमल जिनसे अल्लाह के अर्श के नीचे साया नसीब होगा, जिस दिन उसके सिवाए कोई साया नहीं होगा : 81 साया नसीब उसके सिवाए कोई साया नहीं होगा।	सात किसिम के व्यक्ति हैं जिन्हें अल्लाह तआला कियामत के दिन अपने अर्श के साथ के नीचे जगह देगा, उस दिन उस साए के सिवाए कोई और साया नहीं होगा : ① आदिल इमाम (न्याय-शील शासक), ② वह नौजवान जो अल्लाह तआला की इबादत में पला-बढ़ा हो, ③ वह व्यक्ति जिसका दिल मस्जिद के साथ लटका हूँया हो (अर्थात मस्जिद की खास महब्बत उसके दिल में हो, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इन्तज़ार में बे-करार रहता हो) ④ वे दो व्यक्ति जो मात्र अल्लाह के लिए महब्बत करते हों, उसी पर वे आपस में इकट्ठे हुए हों, और उसी पर एक दूसरे से बिछड़े हों। ⑤ वह व्यक्ति जिसे कोई सुन्दरी और ऊँचे खानदान वाली औरत पाप करने के लिए बुलाए, लेकिन वह उसके जवाब में कहे : मैं तो अल्लाह से डरता हूँ। ⑥ वह व्यक्ति जिसने कोई सदका किया और उसे छिपाया यहाँ तक उसके बाएं हाथ को भी जानकारी नहीं कि उसके दाएं हाथ ने क्या खर्च किया है। ⑦ वह व्यक्ति जिसने एकान्त में अल्लाह को याद किया और उसके डर से उसकी आँखों से आँसू उमड़ पड़े।
82 मणिकरत तलब करना	जिस व्यक्ति ने इस्तिग़फ़ार को लाज़िम पकड़ लिया तो अल्लाह तआला उस की हर तरीकों से दूर कर देता है, और हर गुम और फिक को ख़त्म कर देता है, और जहाँ से उस के गुमान में भी नहीं होता उसे गोज़ी देता है।

## ऐसे काम जिन्हें करना निषिद्ध है

### क्र. निषिद्ध कर्म

### नबी ﷺ का फरमान

- 1 **लोगों की खातिर कर्म करना** “अल्लाह तआला का फरमान है : मैं साझी बनाने वाले के शिर्क से बेनियाज़ (निःस्पृह) हूँ, जिस ने कोई कर्म किया जिस में मेरे साथ किसी दूसरे को साझी बनाया तो मैं उसे और उस के कर्म को उस के मुंह पर मार देता हूँ।”
- 2 **बाहिरी अच्छाई और भित्री बिगड़** “मुझे ऐसी कौम के बारे में अवश्य जानकारी है जो कियामत के दिन तिहामा के सफेद पहाड़ों जैसी नेकियां लेकर आएंगे, जिन्हें अल्लाह तआला खाई हुई भूस की तरह कर देगा। सौबान ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! आप उनकी सिफ़त हमें बता दिजिए, ताकि हम अवज्ञा के कारण उन में से न हो जाएं, तो आप ने कर्माया : “सुन लो! वे तुम्हारी ही चम्ढ़ी वाले तुम्हारी बिरादरी के लोग हैं, और जिस प्रकार तुम रातों में कियाम करते हो वे भी करते हैं, लेकिन वे ऐसे लोग हैं कि जब अकेले में होते हैं तो पाप किया करते हैं।”
- 3 **घमंड** “जन्नत में ऐसा व्यक्ति नहीं जाएगा जिस के दिल में कण बराबर भी घमंड हो” किस का अर्थ है : हक का इन्कार करना और लोगों को हकीर समझना।
- 4 **कपड़ा नीचे तक पहनना** पाजामा, कमीज़ और पगड़ी इन सभों में इस्वाल का ऐतिवार होता है, और जिस ने कोई चीज़ घमण्ड करते हुए नीचा करके पहना तो अल्लाह तआला उस की ओर कियामत के दिन नहीं देखेगा।
- 5 **हसद** “तुम हसद से बचो; क्योंकि हसद नेकी इस तरह से मिटा देता है जिस तरह आग लकड़ी को राख बना देती है। या कहा : घास भूस को।”
- 6 **सूद** “नबी ﷺ ने सूद लेने वाले और सूद देने वाले पर लानत की है।” “सूद का एक दर्हम जिसे आदमी जानते हुए खाता है 36 और तों से बलात्कार करने से बढ़करा है।”
- 7 **शराबी** “हमेशा शराब पीने वाला जन्नत में नहीं जाएगा, और न ही मोमिन व्यक्ति जादू के कारण, और न ही नाता तोड़ने वाले जन्नत में जाएंगे।”
- 8 **द्रूट** “बर्बादी हो उस के लिए जो लोगों को हँसाने के लिए बातें करता है, तो द्रूट बोलता है, उसका सत्यानास हो, उसका सत्यानास हो।”
- 9 **जासूसी** “जिस ने लोगों की बातें सुनी जब कि लोग उसे नापसंद करते हों या उस से दूर रहते हों तो क्यामत के दिन उस के कान में पिघलाया हुवा शीशा डाला जाएगा।”
- 10 **फोटो** “कियामत के दिन सारे लोगों में सब से कठिन अ़ज़ाब फोटोग्राफरों को होगा।” “जिस पर में कुत्ता या फोटो हो उसमें फरिश्ते नहीं जाते।”
- 11 **चुगली** “चुगली करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।” नमीमः का अर्थ है : फूट डालने के लिए लोगों की बातें फैलाना।
- 12 **पूछ** “आप ﷺ ने पूछा : जानते हो गीवत क्या है? लोगों ने कहा : अल्लाह और उसके रसूल ﷺ बेहतर जानते हैं, तो आप ﷺ ने कर्माया : तुम्हारा अपने भाई का चर्चा ऐसी बीज ढारा करना जिसे वह नापसंद करता हो। पूछ गया : यदि मेरे भाई में वह कमी हो तो? आप ने कर्माया : वह उसमें कमी है तो तूने उसकी गीवत की, नहीं तो उस पर इलज़ाम लगाया।”
- 13 **लानत** “मोमिन को लानत करना उसकी हत्या करने जैसे है।” “लानत करने वाले क्यामत के दिन सिफ़रिशी या गवाह नहीं होंगे।”
- 14 **राज़ फैलाना** “कियामत के दिन अल्लाह के यहाँ सब से बूगा वह व्यक्ति होगा जो अपनी बीवी के जाए और बीवी उस के पास फिर वह उस की राज़ को फैला दे।”
- 15 **बुरा कर्म** “कियामत के दिन अल्लाह के यहाँ सब से बूगा व्यक्ति वह है जिसे लोगों ने उस के बूराई से बचने के लिए छोड़ दिया हो।” और “आदम के सन्तान की अधिकतर गलतीय उस की जुबान द्वारा होती है।”
- 16 **मुस्लिम व्यक्ति पर कुफ़ की तुहमत लगाना** “जिस किसी ने भी अपने भाई को कहा : ऐ कफिर! तो वह बात उन से कहने की ओर पलटती है, यदि मुआमलः वैसा नहीं है तो कहने की ओर बात पलट आती है।”

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29

30

31

32

17	दूसरे की ओर निस्वत करना	“जिसने जानबूझकर अपने पिता के बजाय दूसरे की ओर अपनी निस्वत की तो उस पर जन्नत ह्राम है”। “जिस ने अपने बाप से बेज़ारी की तो यह कुफ्र है”। “किसी मुस्लिम के लिए यह जायज़ नहीं कि वह किसी दूसरे मुस्लिम भाई को डराए”। “जिस ने किसी मुस्लिम की ओर धार-दार चीज़ से इशारा किया तो फरिश्ते उस पर ला’नत करते रहते हैं यहाँ तक कि उसे छोड़ दे”
18	मुसलमान को डराना	“जिस ने मुस्लिम (गैर मुस्लिम जिस के साथ ऐग्रिमेंट हो) का नाहक हत्या कर दिया तो वह जन्नत की खुशबूतक नहीं पाएगा जब कि एक साल की दूरी से ही उस की महक पाई जाये गी”।
19	इस्लामी देश में मुस्तामन की हत्या	“अल्लाह तआला कहता है : जिस ने मेरे वली से दुश्मनी की तो मैं उस के साथ जंग का एलान करता हूँ।”
20	औलिया के साथ दुश्मनी	“मूनाफिक और फासिक को “मूनाफिक को सरदार न कहो; क्योंकि यदि वह सरदार हो जाए तो तुम ने अपने रब को नाराज़ कर दिया।”
21	सरदार बनाना	“अल्लाह जिसे भी प्रजा की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी देता है, और जिस दिन भी मरता है इस हाल में मरता है कि उसने अपने प्रजा के साथ धोका किया होता है तो अल्लाह उस पर जन्नत को ह्राम कर देता।”
22	प्रजा के साथ धोकाधड़ी	“बिना जानकारी के फ़त्वा देना है।”
23	सुस्ती में जुम्मा या अस्त्र की नमाज़ छोड़ देना	“जिसे बिना ज्ञान के फ़त्वा दिया गया तो ग्रनाह फ़त्वा देने वाले के ऊपर होता है।”
24	नमाज़ में कोताही करना	“जिस ने तीन बार लापर्वाई के कारण जुम्मा छोड़ दिए तो अल्लाह उस के दिल पर मोहर लगा देता है।” “जिस ने अस्त्र की नमाज़ छोड़ दी उस के कर्म बर्बाद हो गए।”
25	नमाज़ी के सामने से जाना	“हमारे और काफिरों के बीच सीमा नमाज़ है; तो जिस ने नमाज़ छोड़ दी वह काफिर हो गया।” “इन्सान और शिर्क के बीच फ़ासला नमाज़ छोड़ना है।”
26	नमाज़ियों को तक्लीफ देना	“नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले को यदि यह पता चल जाए कि उस पर कितना ग्रनाह है, तो उस के लिए 40 तक बैठे रहना उस के आगे से जाने से बेहतर है।”
27	ज़मीन हड्डप करना	“जिस ने पियाज़ लहसून और कुरास खाई वह हमारी मस्जिद के करीब न आए क्योंकि फ़रिश्तों को उन चीज़ों से तक्लीफ़ होती है जिन से आदम की औलाद को तक्लीफ़ होती है।”
28	अल्लाह को नाराज़ करने वाली बातें करना	“जिस ने अत्याचारी में एक वित्ता ज़मीन हड्डपा तो अल्लाह तआला क़्यामत के दिन सात तह ज़मीन का तौक़ उस के ग़ले में डालेगा।”
29	बेमतलब की बातें करना	“आदमी अल्लाह की नाराज़गी की बात करता है जिस की वह पर्वा नहीं करता जब कि उस के कारण 70 साल तक जहन्नम में गिरता चला जाता।”
30	बनावटी बातें करना	“ऐसी बातें अधिक न करो जो अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली हो, क्योंकि ज़िक्र के सिवाय अधिक बातें दिल की सख्ती का कारण हैं।”
31	अल्लाह तआला के ज़िक्र से ग़ाफिल रहना	“अवश्य मेरे पास तुम में से सब से अधिक मबूज़ और मेरी बैठक से दूर वे होंगे जो बनावटी बातें करते हैं, गप हाँकते हैं, और घमंड करते हैं।”
32	किसी मुसलमान अपने मुसीबत पर तुम्हे खुश होना। लिया हो शर्मन्दा करता है	जो लोग भी किसी सभा में बैठते हैं और उस में अल्लाह का ज़िक्र नहीं करते और अपने नबी ﷺ पर दस्त नहीं भेजते तो यह सभा उन के लिए अफ़सोस का कारण बनता है, यदि अल्लाह तआला वाहे तो उन्हें अज़ाब दे या माफ़ कर दे।
33	मुसलमानों से बातें न करना	किसी मुस्लिम के लिए यह जायज़ नहीं कि अपने मुस्लिम भाई से तीन दिन से अधिक बात न करे, यदि तीन दिन से अधिक बात नहीं करता है और उसी अवस्था में उस की मौत होजाती तो जहन्नम में जाएगा।
34	किसी मुसलमान अपने मुसीबत पर तुम्हे खुश होना। लिया हो शर्मन्दा करता है	किसी मुस्लिम के लिए यह जायज़ नहीं कि अपने मुस्लिम भाई से तीन दिन से अधिक बात न करे, यदि तीन दिन से अधिक बात नहीं करता है और उसी अवस्था में उस की मौत होजाती तो जहन्नम में जाएगा।

35	<b>सरे आम ग्रनाह करना</b>	मेरी उम्मत के सारे लोग माफ कर दिए जाएंगे सिवाय सरे आम पाप करने वाले के।
36	<b>बूरी आदत</b>	बूरी आदत कर्मों को उसी तरह बर्बाद कर देती है, जिस तरह सिर्का शहद को।
37	<b>हृदया देकर वापस लेना</b>	“हृदया देकर वापस लेने वाला व्यक्ति कुत्ते की तरह है जो उल्टी कर के उसे चाट लेता है।” “किसी व्यक्ति के लिए यह जायज़ नहीं कि वह हृदया देकर उसे वापस ले।”
38	<b>पड़ोसी का अत्याचार</b>	किसी व्यक्ति का दस औरतों से बलात्कार करने का पाप अपने पड़ोसी की बीवी से बलात्कार करने से कम है, और किसी व्यक्ति का दस घरों से चोरी करने का पाप अपने पड़ोसी के घर से चोरी करने से कम है।
39	<b>हराम चीज़े देखना</b>	“आदम की संतान पर ज़िना का हिस्सा लिख दिया गया है जिसे वह हर हाल में पा कर रहे, आँखें ज़िना करती हैं और उनका ज़िना देखना है, और कानों का ज़िना सुनना है, और ज़ुबान देखना और दिल चाहत करता है और तमन्ना करता है, और शरमगाह उसे सत्य कर दिखाती है या झुटला देती है।”
40	<b>किसी व्यक्ति का अजनबी औरत को छुना</b>	किसी व्यक्ति के सर में सूई को चुभाना उस के लिए इस बात से बेहतर है कि किसी अजनबी औरत को छुए जो कि उस के लिए जायज़ नहीं है।” “मैं औरतों से मुसाफ़्हा नहीं किया करता।”
41	<b>निकाहे शिगार करना</b>	“नबी ﷺ ने शिगार से रोका है।” शिगार यह है कि आदमी अपनी बेटी की शादी इस शर्त पर करे कि दूसरा व्यक्ति अपनी बेटी की शादी करे और दोनों के बीच महान रखी जाए।
42	<b>मातम करना</b>	“जिस पर मातम किया जाता है वह क्यामत के दिन अपने ऊपर मातम किए जाने के कारण अज़ाब दिया जाता है।” “मुर्दा अपनी कब्र में अज़ाब दिया जाता है अपने ऊपर मातम किए जाने के कारण”
43	<b>गैरूल्लाह की कसम खाना</b>	“जिस ने गैरूल्लाह की कसम खाई उसने क़फ़ किया या शिर्क किया।” “जिसे कसम खानी हो, वह अल्लाह की कसम खाए या खामोश रहे।”
44	<b>झूटी कसम खाना</b>	झूटी कसम “जिस ने ऐसी कसम खाई जिस से नाहक मुसलमान व्यक्ति का माल हड्डप करे तो अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह उस पर गृस्सा होगा।”
45	<b>सौदा में कसम खाना</b>	“तुम सौदा में अधिक कसम खाने से बचो; क्योंकि यह सौदे को बेचवाती है, फिर बर्कत मिटा देती है।” “कसम सौदा बेचवाती है, पर बर्कत मिटा देती है।”
46	<b>काफिरों का रूप अपनाने वाला</b>	“जिस ने किसी कौम की रूप अपनाई तो वह उन में से है।” “वह हम भी नहीं जिस ने दूसरों का रूप अपनाया।”
47	<b>कब्र पर तामीर करना</b>	“नबी ﷺ ने कब्रों को चूना लगाने, उस पर बैठने और उस पर इमारत बनाने से रोका।”
48	<b>धोका और ख़्यानत</b>	“अल्लाह तआला कियामत के दिन जब अगलों और पिछलों को इकट्ठा करेगा, तो हर धोकेबाज के लिए एक झ़ंडा गाड़ा जाएगा, और कहा जाएगा : यह कलां जिन फलां का धोका है।”
49	<b>कब्र पर बैठना</b>	“यदि तुम में से कोई अंगारे पर बैठे जो उस का कपड़ा जलादे, और उस के चमड़े तक पहुंच जाए, यह उस के लिए बेहतर है कब्र पर बैठने से।”
50	<b>जो अपनी स्वागत में लोगों का ख़ड़ा होना पसन्द करता हो</b>	जो व्यक्ति अपने स्वागत में लोगों का ख़ड़े होना पसन्द करता हो, अपना स्थान नरक बना ले।
51	<b>बिना ज़रूरत के मागना</b>	“तीन चीज़े ऐसी हैं जिन पर मैं कसम खाता हूँ, और मैं त्रूमें त्वायीस सुनारा उसे याद करलो ... और न ही किसी बन्दे ने मांगने का दर्वाज़ा खोल देता है।” अल्लाह उस पर फ़कीरी का दर्वाज़ा खोल देता है।”

52	सौदे में दलाली करना	“अल्लाह के रसूल ने इस बात से रोका है कि शहरी देहाती के लिए वेचे, और दलाली मत करो, और न ही कोई अपने भाई के सौदे पर सौदा करे।”
53	खोई हुई चीज़ की तलाश के लिए मस्जिद में एलान करना	“जो मस्जिद में किसी व्यक्ति को खोई हुई चीज़ का एलान करता सुने, तो नहीं बनाई गई है।”
54	कृष्ण के पीछे सवार था, आप की सवारी फ़िसली तो मैं न नबी के लिए कहा : यह मत कहो कि शैतान हलाक हो; क्योन्कि तुम्हारे यह कहने से वह	“शैतान को गाली मत और उस की बुराई से पनाह चाहो”। एक सहावी कहते हैं कि मैं नवी के पीछे सवार था, आप की सवारी फ़िसली तो मैं ने कहा : शैतान हलाक हो, जिस पर नबी के लिए कहा : यह मत कहो कि शैतान हलाक हो; क्योन्कि तुम्हारे यह कहने से वह
55	बुखार को ग़ाली देना	फूल कर घर जैसा होजाता है, और कहता मेरी शक्ति से ऐसा हुवा, पर यह कहा करो : बिस्मिल्लाह; क्योन्कि तुम्हारे यह कहने से वह अपमान हो कर मक्की जैसा हो जाता है।
56	गुम्राही की ओर बुलाना	बुखार को ग़ाली मत दिया करो; क्योन्कि वह इन्सान के पाप को वैसे ही खत्म कर देता है जिस प्रकार भट्टी लोहे की जंग को।
57	पीने में निषिद्ध चीज़े	“जिस ने गुम्राही की ओर बुलाया तो उसे उस के अनुसार पाप करने वाले के बराबर गुनाह मिलता है, दोनों के गुनाहों में कुछ भी कमी नहीं होती।”
58	सोने या चाँदी के बर्तन में पानी पीना	“नबी कृष्ण ने मश्कीज़ : या पानी के बर्तन के मुँह से पानी पीने से रोका है।”
59	बायां हाथ से पानी पीना	“नबी कृष्ण ने खड़े होकर पानी पीने से डांटा है।”
60	रिश्ते काटना	“सोने या चाँदी के बर्तन में पानी न पीओ, और न ही पतले या मोटे रेशम का कपड़ा पहनो, इसलिए कि यह दुनिया में काफ़िरों के लिए है और आखिरत में तुम्हारे लिए है।”
61	नबी कृष्ण पर दस्त न भेजना	“हरगिज़ तुम में से कोई बाएं हाथ से खाना न खाए और न पानी पिए; क्योंकि शैतान बायां हाथ से खाता पीता है।”
62	कुत्ता पालना	“उस आदमी की नाक मिठ्ठी में मिले जिस के पास मेरा चर्चा हुवा पर उस ने मुझ पर दस्त नहीं भेजी।” “बख़ील व्यक्ति वह है जिस के पास मेरा चर्चा हुवा पर उस ने मुझ पर दस्त नहीं भेजी।”
63	जानवरों को सताना कि मर गई तो उस के कारण अ़ज़ाब हुवा, उस ने उसे कैद किए रख्खा यहाँ तक जानवरों के गले में धंटी लटकाना	“जिस ने कुत्ता पाला सिवाय शिकारी कुत्ता, और जानवर की सुरक्षा करने वाले कुत्ता के तो उस की नेकी में से प्रत्येक दिन दो कीरात की कमी होती है।”
64	जानवरों के गले में धंटी लटकाना	“एक औरत को बिल्ली के कारण अ़ज़ाब हुवा, उस ने उसे कैद किए रख्खा यहाँ तक कि मर गई तो उस के कारण वह अ़ज़ाब दी गई।” “जानदार का निशाना न साधो”
65	यदि तुम ऐसा देखो कि अल्लाह तआला किसी को उस के पाप पर संसारिक सुविधाएं दिए जा रहा है, तो वास्तव में यह उसे ढील देना है, फिर इस आयत की तिलावत की :	“فَلَمَّا نُسُوا مَا دُكَرُوا بِهِ فَتَحَّنَ عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَفَعٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرَحُوا بِمَا أُوتُوا لَهُمْ فَلَمَّا نَهَمُوا مِنْهُمْ فَإِذَا هُمْ مُثْلِسُونَ”
66	दुनिया को तर्जीह देना	जाती थी तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहाँ तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उन को मिली थी खूब मचल गए तो हम ने उन को अचानक पकड़ लिया, फिर तो वह बिल्कुल मायूस हो गए।
		“जिस की फ़िक्र मात्र दुनिया की हो तो अल्लाह तआला उसे लोगों का मुहताज बना देता है, और उस की इकट्ठी चीज़ों को बिखेर देता है, और दुनिया से मात्र उसे उतनी ही चीज़ प्राप्त होती है जो उस की तक़दीर में है।”

## सदा के लिए जन्मत या जहन्नम की ओर

●●● **कब्र** : कब्र परलोक का पहला ठिकाना है, काफिर और मुनाफिक के लिए आग के गड़े के रूप में, और मोमिन के लिए कियारी होगी। कई एक पाप के कारण वहाँ अज़ाब होगा : जैसे पेशाब से न बचना, चुगली करना, ग़नीमत के माल में ख़्यानत करना, झूठ बोलना, नमाज़ के समय सोए रहना, क़ुरआन के अनुसार कर्म न करना, बलात्कार करना, बालमैथुन करना, सूंदी कारोबार करना, कर्ज़ वापस न लौटाना इत्यादि। और कब्र के अज़ाब से निम्न चीज़ें बचा सकती हैं : नेक कर्म जो कि अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस हो, कब्र के अज़ाब से शरण चाहना, सुरतुल मुल्क की तिलावत करना। और इसके अज़ाब से शहीद, जिहाद में पहरा देने वाले, जुम्मा के रोज़ मरने वाले, और पेट की बीमारी में मरने वाले सुरक्षित रखे जायेंगे।

●●● **सूर में फूंक मारना** : वह एक बड़ा कर्न है, जिसे इस्माफ़ील ने मुंह से लगा रखा है, और इस इन्तज़ार में हैं कि कब उसमें फूंक मारने का आदेश मिले, घबरा देने वाली फूंक : ﴿وَنُفَخَ فِي الْأَصْوَرِ فَصَعِقَ مَنِ فِي الْأَكْوَافِ وَمَنِ فِي الْأَرْضِ﴾ “और सूर में फूंक दिया जाएगा तो आकाशों और धरती वाले सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, परन्तु जिसे अल्लाह चाहे।” जिस के बाद पूरी द्वनिया बर्बाद हो जाएगी। और 40 दिन के बाद उठाए जाने के लिए सूर में फूंक मारा जाएगा : ﴿ثُمَّ نُفَخَ فِيهِ أُخْرَى هُمْ قِيَامٌ يُنْظَرُونَ﴾ “फिर दोबारा सूर फूंका जाएगा तो वह यकदम खड़े होकर देखने लग जाएंगे।”

●●● **दोबारा जीवित किया जाना** : फिर अल्लाह तआला एक तरह की बारिश बर्साएगा जिस से जिस्म हरे भरे होजाएंगे (रीढ़ की हड्डी से)। और एक नई जीवन होगी जिस में मीत नहीं आएगी। सब नंगे पैर होंगे, शरीर पर कपड़ा न होगा, फ़रिश्तों और जिन्नों को देख सकेंगे, और अपने अपने अमल के साथ दोबारा जीवित किए जाएंगे।

●●● **एकद्वा किया जाना** : अल्लाह तआला हिसाब किताब के लिए सभों को एक ऐसे बड़े दिन में जो कि 50 हज़ार साल के बराबर होगा इकद्वा करेगा, लोग घबराए हुए और मदहोश होंगे, उन्हें ऐसा लगेगा कि वे संसार में क़छु क्षण ही रहे थे, सूरज एक मील की दूरी पर कर दिया जाएगा, लोग अपने अपने कर्तृत के अनुसार पसीना में डूब जाएंगे। उस दिन कमज़ोर और घमण्डी लोग लड़ौंगे, काफिर अपने साथी, शैतान और उसके एलचियों को अदालत के कटहरे में ला खड़ा करेगा, एक दूसरे को शराब रहे होंगे, अत्याचारी मारे गम के अपने हाथों को चबा रहे होंगे। और जहन्नम को 70 हज़ार लगाम के साथ खींचा जाएगा, हर लगाम को 70 हज़ार फ़रिश्ते खींच रहे होंगे। काफिर उसे देख कर अपनी जान के बदले छूटकारा की तमन्ना करेगा, या फिर वह मिट्टी हो जाने की आर्जू करेगा। और पापी लोगों का हाल यह होगा : ज़कात के इन्कारियों के धन को आग की तख़ती बना दी जाएगी, जिस से उन्हें दागा जाएगा। घमन्डियों को चिंवटियों की तरह इकद्वा किया जाएगा, धोके बाज़, खाइन और ग़ासिब ठस्वा किए जाएंगे। चोर अपनी चोरी के धन को ला हाज़िर करेंगे, सारी भेदें ख़ूल जाएंगी। पर नेक लोगों को घब्राहट नहीं होगी। वह दिन उन पर जुह की नमाज़ की तरह बीत जाएगा।

●●● **शिफ़ाज़त** : महान शफ़ाअत नबी ﷺ के लिए ख़ास है, यह शफ़ाअत आप महशर के दिन लोगों से कष्ट दूर करने और उनका हिसाब करने के लिए करेंगे। और साधारण शफ़ाअत दूसरे नबी और सदाचारी व्यक्ति करेंगे जो कि मोमिनों को जहन्नम से निकालने और उनके दरजे उच्च करने के लिए होंगे।

● ● ● **हिसाब** : लाइन के लाइन लोगों की पेशी उनके रब के सामने होगी, वह उन्हें उनके कर्मों को देखा एगा और इसके बारे में पूछेगा, उन की उम्र, जवानी, धन, ज्ञान, वचन के बारे में सवाल करेगा, और आंख, कान तथा दिल की नेमतों के बारे में प्रश्न करेगा। काफिरों और मुनाफिकों का हिसाब उन्हें डांट पिलाने और उन पर दलील कायम करने के लिए सरे आम लोगों के सामने होगा, और उन के विरोध में लोग, धरती, दिन, रात, धन दौलत, फरिश्ते, और स्वयं उन के साक्षि देंगे, यहाँ तक कि उन का अपराध प्रमाणित हो जाएगा और वे इकार कर लेंगे। और मोमिनों के साथ अल्लाह तआला अकेले में सोध पूछ करेगा, और उन से इकरारे जर्म कराएगा, यहाँ तक कि जब वह यह सोचने लगेगा कि बर्बाद हो गया तो अल्लाह तआला कहेगा : “मैं ने संसार में त्रुम्हारे इन पापों पर परदा डाल दिया था, और आज त्रुम्हारे लिए इन्हें क्षमा कर देता हूँ। और सब से पहले मुहम्मद ﷺ की उमर्ती का हिसाब होगा, और सब से पहले नमाज का हिसाब होगा, फिर खून के बारे में फैसला होगा।

● ● ● **सहीफों का उड़ना** : फिर सहीफे उड़ेंगे, और लोग अपने अपने कर्मपत्र लेंगे, जो कि हर छोटी बड़ी चीज़ को धेरे होगी। ﴿لَا يَعْدُرُ صَغِيرَةً وَلَا كِبِيرَةً﴾ मोमिन अपने कर्मपत्र को दाएं हाथ से लेगा, जबकि काफिर पीठ पीछे अपने बाएं हाथ में लेंगे।

● ● ● **तराजू** : फिर लोगों को बदला देने के लिए हकीकी तराजू में उनके कर्मों को तौला जाएगा, जो कि बहुत ही बारीकबीं होगा, उसके दो पलड़े होंगे। उन कर्मों को भारी कर देगा जो ख़ालिस अल्लाह के लिए शरीअत के अनुकूल होंगे। जिन कर्मों को वह वजनी करेगा वह हैं : लाइलाह इल्लल्लाह, अच्छे आचरण, और ज़िक्र जैसे : अल्हम्दु लिल्लाह, और सुब्बानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्बानल्लाहिल् अज़ीम। और लोगों की अच्छाइयों और बुराइयों का निर्णय करेगा।

● **हौज़** : फिर मोमिन हौज़ के पास आएंगे, जो उस में से एक बार पानी पी लेगा कभी पियासा न होगा, और हर नबी का हौज़ खास होगा, पर उसमें सब से बड़ा हमारे नबी ﷺ का होगा, उस का पानी दूध से उजला होगा, मध्‌ से मीठा होगा, उस की सुगन्ध कस्तूरी से अधिक होगी, उसके बर्तन सोने और चाँदी के होंगे सितारों की संख्या में। उस की लम्बाई जार्डन में ऐला नामक जगह से लेकर अदन से अधिक होगी, और उस का पानी कौसर से आएगा।

● ● **मोमिनों का परीक्षा** : हुशर के अन्तिम दिन काफिर अपने भगवानों के पीछे हो लेंगे जिन्हें उन्होंने पूजा था, तो वे उन्हें झूँड के झूँड जानवरों के गोल की तरह पैरों के बल या चेहरों के बल जहन्नम में पहुँचा देंगे। और मात्र मोमिन और मुनाफिक बच जाएंगे, तो उनके पास अल्लाह तआला आएगा और पूछेगा : “किसके इन्तिज़ार में हो?” वे कहेंगे : “हम अपने रब का इन्तिज़ार कर रहे हैं”। तो जब वह अपनी पिंडली खोलेगा तो उसे पहचान लेंगे। और सारे सज्दे में गिर पड़ेंगे सिवाय मुनाफिकों के, अल्लाह तआला फर्माता है : ﴿يَوْمَ يُكَثُّفُ عَنْ سَاقِي وَيُدَعَّونَ إِلَى الْجُنُودِ فَلَا يَسْتَطِعُونَ﴾ “जिस दिन पिंडली खोल दी जाएगी और सज्दे के लिए बोलाए जाएंगे तो सज्दा न कर सकेंगे”。 फिर वे अल्लाह के पीछे पीछे चलेंगे, वह सिरात़ (पुल) लगाएगा, और उन्हें नूर देगा, पर मुनाफिकों का नूर बुझ जाएगा।

● **सिरात (पुल)** : यह पुल है जो कि जहन्नम पर बना होगा, ताकि मोमिन इस से पार करके जन्नत की ओर जाएं, इस की सिफत में नबी ﷺ का फरमान है : “यह माएल होने और फिसलने की जगह है, जिस पर कांडे और टेढ़े सर वाली लोहे की सलाई होंगे, सादान के काटे की तरह, जो कि बाल से पतला, और तलवार से तेज होंगा।” और उस जगह प्रत्येक मोमिन को अपने अपने कर्म के हिसाब से नूर दिया जाएगा, सब से ऊँचा पहाड़ की तरह होगा, और सब से कम इन्सान के अंगूठे के किनारे में होगा। उनके लिए रौशनी होगी तो अपने कर्मों के हिसाब से पार कर ले जाएंगे। कुछ मोमिन पलक झपकते ही पार कर जाएंगे, और कुछ बीजली की तरह, कुछ हवा की तरह, कुछ पक्षी की तरह, कुछ अच्छे धोड़े और सवारी

की तरह, तो कूछ लोग सही ह सालिम बच जाएंगे, और कूछ छोड़ दिए जाएंगे और उन्हें खरोच लगे होंगे और कूछ जहन्नम में गिरे पड़े होंगे। परन्तु मुनाफिकों के पास रौशनी न होगी, वह लौटेंगे फिर उनके और मोमिनों के बीच दीवार खड़ी कर दी जाएगी, फिर वे पुल पार करना चाहेंगे तो जहन्नम में गिर जाएंगे।

● ● **जहन्नम :** इसमें काफिर जाएंगे, फिर कूछ पापी मुसलमान, फिर मुनाफिक, हर 1000 में से 999 जहन्नम में जाएंगे, उसके 7 दर्वाजे होंगे, संसार की आग से 70 गुना अधिक होगी। अधिक सजा के लिए काफिर की डील बढ़ा दी जाएगी, उसके दोनों मोंठों के बीच की दूरी 3 दिन की होगी, और दांत उहूद पहाड़ की तरह, चम्डा मोटा होजाएगा और उसे बदला जाएगा ताकि अजाब चखे, उनके लिए जल गरम पानी होगा, जो अंतिमियों को काट देगा, और खाना थूहड़, पीप और खून होगा, सब से कम सजा वाला व्यक्ति वह होगा जिस के दोनों पैरों के नीचे अंगारे होंगे जिस से उस का दिमाग खौल रहा होगा। उसमें उनके चमड़े पकेंगे, गलेंगे, चेहरे झूलसेंगे, घसेटे जाएंगे, पैरों में बेड़ीयां होंगी, गले में तौक होंगे। उस की गहराई बहुत अधिक होगी यदि उस में कोई बच्चा डाला जाए तो उस की तह तक पहुंचने में 70 साल लगेगा। उसके इंधन काफिर और पत्थर होंगे, हवा गरम होगी, काले ध्रुएं का सापा होगा, पोशाक आग का होगा, वह प्रत्येक वस्त्र को खा जाएगा किसी को छोड़ेगा नहीं, वह क्रोध से झिंझलाएगा और चिल्लाएगा, चमड़ों को जला देगा, और हड्डियों और दिलों तक पहुंच जाएगा।

● **कन्त्रर:** आप ~~इस्लाम~~ ने फरमाया: “मोमिन जहन्नम से छूटकारा पाएंगे तो जन्नत और जहन्नम के बीच कन्त्ररः पर रोक लिए जाएंगे, और उस अत्याचार का तस्फिया किया जाएगा जो उन्होंने संसार में किया था, यहाँ तक कि जब अपने सारे पाप से साफ सूधरा होजाएंगे तो उन्हें जन्नत में जाने की अनुमति दे दी जाएगी, तो उस हस्ती की कसम जिस के हाथ में मेरी जान है उन में से हर कोई अपने दुनिया के घर से अधिक जन्नत के घर के बारे में जानता होगा।”

● **जन्नत :** मोमिनों का ठिकाना, उसकी ईट सोने और चाँदी की होगी, और गारा कस्त्री का, उस की कंकरियां मोती और लाल के होंगे, उस की मिट्टी ज़ा'अफूरान की होगी। उस के 8 गेट होंगे, प्रत्येक गेट की चौड़ाई 3 दिन की मसाफ़त बराबर होगी, जो कि भीड़ के कारण तंग नहीं होगी। उस में 70 दर्जे होंगे हर 2 दर्जे के बीच की दूरी आकाश और धरती जितनी होगी। फिर्दौस सब से ऊपरी मंजिल होगी, और यहाँ से नहरें बहेंगे, उस की छत रहमान का अंग होगा, उस की नहरें शहद, दूध, शराब और पानी की होंगी, जौ बिना खोदाई के बहेंगी, मोमिन जिस तरफ चाहेगा उसे बहा लेजाएगा। उसके मेवे हमेशागी के लिए हैं, करीब और झूके होंगे। उस का खेमा मोती का होगा, उस की चौड़ाई 60 मील होगी, उस के हर कोने में रहने वाले होंगे, जो सुन्दर होंगे जिन की शरीर और चेहरे पर बाल न होगा, आँख सूर्मई होंगी, न उनकी जवानी ढलेंगी न कपड़े पूराने होंगे, उन्हें न तो पेशाब आएगा, न पाखाना न धूक और खजान, उनकी कंधी सोने की होंगी, और पसीने की महक कस्त्री जैसी होगी, जन्नती औरते उन्हें कुंवारी कन्या होंगी, जो कि महबूबा और हम उम्र होंगी, सब से पहले नवी ~~इस्लाम~~ जाएगी और सारे नवी। कम्तर दर्जे के जन्नती को उस की ख़ाहिश से दस गुना अधिक दिया जाएगा। उनके नौकर लड़के होंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, बिखरे हुए मोतियों की तरह। और जन्नत की सभा से महान नेमत होगी अल्लाह तआला को देखना, उस की खूशी और उस में हमेशा रहना।

**नोट :** यह महान घटनाएं जिन से होकर ● मोमिन, ● मुनाफिक और ● काफिर गुज़रें, लगातार होंगे यहाँ तक कि हर कोई अपने अन्तिम ठिकाने तक पहुंच जाएगा।

# वुजू का तरीका



वुजू के बिना नमाज़ स्वीकार नहीं की जाती, वुजू के लिए पाक पानी का होना ज़रूरी है, पाक पानी वह जो अपनी असली ह़ालत पर बाकी हो, जैसे समुन्दर का पानी, कुंवा, चश्मा और नहर का पानी।  
**नोट:** थोड़ा पानी मात्र नापाकी पड़ने से ही नापाक हो जाता है, अलबत्ता ज्यादा पानी जो कि 210 लिटर से अधिक हो, तो जब तक नापाकी पड़ने के कारण उसके रंग, या मज़ा या वूँ में परिवर्तण न आजाए वह नापाक नहीं होता।



बिस्मिल्लाह कह कर वुजू शुरू करे, वुजू करते समय दोनों हथेलियों का धोना मुस्तहब है, अलबत्ता ऐसे व्यक्ति पर जो रात की नींद से जगे तो उस पर इन्हें 3 बार धोना ज़रूरी हो जाता है।

**नोट :** वुजू के अंगों में से किसी भी अंग को तीन बार से अधिक धोना मकरूह है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार कुल्ली करे, जब्कि 3 बार करना अफ़ज़ल है।

**नोट :** 1- मात्र मुंह में पानी डालने और निकालने से कुल्ली नहीं हो जाती, बल्कि मुंह में पानी को घुमाना ज़रूरी है।

2- कुल्ली करते समय भिस्वाक करना मुस्तहब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार नाक में पानी डाले। पर 3 बार डालना अफ़ज़ल है।

**नोट :** मात्र नाक में पानी डाल लेना काफ़ी नहीं है, बल्कि ज़रूरी है कि सांस द्वारा पानी खींचे और सांस द्वारा ही झाड़ कर निकाले। ऐसा 1 बार करना वाजिब है, और 3 बार करना अफ़ज़ल है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार चेहरा धोए, पर 3 बार धोना अफ़ज़ल है। चेहरा धुलने की वाजिबी सीमा यह है : चौड़ाई में एक कान से दूसरे कान तक, और लम्बाई में ठुँड़ी से लेकर आम तौर पर सर के बाल निकलने की जगह तक।

**नोट :** धनी दाढ़ी का खिलाल करना मुस्तहब है, और यदि हल्की हो तो वाजिब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार दोनों हाथों को उँगलियों के किनारे से लेकर कोहनियों तक धोए, पर 3 बार धोना अफ़ज़ल है।

**नोट :** बायां हाथ से पहले दायां हाथ को धुलना मुस्तहब है।



फिर पूरे सर का मसह करे, और शहादत की उँगलियों को दोनों कानों में डाले, और अंगूठे से कान के बाहरी भाग का मसह करे। यह सब कुछ मात्र 1 बार करे।

**नोट :** 1- चेहरे की सीमा से लेकर गुद्दी तक सर का मसह करना वाजिब है। 2- गुद्दी से नीचे के बालों का मसह करना वाजिब नहीं है। 3- सर पर बाल न हों तो चम्ड़े का मसह करेंगे। 4- दोनों कानों के पीछे की सफेदी का मसह करना वाजिब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार टख्ने समेत दोनों पैर धोए, पर 3 बार धोना अफ़ज़ल है।

## चेतावनियाँ :

- ① वुजू के अंग 4 हैं : 1- कुल्ली करना, नाक में पानी डालना और चेहरा धोना। 2- दोनों हाथों को धोना। 3- सर और दोनों कानों का मसह करना। 4- टख्ने समेत दोनों पैरों को धोना। इन अंगों के बीच तरतीब वाजिब है, और इसमें आगे पीछे करने से वुजू बातिल हो जाता है।
- ② लगातार धोना वाजिब है, यदि एक अंग के बाद दूसरा अंग धोने में इतनी देरी हो जाए कि पहला अंग सूख जाए तो वुजू बातिल हो जाएगा।
- ③ वुजू के बाद यह दुआ पढ़ना सुन्नत है : अशहदु अल्लाइलाह इल्लाइलाह वह्दू ला शरीक लह, व अशहदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुह व रसुलुह।

## नमाज़ का तरीका



जब तुम मे से कोई नमाज पढ़ने की इच्छा करे तो सीधे खड़े होकर तक्बीरतुल् एहराम अब्रा॑ अल्लाह॒ अक्बर् कहे, मुक्तदी को सुनाने के लिए इमाम तक्बीरतुल् इहाम और बाकी सारी तक्बीरों को ज़ोर से कहे, और बाकी नमाजी धीमी आवाज से कहें। तक्बीर कहते हुए दोनों कंधों तक रफ़उल् यदैन करे, उँगलियाँ आपस में मिली हुई हों। इमाम के तक्बीर कह लेने के बाद मुक्तदी तक्बीर कहे।

**नोट :** अरकान और वाजिबी अक्बाल को जिस कदर नमाजी अपने आप को सुना सके उतनी मिक्दार में जह यानी जोर से कहना वाजिब है, यह शिरों ही नमाज क्यों न हो। और कमतर जह ये है कि दूसरा व्यक्ति सुन ले। और कमतर सिर ये है कि स्वयं सुन ले।



दाहने हाथ द्वारा बायां हाथ की हथेली या कलाई पकड़े, और उसे अपने सीने पर बांध ले, नज़र सन्दे की जगह पर गड़ाए रहे, फिर धीमी आवाज में कोई एक दुआ-ए-सना पढ़े, जैसे: سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ لَا إِلَهَ غَيْرُكَ “सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक व तबारकस्मुक व तआला जहुक व लाइलाह गैरुक” फिर अऊनु बिल्लाह पढ़े, फिर बिस्मिल्लाह पढ़े, फिर सूरतु-लू-फ़ातिहा पढ़े, जहीं नमाजों में मुक्तदी पर किराअत करना वाजिब नहीं है, पर इमाम के सकतों में, और जिन में जह से किराअत नहीं है उनमें फ़ातिहा पढ़लेना मुस्तहब है, (सहीह हडीस की रू से हर नमाज की हर रक्अत में फ़ातिहा पढ़ना वाजिब है मुतर्जिम) फिर कोई और सुरत मिलाए, इमाम फ़ज़्र की नमाज में और मश्यिब और इशा की पहली दोनों रक़अतों में जह से किराअत करे बाकी नमाजों में सिरी किराअत करे।

**नोट :** सूरतों को कुआन की तर्तीब के मुताविक पढ़ना मुस्तहब है, जब्कि तर्तीब को उलट देना मेरुह है। और कल्मे की तर्तीब को पलट देना या एक ही सूरत की आयतों की तर्तीब को पलट देना हराम है।



फिर “अल्लाह॒ अक्बर” कहे, तक्बीरतु-लू-इहाम में रफ़उ-लू-यदैन करने की तरह रफ़उ-लू-यदैन करे, और रुकुअू में जाए, दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर इस तरह रखे गोया कि उन्हें पकड़े हुए है, उँगलियों को फैलाए रहे, पीठ को फैलाए और उसी की बराबरी में सर रखे, फिर 3 बार “सुब्हान रब्बिय-लू-आज़ीम” कहे, यह बात ध्यान में रहे कि रुकुअू मिल जाने से रक़अत मिल जाती है।

**नोट :** तक्बीरते इन्तिकाल और तस्मीअ अर्थात् : “अल्लाह॒ अक्बर” और “समिअल्लाह॒ लिमन॒ हमिदह॒” कहने का समय एक रुक्न  $\frac{1}{4}$ अवस्था $\frac{1}{2}$  से दूसरे रुक्न  $\frac{1}{4}$ अवस्था $\frac{1}{2}$  के लिए जाने के बीच है न कि उस से पहले या बाद में, और यदि कोई जानबूझकर इन्हे कहने में देरी करे तो उसकी नमाज बातिल हो जाएगी।



फिर “समिअल्लाह॒ लिमन॒ हमिदह॒” कहते हुए सर उठाए, तक्बीरतु-लू-एहराम में रफ़उ-लू-यदैन करने की तरह रफ़उ-लू-यदैन करे, जब सीधे खड़ा हो जाए तो “रब्बना व लक-लू-हम्दु हम्दनू कसीरनू तैइबनू मुबारकनू फीहि मिलअ-सु-समावाति व मिलअ-लू-अर्जिं व मिलअ माबैनहुमा व मिलअ मा शिअत मिन शैइ-मू-बा’द” पढ़े।

**नोट :** “रब्बना व लक-लू-हम्दु ...” कहने का समय सीधे खड़े होजाने के बाद है न कि रुकुअू से उठने के बीच में।



फिर “अल्लाह॒ अक्बर” कहते हुए सन्दे में जाए, और अपने दोनों बाजुओं को पहलू से, और पेट को दोनों गानों से हटाए रखे, और दोनों हाथों को कंधों की बराबरी में रखे, दोनों पैरों के किनारों को घरती से लगाए रखे, हाथ और पैर की उँगलियों को काढे की ओर करे, फिर 3 बार “सुब्हान रब्बिय-लू-आअूला” कहे।

**नोट :** इन सात अंगों पर सन्दा करना वाजिब है : दोनों पैरों के किनारे, दोनों घुटने, दोनों हथेलियाँ और नाक के साथ पेशानी। जानबूझकर यिन उँझ के किसी भी एक अंग पर सन्दा न करने से नमाज बातिल होजाती है।



फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए सर उठाए, और बैठे, दोनों सज्जों के बीच बैठने का 2 सहीह तरीका है : ① अपना बायां पैर बिछा कर उस पर बैठ जाए, दायां पैर खड़ा रखें, और उँगलियां काबे की ओर मोड़ ले। ② दोनों पैरों को खड़ा ले, उँगलियों को काबा की ओर मोड़ ले, और ऐड़ी पर बैठे, और 3 बार “रब्बिगिर्ली” कहे, और चाहे तो यह दुआएं भी मिलाएं, “वर्हम्नी, वज्ञुर्नी, वर्फ़अूनी, वर्जुकनी, वन्सुर्नी, वहिदनी, व अफिनी, वअूफु अन्नी”, फिर पहले सज्जे की तरह दूसरा सज्जा करें, फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए सर उठाए, और दोनों पैरों के पंजों पर सहारा लेते हुए खड़ा होजाएं, और पहली रकअत की तरह दूसरी रकअत पढ़ें।

**नोट :** सुरतुल फातिहा को क्याम में पढ़ा जाएगा, यदि पूरी तरह से खड़ा होने से पहले पढ़ना शुरू कर दिया, तो खड़े होने के बाद उसे दोहराना ज़रूरी है नहीं तो नमाज़ बातिल होजाएगी।



दूसरी रकअत पढ़ कर तशह्वुद के लिए उसी तरह बैठे जिस तरह दोनों सज्जों के बीच बैठा था, और अपने बाएं हाथ को बाएं जांघ पर, और दाएं को दाएं जांघ पर रखें, दाएं की दोनों किनारे वाली उँगलियों को मोड़ले, अंगूठे और बीच वाली उँगली का गोल धेरा बना ले, और शहादत की उँगली से इशारा करता रहे, और तहीयात पढ़े : *التحياتُ لِلّهِ وَالصلوٰاتُ وَالطَّبَیّاتُ السَّلٰامُ عَلٰيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلٰامُ عَلٰيْنَا وَعَلٰى عَبَادِ اللّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهُدُ أَنَّ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّهُ وَأَشْهُدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ*

“अत्तिहियातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तैइबातु अस्सलामु अलैकै ऐयुहन्बियु व रहमतुल्लाहि व बरकातुह, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन्, अशहदु अल्ला इलाह इल्लाल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहु व रसूलुह”। फिर तीसरी और चौथी रकअत वाली नमाज़ में “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए तीसरी रकअत के लिए उठे, और रफ़उ-लू-यदैन करे, और चौथी रकअत के लिए उठते हुए रफ़उ-लू-यदैन न करे, पहली रकअत ही की तरह तीसरी और चौथी रकअत भी पढ़े, लेकिन इन्हें पस्त आवाज़ से मात्र सरतल फातिहा पढ़े।



फिर अन्तिम तशह्वुद के लिए तवरुक करके बैठे, तवरुक के कई एक तरीके हैं जो कि सहीह हैं : ① बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के पिंडली के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को खड़ा रखें, और धरती पर बैठे। ② बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के पिंडली के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को सुलादे, और धरती पर बैठे। ③ बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के नीचे से पिंडली और जांघ के बीच से निकाल ले, और धरती पर बैठे। मात्र अन्तिम तशह्वुद में तवरुक करना सुन्नत है, फिर तहीयात पढ़े : *اللّهُمَ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ ... “अत्तिहियातु लिल्लाहि ... ”*, फिर दरूद पढ़े : *اللّهُمَ صَلِّ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ اللّهُمَّ مَاجِدٌ اللّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَاجِدٌ*

“अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिं-व्य-अला आलि इब्राहीम इनक इमीदुम्मजीदु, अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदि-व्य-अला आलि इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इनक इमीदुम्मजीदु,” और यह दुआ पढ़े : *اللّهُمَ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْمُحْيَا وَالْمُمَاتِ وَشَرِّ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ* : “अल्लाहुम्म इन्नी अऊङ्गु बिक मिन् अज़ाबिल्कब्रि व अज़ाबिन्नारि व फिलति-लू-मह्या वल्ममाति व शर्फि-लू-मसीहिद्दज्जालि” और दृसरी सावित दुआएं भी पढ़ना सुन्नत है।



फिर दोनों ओर सलाम करें, पहले दाएं ओर चेहरे को करते हुए *السَّلٰامُ عَلٰيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّهِ وَبَرَكَاتُهُ* “अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह” कहे और इसी तरह बाएं ओर करते हुए भी। जब सलाम कर ले तो अपनी जगह पर बैठे हुए नवी से सावित दुआएं पढ़े।

## ज्ञान अनुसार कर्म की अनिवार्यता

मुसलमान भाईयो  
और बहनो !

वह ज्ञान जिसके अनुसार कर्म न हो, अल्लाह, उसके रसूल और मोमिनों के यहाँ निर्दित है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿كَبَرْ مِنَ الْأَيُّوبَ أَسْوَلَمَ نَقْلُونَ مَا لَتَقْلُونَ﴾

“हे मेमिनो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं, तुम जो करते नहीं उस क्व कहना अल्लाह के सज्जा नापसंद है”। अबू हुैर: कहते हैं : “वह ज्ञान जिसके अनुसार कर्म न किया जाए उस ख़जाने की तरह है जिसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न किया जाए”।

और फुजैल रहिमहुत्ताह कहते हैं : “ज्ञानी उस समय तक जाहिल रहता है जब तक उसके अनुसार कर्तव्य न करे”। और मालिक बिन दीनार कहते हैं : “तुम ऐसे व्यक्ति से मिलोगे जो एक अश्वर में भी गलती नहीं करता, लेकिन उसका सम्पूर्ण कर्म गलती से भरा होगा”।

अल्लाह तआला ने आप के लिए इस लाभ-दायक किताब को पढ़ना आसान कर दिया, पर इस पढ़ाई का फल अभी बाकी है, और वह है इसके अनुसार कर्म करना।

■ इस किताब में आप ने कुरूआनी आयतें और उनकी तफ़सीर पढ़ीं, आप ने इन से जो कुछ भी सीखा है उस के अनुसार कर्म करने की कोशिश करें; क्योंकि सहाबए किराम “नबी ﷺ से दस आयतें सीखा करते थे, फिर दूसरी दस आयतें उस समय तक नहीं सीखते जब तक कि पहली आयतों का ज्ञान न होजाए और उनके अनुसार कर्म न कर लें, वह कहते हैं : हम ने ज्ञान और कर्म दोनों को एक साथ सीखा”। जैसा कि शरीअत ने हमें इस पर उभारा है, इब्ने अब्बास इस आयत : ﴿يَتَّلَوُنَهُ حَقَّ تِلَاقِهِ﴾ “वे उसे पढ़ने के हक्क के साथ पढ़ते हैं” की तफ़सीर में कहते हैं : जैसा अनुसरण करना चाहिए वे वैसा ही उसका अनुसरण करते हैं। और फुजैल कहते हैं : कुरूआन कर्म करने के लिए उत्तरा लेकिन लोगों ने उस की तिलावत को कर्म बना लिया।

■ आप ने नबी ﷺ की हड्डीसें भी पढ़ीं, जिन्हें अपनाने और उनके अनुसार कर्म करने के लिए आप जलदी कीजिए; क्योंकि इस उम्मत के नेक लोग जो कुछ भी पढ़ते थे उसके अनुसार अपनी जीवन को ढालने और उसकी ओर बुलाने में जल्दी करते थे आप ﷺ की इस हड्डीस की पैरवी करते हुए : “यदि मैं तुम्हें किसी चीज़ का आदेश दूँ तो शक्ति भर उसे बजा लाओ, और किसी चीज़ से रोकूँ तो उस से रुक जाओ”।  $\frac{1}{4}$ बुख़ारी एवं मुस्लिम  $\frac{1}{2}$  और अल्लाह तआला की सज्जा से डरते हुए जैसा कि उसने फरमाया :

﴿فَلِيَحْذِرُ الَّذِينَ يَخْالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبُهُمْ فَسْنَةٌ أَوْ يُصِيبُهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ “सुनो जो लोग उसके  $\frac{1}{4}$ अल्लाह के रसूल के  $\frac{1}{2}$  आदेश का विरोध करते हैं, उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई ज़बरदस्त आफ़त न आ पड़े, या उन्हें कोई दुःख की मार न पड़े।” और यह हैं इस के कुछ उदाहरण :

► उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा رض नबी ﷺ की यह हड्डीस रिवायत करती हैं : “जिस ने दिवा तथा रात्रि में 12 रक़अत नमाज़ पढ़ी, तो इनके बदले उस के लिए जन्नत में एक घर बना दिया जाता है”। उम्मे हबीबा رض कहती हैं जब से मैं ने यह हड्डीस सूनी इन्हें नहीं छोड़ा।

► इब्ने उमर رض इस हड्डीस को : “मुसलमान का कोई भी हक्क न हो जिस की वह वसीयत करना चाहता हो, तो उस पर तीन रातें न आएं मगर उस की वसीयत लिखड़ी हुई हो”।

रिवायत करते हैं, और कहते हैं : जब से मैं ने अल्लाह के रसूल से यह हडीस सुनी मुझ पर कोई भी रात ऐसी नहीं बीती कि मेरी वसियत लिख्वी न हो।

► इमाम अहमद ख़ाँ कहते हैं : “मैं ने जो भी हडीस लिख्वी उस के अनुसार कर्म किया, यहाँ तक कि मुझ पर यह हडीस गुज़री कि नबी ﷺ ने सिंधी लगवाई और अबू तैबा को एक दीनार दिया, तो मैं ने भी जिस समय सिंधी लगवाई सिंधी लगाने वाले को एक दीनार दिया”।

► इमाम बुख़ारी ख़ाँ कहते हैं : “जिस समय से मुझे ग़ीबत के हराम होने का ज्ञान हुआ, मैं ने किसी की ग़ीबत नहीं की, मुझे अवश्य उम्मीद है कि अल्लाह से मैं इस हालत में भेट करूँगा कि किसी की ग़ीबत करने पर वह मेरा मुहासबा नहीं करेगा।”

► हडीस में आता है : “जिस ने हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ी उसे जनत में जाने से मात्र उस की मौत ही रोक सकती है”। इब्नुल कैइम ख़ाँ कहते हैं : “मुझे शैखुल इस्लाम के इस कथन का पता चला है कि मैं ने किसी भी नमाज़ के बाद इसे पढ़ना नहीं छोड़ा सिवाय इस के कि मैं भूल गया हूँ या इस तरह की कोई और बात होगई हो”।

■ इल्म प्राप्त करने और उस के अनुसार कर्म करने के बाद तुम पर ज़रूरी है कि उस की ओर लोगों को बोलाओ, और अपने आप को सवाब से और दूसरों को भलाई से महरूम न करो। नबी ﷺ ने फ़रमाया : “भलाई की ओर बुलाने वाले को उस पर कर्म करने वाले के बराबर सवाब मिलता है”। और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया : “तुम मैं श्रेष्ठ वह है जिस ने कुरूआन का ज्ञान सीखा और सिखाया”। और आप ने फ़रमाया : “मेरी ओर से लोगों तक पहुँचा दो चाहे एक आयत ही क्यों न हो”। इसलिए जितना ही तुम भलाई को फैलाओगे उतनाही तुम्हारे सवाब में बढ़ौतरी होगी, और जीवन में तथा मौत के पश्चात भी तुम्हारी नेकियाँ जारी रहेंगी। नबी ﷺ ने फ़रमाया : “जब इन्सान मर जाता है तो उस के कर्म ख़त्म होजाते हैं सिवाय तीन चीज़ों से : सदक़ा जारिया से, ऐसे ज्ञान से जिस से लाभ उठाया जा रहा हो, या नेक औलाद से जो कि उस के लिए दुआ करे”।

**प्रकाश :** प्रत्येक दिन हम 17 बार से अधिक सुरतुल फ़ातिहा पढ़ते हैं, इस के द्वारा हम उन लोगों से पनाह मांगते हैं जिन पर अल्लाह का क्रोध हुआ तथा जो गुम्राह थे, परन्तु हम उन्हीं जैसा कर्म करते हैं, इल्म सीखते नहीं और जिहालत जैसा अमल करते हैं, और इस प्रकार हमारा कर्म गुम्राह नसारा जैसा हो जाता है, या इल्म सीखते हैं पर कर्म नहीं करते, और हम धिक्कारित यहूदियों की छवि अपना लेते हैं।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें लाभ-दायक ज्ञान, और नेक कर्म से नवाएँ।

अल्लाह और उस के रसूल अधिक बेहतर जानते हैं, और दर्शन तथा सलाम नाज़िल हो हमारे सरदार और हडीब मुहम्मद पर और उनके परिवार-परिजन और सारे सहाबा (साथियों) पर।

تَقْسِيمٌ  
الْعُشْرُ الْآخِرُ

من القرآن الكريم

[www.tafseer.info](http://www.tafseer.info)

ISBN : 978-603-90056-2-9